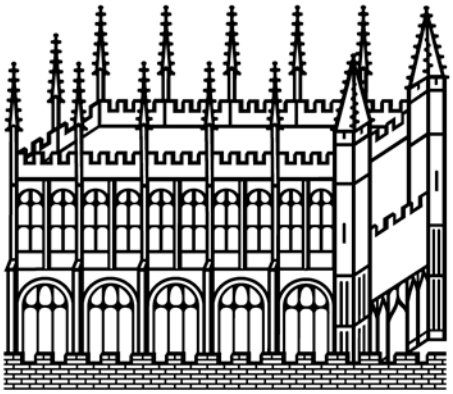


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.11.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Hindi Girdh 2



Avatārd - Kalhāṃrikd

Avtar Katha

अवतारकथामृत

اوتار کتھامرت

श्रीमत्कवि कुलशिरोमणिश्री

पण्डित गिरिधरदास रचित॥

जिसमें

संसार के उद्धरण हेतु सात अवतारोंकीअमृत

मयीकथा-मत्स्य १कूर्म्म २वाराह ३नृसिंह ४

वामन ५परशुराम ६औरश्रीराम ७कीवर्णितहै

वही

स्थान लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर के यन्त्रालय में शुद्धतापूर्वक

छपी

जूलाईसन १८७४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जून सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से घटा कर नियत हुवा परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	वैद्यजीवन	दुर्गापाठ सटीक
	वैद्यमनोत्सव	दुर्गापाठ मूल
सिद्धान्त चन्द्रिका	अमृत सागर	अपराधभञ्जन स्तोत्र
लघु कोमुदी	अमृत सागर बड़ी	महिम्न स्तोत्र
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	अमर विनोद	श्री गोपाल सहस्रनाम
शीघ्रबोध	जगद विनोद	शिवार्चने
पाराशरी सटीक	वैद्य जीवन	गंगा लहरी
मुहूर्त्त गणपति	औषधि सङ्ग्रहकल्पवल्ली	भगवद्गीता
सङ्ग्रह शिरोमणि	निघण्ट भाषा	भगवतीगीता
जातक चन्द्रिका	वैद्य दर्पण	श्रीमद्भागवत सटीक
लघु जातक भाषा टीका सहित	राम विनोद	तथा दशम स्कन्ध
		हनुमान बाहुक
भाषा जातकालंकार	कोष और इतिहास ॥	सुख सागर
संस्कृत जातकालंकार	शिवसिंह सरोज	ब्रह्म सार
जातकाभरण	सामुद्रिक	परमार्थसार
मुहूर्त्त दीपक	गणित कामधेनु	प्रेमसागर
हीरामकरन्द	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
मुहूर्त्त चिन्तामणि	शब्दार्थ कोष	राग प्रकाश
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	अमर कोष प्रथमकाण्ड	भक्तमाल
	अमर कोष तीनों काण्ड	अवध यात्रा
वैद्यक	भाषा टीका सहित	कथा गङ्गा जी
	अनेकार्थ कोष	रामायण टेपर्ड
शार्ङ्गधर सटीक	ब्रज विलास	रामायण डि

सूचीपत्र ॥

वृतान्त	पृष्ठ से	पृष्ठतक
मत्स्य कथा—श्री भगवान का मीना वतार धारण करके भक्त जनों के दुःख देने वाले शङ्खा सुरको मारना ॥	१	४
कथा बारह औतार की—श्री नारायण जी का बारह अवतार धारण करके हिरण्यकश्यप राक्षस को जो पृथ्वी कोउठाले गया था उस्से युद्ध करके उसको मार डालना और पृथ्वी को उठाले आना ॥	५	१२
नृसिंह औतार की कथा—श्री महाराज ने हिरण्यकश्यप को मार कर प्रह्लाद आदिक हरि भक्तों का दुःख निवारण किया ॥	१३	२२
कच्छप अवतारकी कथा—नारायणजी ने कच्छप अवतार धारण करके मन्दराचल पर्व्वत को अपनी पीठ पर धारण करके समुद्र मथा और समुद्र मथ के चौदह रत्न निकाल कर यथा योग्य देवतों को बांट दिया ॥	२३	६०
बामन कथा- श्री महाराज बामन भगवान का राजा वलि को दानाभिमानी जानकर तीनपग पृथ्वी दान मांगना पुनः तीनपग में तीनों लोक नाप कर राजाबलि की पीठ नापना और इन्द्र इत्यादि देवतोंका कार्यसिद्धकर पाताल बलिको और स्वर्ग देवतों को देना ॥	६०	१३२
परशुराम कथा उमृत- श्री वैकुंठनाथ जी महाराज का परशुरामा वतार धारण करके सहस्र बाहु इत्यादि दुष्ट क्षत्रियों का नाश करके धर्म्म स्थिर रखना ॥	१३३	१४०
राम कथा शंभूमनु शत्रूपा राजा रानी का वरदान पूर्णहोना ऋषिमुनियोंका क्लेश निवारण करना रावणकुंभकरण विभीषण तीनों भाइयोंका ब्रह्मासे वरदान पाना ॥	१४१	१४२

वृतान्त	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
लङ्काको माली सुमाली दैत्यों से छीनकर रावण का राज्य करना और ऋषियों ने दुःखपाकर ब्रह्मा शिव समेत नारायण से स्तुति करना और अयोध्यापुरी में राजादशरथ के गृह में श्री महाराजका जन्मलेना ॥	१४२	१४८
विश्वामित्र जी कानिज यज्ञ राक्षसार्थ श्रीरामचन्द्र जी को लेजाना और रामचन्द्र जी के हाथ से ताड़का का माराजाना मिथिलापुरी में रामचन्द्र जी का पहुंचकर धनुष भंजन पुनः तीनों भाइयों के सहित विवाह करना ॥	१४९	१६०
केकई का दोनों बरदान मांगकर रामचन्द्र जी को बनबास करना व शूर्पनखा के कान नाक लक्ष्मण जी के हाथ से काटना ॥	१६१	१६८
कंचन मृग जो मारीच बना था उसके पीछे रामचन्द्र जी का जाकर उसका मारना व उसके पुकारने का शब्द सुनकर लक्ष्मण जी को लकीर खींच कर सीताजी के चारों तरफ रामचन्द्र जीके पासजाना व रावण का भीख मांग कर सीताजी को हरलेजाना और मार्ग में जटायु से युद्ध करके लङ्कामें। पहुंचना रामलक्ष्मण सुग्रीव मिलन बालिका माराजाना लङ्कामें नील नल बन्दरों करके सेतुका बांधना और समुद्रपार जाना ॥	१६९	१८५
हनुमानजी करके लङ्का करदग्ध पुनःअङ्गद का लङ्कामें जाकर रावण से वार्ता करना व विभीषण का आगमन रामचन्द्र के पास और कुम्भकरण मेघनाद व रावण का मारना और बिभीषण का राजतिलक करना तत्पश्चात सीता को लेकर रामचन्द्र जी का अयोध्यापुरी में आना	१८५	२०९
रामचन्द्रजी को राजगद्दी पर सुशोभित होकर प्रजा पालन करना और अश्वमेध यज्ञ करना ॥	२०९	२३१

भूमिका

—·*·—

काशीमें वर्तमान समयमें जो श्री बाबू हरिश्चन्द्रजी बड़े प्रसिद्ध कवि हैं उनके पिता का बनाया हुआ यह ग्रन्थ है इनका नाम श्री युक्त बाबू गोपाल चन्द्रजी था और काशी के प्रसिद्ध धनिक श्री युत बाबू हर्षचन्द्र जीके यह पुत्र थे॥ धनिक होनेही पर नहीं देहली, मुरशिदाबाद, राजमहल और लखनऊ आदि स्थानों में उनके पूर्व पुरुषों ने बादशाही जमाने में बड़े बड़े काम करके केवल धनही नहीं परंच बड़ा मान प्राप्त किया था और उनमें राजा आनन्द चन्द्र बहादुर रायरत्नचन्द्र बहादुर इत्यादि लोगों के नाम अद्यापि उस देश के इतिहासों में प्रसिद्ध हैं श्री युत बाबू गोपालचन्द्र जीकी अपने गुरु श्री गिरिधरजी महाराजमें अत्यन्त भक्ति थी इससे उन्होंने अपना धर्म औ कविता सम्बन्धी नाम गिरिधरदास रक्खाथा ये संस्कृत और भाषा दोनों के बड़े भारी कवि थे सब ग्रन्थ जो उन्होंने बनाये हैं यदि उनकी संख्या की जाय तो लाख श्लोक से भी ऊपर होगा इनकी बुद्धि ऐसी तीक्ष्ण थी कि अवस्थाके तेरह वर्ष समाप्त होने के पूर्व बाल्मीकी रामायण का छन्दों में अनुवाद उन्होंने समाप्त कर दिया यह कथामृत ग्रन्थ भी जो दो भाग में प्रकाश किया जाता है इनही का बनाया है इसमें दश अवतारों की कथा है जो अत्यन्त सुन्दर छन्दों में रचितहै इसमें मत्स्य बाराह कच्छ नृसिंह बामन परशुराम और श्रीराम कथामृत एक खण्ड में और बलराम बौद्ध और कल्कि कथाऽमृत दूसरे खण्ड में प्रकाशित होंगे

इनमें बलराम कथाऽमृतमें श्रीकृष्ण चरित्र बहुत विस्तार से और अत्यन्त सुन्दर रूप से लिखा है अब यह पुस्तक कविजन कीर्त्तिहितेच्छु गुणिजन रंजन महामहिम श्री युक्त मुंशी नवलकिशोर साहब की इच्छा से रसिकजनों के आनन्द के हेतु छाप कर प्रकाश की जाती है आशा है कि सब लोग इसको बड़े आदर से स्वीकार करेंगे ॥

इति

॥ श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥

अथ अवतार कथामृत

लिख्यते ॥

मत्स्यकथा प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

सुन्दर सुखद सरोज से वल्लभ जू के पांय।
सुमिरत सुभ सरसांहि सब शोक मोह भ्रम जांय १॥
नन्दन प्रभु श्रीनन्द के करन सकल आनन्द।
सुमिरत गोकुल चन्द पद दूर दुरैं दुख द्वन्द २॥
सुमिरि मीन भगवान के पीन करम सुखमूल।
चारु कथा कथिवे चहत दूरि करनि भवशूल ३॥

चौपाई ॥

छत युग आदि भयो बलधाम। दानव अधम संख यह नाम॥ महा मेरु सम उन्नत काया। जानै सकल भांतिकी माया ४॥ कन्दर सरिस नाक अरुकान। नभलौं ऊंचेगये विषान॥ बढ़े बार बढ़नी सम मुख के। कढ़े दांतदीरघ दिपुरुखके ५॥ महा उदर अति श्यामशरीर। लोचन चक्र सरिस गंभीर॥ रसना रकत रकत की प्यासी। कढ़ी बिवर तें सर्प सुतासी ६॥ लटकत दोउ कपाल के चमरा। मानहुं थैलासा एक मरा॥ महावेग अरु महा कराल। महा कुटिल दानव कुल पाल ७॥

दो० सो दानव दुनियां दुखद उर विचार करि नीच।
चारहु बेद चोरायकै धस्यौ सिन्धुके बीच ८॥
बिना बेदविधि बिबुध वर खेदि बिबिधि विधिकीन।
बिबुध बिप्रनन्दन सहित भये दीन अति छीन ९॥
सो० बेदचार जग सार धर्म अधार प्रचारकर।
हरे असुर सरदार लोप अचार विचारभो १०॥

इनमें बलराम कथामृत में श्रीकृष्ण चरित्र बहुत विस्तार से और अत्यन्त सुन्दर रूप से लिखा है अब यह पुस्तक कविजन कीर्त्तिहितेच्छु गुणिजन रंजन महामहिम श्री युक्त मुंशी नवलकिशोर साहब की इच्छा से रसिकजनों के आनन्द के हेतु छाप कर प्रकाश की जाती है आशा है कि सब लोग इसको बड़े आदर से स्वीकार करेंगे ॥

इति

॥ श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥

अथ अवतार कथामृत

लिख्यते ॥

मत्स्यकथा प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

सुन्दर सुखद सरोज से वल्लभ जू के पांय।
सुमिरत सुभ सरसांहि सब शोक मोह भ्रम जांय १॥
नन्दन प्रभु श्रीनन्द के करन सकल आनन्द।
सुमिरत गोकुल चन्द पद दूर दुरैं दुख द्वन्द २॥
सुमिरि मीन भगवान के पीन करम सुखमूल।
चारु कथा कथिवे चहत दूरि करनि भवशूल ३॥

चौपाई ॥

कृत युग आदि भयो बलधाम। दानव अधम संख यह नाम॥ महा मेरु सम उन्नत काया। जानै सकल भांतिकी माया ४॥ कन्दर सरिस नाक अरुकान। नभलौं ऊंचेगये बिषान॥ बढ़े बार बढ़नी सम मुख के। कढ़े दांतदीरघ दिपुरुखके ५॥ महा उदर अति श्यामशरीर। लोचन चक्र सरिस गंभीर॥ रसना रकत रकत की प्यासी। कढ़ी बिवर तें सर्प सुतासी ६॥ लटकत दोउ कपाल के चमरा। मानहुं शैलासा एक मरा॥ महावेग अरु महा कराल। महा कुटिल दानव कुल पाल ७॥

दो० सो दानव दुनियां दुखद उर विचार करि नीच।
चारहु बेद चोरायकै धस्यौ सिन्धुके बीच ८॥
बिना बेदविधि बिबुध वर खेदि बिबिधि बिधिकीन।
बिबुध बिप्रनन्दन सहित भये दीन अति छीन ९॥
सो० बेदचार जग सार धर्म अधार प्रचारकर।
हरे असुर सरदार लोप अचार बिचारभो १०॥

इनमें बलराम कथाऽमृत में श्रीकृष्ण चरित्र बहुत विस्तार से और अत्यन्त सुन्दर रूप से लिखा है अब यह पुस्तक कविजन कीर्त्तिहितेच्छु गुणिजन रंजन महामहिम श्री युक्त मुंशी नवलकिशोर साहब की इच्छा से रसिकजनों के आनन्द के हेतु छाप कर प्रकाश की जाती है आशा है कि सब लोग इसको बड़े आदर से स्वीकार करेंगे ॥

इति

॥ श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥

अथ अवतार कथामृत

लिख्यते ॥

मत्स्यकथा प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

सुन्दर सुखद सरोज से वल्लभ जू के पांय।
सुमिरत सुभ सरसांहि सब शोक मोह भ्रम जांय १॥
नन्दन प्रभु श्रीनन्द के करन सकल आनन्द।
सुमिरत गोकुल चन्द पद दूर दुरैं दुख द्वन्द २॥
सुमिरि मौन भगवान के पौन करम सुखमूल।
चारु कथा कथिवे चहत दूरि करनि भवशूल ३॥

चौपाई ॥

छत युग आदि भयेा बलधाम। दानव अधम संख यह नाम॥ महा मेरु सम उन्नत काया। जानै सकल भांतिको माया ४॥ कन्दर सरिस नाक अरुकान। नभलौं ऊंचेगये विषान॥ बढ़े बार बढ़नी सम मुख के। कढ़े दांतदीरघ दिपुरुखके ५॥ महा उदर अति श्यामशरीर। लोचन चक्र सरिस गंभीर॥ रसना रकत रकत की प्यासी। कढ़ी बिवर तें सर्प सुतासी ६॥ लटकत दोउ कपाल के चमरा। मानहुं शैलासा एक मरा॥ महावेग अरु महा कराल। महा कुटिल दानव कुल पाल ७॥

दो० सेा दानव दुनियां दुखद उर विचार करि नीच।
चारहु बेद चेारायकै धस्यौ सिन्धुके बीच ८॥
बिना बेदविधि बिबुध वर खेदि बिबिधि बिधिकीन।
बिबुध बिप्रनन्दन सहित भये दीन अति छीन ९॥
सेा० बेदचार जग सार धर्म अधार प्रचारकर।
हरे असुर सरदार लेाप अचार विचारभेा १०॥

दो० कारबार संसारको सार सकल व्यवहार।
वेद बिना रुकतोभयो दुखी देव भरतार ११ ॥

चौपाई ॥

विधि आदिक व्याकुल सब देव । सुमिरन कियेा हरिहि गुनि भेव ॥ जय अनन्त जय जय जगदीश । जय मुकुन्द वंदित बिधि ईश १२ ॥ जय करुणा कर नीरज नैन । जय माधव जय फणिपति शैन ॥ जयजय शङ्ख चक्रधर प्यारे । गदापाणि सरसीरुह धारे १३ । विश्वभरण पोषण परमेश । रमारमण दुख तिमिर दिनेश ॥ वैनतेय वाहन बलशाली । विश्वम्भर वनपति वनमाली १४ । करिकै कृपा हरऊ दुखभारी । दरऊ दुष्ट दानव अघकारी ॥ हरिकै वेद गयेालै सेाई । तिनबिन विश्वकाम नहिं होई १५ ॥

दो० बिना वेदके हरऊ है करी अरज है सेाइ।
सब देवनकी गरज है कृपा करऊ गतिजेाइ १६ ॥

तेाटक ॥

सुनिकै सब देवन की बतियां । गुनिकै तब भेवन की भतियां ॥ कहते करुणा करि कृष्ण भये । बिधि शंकरवंदित प्रेममये १७॥ बधिहौं रिपुकेांअब धीरधरौ । डरतें सबसंशय दूरिकरौ ॥ सुनिकै हरिकी इमि व्योम गिरा । सन देवनके अतिमोद थिरा १८ ॥ विधि शंकर शेषऊतास रवी । जल नाथ धनाधिप आदि सबी ॥ जगदीश्वर को यश गावत भे । छबि छावत धाम न आवतभे १९ ॥

दो० सेाई समय मनुहै खरे अर्घ हाथमैं लीन।
देनचहे दिननाथ कहं वर नरनाथ प्रवीन २० ॥

चौपाई ॥

चैतशुदी पांचै वनि मीन । तिन करतैं हरि गिरे प्रवीन ॥ लखि मनु मीन जियन अभिलाखेा । पञ्चपाच महं ताकहं राखेा २१ ॥ क्षणमहं बढ़िसेापाच पुरायेा । तबै कमण्डलके मधि नायेा ॥ भरेा कमण्डल छिन नहिं रहेा । मीन दीन मनु मनुतें कहेा २२ ॥ मेाकहं धरऊ बड़े बरतनमैं । जामैं

कष्ट होइ नहिं तनमें ॥ चकित धरापति धरा कमोरा। क्षणमहं बढ़िकै ताकहं फोरा २३ ॥ मीनहिं तबै कूप महं डारेा। बच्यौ धरीरगयेा भरि सारेा ॥ बज्रदि कहा मोहिं इत दुख भारेा। तब बापी के मधि रूप धारेा २४ ॥ बढ़त बावली भरिगइ सारी। कहेउ काढ़िये रूपव्रतधारी ॥ तब मनु काढ़ि मीनसेा मीन। डारि बड़े तड़ाग महं दीन २५॥ चितवत चकित राउ भरिचाऊ। छिनमहं भरिगेा सकल तलाऊ ॥ बज्रदि कहा संड़सतमैं यामैं। तब रूप धरतभये सरितामैं २६॥ तामैं परत बढ़ेा सेा मीन। काढ़ेउ बज्रदि कह्यौ अतिदीन ॥ तब निकारि कै ता सरितातें। डारेउ सागर हरष महातें २७ ॥

दे० तामैं श्रीभगवान हरि बढ़िकै उन्नतकाय।
कीनेा चारउवेद कहं शंख धाम महंजाय २८ ॥
शङ्खपाणि कहं देखिकै शङ्ख असुर सरदार।
मूरख झख मारण चल्यौ करिसु महाललकार २९ ॥

सेा० इततें सफरी रूप देवभूप अतिरिस भरे।
उततें लेाचन कूप गरजत खल शूलहि धरे ३० ॥

तेाटक ॥

तड़िता समशूल घुमायमहा। हरिपैं तजिकै मतिभागु कहा ॥ तब चक्रहि बक्र प्रहारि हरी। दहि शूलहि गर्वहि लीनहरी ३१ ॥ पुनि गर्जत तर्जत नाहकसेा। रणचाहक वीर बलाहक सेा। धनु तानि अनेकन बाण हने। बर सर्पसमान महानबने ३२ ॥ सरसीरुह लेाचन तीरनसेां। सुजसेरबिज्यों निज कीरनसेां ॥ तरवारि निकारि महा छबिकी। तकि मारेउ ज्योंजननी पबिकी ३३ ॥ नन्दनन्दन नन्दक मारितबै। तेहि व्यर्थकियेा निरख्यो सबै ॥ पुनि भांति अनेक अदेव लख्यौ। हरि आयुधतें मन माहिं डर्यौ ३४ ॥ तब केशव काढ़ि रथांग महा। करतें खलको द्रुत केश गहा ॥ धरतें सिरकेां करिदीन्ह जुदा। लखि आवतभे सबदेव मुदा ३५ ॥

दे० करि प्रणाम निज नाम सह जोरिहाथ अभिराम।

बर अस्तुति करते भये प्रमुदित पूरण काम ३६ ॥

तोमर छन्द ॥

जय शङ्ख सूदन रूप। जय चारु कीर्त्ति अनूप॥ जय ईश अद्भुत मीन। जयजय पराक्रम पीन ३७ जय चक्रपाणि महीश। जय शंभुसूरज ईश॥ जयविश्व बिग्रह विष्णु। जय जयतिबंदित जिष्णु ३८॥ जयवेद बेदित काय। जय विश्वके सुखदाय॥ जय मोदमै जगरूप। जय देवमानव भूप ३९॥ जय दुन्दहारि मुकुन्द। जयमाल शोभित कुन्द॥ जयविश्वमै जगहेतु। जय पक्षिनायककेतु ४०॥ जय नीलनीरज नैन। जय सर्वमै सुखअैन॥ जय देवभूतल जैन। जयजैति मोहन मैन ४१॥ जयवेद गूढ स्वरूप। जयब्रह्मईश अनूप॥ भवकूप तारणरूप। जयतीनलंपुर भूप ४२॥ जयनारदादि ऋषीन। पदनित्य बंदित मीन॥ अपने अधार असीन। जय दैवप्रज्ञ प्रवीन ४३॥ जयसत्वमूरति स्वच्छ। जयभक्तपैं कृतरच्छ॥ जय दक्ष पूरणपच्छ। जयलोक जीवनमच्छ ४४॥ शिवदास त्यों सुखचारि। शशि सूरनयन मुरारि॥ बपु विश्वमै सुखकारि दरपानि जैदनुजारि ४५॥ जगबीचहै असकौन। गुणतो कहै सबजौन॥ जगदीश जे गुणभौन। करियैकृपा थियरौन ४६॥

दो० इमि अस्तुति सुनि सुरन की दीनबंधु हरि मीन।
शंख उदरतें काढ़िकै शंखहि करमहं लीन ४७॥

सो० इहि विधान भगवान शंखासुर मारतभये।
गुणनिधान सुर चाण वेद विधाता कहृदये ४८॥

दो० इमि सुलीन अवतार यह तारणभव वारीश।
सुनिहैं पढ़िहैं तेमनुज चढ़िहैं बिधिपुर शीश ४९॥
ऋतु नभ ग्रहशशि संवत दशमी भादवमास।
मंगल कर मंगल दिवस पूरण भो इतिहास ५०॥
ब्रज हरिभक्त मदादि घनजल दुख कर्म बतास।
तहंनिजकृपा गिरिधरण गिरिधरगिरिधरदास ५१॥

इतिश्री गिरिधरदासबिरचितं मत्स्यावतारकथामृतंसमाप्तम्॥ शुभमस्तु॥

अथ बाराहकथावृत्त लिख्यते ॥

दोहा ॥

गिरिधर गुणनिधि के चरण अंबुज उरमहं ल्याइ ।
बरणत बरबाराह को जन्म जगत सुखदाइ १ ॥
श्रीमद्वल्लभ के कुंवर बिट्ठल परम उदार ।
करिसु कृपा करिदेहिंगे मोर मनोरथ पार २ ॥
असुर अज्ञान समुद्र भव सुमति धरणिहरि लीन ।
नाम बराह बराह को तहं उधार हित कीन ३ ॥

चौपाई ॥

आदि लोक बैकुण्ठ महान । जहं निवसत श्रीकृपानिधान ॥ जौन परमपद परमप्रकास । जहं हरिदास करहिं बरबास ४ ॥ जो यांचहिं योगीजन ज्ञानी । जो अक्षर अच्युत श्रुतिबानी ॥ पूजनीय जो शंकर बिधितें । जो सबकाल भरोसबनिधितें ५ ॥ नारद सनकसनन्दन आदी । जेहिसेवहिं सुख भरि मरजादी ॥ जाकी छबिलखि कै छबिधाकी । को कहिसकै बिरचना वाकी ६ ॥

दो० श्री बैकुण्ठनिवास थल श्री बैकुण्ठ सुनाम ।
कनक मयो रत्ननजड़ो परमा भरो ललाम ७ ॥

हरिगीती ॥

भरो परमललाम परमापुञ्जमि पन्नन जगमगी । हाटक रचित फाटकसरस मणिकांति कोटिन मणिलगी ॥ शुक मोर सारस रत्नके राजहिं बनाये सोहने । माणिक मनोहर भीत वज्रनग जटित सोछबि कोगने ८ ॥ जाही जुही बेला चमेली कमल केतकि केवरा । मालती मौलसिरी बिराजत कल्पतरु सुमनन भरो ॥ अति मंद मंद सुगन्ध शीतल सरस मारुत भरिरह्यौ । संतत अनंत समंतसों सु अनंद उरमहं

करिरह्यो ९॥ सुन्दर सरोवर सरस शीतलजल समेतसरोज के। राजहिंकिनारे विविधि साजत चित्तमिच मनोज के॥ जहंके निवासी मनुज वरहरिदास हरिसम वसुधरे। सबकाल अतिहि निहालते नन्दलाल के सन्मुख खरे १०॥ पर धाम जहं घनश्याम राजहिं बाम बामदिशालसै। भरि प्रेमनिज मह हंसैं अति सुखरसैं सुमन ससोखसै॥ कर शंख चक्र गदा सरोज सदा सबै आनन्दहीं। विधि शंभु नारद शेष सुरपति अमरनर मुनि बंदहीं ११॥ इककाल मैं विधिलाल अतिहि दयाल चारुभावते। सनकादि बालस्वरूपमे हरि धाम द्वारे आवते॥ जय विजय दौऊ पारषद तहं बेत सों आड़त भये॥ भरिकोपउरि प्रेरित तहां सुनि शाप कहं छांड़त भये १२॥

दो० दैअयोग बैकुण्ठके सहित मोह अरु द्रोह।
तातें सहिमहं जायके असुरअधी अतिहोह॥

सो० सुनि मुनिवरको शाप आप श्याम आवतभये।
जोविधि हरहि दुरावसो छवि दरशावतभये १४॥

छप्पय॥

चारु चरण दुख हरण वरण वारिजसे सोहत। कटि किंकिणि पटपीत सुछवि दामिनिद्युति मोहत॥ चारभुजा सुख सींव ग्रीव पदलौं बनमाला। कुण्डल झलक कपोलगोल अति लोल रसाला॥ मृदु मुसुकनि सों भय हरण श्रीश तिलक सुखमा भरत। सुन्दर किरीट की लटकपैं अटक रहत मननहिं टरत १५॥ नन्दसुनन्द प्रचण्डचण्ड कुमुदाक्ष कुमुदवर। अर्हण प्रबल खगेश शेष श्री सुखद मनोहर॥ विष्वकसेन सुचक्रचारु वारिजसारंगसर। कौमोदकि शत चन्द्रजलज नन्दक वर वसुधर॥ विधिशंभु कुमारवशिष्ठशुक नारदादि पार्षद सहित। तितशोभित भये मुकुन्दप्रभु कुंद मालधर जगत हित १६॥

दो० लखि प्रणाम सुनियनकियो रहे स्वरूपनिहारि।
जितनिरख्यो तितनैन ते सकेदृष्टि कहंटारि १७॥

सनक आदिकन इमिकह्यौ क्षमियैमम अपराधु।
हरिभाष्यौ उचितहिकियेा दंडदियेा चितसाधु १८॥

चौपाई॥

तीन जन्म प्रमाण करिरावेा। पहिले हम रक्षव सुनि भाषो॥ द्वितिय जन्म मैं रमा बखाना। तीजे मैं तिजं मैं भगवाना १९॥ सोई शाप पाइकै भारे। तीन जन्म अवनी अवतारे॥ कनक कशिपु अरु कांचन नैन। रावण कुम्भकरण जगजैन २०॥ दंतवक्र शिशुपाल सुजान। धरिधरि रूप बध्यो भगवान॥ एकसमय संध्याकी बेरा। दितिनिजनाथ कश्यपहि हेरा २१॥ रतिमांग्यो मुनिवचन निकाला। यह संध्याकर दारुण काला॥ कामविवस जब वाम न माना। तबदीन्हो मुनि रतिकरदाना २२॥ भाषाबद्धरि होहिं सुत तोही। सदा संत सुरगणके द्रोही॥ सुनिकै खेदकीन्ह दिति जबहीं। गुनिकै मुनिवर भाषो तबहीं २३॥ तब सुत हेतु विष्णु अवतारा। यह सुनि दितिसेा गर्भहि धारा॥ लागे होनअमित उतपाता। दिशातिमिरभो कछु न दिखाता २४॥ उल्का गिरहिं दिवस महं तारे। ग्रस्यो राहु ग्रह नाहु सवारे॥ पवन प्रचण्ड धूरि नभछाई। रोवहिं रासभ स्यार बिलाई २५॥ डोलत धरणि क्षुभित नदनाह। होन लगो दारुण दिकदाह॥ देवनके दृग पूरे पानी। खगमृग कहहिं दीन समबानी २६॥ ऋतु मासन के रूप भुलाने। कमल सकल जल माहिं सुखाने॥ भानु मरीचि टूटि महिपरई। विनापर्व चन्द्रहि ध्वज धरई॥ २७॥

दो॰ गत उछाह जग होत भेा प्रलय काल सेा काल।
देव तबै सोचन लगे अनरथ होय कराल॥ २८॥

प्रमाणिकाछन्द॥

गए विरंचि पास मैं। कह्यौ सबै उदास मैं॥ तबै तिन्हैं सबै कथा। यथा रही कहीं तथा २९॥ दइत्य होय होइ हैं। तुम्हार वीर्य खोइ हैं॥ महा कुकर्म धारिहैं। तबै मुकुन्द मारिहैं॥ सुजाऊ धीर धारिकै। भविष्य को बिचारि कै॥

तबै सबै सचेत ह्वै। गए घरैं अचेत ह्वै ३१॥ दिती विचार सों भई। शताब्द धारती भई॥ महान गर्भ आपको। भरो प्रभा प्रताप को ३२॥ सुजन्म काल आइगो। अंधार भूमि छाइगो॥ महान तेजते भए। कुमार जन्मते भए॥ ३३॥

दो० हाथ गदा गुरु आयसी लगे शीश असमान।
घंटनकी कटिकिंकिणी गर्जत शब्द महान॥ ३४॥

सो० ब्रह्मा कीन्हो नाम प्रथम हिरण्यकशिपु बली।
हिरण्याक्ष बलधाम दूजोबर अरिदल दली॥ ३५॥

कवित्त॥

पांवकी पटक सेस शीशपैं खटक होत धरणी चरणसिर लागत अकासहीं। घुटुनालौं होत सबै बारि बारिनिधि केरो गेंदागिरिमेरु आदि खेलैं बेप्रयासही॥ गरजनि तीन लोक गरभ गिराय देति परम प्रताप पूरि महीलौं प्रभासही। टक्कर लरायबेकों इन्द्र औ कुबेर यम पक्करि लरायबेकों रवि शशि पासही॥ ३६॥

दो० जीतिलियो त्रयलोक कहं करत राज असुरेश।
राजा कंचन कशिपुवर अनुज तसीलत देश॥ ३७॥

तोटक॥

धरणी कहं लै जल बीच गयो। कमकत्त महान गरूर भयो॥ सब सृष्टि गई थकिकै विधिकी। कछु बूझि परै न तबै विधि की॥ ३८॥ तिहि काल उदास प्रजेश महा। मुखतें हरि केशव कृष्ण कहा॥ तुम व्यापक ईश्वरहौ सब के। नहिं सृष्टि रची यह हौ तबके॥ ३९ महिकों हरिकै जल दैत्य गया। सुनि सोहरि कीजिय दीह दया॥ किमि साजिय सृष्टि बिनाजगतो। न उपाय कछू ममहै लगती ४० हमकों तुम त्यागिन आसकोऊ। प्रभु जानतहौ सब भांति सोऊ। हमशंकर सूरज आदिभलैं। सिगरेतुमरे अनुसार चलैं ४१॥ जिमिदारु बधू कहं चारुगुनी। सुनचावत आपुनिभांति गुनी॥ तिमि आप नचावत विश्वसबै। तबरक्षत संक होत जबै ४२॥ जगदीस दयाकरिके हरिजू। दुख

एऊ सुलेऊ सबै हरिजू ॥ इमि भाषत ही मति भ्रम भई।
तुरतैं विधि जू कहं छींक भई ४३ ॥
दो० कढ़े अंगुष्ठ प्रमाण के श्वेतबरण वाराह।
चैत्र कृष्ण तेरस दिवस पूजी विधि मनचाह ४४ ॥
बढ़नलगे बाराहजू सम मृग नर गज सैल।
क्षणमहं कोटिन कोसलौं गये तिहीथल फैल ४५ ॥

बसुकला ॥

विधि आदिदेव। सुनि कृष्णभेव ॥ कर जोरिजोरि। दुख मोरिमोरि ४६ ॥ सिरनाइनाइ। छबिछाइछाइ ॥ अस्तुति अपार। कीन्हीउचार ४७ ॥ जय देवदेव। जय अलखभेव ॥ जय जगत रूप। जय अखिल भूप ४८ ॥ जय जय वराह। जय धरणिनाह ॥ जय चक्रपानि। आनन्द दानि ४९ ॥ जय अतिउदार। करुणा अगार ॥ जय कोल कच्छ। मृगनाह मच्छ ५० ॥ जयजय मुकुन्द। जयहरणद्वन्द ॥ जय पुण्यकन्द। जय दुखनिकन्द ५१ ॥ जय वपु अनन्द। जय जगतचन्द ॥ जय जग निवास। दिनकर प्रकास ५२ ॥ जय कमलनैन। संसार चैन ॥ जय विश्वनाथ। जय पुण्यगाथ ५३ ॥ जय हरब्रह्मेश। बन्दित हमेश ॥ सुखकर विशेश। जयजय रमेश ५४ ॥ जय शुद्ध सत्व। जयपरमतत्व ॥ जय ब्रह्मरूप। साक्षीस्वरूप ५५ ॥ जय सर्प शैन। जय जगत जैन ॥ जय पुण्य औन। आनन्द भौन ५६ ॥ जय रमारौन। गजराजगौन ॥ जय अखिलईश। बंदित फणीश ५७ ॥ जय परंज्योति। परमा तनोति ॥ जय गुणनिधान। अतिही सुजान ५८ ॥ जय कथित वेद। जय मथितवेद ॥ जय ग्रथितवेद। जय ग्रथितवेद ५९ ॥ जय श्वेत कोल। जय नैनलोल ॥ कञ्चनदृगारि। जयजय मुरारि ६० ॥ जय धरणधीर। जय विदितवीर ॥ जय अमलअङ्ग। जय रद उतङ्ग ६१ ॥ जय कृष्णजिष्णु। जय नमितविष्णु ॥ जय असुर काल। जय विश्वपाल ६२ ॥
दो० इमि तिनतें बंदित मुदित प्रविशिगये मधिबारि।
जगन्नाथ करुणा करणचले धराकहं धारि ६३ ॥

चौपाई ॥

तिहि क्षण कनक नयन निरितेश । गयोरच्यौ जितबसत जलेश ॥ जाय बरुणसों वचन बखाना । तुम जलेश बल बुद्धि निधाना ६४ ॥ राजसूय कीनो जगजीति । हमसन लरुज करुज जनि भीति ॥ बरुण कहा हम मानीहारि । तुमतें लरिहैं विष्णु मुरारि ६५ ॥ सुनिसो चला भरा मदभारा । मगमहं कलहप्रियहि निहारा ॥ करिप्रणाम पूछेसि भगबानहिं । नरादभाषेउ असुरप्रधानहिं ६६ ॥ अबहींविष्णु बने बाराह । हरेजात महि दानवनाह ॥ लड़िमारुज तिहि बड़अभिमाना । सुनिखल आसुचला रिसिसाना ६७ ॥ तुरत जाय देखेसि महिलीन्हे । चलेजात अतिहो गतिकीन्हे । हंसो गरजि सोबोलो ऐसो । यहबन मृगबनमहं किमिपैसो ६८ ॥ अरेचोर कितभगत अभागे । कपट कोलनहिं बनिहैभागे ॥ बहुदिन खोजि आजतोहि पायो । लरु तजिकै छलरे अघछायो ६९ ॥ अबहिंतोहि करिहौं गतआयु । हरितेहि गुना बकतबस वायु ॥ कहा अरेनहिं जल्पहिं सूर । थिरिकै लरु जो भयो गरूर ७० ॥ इमि तिहि कहत महत बलधाम । कढ़ेबारितें हरि अभिराम ॥ धराबारि धारा पर धारी । निजसत्ता अधार करिभारी ७० ॥

दो० ठाढ़ह्वैगे भूमिपर तालठोंकि भगवान ।
ठेरि ताहि गरजनलगे जगन्नाथ सुरचान ७२ ॥

गुरु तोमर ॥

करलैगदा हरिहेरिकै । तजतो भयो खलटेरिकै ॥ हरि ताहि धारिनहींचले । गरजत्तभे रिसिसों भले ७३ ॥ पुनि दैत्यकोप महाठयो । असि चर्मलै लरतो भयो ॥ तब श्याम मारतभे गदा । परिकै उठ्यौ भरिकैमदा ७४ ॥ पुनिमूकसो हरिकों हनो । गरजत्त घोर भयावनो ॥ सहिताहि श्याम रहे खरे । उरबीच क्रोध महाधरे ७५ ॥ हिरण्याच्च के सब युद्धकों । सुरइन्द देखहिं शुद्धकों ॥ जयजयकहैं नंदलालकी । जय होइ दानवपालकी ७६ ॥ हरि जोरसों उरमैं मग्यो ।

करिबे सुमायहि सोलह्यो ॥ तिहिकाल सङ्करठोरमैं। तम पूरिगो सबओरमैं ७७ ॥

हरिगीती ॥

सब ओर मैं तम पूरिगो गरजन लगे घनघेरिकै। पादप उपल गिरिशृङ्ग निशिचर तर्जनलागे टेरिकै ॥ धरुमारुधरु धरु मारुधरुधरु मारुधुनि दिशिभरिरही। बौछारश्रोणित पीयमदिरा मूचकी अतिपरिरही ७८ ॥ योगिनी डाकिनि प्रेत साकिनि अट्टहास पुकारहीं। नृत्यहिं रुधिर खप्पर भरहिं गावहिंमहा खलकारहीं॥ मायामयीसुरमनुजकहं गहिखाहिं कोटिन निशिचरा। जिमि बैर गाजर गावजन कड़कड़ शबद दशदिशिभरा ७९ ॥ सहमच्च उड़हिं पहार पादप सिंह बज्रबिधि डोलहीं। गज्ज भच्च गज्जगज्ज भच्च प्रतच्च दानवबोलहीं ॥ अतिशब्दपूर्यो धरणि डोलति गिरति तड़िता जोरसों। सातज्ज समुद्र उमगिड बोरत बसुमती सबओरसों ८० ॥ इमि देखिमाया असुरकी सब देव उरअतिदुखमए। ब्रह्मादि जयजयकार करि भगवान सों भाषतभए ॥ इहिविधिय बेगिज्जपालसंध्याकाल दारुण आवतो। जोजोरअतिहीघोरआसुरअङ्गबीच बढ़ावतो८१॥

दो० सुनिहरि चक्रहि सांगिकै मायादीन्ही नाशि।
बज्रहि सामुहें होयकै गरज्यौ खलबलराशि ८२ ॥

चौपाई ॥

बिबिधभांतितें करै लराई। प्रगटै दुरैदुरै प्रगटाई॥ अमित शस्त्रतें करैप्रहारा। कहतकि अब इहि मारामारा ८३ ॥ बज्रहि गदामारेसि बलबरतें। कौमोदकी गिरीहरिकरतें॥ लखिदेवन कियहाहाकारा। अब न बचतयह दैत्य पुकारा ८४ ॥ बनचर धरम समर हम करहीं। नहीं निरायुध के संग लरहीं॥ पकरुगदा लरु अभय अधरमी। मायावीमग कुत्सित करमी ८५ ॥ तब लीन्होकर गदाउदारा। हरिहि तमकि खल मूका मारा॥ केशव झपटि केशगहि लीन्हों। पटकि मारिपद अरिवधकीन्हों ८६ ॥ मरा अप्राणधरा।

पर सोई। अमरनतें अजेय अतिजोई॥ छूटे केश भरा तन सोहइ। भूषण गिरे भरे रज सोहइ ८७॥ झाटक लोचन बध लखि सगरे। बिधि हरादि सुरमुनि गण अगरे॥ करकरि कमल कलीके रूप। लागे अस्तुति करनअनूप ८८॥

दो० जयबराह जयदैत्य हर जयजनेश जगदीश।
करिसुकृपा असुरहि हत्यो तुमकहं बन्दत ईश ८९॥

प्रमाणिका॥

नमामि शुक्ल शूकरं। धराधरं कृपाकरं॥ नतोस्मि चक्र धारिणं। सुरद्विषांत कारिणं ९०॥ बिरञ्चि शंभु सेवितम्। श्रियार्चितं श्रियान्वितं॥ मुकुन्द मब्ज लोचनं। अघौघवृन्द मोचनं९१॥ समस्त कार्य कारिणं। नतोस्मि भूमिधारिणं। हिरण्य नेत्र खण्डनं। नमामि विश्व मण्डनं ९२॥ हिरण्य कोटि नायकं। भजामि मुक्ति दायकं॥ पवित्र कीर्त्तनं विभुम्। परात्परं परंप्रभुम् ९३॥ जगन्निवास मच्युतं। अनेक पार्ष-दैर्युतं॥ सरी अपास नाशनं। मरीचि पौच नाशनं ९४॥ गणेश्वरा तपीश्वरैः। बिरञ्चिमा फणीश्वरैः॥ प्रपूज्य पाद पङ्कजं। नमाम्यहं बिराडजं ९५॥ परेश्वरं गदाधरं। बरेण्य मच्चरंबरं॥ भुजङ्ग शायिनं परं। नतोस्म्यहं दयाकरं ९६॥ दुरंतबीर्य बिक्रमं। त्रिलोकपं त्रिबिक्रमं॥ महीधरं महा-ष्टतिं। नमामि शूकराकृतिं ९७॥

दो० इमि अस्तुति अमरनकरी बारबार पदबन्दि।
अन्तरध्यान भयेहरी तेगृहगये अनन्दि ९८॥
इमि बरण्यो बाराहको जन्मजगत सुखरूप॥
सुनिपढ़ि धरि तरिहैं मनुज भवमहान भयकूप ९९॥
श्रीगोपीजन बल्लभ बल्लभबल्लभ नाम।
तिनकी किरपाहोतभो यहहरिचरित ललाम १००

सो० गङ्गानिकट पियास खोदत कूपहि बढ़ि हत।
हरितजिगिरिधरदास अपर अमरकहंजोभजत् १०१॥

इतिश्री गिरिधरदास बिरचितं बाराह कथामृतं समाप्तम्॥

अथ नृसिंह कथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

श्रीवल्लभ आचार्य के सुमिरत पङ्कजपांय।
कृष्णभक्ति सुरभी उदय शोक मोह भ्रमजांय १ ॥
दीजे गिरिधरलालए सन्तत सुखदस्वरूप।
करिहैं कृपाकृपाल अति जानिपरयौ भवकूप २ ॥
अघअङ्गज गजयूथपर नरहरि कर हरिनाम।
सुनिगर्जन हरिजनन सुख स्यामहिंतन बनठाम ३ ॥
कनक नयन जब मरिगयो सोसुनिके जनकान।
दिति आदिक नारिन तहां कीन्हो रुदन महान ४ ॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण कनककशिपु चलिआयो। अबलन कहं बहु ज्ञानबुझायो ॥ औरन कहत आपनहिं जानत। ताकों बुध जन असुर बखानत ५ ॥

छप्पय ॥

करम बिबशह्वै देहरहै जनमैनसिजाई। मिले तत्त्व महं तत्त्वजीव यहअमर सदाई ॥ दहैबहै नहिं मरैजरै नहिं घटै न बढ़ई। बैठै नये शरीर पुराने कहं तजि कढ़ई ॥ यासों नहिंशोचन जोगहै जनम मरण जग जनन कर। धरिधीर काज चाहिय करन सोइ स्वारथ यश जोन बर ई ॥ मरण रहित ज्यौं जीवदुःखकेजोगन तौहै। तौहूकाको शोच मरै जनमैनितजौहै॥ जानहिं आगे रह्यौन अब धरणीपरसोहै। बीचभयो अरुगयौ शोचनहिं ताकोसोहैं। जेजन जनमे तेमरहिंगे तिनको सोचहटथा करव। यहअतिअसार संसार मैं किम्मत सोइ किम्मत सरव ॥ ७ ॥

दो० मेरो भाई सूर अति मरो समर चढ़ि जोन।
सब प्रकार तें हेति औ सोचन जोग मन तोम ८ ॥

सो० इमि तिन कहं समुझाइ सदन आइ कंचन कशिपु
बोला असुर बुलाइ ज्ञान भुलाइ दइत्यदिपु ॥ ९ ॥

सवैया ॥

बिष्णु वध्यो बनि सूकर भ्रातहि मारउंगो तिहि मैं अवतातें। जाइ करौं तप पर्वत पैं बरलेउंगो इच्छित बिश्व पितातें। जीतिनते तुम बीर सबै यह रजउ राज इतैमघवातें। देउं मैं ताहि हरो रुधिरांजुलि स्वर्ग में मोद गहै अतिजातें ॥ १० ॥

दो० ब्राह्मण बैष्णव बेद गो बिष्णु मूल ए चारि।
इन कहं नाशेउ आपु हौं हौं इन अनुजारि॥ ११ ॥

चौपाई ॥

इमि कहि तौन गयो तप करण। सोचेसि अज अच्युत करमरण ॥ मन्दर सुन्दर परवत बरपै। धूप सलिल सीतहि सिर अरपै १२ ॥ ऊरध भुजा अहार विहीनो। एक अंगुष्ठ अधारहि लीनो ॥ इमि तप करत काल बहु बीत्यो। तेज प्रभावकाल बिपरीत्यो १३ ॥ व्याकुल कंपति कम्पति धरणी ॥ धूम सहित अति दिशा बिवरणी ॥ दिनकर निशिकर तेज बिहीन। दिशाद्विरद चिकरहिं अति दीन १४ ॥

दो० तब सब सुर बिधि पैं गए जाइ कह्यौ बिरतांत।
राज करत तपधरतहुं दनुज दुखद जगकांत ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

तातें ऐसो करउ बिधाता। जामेंबनै सकल विधिबाता ॥ तबबोले ब्रह्मा बिबुधेशा। इच्छितहोइन करउ अंदेशा ॥ १६ ॥ लैपुचनकहं चढ़े मराल। गे तप तजि तहं दानवपाल ॥ लख्यो अचंल अप्राण समसोई। गिरिउ शृङ्ग उन्नत भुज दोई १७ ॥ करतें छिरकि कमंडलपानी। बरहि बरउ बिधि बोलेबानी ॥ तब सो ह्वैसचेत पद परो। हाथजोरि बोलो सुदभरो १८ ॥

तोटक ॥

तुम पालउ घालउ नाथसबै। बिरचौ थिर थापउ हाथ सबै ॥ जग कारण काल स्वरूप प्रभू। परमेश्वर दीनदयालु

.मू १८ ॥ ५८.८ पिता महदेवपती। सब आदि अनादि महान मती ॥ अज अच्युत अव्यय ईश विधी ॥ करुणाकर भाकर बुद्धि निधी २० ॥ अतिकीन्ह कृपा निजदास गुनी। सबके पुरुषा गुण दासि गुनी ॥ बर आपकहे यह मांगत हौं। गत मृत्यु सदा जग बीच रहौं ॥ २१ ॥

दो० अमर नहीं हमहीं अहैं तुमहिं करैं किमि तात।
सुनिविधिबचनहिंगुनिअसुरकहतअपुनिपुनिबात२२
नभमहि सुरनर पक्षिमृग अस्त्र शस्त्र दिनरात।
भीतर बाहर दशदिशा इनमें होइन घात २३ ॥
एवमस्तु कहि विधि गए ब्रह्मलोक अभिराम।
मुदितउदित तपतेज रविचलेउ असुरनिजधाम २४॥

चौ० कनककशिपु जब तपहित गयो। तबै इन्द्र इत आवत भयो ॥ देवन सह दुन्दुभी बजाई। जीत्यो सकल असुर समुदाई ॥ २५ ॥ तहां हिरण्यकशिपु की नारी। गर्भवती दुतिवती निहारी ॥ ता तिय कहं लिवाइ निज साथ प्रमुदित चले सदन सुरनाथ २६ ॥ मगमहं मिले ब्रह्मसुत ज्ञाता। हंसिबोले वासव सोंबाता ॥ किहिहित लियेजात परनारी। बोले सुनत शक्र व्रतधारी २७ ॥ याके गर्भ महा दुति बालक। ह्वैहै विबुध वंश को घालक ॥ तातें लिये जात परनारी। बोले सुनत शक्र व्रतधारी २७ ॥ याके गर्भ महा दुति बालक। ह्वैहै बिबुध वंशको घालक। तातें तिहि नसाइ सुनिराई। तजिहौं तियहि यथा दुखजाई २८ तब नारद बोले यह बाता। याके गर्भ कृष्ण जनत्राता ॥ जौकरिहै ताकर अपकार। ह्वैहै सत्यानास तुम्हार २९ ॥

दो० सोसुनि वैष्णव जानिकै करि प्रदक्षिणासात।
वन्दिचरणनिज घरगये सुरपति मति अवदात ३० ॥
नारद के घर सोरही साधु कयाधू नाम।
ताते मुनिवर हरिकथा कथहिंपरमअभिराम ३१ ॥

प्रमाणिका ॥ ॥

कथा सबै गुपालकी। विनासनी जंजालकी ॥ कुमार सो

सुन्यो करै। प्रियासों हियेधरै ३२॥ कयाधु नारि सुद्धिसों। दई उतारि सुद्धिसों॥ तबै दइत्य आइकै। गयोघरै सिवाइकै ३३॥ बतीनको बुलाइकै। बहुधिनी सजाइकै॥ महानको प्रछाइकै। सुदुन्दुभी बजाइकै ३४॥ चलोकराल कालसो। बतीन मैं बिशालसो॥ प्रचण्ड तेज सूरसो। धरे लसत्त सूरसो ३५॥

दो० घेरिलियो अमरावती करत भयानक राव।
तिनिवारण बन घेरई सदन महा म्रग राव ३६॥

छप्पय॥

विप्रचित्त अरु नमुचि प्रमुचि घन रुचि वृषपर्वा। शंकु सिराखल राज पुलोमादिक संगसर्वा॥ अट्टहासकरि झट्ट भट्ट रस डमदाये। प्रकरि प्रकरि कै जकरि जकरि देवन कहं ल्याये॥ रवि मरुत मरुत पति विधु वरुण यमकृशान धनदादि कहं। तब के प्र सहित कञ्चन कशिपु कीन्ह्यो अति दृढ़ बंदि महं ३७॥

कवित्त॥

समर उद्दण्ड बरिबण्ड चण्ड भुजदण्ड लाग्यो नवखण्डराज करण घमण्डसों। मण्डन अखण्डलोक मण्डलको महातेज ग्रीषमके भीषम मध्यान्ह मारतण्डसों॥ चलत हलत जाके जगतो दलत शेष डरैं तीनलोक बासी योकजो प्रचण्डसों। कञ्चन कशिपु रिपुदवन दइत्यदिपु पूस्यो परताप दापबढ़ ब्रह्मण्डसों ३८॥

दो० लैत्रिशूल हरि पुरगयो तप गुण रमा निवास।
अखखरहे ता अङ्ग महं म्रग म्रगमद समयास ३९॥

चौपाई॥

॥ घूमि घूमि सो तीनउ लोका। अवलोके नहिं हरिहि विलोका॥ जान्यो मम भय रिपु मरिगयो। मुदित धाम निज आवत भयो ४०॥ भये सुवन प्रह्लाद सुजाना। परम भागवत तेज निधाना॥ पढ़न जोग सुतकों गुणि राजा। भै बैठावत पढ़िवे काजा ४१ संडा मर्का शुक्र कुमार। बैठे

सो तिनके चटसार ॥ जहं बालक बज्र असुरनकेरे । पढ़हिं नीति अरु शास्त्र घनेरे ४२ ॥ तहं प्रहलाद सहित अह्लाद । हरि गुण गावत विगत विषाद ॥ जब गुरु जाहिं तबै सब तजनो । सबन सिखाय आप हरि भजनो ४३ ॥ इक दिन लीनों पिता बुलाई । बोलो बचन गोद बैठाई ॥ तात पढ़ज्ञगुरु जौन पढ़ायो । सुनिकायाधव बचनसुनायो ४४ ॥

दो० श्रवण कीरतन सुमिरिबो सेवन अरचन जानि ।
बंदन दास्य सखापनो आत्म निवेदन मानि ४५ ॥
भक्ति कीजिये कृष्ण की अहै जन्म फल एज्ञ ।
पितातुमज्ञंहरिकहंभनज्ञसमचितसहितसनेज्ञ ४६ ॥

चौपाई ॥

सुनि सकोप सुत भूमि उपारी । कहत भयो यह वचन मुरारी ॥ रे यह काह पढ़त तैं पापी । किमि मति दुखद तोहि यह व्यापी ४७ ॥ इमि कहि दीउ गुरु सुवन बुलाई । कहत असुर वर वचन रिसाई ॥ कहा पढ़ायो या अज्ञानिहिं । तेतव कहत भए सुनि बानिहिं ४८ ॥ जाने कौन कहां यह सीखा । हमन कहा न कुसंगज्ञ दीखा ॥ आपपढ़ै अरु सबनपढ़ावै । दिनदिन दूनी भगतिबढ़ावै४९॥ कहादैत्यपति पुनिलैजाहू । शिक्षज्ञ सहितजतन अरुचाहू ॥ तबतेलायपढ़ावनलागे । नहि प्रहलाद पूर्वगुणत्यागे ५० ॥

दो० गुरु सुत पूछेउ हे सुवन काकी यह मति दुष्ट ।
तोहि भई कुलनाशिनी परम हृदय महं पुष्ट ५१ ॥

तोमर ॥

सुनिकै हंसे प्रहलाद । गुरुज सुनौ सहलाद ॥ सबमध्य व्यापक तौन । परब्रह्म श्रीहियरौन ५२ ॥ विधिशंभुपूजहिं जाहि । गुण शेष गावत चाहि ॥ असको महा अघभौन । हरि को भजै नहिं जौन ५३ ॥

छप्पय ॥

बारिबुन्दतैं प्रथम उदर महंदेह बनावै । माता भोजन साथ तहां भोजन पज्ञंचावै ॥ बज्ञरि बालकहि काढ़ि दूध

देवै करतारा । भरै उदर भरि जन्म अन्न आदिक व्यवहारा ॥ बरगरमम।हिं जीवत मरतजो रचत आठउपहर । तेहि कौन कृतघ्नी अधम नर भूलेहूप अति पापधर ५४ ॥

चौपाई ॥

सुनि गुरु कहा कहा यह ज्ञान । सुतहि जनक आयसु परिमान ॥ पढ़उनीति जो राजन केरी । इमि कहि लगे पढ़ावन फेरी ५५ ॥ गुरु जब जाहिं तबै कायाधव । लरिकनतें कहवावहिं माधव ॥ भजउ मुकुन्द जन्म फल एहू । वृथा न खोवउ कंचन देहू ५६ ॥

दो० अतिदुर्लभ नरदेह यह ता मंह है क्षण भंग ।
भजउ कृष्णभव भय तजउ सजउ अनूप उमंग ५७ ॥

भुजङ्ग प्रयात ॥

इही भांतिकोरानकों सो पढ़ावैं । पढ़ैं और विद्यागुरू जब्म आवैं ॥ बहोरौं बुलायो सुतै दैत्यराजा । भयेपूछते सोइ विद्याके काजा ५८ ॥ कयाधू दुलारे तबै यों उचारे । भजौ श्यामकों छोड़िकै कामसारे ॥ तबै कोपतेंपूरि पुचैसुपक्रयो । बधौरे बधौ याहि यौं दुष्ट बक्क्यो ५९ ॥

दो० चन्दन बनके बीच कण्टक तरु यह भो प्रगट ।
बधन जोग है नीच तातें करउ उपाय अब ६० ॥

छप्पय ॥

डास्यौ हिम गिरिगुहा माहिं तित कृष्ण उबास्यौ । गिरितें दियो गिराय तहां करपर प्रभु धास्यौ ॥ गरनहि कीन्हो असुर सरित जल ऊपर डास्यौ । व्याल व्याल दोउ भंगे न कोउ न बदन निहास्यौ ॥ अतिअनल माहिं नाहीं जरे असुरतबै चिन्तितभयो । धुवयाके बैर बिनाश मम पुनि बुलाइ सुत कहंलयो ६१ ॥

दो० गुरु पुचनतें इमि कह्यौ जब ऐहैं गुरुदेव ।
पाशि पाशतें बांधिहैं तौलौं तुम इहि लेव ६२ ॥

चौपाई ॥

पुनि ल्याये घर सण्डामरका । कह्यौ कि हम हैं सण्डा-

मरका ॥ धूमकरै तौ मरिहौं तोही । पढ़ु विद्यादानव कुल द्रोही ९३ ॥ पुनि प्रहलाद कीन्ह सोइ रहनी । कहैं सदा केशवकी कहनी ॥ गुरु पुचनराजातें भाषों । सेा सुतबोलि बचन अभिलाषो ९४ ॥ खंभ माहिं बांध्यौ बुधिरासी । कर महं बरकर बाल निकासी ॥ बोलो अरे कहां हरितोर । जा बलतें कूदत बरजोर ९५ ॥ कह प्रहलाद प्रेमके रासी । सेा सबके घट अन्तर बासी ॥ असुर भाव तजिकै असुरेश । भजहु जगत आधार रमेश ९६ ॥

दो० कह सेा अधमबताउ तेहि नत मैं मारत तोहि ।
सुनि करजोरे कहतभे बचन जनक सुखजोहि ९७ ॥
मोमैं तोमैं खड़ग मैं जहं जहं कह्यौ सुजान ।
तहं तहंतें निकरन चहे दीनबंधु भगवान ९८ ॥
खंभ माहिं कहि रहिगये तातें कढ़े कृपाल ।
माधव सुदि चौदस दिवस वैष्णव रिपु के काल ९९ ॥

छप्पय ॥

भयो भयंकर एव्द महान गगड़ गड़ गड़ डड । छूट्यौ खंभ द्वै खण्डकराल कड़ड़ कड़कड़ डड ॥ कट्यौ कोटिरवि तेज झमकि झझाड़ झड़ झड़ डड । भगे दनुजगण देखि स्वरूप ससड़ सड़ सड़ डड ॥ भड़भड़ ढभ डड परबत गिरहिं हड डह डड हाली धरणि । अहि कमठ कोलक थरि थर थरे भये तेजतें हत तरणि १० ॥ बिकट बदन अति रदन केश पविवेश चमकत । खड़े कान दृग अरुण अगिन चनगारि बमकत ॥ खहलहाति बरजीह दीहतर नाद मरज्जत । गर्भ गिरत सुनि तौन असुरके हृदय लरज्जत ॥ करि अट्टहास हरि झट्ट तब कूदि खरेहोते भये । लखि अद्भुत दैत्य समूह धरि माथ हाथ रोतेभये १९ ॥

दो० नहि नरनहिं केहरि निरखि अचरज सहगुणिकाल ।
हेरि गदा मारतभयो तदा असुर बिकराल १२ ॥
बज्रहि धारि असि चर्मकहं कहतभयो यह बात ।
अरे चोर मम बंधु रिपु अबनहिं जीवत जात १३ ॥

हरिगीती छन्द ॥

नाहिं जात जीवत भाषिकरिकै पैतरे चलतो भयो। गहिलीन हरि हरि अजहि जिमि टूकबार कढ़ि छलतो भयो ॥ पुनिपकरि संध्यासमय बैठेद्वार अति रिसितेंछये। निज नखन उदर विदारि शोणित तासु प्रभुपीवतभये १४॥ गरडारि आंतरि उदर ढूंढत और सुत प्रहलादसो। निरखत खरे दृग जलभरे प्रहलाद सो अहलाद सो ॥ सुरदेव किन्नर यक्षअहि विधि शंभु जय जयकरि रहे। पैकोप लखि अतिदुसह मनमनमाहं सिगरे डरिरहे १५ ॥

दो० समैसमै सुरविप्रगण सनसुख सकहिं नजाय।
परम कोप लखि नृहरिको खड़ेरहे शिरनाय १६ ॥

चौपाई ॥

तब लक्ष्मी आईं तिनसाथ। देखेउ नाथ महा रणनाथ॥ भागीं समय धाम अकुलानी। नहिं मम पति यह पंकज पानी १७ ॥ तबै सबन प्रहलाद बुलायो। क्षमा करावन आपिपठायो॥ जादूचरणपर धरिनिजमाथ। कहप्रहलाद जोरि युगहाथ १८ ॥ नाथ न मोहिंसमरथ अस्तुतिकी। कृपाकरन नरहरि अतिदुतिकी। कहंमैं असुर मूढ़ शिशु स्वामी। कहंतव कृपा कृपाकर नामी १९ ॥

दो० लियउठाइ उरसाइप्रभु पुनिपुनि चुम्बतमाथ।
परमप्यारकरि मनुज हरि फेरत तनपर हाथ ८० ॥

सो० मांगउ वरमनभाव कह्यौ कह्यौ प्रहलाद तब।
प्रभुसो बनिकगनाव जो दासहि देवैचहै ८१ ॥

चौपाई ॥

इच्छा सहजो सेवकहोई। व्यवहारी जगजानियसोई॥ नहिं इच्छामांगनकीनाथ। सुनिहरि हंसेबालकीगाथ८२

दो० तोहितौइच्छानहिंअहै पै ममइच्छामांग।
तब बोले प्रहलादजूदीजैपद अनुराग ८३ ॥

चौपाई ॥

यहतौ अहै याहिका मांगै। पुनि गुनि मांग नीक जे

लागै ॥ कह कायाधव जनकहमारो। अतिपापी पुनि शत्रु तुम्हारो ८४ ॥ ताकीगतिहोवै सोकीजे। यह बरदान दीन हित दीजै ॥ हंसेन्द्रसिंह कही यह बाता। इकइस पुरुषा तरिगे ज्ञाता ८५ ॥ जाकहं तुमसो होइ कुमार। ताकहं मुक्त होत काचार ॥ तब सबसुर प्रहलाद बुलाये। नर के हरिके सनमुख आये ८६ ॥ ब्रह्मा शंभु सूर बागीश। इनहिं आदि सिगरे सुरईश ॥ करिकरिकै प्रणाम करजोरी। लागे अस्तुति करन अघोरी ८७ ॥

हरिगीती ॥

जय जगतजीवन नरहरे जनदुखहरेकरुणाकरे। दानव दरे परमा भरे प्रहलाद पति सबसों परे ॥ जगदीश रूप अनन्तवेद भनन्त शंत शिरोमनी। अघहरण आनंद करण पोषण भरण जय त्रिभुवनधनी ॥ ८८ ॥ यह असुर परम कराल सबकहं देतदुखअतिही रह्यौ। तिहिबध्योप्रभु करि कृपा अबसब जगत वर आनंद लह्यौ ॥ जब नव परत अति भीर तबहिं शरीर केशवधरतहौ। जिमि जनन कहं सुख होय सोविधि विश्वपालन करतहौ ८९ ॥

दो० इमि देवन अस्तुतिकरी हंसे देवशिरताज।
ब्रह्मातें बोलतभये देहुकुमारहिराज ९० ॥
तुमकहं इच्छा नाहिं सुत पै मम इच्छासाथ।
मन्वन्तर लगि होहुगे सबदनुजनके नाथ ९१ ॥

सो० इमिकहि कृपानिधान श्रीन्द्रसिंह खलबलदरण।
द्वैगये अन्तरध्यान हरबिरञ्चि बन्दित चरण ९२॥

चौपाई ॥

तब बिधि बिधितें सबन समेता। राज तिलक कीन्हों जगनेता ॥ मंची करिकैभाईतीन। ब्रह्मलोक चलिगयेप्रबीन ९३॥ भोगिएकमनुलौं जगस्वाद। हरिपुरजातभयेप्रहलाद॥ लागेउ करन बिरोचन राज। जीति धरम सों अमर समाज ९४ ॥ पुनि सुरसकल कृये छलभारे। बिप्ररूप बनि जाय पुकारे ॥ धरम निधान बिरोचन तबहीं। आदरदीन

जानिरिपुसबहीं ९५ ॥ मांगऊ द्विजगण इच्छाजोई। संशय रहित देव हमसोई ॥ कपट बिप्रसुनि बोले बैन। प्राणहिं देऊ सत्यके ऐन ९६ ॥ सुनि सो सत्य बचन तजि दीन। तब बलिबालक रहेप्रबीन ॥ भरे बिरोचनके सुरहरषे। इन्द्रहि थापि सुमन बर बरषे ९७ ॥ इमि नृसिंहकी जन्म कथाहै। जामें हरिजन चरित कथाहै ॥ बेदपुराण महान मथाहै। हरि सुमिरन बिन सकलवृथा है ९८ ॥ जिमिजीवन जीवन लाजावन। तिमियह कथा चहिय नितपीवन ॥ बिननिरखे हरिपद राजीवन। पारलहै किमि नर दुखसीवन ९९ ॥

दो० जो दयाल प्रहलादहित नरहरिभये मुकुन्द।
तिनकहंतजि औरहिभजै क्योंरेमनमतिमन्द १०० ॥
माधवको प्रियमासहै माधव उज्जल पक्ष।
चौदशदिन भाषाकरी कृष्ण कथा यहस्वच्छ १०१ ॥
कथाकहत सुमिरत सुनत होत पापकी हानि।
उरमें श्रीनरहर बसत कृष्ण कृपाकी खानि १०२ ॥

सो० सुखमें नरहरि नांव गुणगिरिधर गुण रासिके।
गुरु गिरिधरके पांव हैं उर गिरिधर दासके १०३ ॥

इतिश्री गिरिधरदास बिरचितं नृसिंहकथा मृतं समाप्तम् ॥

अथ कच्छप कथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

पदपंकज भगवानके षटपद वल्लभलाल ।
ममसुहृदय हृदमहं बसऊ सदासुजान कृपाल १ ॥

कवित्त ॥

भवसिंधु सिंधु जीवमन्दर महानगिरिकर्मबासुकी तहां लसै द्विजिह्व रच्छहै । ताकोसुख पापपुण्य पुच्छअतिसुच्छम है बासना दुबिध दैत्य देवता प्रतच्छ है ॥ सुधा सुख काज है समाज दोऊ यूथन को गिरिधर दास तहां निज निज लच्छ है । बूड़त उधारन कौं शैल बरधारन कों लच्छन ललाम नाम कच्छपको कच्छ है २ ॥

सो० करनचहतयशचारु कछु कछु चा भगवान को ।
करिहैं नन्दकुमार अपने चरित महान कों ३ ॥

चौपाई ॥

एकबार मुनिवर दुर्बासा । चलेजात मगमा सतआसा ॥ देख्यो इन्द्रहि बैठो व्याल । डारी कंठ सुमन की माल ४ ॥ लैतेहि इन्द्र गर्ब अधिकाई । माल सुंडाल कंठ पहिराई ॥ ऐरावतउतारि तेहिताहीं । पदतेंचूरकरी महिमाहीं ५ ॥ सो लखि सुमुनि शाप यह दीनो । रेमद मत्त होसि धन हीनो ॥ ताते सकल भये बिन कमला । रिपुन तबै जीत्यौ करि हमला ६ ॥ होइइन्द्र सहसुरन उदास । गेपितु जनक जनक के पास ॥ करि करिकै प्रणाम लैनामा । कही दसा निज दुखकी सामा ७ ॥

दो० बानी सुनत बिचारिकै कहत भये सुखचारि ।
सुनऊ देव यहि भेवको मैं नहिं सकत उचारि ८ ॥

छप्पय ॥

करन धरन बर भरन हरन सब जगत अचर चर । परम

धरम धर बरद दरद हर सरम करम घर ॥ तन मन मथ मन मथन अनघ अघ दहन अमर पर। हर अज नतपद कमल अमल जसरत मय नग धर ॥ दरशत सत भव भय नशत हरष लसत मन सकल क्षण। लख कल मख मरदन कपट हन दर धर जन अशरण शरण ९ ॥

दो० चलऊ पास करतार के कहिहैं सोई उपाय।
विन उनके जग कोउनहीं जो अबहोइ सहाय १० ॥

छप्पय ॥

सत्य अविक्रिय आदि गुहाशय तर्क विहीना। निष्कल मनते परे भरे गुण प्रभु कालीना ॥ प्राण बुद्धि इन्द्रित्य नर मत नितर हित सुदूनतें। सब जुग प्रगट ब्रजेश अगुण गुण गुणित गुणिनते ॥ भव अखिल चक्रव्यापक बरद जग कारण धारण करन। अज अति अनादि अरविन्द पद वासुदेव हमतुव शरन १२ ॥ एक वरण तम परे लोक जहं विलसहिं योगी। योग गम्य योगीन्द्र थक्यो गुणगावत भोगी ॥ जाकी माया जगत मोहि लीनों सब भारी। अरिजित निर्जितअजित अजितपदलोकबिहारी ॥ हमशङ्कररविअहिपति रमानहिं जानत जगदीश गति। हेहे मुकुन्द हमतव शरण शैल धरण सुख करन अति १३ ॥ ब्रह्मरूप जग भूप अखिल ब्रह्माण्डरूपधर। चरण धरणिगुण धरणि अहै तव भक्त हृदय घर ॥ कियेप्रकट दिकपाल करण लीलालताम कर। महा विभूति स्वरूप पूत मति धूत पाप वर ॥ मन तुमरो सो मन क्षुपति द्विजपति औषधिपति परम। हे माधव हमसब तुव शरण धीरधनी धारण धरम १४ ॥ तुमरो मुख क्षुतबाज नाज स्वाहा कर जोई। सब अन्तर आसीन अमर नर जीवन सोई ॥ नैन तुम्हारे सूर रहे जो पूरि जगत महं। नारायण विख्यात करत अरु हरत सृष्टिकहं। बरवायु प्राण तव प्राणपति सकल प्राण को जानवर। हे हरि परब्रह्म विभूति धर कृपाकरऊ त्रैलोक पर १५ ॥ है तुवनाभि अकाशप्रकट सबभूत निवासी। दिशाकरण वरण

हरण दुख आनंद रासी ॥ तव बल बासव प्रगट देव तुम्हरे पर सादन। बुधि विरञ्चि मन शंभु विज्ञ पूरण अहलादन ॥ उरते मदुमा छाया पितर आगेतेप्रगट्यो धरम। तुव पीछेते अधरम भयो करुज्ञकृपा केशव परम १६ ॥ विप्रबदनते प्रगट छत्रपति भये करनते। उरुतें प्रकटे वैश्य तुम्हारे शूद्रचरणते ॥ लोभ अधरते प्रगटअपर अंगन कामादिक। रोम रोम ब्रह्मण्ड विदित वेदन मरजादिक ॥ भुव अखिल लोक गण थोकके पालक घालक विशद मति। बर करुज्ञ कृपा कोदण्ड धर वासुदेव सब देवपति १७ ॥ अलख अमर पर प्रवर परावर हरण मोहमद। करुणासिंधु दयालदीन के बंधु कृपाहद ॥ निर्गुण सगुण स्वरूप असुर अर्दन अनन्त अज। ध्यावतजाकहं नित्य न पावत पारशंभु अज ॥ जिमि इक्ष मूल पानी दये हरित होत फल पच गन। तिमि तव सेवनते सकल सुरहोत अतिहि संतुष्टमन १८ ॥ दरशदेहु जगदीश दीन हित द्रवहु दयाला। हम सब तुम्हरे शरण करण शरणागत पाला ॥ मधुर वैन सुख ऐन जैन अरि नैन विशाला। महादेव विधि आदि देवके देव कृपाला ॥ जन दुखहि हरहु सुख विस्तरहु कृपा करहु दायकसरम। आनन्द कन्द गोविन्द हरि जयमुकुन्द धारण धरम १९ ॥

दो॰ इमि अस्तुति सुनि सुरन की सुर मर्दन गोपाल।
प्रगटे तिनके बीचमें नीरज नयन विशाल २० ॥

चौपाई ॥

भरत प्रकाशनतें सब आसा। जिमि उदये बहुप्रभानिवासा ॥ तब विधि शंभु लख्यो हरिरूप। मरकत मणिसम अतिहि अनूप २१ कंचन वरण बसन बर धारे अमल कमल से दृग रत नारे ॥ कुण्डल मुकुट भरत दिसि ज्योती। तन घन मह्यं उड़गण सममोती २२ ॥ कौस्तुभ कण्ठरमा पुनि छाजति। हारकतार सुटार बिराजति ॥ शंख चक्र आदिक वपु धारे। सेवहिं हरिहि पार्षद भारे ॥ २३ ॥

दो॰ सर्व सुरन सह सर्व विधि करि साष्टांग प्रणाम।

हाथ जोरि करते भए स्तुति अमल ललाम ॥ २४ ॥

मञ्जिका छंद ॥

जन्म मृत्यु बर्जिताय । हर्षसिंध बेऽजिताय ॥ मोक्ष दा-
यिने शुभाय । नौमि पाणि पंकजाय २५ ॥ वेद वेद्य बिग्र-
हाय । भक्त भाव संग्रहाय ॥ योगि वृन्द पूजिताय । नौमि
शास्त्र कूजिताय २६ ॥ आदि मध्य गांत गाय । माधवाय
केशवाय ॥ दीन दुःख मर्दनाय । नोम्यहं जनार्दनाय २७ ॥
विश्वविश्व कारणाय । बिश्व भाव धारणाय ॥ दीन दुःख
दारनाय । नौमि पाप हारणाय २८ ॥ निर्वि तर्क बिग्र-
हाय । शंकरार्क शक्रपाय ॥ नित्यकेलि तत्पराय । नौम्हहं
परात्म राय २९ ॥ शंभु शेष बंदिताय । श्री हराज नन्दि-
ताय ॥ नारदादि संस्तु ताय । नौमि देव पाहुभुताय ३० ॥
विश्व धारिणे स्वजाय । पन्नगाशन ध्वजाय ॥ श्री सुखाब्जष-
ट्पदाय । नौमिसं सुखप्रदाय ३१ ॥ देव दुःख नाशनाय ।
दिव्यपंक जासनाय ॥ कौस्तुभा भि भूषिताय । दूषणैरदूषि-
ताय ३२ ॥ मंगलानु मंगलाय । चारु लोचना व्ययाय ॥
शंखचक्र राजिताय । नौम्यहं पराजिताय ३३॥ अण्डकोटि
मण्डनाय । शोक वृन्द खण्डनाय ॥ कर्म कारणा मलाय ।
नौमि भक्त वत्सलाय ३४ ॥

दो० इमि अमरन की बिनय सुनि गुनिकै रमा निवास ।
बोलेबाणी मधुर अति करत मनोहर हास ॥ ३५ ॥

चौपाई ॥

हे हर हे बिधि हे सुर भारे । सुनऊ बचन मम निज
हित धारे ॥ देश काल गुनि कीजै काज । जामें सुख पैये
महराज ३६ ॥ करऊ संधि तिनतें सुरनाथ । साम उचित
प्रचण्ड अरिसाथ ॥ पूरब एक रह्यौ अहिकारा । बंदभयो
सो बीच पिटारा ३७ ॥ बाहर देखि आखु हरषाने । तब
तिनसों अहि बचन बखाने ॥ हमतुम मित्र होयंगे भाई ।
जन्म जन्म की मिटै लराई ३८ ॥ काटि पिटारा काढ़ऊ
मोंही । जानऊ हमें मित्र नहिं द्रोही ॥ मूसन करि इक-

रार निसारा। तब तिनको अहि कीन्ह अहारा ॥ ३९ ॥ इमि रिपु प्रबल देखि मिलि जैये। समय पाइ तिहिहति जय पैये ॥ तिन तें मिलि कै मथऊ नदी पति। तबहिं सुधा प्रगटै है अति मति ॥ ४० ॥

दो० सेा हम तुमहिं पिआइ कै अमर करहिंगे एव।
तबतुम पैहेा जीति कहं हरिहैं सकल अदेव ४१ ॥

सो० इमि कहि कृपानिधान अन्तर्धान प्रभू भये।
तब निज निज स्थान गये संभु बिधि सुखमये ४२ ॥

चौपाई ॥

सुर सब बिन आयुध तेहिकाल। मे चलि जित बलि-दानव पाल ॥ लखिकै मिलि बैठायोराजा। पूछेउ हंसिकै आवनकाजा ४३ ॥ इन्द्रकहा हम तुम मिलिभाई। मथहिं सिन्धु सरितन करराई ॥ तातें अमृत कढ़ैगो जबहीं। करिहैं पान तबहिं तेहि सबहीं ४४ ॥ ह्वै है अमर समरकहं करिहैं। सुखभरिहैं कोउ बीर न मरिहैं ॥ तब यह बात सबन मन भाई। मथऊ सिन्धु सम्मति ठहराई ४५ ॥

दो० दैत्यन भाख्यो प्रबल हम लैहैं सेा सुखमारि।
चलेदेउनहिं कामकाऊ निजनिजबातबिचारि ४६ ॥

चौपाई ॥

कस्यौ बिचार सबन अनुमानी। मन्दरगिरि की करऊ मथानी ॥ तब सुर असुर शैल ढिगजाई। साहस करि लै चले उठाई ४७ ॥ मगमहं नगके भार दराज। मरन लगे सुर असुर समाज ॥ सबन तबै कीनो हरि ध्यान। तिहि छण प्रगट भये भगवान ४८ ॥ मरे जिवाये नैनन हेरी। दीनबन्धुकरि कृपाबड़ेरी ॥ गिरिउठाइ करतें हंसिस्वामी। खगके पंख धस्यौ खग गामी ४९ ॥ बायेंपर सुर असुर समाज। दक्षिणपर परपरपर काज ॥ छण मैं लै तेहि उड़े खगेश। धस्यौ शैल छीरो दधिदेश ५० ॥

दो० राखि भाषिकै मथऊ इहि दीनबंधु भगवान।
बन्दित सब सुर असुरतें ह्वैगये अन्तरध्यान ५१ ॥

चौपाई ॥

तबै बासुकिहि मंथन काज। कह्यौ जाइकै उभयसमाज ॥ डोरीहोय नदीसमथीजै। प्रगटी वस्तु भागकहं लीजै ५२ ॥ सुनि बासुकी मोदसोंछायो। तिनके सायसिंधु ढिगआयो ॥ नाइ शैलकहं सागरमाहीं। अहि लपेटि सुरअसुरतहांहीं ५३॥ लगे मथनकी करन उपाई। कसि कसि कटि हरषे समुदाई ॥ हरिप्रेरित देवन सुखओर। गह्यो सर्पकहं अति सहजोर ५४ ॥ तब असुरन भाष्यो सोइरी। हम न पूछ गहिहैं अहिकेरी ॥ अहै अंग कोमल यह अंग। तातें हम सुख गहैं उतंग ५५ ॥

दो० सब बिधि हम तुमतें बड़े नीति धर्म बलबंस।
तातें तुम पूछहि गहब्रमथब्र सरित अवतंस ५६ ॥
सुनिदेवन सो मानिकै हरि मततें तेहि काल।
पूछपकरि लागेमथन सुख दिसि असुरकराल ५७ ॥

चौपाई ॥

मथहिं सिंधुभरि जोर अपाने। अहि सुखज्वाल असुर घबराने ॥ तेहि छण तिनके मथत तहांहीं। मन्दरचल्यो समुन्दरमाहीं ५८ ॥ सो लखिदेव अदेवपुकारे। चाहि चाहि कृत कृपा मुरारे ॥ सो सुनिबाणी आरत तितकी। शिवा शिवा तिथि जेठ असितकी ५९ ॥ कूरमरूप भस्यौ भगवान। योजन लाख पीठ परमान ॥ नीचेतें शैलहि उद्दास्यौ। उठ्यौ देखि सबहिन सुख धास्यौ ६० ॥ लागे मथन महोदधिभारे। सुधी सुधाकी आसाधारे ॥ तेहि छण ब्याकुल भे भट दोऊ। मथिन सकतभे सागर कोऊ ६१ ॥

दो० मेघ मंद बरषन लगे शीतल चली बतास।
मथि बहोरि थकतेभये पूरी सबन हरास ६२ ॥

सो० सहस भुजा कहं धारि प्रगटे तब सुरथांगधर।
चारि बदन त्रिपुरारि स्तुति बरणहिं बुद्धिबर ६३ ॥

चौपाई ॥

मेघ बरण पीतांबर धारे। बिलुलित कच लोचन रत-

नारे ॥ प्रकरि दुइं दिशि सों अहिराजहि। मथत नदीश करण सुरकाजहि ६४ ॥ मथतमहो दधि भूष अकुलाहीं महा शब्द पूर्यो भुवमाहीं ॥ प्रगट्यौ प्रथम भरत दिशि ज्वाल। जहरलहर बाहर तेहिकाल ६५ ॥ लखिकै ताहि डर्यौ त्रैलोक्य। भारी भयो सबन कहं शोक ॥ भरी व्योम लों ताकी ज्वाल। कंपे दिसन सहित दिशपाल ६६ ॥

दो० तब सब सुर मिलिकै गये लये बिरंचिहि साथ।
भवभवानि कहं नौमिकै कहतजोरि दोउहाथ ६७ ॥

प्रमाणिका छन्द ॥

नमामि शूल धारिणं। समस्त बिश्व कारिणं ॥ शरण्य मंधकांतकं। कृपान्वितंकृतान्तकं ६८ ॥ सुबंधमोक्षरूपिणं। परात्पर स्वरूपिणं ॥ अशक्ति बिघ्न मण्डनं। कृताप पाप खण्डनं ६९ ॥ भवाभिभाव भावनं। सदा भवाति पावनं। भवानिका बरं बरं। भवं नमामि शंकरं ७० ॥ बिराडनंत मक्षरं। जगत् स्वरूपिणं परं ॥ बर प्रदंशि बांवरं। नतोस्मि सिद्धिदं हरं ७१ ॥ भवं भुजंग हारिणं। प्रभुं पिनाक धारिणं ॥ खलांधकांत कारिणं। नमामिदुःख हारिणं ७२ ॥ निरंजनं सदा शिवं। शिवा प्रियं सदा शिवं ॥ परंशशांक शेखरं। नमामि सर्वदा हरं ७३ ॥ त्रिलोक शोक मोचनं। निशा करार्क लोचनं ॥ महा तमीश्वरंचरं। भजे शुभंदयाकरं ७४ ॥ समस्त लोक रूपिणं। भवं भव स्वरूपिणं ॥ त्रिलोक पत्रि लोचनं। नमामि पाप मोचनं ७५ ॥ सुवेदवेद्य विग्रहं। कृपाकरं कृपागृहं ॥ सदं सुरासुरैःस्तुतं। नतोस्मि शैलजान्वितं ७६ ॥ गुणादि कारणंबरं। बरेण्य मक्षयं परं ॥ हिमाद्रि कन्यका बरं। नमाम्य घाहरं हरं ७७ ॥ समस्त लोक पूजितं। स्तुतीति हासकूजितं ॥ सनन्दनादि बंदितं। नमामि नन्दि संयुतं ७८ ॥ श्मशान भूति धारिणं। श्मशान भू बिहारिणं ॥ सदाश्मशान शायिनं। नमामि पुण्य दायिनं ७९ ॥ कपालइन्दभूषणं। समस्तदुःखदूषणं। पिशाच इन्दसेवितं। नमामिमूढितेरतं ८० ॥ निशाकरार्द्धशेभितं।

निशाकरप्रभान्वितं ॥ जनप्रमोददायकं। नमामिभूतनायकं ८१ ॥ द्विजिह्वइन्दभूषितं। कुदूषणैरदूषितं ॥ समस्त भूप्रियंकरं। नमामिदेव शंकरं ८२ ॥ सदा मुकुन्द संगिनं। मुकुन्द पाद सेविनं ॥ मुकुन्दरूपिणं परं। नमाम्युमा वरंहरं ८३ ॥

दो० छमा धरज्ञ सब भव हरज्ञ करज्ञ हलाहलपान।
नतरु जरतसंसार सबताकी ज्वाल महान ८४ ॥

चौपाई ॥

तब प्रसन्नह्वै उमानिवासा। देखि उमादिग बचन निकासा ॥ एसब सुर आये ममशरण। हम कहं चहिय अवसि हितकरण ८५ ॥ पियउं हलाहल ममनमाना। पर दुखहरण साधुकर बाना ॥ शरणागत पर करुणा करणी। परम धरम गाधा स्रुति बरणी ८६ ॥ सुनिकै गरलपानमम कान। ह्वैहैं अतिप्रसन्न भगवान ॥ तातें छमा सहित करि मनकों। करिहों दुखतें विमुखसबनकों ८७ ॥ इमिकहिदेव उमा मनमाथ। ताकहं तेतभये निजहाथ ॥ देखतसबके तब भगवान। करतेभये गरल करपान ८८ ॥

दो० नीलकण्ठ होतेभये नीलकण्ठ तेहिकाल।
जनुकण्ठीधारणकरी वैष्णवके भूपाल ८९ ॥

सो० गिर्यो हाथतें जौन तौनपियो अहिआदिकन।
होतभये विषभौन ते अजहं संसारमैं ९० ॥

चौपाई ॥

बहुरि मथनलागे बलखानी। जगतमातुसुरभीप्रगटानी ॥ तेहि लीन्हों कछीन तेहि काल। अग्निहोत्र हितमो दरसाल ९१ ॥ उच्चैश्रवा कढ़्यौ हयराज। तेहिबलि लियो असुर शिरताज ॥ ऐरावत वारन प्रगटाना। श्वेतअङ्ग गिरि श्वेत समाना ९२ ॥ चारदन्त उत्तङ्ग अनूपा। लियो इन्द्र तेहि सुरके भूप ॥ तबकौस्तुभ प्रगट्यौ मणि भारी। धारण ताहि कियो गिरिधारी ९३ ॥ पारिजात पादपप्रगटाना। सुरपुर रह्यौ कह्यौ भगवाना ॥ तब अप्सरा अमितप्रगटाईं। स्वर्गी हित तिन्ह स्वर्ग पठाईं ९४ ॥ कम्बु अम्बु निधितें पुनिभयऊ।

ताकहं कृपासिंधुहरिलयऊ ॥ कटेउचापलिय आपमुरारी।
पुनि गर्भिभये जगत तमहारी ९५ ॥
दो० तब पद्मा प्रगटतभईं सुखमाहद गुण खानि।
दिग्या प्रकाशन तेंभरत पंकज सोहत पानि ९६ ॥
चरण। दोहा ॥
तिनहि कनक सिंहासन दीन्हो इन्द्रदेव शिरताज।
रूपदेखिसुरनर मुनिमोहेरति अतिधारीलाज ९७ ॥
सो० सुर मुनिसिद्ध अनेक तिहि क्षण अतिहि विवेकसों।
करतभये अभिषेक पद्माको परमा मये ९८ ॥
हरिगीती छन्द ॥
करतेभये अभिषेक भरि परमाको तेहिछना। धरिरूप दारि सब कलश भरिलाईं जलहि सुख धरिमना ॥ महि औषधी कहं आनि दीन प्रवीन महिमा जानिकै। सुमन सुसुमन लाये हरषि सबसाज मंगल ठानिकै ९९ ॥ मुनि इन्द्र सहित अनन्द सुखमाकन्द अभिषेकहि करैं। गन्धर्ब गान बंधानबर सुरछानमों सुरछाभरैं ॥ आवज उपंगमृदङ्ग चंग सुबेणु बीन बजावहीं। पढ़ि वेद मंत्र अनेक भरि भरि कलश जल नहवावहीं १०० ॥ सागर दियो कौशेय पूरित ओयतेहि धारत भईं। तबहार सुखद अपार उरसहं बर गिरा डारतभईं ॥ दीनी बरुणतहं बैजयंती कमल कमला-सन दियो। अहि करन फूलहिं अपर भूषन बिश्वकर्मा तन दियो १०१ ॥
दो० इमि सबतें बन्दित रमा परमाभरीं ललाम।
तहं राजत छाजतभईं हरि प्यारी गुणधाम १०२ ॥
तरवा लालरसाल पद कमल सरिस छविदेत।
जन विधितर अस्तर दयो प्रगट लखाई हेत १०३ ॥
सुवरण बरण ललाम पद अंगुरिन पर नखसेत।
मनहुं पांचसर अमृत के मेरु पीठ छवि देत १०४
पगनूपुर सुखमा भरे रहे अतिहि छवि छाइ।
जनुसुर तरुमूलहि रहीं कनक लताल पटाइ १०५ ॥

लहंगा बूटी लालको लसत रुचित बर तौर।
रंभखंभ जुगपैं मनज्ञं दुग्ध फेंचकी बौर १०६॥
कटि केहरिकटि मोहिनी किंकिनि छबिअभिराम।
मनुकटि नाजुक ना झुकै याहित बांधोदाम १०७॥
चलदलको दलअचल जिमि जमल अचलनौं खास।
तिमिहरिअबलाको उदरमें हतगिरिधरदास १०८॥
नाभि चारु सुखमा भरी बन्यो अनूपम तौर।
शोभा सागर उदरमधि मनज्ञं परोहैभौंर १०९॥
छबि सागर अम्भोज रंग सागर सुता उरोज।
मुद नायक हरि कुमुदको शुक्ल शशीसे रोज ११०॥
मोतिन का माला बनी उरही रन के हारु।
नभगंगानखतनमिली मानज्ञं करहिंबिहारु १११
सुन्दर कण्ठ कपोत में भूषन रतन उदोत।
मधि नायक के जोति तें मंद चंदज्ञ होत ११२॥
भुजा सिंधु सुकुमारिकी मणि धरके अनुहारि।
पंचबदनसोहूआंगुरी मणिनखहरिमनुहारि ११३
बाजू सोहत कनक को तिमि पज्ञंची छबि पूरि।
हेमनदीमधि मैं मनज्ञं रतन सेतु बिबिदूरि ११४॥
चारु बदन सुखमा सदन सुखमा धवको देत।
गिरिधरदास सशंकको आसु करत गतचेत ११५॥
शुकसी सोहै नासिका बेसरि केसरि कौन।
फैली जोति कपोल पैं लोल लसै अति तौन ११६॥
युगल आरसी पै मनज्ञं मुखले मोती कीर।
बैठिरह्यौ चंचल बन्यो भ्रम प्रतिबिम्ब शरीर ११७॥
खंजन गंजन सोहते अंजन रंजित नैन।
कंजन के भंजन सदा रंजन रंजनऐन ११८॥
भौंह बीच टिकुली बनी शोभा कही न जाइ।
सुमनधनुषधनुपैंमनज्ञं सरफल चमकलखाइ ११९॥
सरपद रपको हरत हैं कमला जूके केश।
शीशफूल मधिमैंलसै घनमहं उदित दिनेश १२०॥

दो० करन मनोहर सोहते करनफूल युत चारु।
बिबिकबिंबमिदुअंोर जिमि बैठेमोहनमारु १२१ ॥
कबरी सबरी फूलसों गुही बढ़ावैचारु।
नखतबांधिधरिपीठ मनु चल्यो चंदपैराजु १२२ ॥
दीठिपड़ै जब पीठिपैं नीठि मध्य दिखराय।
पियहिपरस नारी मनहुं मेरुशिखर सरसाय १२३ ॥
सारीसारी मैं बने भारी भारी काम।
धारी धारीगे खुरु मनहारी अभिराम १२४ ॥
अंगिया अति अनुपम बनी कारु चोव छवि धारि।
यनिमय खगकीछाल मनु बैठे ओढ़ि पुरारि १२५ ॥
बारन की गति बारिपै राजहंस को आसु।
जाकीगतिमैं प्रथहिं करिदेखत गिरिधरदासु १२६ ॥
कोकिल मे।है वचन पर रचन नाथ उरमोद।
मधुराई सबवारियै नेकहि वचन विनोद १२७ ॥
तनक देहद्युति देखिकै लगै कनक द्युति मन्द।
चारुबनकतिमि पगधरत नूपुरकनक सुछन्द १२८ ॥
कहा कहों लावण्यता धन्य कहैं सबलोग।
अन्यन जासी जगत मैं पंचजन्य धरयोग १२९ ॥
जननीसकल जहान की तननी मोद बितान।
इमि नखसेा शोभाभरीशेाभित भई सुजान १३० ॥
भाविची यचि शारदा उमानमित मद कंजु।
सुख सदमापद माननापद मारा जी मंजु १३१ ॥
कमित लजमीको अहै नखशिख सुकुर विलास।
अवण करहिंतिनकेकरहिं भवनलजमी बास १३२ ॥
रमारमण रंजनदेाऊ कृपाकरऊ गुणिखास।
क्षमादीनपैं चाहिये बरणतगिरिधरदास १३३ ॥
सो० तेहिक्षण रमा सुजान गुण अवगुण तित सबनके।
देखति बुद्धिनिधान सबतें बरबर बरनकों १३४ ॥

चौपाई ॥

कहूं तप अतिपै कोप अपार। कहूं काम कहूं लोभ प्रचार॥

कछुं विभूति अतिशय सुखदाई। देखीपै परतंत्र सदाई १३५॥
कछुं सब सिद्धि अमंगलरूप। कछुं भोग सुख अमित अनूप॥
इमि सबमैं अवगुणपरचार। लखतचलीं इंदिराउदार १३६॥
दो० तब अनन्त गुण हरिहि लखि अवगुण गणसों हीन।
मनसों वरिवर कंठमैं माला दीन नवीन १३७॥

चौपाई॥

तेहि क्षण ब्याह रमाको राच्यो। देवन मैं अति मंगल माच्यो॥ ब्रह्मा शंकरादि सबआये। वर्षहिं कुसुम महा सुद छाये १३८॥ वेदपढ़ैं द्विज बुद्धि निवासी। जयजय रमारमण अविनासी॥ सुर सुन्दरी करहिं कल गान। सोहत मंगल कलश वितान १३९॥ शङ्ख दुन्दुभि बजैं बड़ बाजा। वर्षहिं कुसुम दूब दधि लाजा। पंचरत्नके चौकपुराये॥ कनक कलश भरि वारि धराये १४०॥ दीपमालिका जगमग होती। वर वितान झालर मैं मोती॥ पल्लव पांच परम रुचिकारी। मङ्गलसाज सबै छबिधारी १४२॥

दो०. कमलनैन कमला तबै विधिवत पूजिगणेश।
अग्निप्रदक्षिणकोकियो ब्याह समय तेहिदेश १४२॥
सुता दान सागर दियो भरोमोद सुदधूरि।
जयधुनि शुभधुनि स्वस्तिधुनि रहोजगतमैं पूरि १४३॥

हरिगीती॥

धुनिपूरि सबजगरही जयजय परम छबि तेहि थलबढ़ी।
सिरमौर सुर सिरमौर के लखि हर अजन अस्तुति पढ़ा॥
यह इंदिराको ब्याह जे भरिचाह मानव गावहीं। हरिकी कृपा धनधान्यते हरिभक्ति अविचल पावहीं १४४॥

दो० ब्याह रमाको इमि भयो बसीं विष्णु उरजाय।
जगको दुखदारिद गयो पद्मा दर्शनपाइ १४५॥

सो० मथनलगे पुनिचाहि निकसी देवी वारुणी।
असुरन दीनीताहि हरि मरजीतें आसुतहं १४६॥

दो० जल अन्तरतें तबकढ़े धन्वन्तरि भगवान।
करकलसा पीयूषको चारु मयूष निधान १४७॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण असुर कलश लैभागे। सुर व्याकुल सुख जोवन लागे ॥ प्रथम करहिं हम अमृत पानहिं। हमि आपुसमहं दनुज बखानहिं १४८ ॥ जब अज्ञान इहि विधि रच ठानेा। सुधा न मिलिहै देवनजानेा॥ परमउदास निरास विचारे। इन्द्रादिक अमरादिक सारे ॥ १४९ व्याकुल महा शेाक सेां खरे। चिन्तायुक्त क्लेशमें भरे ॥ तब नारायण कृपानिधान। भक्तहेत भे अन्तर्ध्यान १५० ॥

दो० इतनेई महं बाम बनि अंग अंग अभिराम।
आये सब मन मेाहते श्याम मेाहनी नाम १५१ ॥
हरिहि देखि मेाहे असुर बढ्यौ प्रेम उर मूरि।
भई कामकी आतुरी गई चातुरी दूरि १५२ ॥

चौपाई ॥

पूछनलगे नाम अरुठामा। कहउ कहांतें आईरामा॥ सुरीआसुरी कैतुम अहहू। नगीपन्नगी कैसेाकहहू १५३॥ ऐसी रूपवती जगमाहीं। हमतिय दूजी देखी नाहीं ॥ सौविधि सौविधि करहिं उपाई। तौ तुमसेा नहिं सकहिं बनाई १५४ ॥ हमसबके सुभाग अब जागे। तुवपग आवत संकट भागे ॥ करिकै कृपाकरउ इकाज। कढ्यौ सिंधुतें अमृत आज १५५ ॥

दो० ताहि पिवावउ सबनकेां करि विभाग मतिपीन।
हम अबलन आधीनहैं कृपाकरउ सुनिदीन १५६ ॥

सेा० सुनि असुरन की बात जगत तात परमामये।
मन्दमन्द मुसिक्यात मोद कन्द बेालत भये १५७ ॥

चौपाई ॥

हमचञ्चल सुभावहैं बामा। मेाहिन देउ सुधा गुणधामा ॥ कैसिउनारि हेाइजगमाहीं। पैविश्वास योगहैनाहीं १५८ ॥ जेा हम सुधा हरैं छल करिकै। तब आकरि हैा उर दुख धरिकै ॥ सुनिकै बेाले मन्द मुरारी। कामविवस एकहि मति धारी १५९ ॥ हम सब तुमरे बस हैं भामिनि। जेा

करिहौं कबूल सोइ स्वामिनि ॥ तब मुकुन्द सुर इन्द्रबिनायन। बोले करत मनोहर हांसन १६० ॥ करिअस्नानध्यान कहं धरहू। तब सब पान सुधाकर करहू॥ सुनितेगये करन अस्नाना। इत देवनसों विष्णु बखाना १६१ ॥ बैठहु करि कतार तुमआसु। पियहुसुधा उरपूरि हुलासु॥ सुनिते सकल जाइ करि पंगति। चौगुन बढ़ी बदनकी रङ्गति १६२ ॥ करै कलस श्याम सुदपागे। देवन सुधा पियावनलागे॥ तेहि छण राहु भेव गुनि हाली। बिबुध स्वरूप धस्यौ बुधि घाली १६३ ॥ अमि सूरन मैं बैठोजाई। तिन तब हरि सों सैन बताई॥ पिवत चक्र मार्स्यौ भगवान। धरसिर भिन्न भये सहज्ञान १६४

दो० इमि सब सुरन पिवाइकै अमृत सुर सिरताज।
अन्तरहित होतेभये करि भक्तन कोकाज १६५ ॥

चौपाई ॥

हरि सोहनी स्वरूपहि धारा। सो सुनि पायो शंभु उदारा॥ दर्शन करन हेत छवि छाये। हरिके धामकाम रिपु आये १६६ ॥ सवैया ॥

गज खाल विशाल बनी तनमैं मनुवेरि रही हिम शैल घटा। गिरिधारण धारण चन्द किये द्युतिदेखतहीं तमदूरि हटा॥ बकुरङ्ग प्रसूनन गुंथीलसै सिरगङ्गतरंग समेतजटा। नगपंगति अक्क शरासन सों मनु शोभित सुंदर बिज्जु छटा १६७ ॥ सांपके कुण्डल ग्रीव विपुण्ड खबीस के झुण्ड चलैं दृगतैं हटि। ध्यान हृदय गिरिधारण को अघ औगुण देखतजाहिं झटैनटि॥ शैलसुता अरधंग लसै अङ्ग अंगन तें रति जातिअहै घटि। मुण्डकी माल भुशुण्डकी खाल भुशुण्ड के मुण्डकी जालनी कटि १६८ ॥

छप्पय ॥

षटमुख गजमुख बीरभद्र नन्दीभृङ्गी पुनि। धनपति घंटा नादपार्श्वमौलीनारदमुनि॥ नलकूबर मणिग्रीव चंडचंडीश महाविष। सनक सनन्दन देवराज बलि सुत समेत दल॥

सुरलोकपाल दिगपाल सब शूलपाणिके सङ्गवने। जय उमा रमण भवभय हरण जयजय हर बरणहिं घने १६८ ॥ भैरव भूतपिशाच प्रेतउन्माद बिताला। शाकिनि डाकिनि प्रमथ ब्रह्म राक्षस रिपुकाला ॥ कूष्मण्ड गन्धर्व महामारी बज्र व्याला। बालपूतना दुष्टसंघिनी यज्ञकराला ॥ दितिअदिति सुवननिशि दिवस चर मुनि महर्षिपर मामये। संग महादेव के होय कै देव देव हरिपैं गये १७१ ॥

दो० करिप्रणाम बोलत भये त्रिपुर नाशकर आसु।
धस्योरूप जो नारिको दरशनदीजै तासु १७१ ॥

सो० प्रभु यह मेरो नेम सबपुको दरशन करऊं।
सोदीजैगुनिप्रेम जामैं अति आनन्द धरऊं १७२ ॥

चौपाई ॥

सो सुनिहंसे भक्तभयहारी। बोले वचन रचनसुदभारी। यहस्वरूप कामिनकेहेत। है हमधस्यौ सुनऊटषकेत१७३ ॥ तुम से जोगिन कों यह दर्शन। उचित न चित ससुभऊ अघमर्षन ॥ सोसुनिकै पुनि शंभु उचारो। तुषप्रताप हम कामहिं जारो १७४ ॥ करिकै कृपा दिखाइय रूप। जिमि हत हत्यहोउं सुरभूप ॥ तबसब जगपति खगपति गामी। अन्तरहितभे अन्तरयामी १७५ ॥

दो० घरी द्वैक बीती तबै सन्मुखतैं इकवाम। गेंद खेलती हरसखो अंगअंग अभिराम १७६ ॥

सवैया ॥

पायल पाय जमें अतिही द्युति देखत घायलही करि डारै। सोहतिहै रसना गिरिधारन भाषनको रसनामति हारै ॥ हीरनके हिय हार सुढार निहारत बिम्ब अंधार पधारै। कुन्दन कुन्दकरैंरद वृन्द सुकुन्दन कुन्द प्रभा करि डारै १७७ ॥ आननइंदुमैं नासिकाचारु लजावतिहै सुखमा सुक चंचुकी। मंद महा सुसुकान फबोगिरि धारनकारण काम प्रपंचकी ॥ अंग सुगन्ध कहा कहिये समतानहिं

केसरङ्ग करै रंचुकी। कंचन कुंभन से कुचपैं कसी कांति मई चमकै शुचि कंबुकी १७८॥

दो० कामदेव की कामिनी वामदेव की बाम।
सुरपतिपतिनी आदिलै वारियनारि सुदाम १७९॥

चौपाई॥

शीतल पवन आइतित चंचल। आसु उठाइ गिरायो अंचल। लखतचले अति आतुर मनवनि॥ मदनकदन मद मदन सदनवनि १८०॥ आगे रूप जात वनिनारी। पाछे गहन हेतुकामारी॥ सुनऊसुलोचनिबात हमारी। फिरऊ नेक इमि कहत पुकारी १८१॥ विधुरी जटाचलीं बहि गंगा। परम प्रखेद भस्यो हरअंगा। चुवति विभूतिलखै सब दुनियां। शरद जलद मनु तजत लसुनियां १८२ गिरेवमत विषतन के व्याल। कटितैं छूटिपरी गजछाल॥ टूटीमाल गिरैं गिरकैसे। गिरैंताल फल तरु तें जैसे १८३॥

दो० खेत खेतकी रेतमैं रेतगिरत छबिदेत।
राजततरुवरषतमनऊंबऊमोती फलखेत १८४॥
गिरतजात जहंजहं धरणिविंदु भस्यो अतिज्योति।
पारा कनकादिकनुकीखानितहांतहंहोति १८५॥

चौपाई॥

सो छबिदेखि उमा मुसुकानी। बोली विहंसि भवानी बानी॥ कहाभयो यह तुमहिं गोसांईं। धावत कामातुर की नाईं॥ १८६॥ षट मुख गज मुख तुमरे छोरे। देखऊ मौन गहे मन मोरे॥ मैंतुव तिय सकोचतें छाई। तऊ कहति लखि नाथ दृढ़ाई १८७॥ गण समूह देखहिं टक लाये। कहि नसकहिं कछु अचरज छाये॥ जेते देव अदेव मुनीश। आये लखन यान चढ़ि ईश १८८॥

दो० तेसब निरखि बिचारि गति भये चिंचअनुहारि।
कहाहोयगो यासमय मोह्योहरहिमुरारि १८९॥

चौपाई॥

जापर होइ उनहिं की दाया। ताकी कौं नहिं व्यापै

माया ॥ नहिंनागरियह गर्वप्रहारी । भरिसमाधि देखउ चिपुरारी १९१ ॥

दो० इही मोहनी रूपहैं मोहन मोहन चित्त ।
दरशदियो तुम्हरे कहे जिनहिं जपतहौ नित्त १९२ ॥
इहिविधान भाषति उमा विह्वल धावत ईश ।
सुधिबुधि गत संभ्रमभरे जानिमिले जगदीश १९३ ॥

सो० उरलावत निजरूप धास्यौ श्याम अनूपहद ।
निरखि भूतकेभूप सजल कहतगहिपद्मपद १९४ ॥

मौक्तिकदामछन्द ॥

कृपाकरियेजगदीश मुकुन्द । मनोहरमूरतिनाशनद्वन्द ॥ प्रभो परमेश्वरकालियकाल । कृपालयपालय माञ्जनपाल । १९५ ॥ कियो हमजो मनमें अभिमान । हस्यौ तिहि आप अनंद निधान ॥ रमापतये परमा धरणाय । नमो हरय कलुषा हरणाय १९६ ॥ बिरञ्चि रमाहम आदि सदाहिं । चलै तुम्हरे वसया जगमाहिं ॥ भुतस्यभवाम्बुनिधाव मरेश । हरि:शरणं ममविश्वरमेश १९७ ॥ दह्यौहमकामकह्यौहम जौन । कह्यौफलतासु बह्यौमदतौन ॥ खगध्वजकेशव दानव काल । दयांकुरुभो भगवन् व्रजपाल १९८ ॥ करौजगआपु भरौ पुनिआपु । हरौपुनि आपुनि शक्ति प्रतापु ॥ सुदर्शन हलसुदर्शन रूप । कृपांकुरुकेशव भूतल भूप १९९ ॥ बिना तुम्हरी करुणाकरतार । नजानिसकेकाउ भेदअपार ॥ सरो-रुहलोचल रोचन रूप । प्रसीदपरेश्वर निर्जर भूप २०० ॥ सदा मोहि जानि अमानोइ दास । कृपा करियै बर बुद्धि निवास ॥ मुकुन्दबिभोव्रजवल्लभ सत्त । दयांकुरुभोदर हल गुणत्त २०१ ॥ तुम्हैं तजिऔरहि ध्यावहिं जौन । वृथानिज जन्मगवाहिं तौन ॥ नमोहरयेयदुबंशवराय । नमःसुखदाय नमः सुरपाय २०२ ॥

दो० तुवमायाबल अतिहि प्रभु मोहिमोह्यौ इहिकाल ।
तातें अबकीजै कृपा पुनिनहोइ यहहाल २०३ ॥

चौपाई ॥

सुनिकै हंसिबोले जगस्वामी। हमतौ प्रथम कह्यौ दुष गामी ॥ जगमहं जेतेहैं तनुधारी। सबपर प्रबल कामका मारी २०४ ॥ तुमतौ दह्यौ कामकहंचणमैं। यहफल गर्ब कियो जो मनमैं ॥ जाऊआनुतें हमरीदाया। तुमपैं कबहुंन व्यापियमाया २०५ ॥ सोसुनिकरि प्रणाम सुदछाये। उमासहित कैलासहि आये ॥ तहांबैठ सबमैं व्रतधारी। पुनिपुनि इहइ कहहिं त्रिपुरारी ॥२०६॥ परमभक्तवत्सल जगनाहीं। हैकोउ केशवके समनाहीं ॥ सबपर प्रबलश्याम की माया। जो निकसै सो उनकी दाया २०७ ॥

दो० हरिको अरु हरिजनन को शुद्धचित्त सों मोरि।
बारम्बार प्रणामहै कहत बहोरि बहोरि २०८ ॥

सो० इहिबिधान भगवान धर्यो मोहनी रूपकहं।
मोह्योशंभुसुजान सुनि प्रधान जोजगत महं २०९ ॥

चौपाई ॥

काटि राहु सिर जब जगदीश। अन्तर्ध्यान भये सुर ईश ॥ धर सिर सुधा प्रभाउ समाना। तिहिक्षण उठे महा बलवान २१० ॥ पूरव बैर रह्यौ उर छायो। पुनिशिरसूर शशिन कटवायो ॥ औरहु सतगुण रिसि उरबढ़ी। तित लोकी मनु नींवहि चढ़ी २११ ॥ अमरहोयकै समर रचायो। रवि शशिसों अति द्वन्दमचायो ॥ दनुजभये सब इनके संगी। तिनकेसंग अमर रणरंगी २१२ ॥ छलीदेव अरु देवप्रधान। इमि कहिकहि ते लरहिं अजान ॥ परमभयंकर बिक्रम धारी। राहु केतु नहिं पावहिं हारी २१३ ॥

दो० तब विधि तिनसों आयकै कहतभये यह गाथ।
तुमहिं अमर पदवीभई अब न लरहु इनसाथ २१४ ॥

चौपाई ॥

पूजनीय ह्वैहौजगकेरे। लहिहौ भाग संगमहंमेरे ॥ ताते देहु बैर बिसराई। करहु न इनकेसंग लराई २१५ ॥ राहुकेतु तब बोले ऐसे। शशि सूरनसों लरहिं न कैसे ॥ इनदोउन

ममशोक कटायो। सुनिपुनिपुनि विधि वचनसुनायो२१६॥
पर्व्व परेपर परिहैछाया। वैरसुमरि सब ग्रसेऊ अदाया॥
इमि कहिकै ग्रह पदवी दीनो। दुऊंकी सदा वक्र गति कीनो २१७॥ चक्रहि तबै कह्यो भगवान। होयऊ ग्रसत दुऊन के भान॥ बलधर केतु राऊ अरु केतु। सुरसंग बैर तज्या इहि हेतु २१८॥

दो० तबै तहां होतो भयो देवा सुर संग्राम।
सकलसमर मैंअबऊं कविवरणहिं जाकोनाम २१९॥

चौपाई॥

तिहिक्षण महा असुरकी सैना। चलीलरन हितविक्रम ऐना॥ को अस सुकवि अहै महि धरणी। ताके सकै वरण कों वरणी २२०॥ नाना विधि फरहरैं पताके। गिरहिं मुकुट जिनकी दिशि ताके॥ कलसे लसे कनक के नाना। छुद्र छुद्र द्युति निधान असमाना २२१॥

हरिगीती छन्द॥

असमान छुद्र छुद्र लसे कलसे विविधि वरण सुहावने। जगमगत नग जिन महं अमित सबनग अंधार नसावने। सित छत्र शोभा देहिं नभलखि चकित सब मन होतहैं। जग बीच सुनियत एक शशि इत बहुत व्योम उदोत हैं २२२॥ मणि जटित डांडी चारुचामीकरन की द्युति धरण हैं। गजराज मोतिन झालरैं शोभित धरातम हरण हैं॥ बहु केतुदल महि छबिभरे जिन जोहते जन मोहते। पन्ना पिरोजा नील मणि माणिक जिन्हन महं सोहते २२३॥ बरबात सों फहरात पट दरशात सुन्दर महतहैं। मनुधाइ लै असमानकी बसहै इतो यह कहतहैं॥ शुकमोर चातक हंस हय गज आदिसों अंकित बने। नवकारचोवी काम लसहिं ललाम द्युति आकर घने २२४॥ तिमि सुरथके समुदाय सोहहिं बिबिधि बीर बिराजते। नाना चरण हय वायु जब भूषित सुजिनमहं छाजते॥ छतरीभरी अति कांति सों नगपांति सों परमाधरै। कहु रंग रतन बिहंग

तिनपर छबि सबनको मनहरै २२५ ॥ मजबूत बैठे सूतरन बैगति धूत जिनपर दरशते । संग्राम काम लगाम हाथ लगाम लै अति झरसते ॥ बर चक्र चारु सुढारु रबिशशि सरिस जिन महं राजते । घण्टा घनेघन बाजते सुनि सेा घनेघन लाजते २२६ ॥ तिमिझुण्ड अमित बितुण्डके निज सुण्डकों उन्नत करे । घनरङ्ग अङ्ग उतङ्ग सङ्ग उमङ्ग सङ्कर के भरे ॥ निज कुम्भसों घनयूघ टारहिं शीघ्र माणिक के बने । सिङ्कर करन महं कनकके बर बनकके फेरहिं घने २२७ ॥ मखतूल निर्मित झूल उर बज्रहार शेाभा छावते । गजबाण लै अंकुश जलधमधि बिज्जुमे चमकावते ॥ हैादेअमारी बज्रत भारीदाम के तिनपर लसै । रणधीर वीर सुजान जिन्हपर समरहित सुदभरि हंसै २२८ ॥ तिमि तुरङ्ग मगमग चलहिं नाचत मनझुंते बढ़िगति धरे । सिरलगी कलगी रतन की उर हारही रणकेपरे ॥ कैकाण गलेमहं सेाहनी द्युति धर बनी जगमेाहनी । बरपीन जीन नवीन चमकैं घनी जिनके महिमनी २२९ ॥ इक एक पूजी बीच पूजी घनद की दरशातिहै । दुमचीर चीम निकार बज्रमणि सेां खंची सरसातिहै ॥ जिनपैं चढ़े असवार आयुध हाथ मैं चमकावते । करलै लगाम लगाम अति अभिराम अश्व नचावते २३० ॥ तैसे सिपाही वीर रणचाही सबै सुखमा भरे । बर बसन भूषण कवच कंचन के मनेाहर तनधरे ॥ कटिकसे रणहित बसे गर्जहिं बिबिधि भट रससेांसने । टेढ़ी बनी सिरपाग पूरितभाग अनुपम अनगने २३१ ॥ असिचर्म असनी शूलशक्ति नराच धनु तरु गिरि गदा । बंदूक चक्र छुरी परश्वध भल्ल धरि भरि भरि मदा ॥ गरजैं गरारे समर मतवारे भरेमद झूमते । बकबैन बेालहिं बैन घरूघरु नैन सबके घूमते २३२ ॥ दुन्दुभि दमामा तूरही भरपूर बाजन बाजते । सुनि सेार सेा घनघोर अंबुद प्रलयझुके लाजते ॥ कड़खैत बैठे तुरङ्गपर रणगीत बज्रविधि गावते । सबके हृदय महं समर को अहलाद स्वाद बढ़ावते २३३ ॥ इमिचलत दानव सैनके खल

बजत सुर चतुरङ्गिणी। घरकरत महि उच्छरत नद राज सकल तरङ्गिनी॥ अकुलात कच्छप कोल अहि गिरि गिरत अवनी आइकै। नभ धुरि पूरी भूरि रबि शशि दूर दूर दराइकै २३४॥

दो० इहिबिधान चलती भई दानव सेना घोर।
सहित महा सहजोर के देव सैनकी ओर २३५॥

चौपाई॥

गज रथ तुरङ्ग ऊंट बनचारी। ऋषभ मेष मृग मूष बिलारी॥ सरभ सिंह अहि अजगर भैंसे। चले अमित भट दून पर वैसे २३६॥ हंस बाज पिक मधुरालापी। कीर कपोत कुलंग कलापी॥ गीध उलूक काकपिक गौरा। इन चढ़िचले कितेक करिहौरा २३७॥ मच्छ कच्छ मंडुक घरियार। सुंस मगर जल कछुट स्यार॥ तरु गिरि यान पालकी चढ़िचढ़ि॥ चले अमित रिस मढ़ि मढ़ि बढ़ि बढ़ि २३८॥ नानाबिधि बाहन असवार। नाना बरण असुर सरदार॥ नाना अस्त्र शस्त्र करधारे। नानाविधि गरजहिं बिकरारे २३९॥ इहि बिधान अमरषसों पूरे। असुर चले संगरकों कूरे॥ सुधापान सों अति खिसियाने। बलकृत चले रणहिं रिसियाने २४०॥

दो० वैहायस नामक सुरथ मणि मयमय कृतचारु।
चढ़िचलांक चलते भये बलिदानव भरतारु २४१॥

चौपाई॥

बंदी मागध सूत सुजाना। वर्णन करहिं सुयश विधि नाना॥ बलि समान दानी जगमाहीं। भयो नहै अरु ह्वैहै नाहीं २४२॥ देततिन्हे मनवांछित राजा। रणमानी दानी सिरताजा॥ कनक रत्न धन बरसत कैसे। भादव बारि बलाहक जैसे २४३॥ चउंदिशि ढुरहिं चंवर चलचारू। सनसुख बाजे बाजहिं मारू॥ सुरकुल अमित फिरावहिं दानव। धरणिसकै छबि को अस मानव २४४॥ पंखे परम रुचिर दरशावैं। चारउ दिशि ले असुर डोलावैं॥ डांड़ी कनकमयी छबिभरी। अमित अमोल जवाहिर जरी २४५॥

सूरजमुखी मनोहर नाना। जिन जोहत मोहत दिन-जाना॥ शीघ्र छत्र सितमण्डल सोहै। वारन मणिभाजरनि लसो है २४६॥

दो० चोपदार सोहैं अमित ओपदार अभिराम।
जयजय ध्वनि बोलत चलहिं जयके योग सुदाम २४७॥
इमि अपार अंभोधिसी असुर ईशकी सैन।
चलीभलीविधिनिहचलतहलीधरीगतचैन २४८॥

चौपाई॥

चले संग में असुर समाजा। इक इक अमित कोटि के राजा॥ हेति प्रहेति निशुंभ सुमाली। शुंभ पाक नमुची बलमाली २४९॥ बान विरोचन जंभ सुजान। तारक उतकल कपिल महान॥ इल्वल बिप्र चित्तमय वीर। कालनाभ सुखयेा सुख धीर २५०॥ हिंशिर शंकुशिर शकुनी नाम। वज्रदंत संबर बलधाम॥ हयग्रीव चक्रेक्षण योधा। चले च भूत संताप सक्रोधा २५१॥ असुर अरिष्ट अरिष्ट समान। वृषरि अरिष्टनेमि बलवान॥ मेघदुंदुभी सूर शिरोमणि। इनहिं आदिभट चले कोपसनि २५२॥

दो० बरणि बात कवचादि अरु पैालोमकके यूह।
प्रबल चले कालेयगण जीतन अमर समूह २५३॥

तोटक॥

इमिदानव के गण धावतभे। सबही बढ़ि शङ्ख बजावत भे॥ रिपुसैन सजी लखिकोप भये। सुरराज मतंग सवार भये २५४॥ सित शैल समान महान लसै। लखि जो अरि जीतन आसनसै॥ मदधार अपार चुवै झरणी। मग कुंभन के निकरैं तरणी २५५॥ गजगण्ड परी गजमोतिन की। इक एक निशाकर ज्योतिनकी॥ उरआलि बिराजनि घंटनकी। गलहे कलहे घुंघुरू गणकी २५६॥ छबि कुञ्जर की सुकछा कहिये। लघवायुत देखतही रहिये॥ अमि सोहत हीरन हारन है। तेहि वारनपै जगवारनहै २५७॥ सिरमैं मणिको रजनी मणिहै। सोइकांतिभरो ध्वजनीमणि है॥ संगशोभित

है सुरकी ध्वजनी। दिनकोंसुकिये रजसोंरजनी २५८ ॥ सुर केदलकी बरजो छबिछै। तिहिभाविसकै असकोकविछै ॥ यम आदिकवीर चलेबढ़िकै। अपने अपने रथपैचढ़िकै२५९॥ हम जीतहिंगे मन मैं गुनिकै। धरु मारु प्रहारु इही ध्वनिकै ॥ सुर दैत्यन सों तिहि काल भयो। रण दारुण विक्रम तेज मयो २६० ॥

दो० बाजन लागीं दुन्दुभी भेरी पटह निसान।
समरअमरअरु असुरसों होनलग्यो घमसान २६१ ॥

चौपाई ॥

उभय सुभट बढ़ि जूटन लागे। रिपु तन गहि गहि कूटन लागे॥ पगकर उर उर टूटनलागे। गीध स्यार मिलि लूटन लागे २६२ ॥ सिर बज्रतन के फूटन लागे रुधिर फुहारे छूटन लागे ॥ बीरबीर रसबरसन लागे। कंकआंत गहि करषनलागे २६३ ॥ सूर परस्पर धरसन लागे। समर बिजयहित हरसनलागे ॥ दौरि दौरि भिरि भरसनलागे। किते सक्षत तन दरशन लागे २६४ ॥ विविधि भांति रण रावन लागे। अस्त्र शस्त्र गति जांचन लागे ॥ धरु धरु मारु पुकारन लागे। आयुध अमित प्रहारनलागे ॥ परम कोलाहल मांचन लागे। तपे बीर रिमि आंचन लागे २६५ ॥ बज्र भट गिरे नराचन लागे। बज्रकबन्ध ह्वै नाचन लागे ॥ धरुधरुमारुपुकारनलागे। आयुधअमितप्रहारनलागे २६६॥ तकि तकिकै शर मारन लागे। अरि शिर काटि पवारन लागे ॥ भल्ल परस्पर डारन लागे। झपटिझपटि उरदारन लागे २६७ ॥ कादर डरि डरि भागन लागे। सूर समर अनुरागन लागे ॥ बली बीर रस पागन लागे। बचन आंच अरि दागनलागे २६८ ॥ सुरय सुरथसों खागनलागे। रथी शूल असि त्यागनलागे ॥ हय हय द्वन्द मचावन लागे। गज गज बढ़ि रण चावन लागे २६९ ॥ बज्र भट अस्त्र नचावन लागे। समर मत्त बनि धावनलागे ॥ बज्रतनके उर फाटन लागे। ते जन जीव उचाटन लागे ॥ सूर सूर गतिप्रावन

लागे। मरि सुर धाम सिधावन लागे २७० ॥ अंग अरिन के काटनलागे। काटि काटि महिपाटन लागे ॥ बज्रतन के उर फाटन लागे। ते जन जीव उचाटन लागे २७१ ॥ भट दानी विधि ठाटन लागे। बाण दक्षिणा बांटन लागे॥ कर कमान गहि फेरनलागे। नामभाजि रिपु टेरनलागे २७२ ॥ लगे बाण बज्र हेरन लागे। सनमुख नैनतरेरनलागे॥ आयुध द्वन्द्वरे बरनलागे। सिमिटि सिमिटि विरि घेरनलागे २७३ ॥ करसन कठिन धरासनलागे। प्रणकरि शत्रु बिनाशन लागे॥ दपटिदपटिकैचासनलागे। दलमधिधसिकेकरसनलागे २७४ सूर सूर से भासन लागे। कोप किरिणि परकाशन लागे॥ पंचाननसे गरजनलागे। बज्रत तरपिको तरजनलागे २७५ ॥ केते लखि लखि खरजनलागे। भयतें प्राण बिसरजन लागे॥ कायर बज्रतनबर्जन लागे। भरसन तिनहिंअपरजन लागे॥ २७६ दौरि दरेरि दपट्टनलागे। झेरत भेरि झपट्टन लागे॥ धीरधीर धरि दट्टनलागे। शोणित पंक रपट्टनलागे २७७॥ मल्ल समान लपट्टन लागे। समरनट्ट से नन्दन लागे॥ किते जलदसे गाजनलागे। छबिमें दलमधि छाजनलागे २७८॥ बज्र सुर पुर पर राजन लागे। सेा लखि कादर लाजन लागे॥ बाजन सगरे बाजन लागे। भट उर आनंद साजन लागे २७९॥ आयुध अमल खरक्कन लागे। सर सम सरप सरक्कन लागे॥ कोटिन केतु फरक्कन लागे। लखिरिपु हृदय दरक्कन लागे २८०॥ एक एक कहं तक्कन लागे। अब न बचत यह बक्कन लागे॥ परखि परखि रिपु खण्डन लागे। सुयश भटन में मण्डन लागे २८१॥ टंकारन को दण्डन लागे। कंपावन नव खण्डनलागे॥ परन नृपति ज्यों दण्डन लागे। बज्र दलप्रविशि विहण्डन लागे॥ २८२॥

दो० इहि विधान माच्यो तहां संगर घोर अपार।
पृथक् पृथक् असको सुकविबरणेकरि निरधार २८३॥

चौपाई॥

कढ़ी रुधिर सरिता अतिभारी। परम भयावनि धारण

धारी ॥ ढाल छत्र कच्छप दरशाहीं। भुज असिमच्छ सरिस सरसाहीं २८३ ॥ केश सिवार चारु उतराहीं। खरग चरण करबासरि माहीं ॥ महामगरसे भट के अंग। मज्जा भेद कंज बहुरङ्ग २८५। काई सरिस लसै गज छाल। दुहुं सैना सेा कूल बिशाल ॥ पलकेा पंक भयेा भयकारी। चमकहिं रेत रतन दुतिभारी २८६ ॥ रथके चक्रचक्र सरसाहीं। आंत लहरि बर हरिता माहीं ॥ फेन बहै सेाइ फेन देखाये। अस्थि राशिकहुं घाट बनाये २८७ ॥ हैादे बहहिं सुनाव समान। तासरि बीर करहिं असनान ॥ गीध कंक सारस चकभाये। करहिं कलेाल महा सुदछाये २८८ ॥ तट परभट सह परी अमारी। देवालय सेाहत रुचिकारी ॥ तहंके द्विज सरदार गनाये। पढ़हिं मंत्र धरु मार सेाहाये। २८९ ॥ असि सर शक्ति कृपाणकहं देहीं। तुरतहिं प्राण दक्षिणा लेहीं ॥ तासरिमहं जेवीर महाहीं। चढ़ि चढ़ि यान स्वर्गचलि जाहीं २९० ॥

दो० इमि निकसी वाढौर मैं रुधिर नदी अतिजोर।
महासमर सावन बढ़ी मढ़ी चढ़ी चहुंओर २९१ ॥

चौपाई ॥

तिहि छण द्वन्द युद्ध तहं माच्यौ। काल निहाल ताल दै नाच्यौ ॥ बलि बासव सेां भिरे प्रचारी। बरुण हेतिदेाउ झगरे भारी ॥ २९२ ॥ मित्र प्रहेति लरहिं अभिमानी। तारक दुन्दारक सेनानी ॥ कालनाभ सेां यमभरि परमा। भिरत भये मय अरु विष्णु करमा २९३ ॥ त्वष्टा सेां संबर रण रोचन। सविता सेां बढ़ि भिरेा विरोच ॥ अपराजित नमुची बलधरसेां। दृषपर्वा अश्वनी कुंअर सेां २९४ सूर सूर बलि के सत सुतसेां। वायु पुलेामा भट बलयुत सेां ॥ राज निशाकरसंगर करहीं। जम्भदृषाकपि ये देाउ लरहीं २९५ महिष विभाव सुवि रच्यो जङ्घ। कविमहंराज दुस्मतिसङ्घ ॥ नरक अरक सुत करहिं लराई। उत्कल मदन भिरे रिस छाई २९६ ॥ शुम्भनिशुम्भ महाबल शाली। इन सेां लरति

सिंह चढ़ि काली॥ विधि पुत्रन सों अरुके पापी। कोप भरे दुख्ख न वातापी २९७॥ मरुत निवात कवच गण सङ्ग। वसु काले मकरहिं रणरङ्ग॥ बीर बरोमरके नव अङ्ग। करहिं अङ्ग उर पूरि उमङ्ग २९८॥

दो० पौलोमन सों लरत भे विश्वेदेवा देव।
क्रोध वसन सों क्रोधवस भिरे रुद्र गुणि भेव २९९॥

भुजंग प्रयात॥

भयो इन्द ऐसो तहां युद्ध भारी। कहै कौन ऐसो अहै बुद्धिधारी॥ महा जोर के तोरसों भट धाए। लगे मारिवे रोसके जोर छाए ३०० भरैं खप्परैं योगिनी मोदरा चीं। पियैं योणितै ओर नाचैं पिशाचीं॥ बिना शीश के होय कै बीर डोलैं। धरो मारमारो यही बोल बोलैं ३०१॥ घने प्रेत लै शीशकों गेंदखेलैं। घने आंत की मालसै कण्ठमेलैं॥ घनी राक्षसी काढ़ि कै बीर आंखैं। महा चाबसों भूमि मैं बैठि चाखैं ३०२॥ घने कंकनिःसंक खोपरू नहावैं। घनघूमि आकाश हौरा मचावैं॥ महादेव की मालकों प्रेत केते। घनेबीर के शीशकों हाथलेते ३०३॥ घने खोपरीलै पियैं पीव पापी। लहूपान केते करैं जीवतापी॥ किते हाड़कों फेंकते प्रेतकेते। घनेबीरकेशीशकों हाथलेते। कितमुण्डको चाखिपूरे चबावैं। करेजा किते काढ़ि कै खूब खावैं ३०४॥ किते खाय से।वेसोई युद्धसज्जा। किते भूतनाचैं तनै खादू मज्जा॥ फिरैं योगिनीलैचढ़ासिंहकाली। भरैंखप्परैंमोदसोंपूरिहाली ३०५ भुजादण्ड की किंकिणी है विशाला। बनी कंठ में मुण्ड की चारु माला॥ लसै आंतकी पागरी शीशभारी। लहू चूनरी है महारंगधारी ३०६॥ लहूरंगही की कढ़ी जीह सेा है। कटे शीशकों राखि कै रक्त दोहै॥ हंसैं योगिनी ओणितै पान कैकै। बड़े बीर के मुण्डकों हाथ लैकै ३०७॥

दो० इमि संगर माचोतहां बरणि सकै को तौन।
इन्द्रहिललकारतभए बलि दानव क्षितिरौन ३०८॥

चौपाई ॥

दशशर तकि मार्‍यौ मघवानहिं । गज कहं तीन एक गजवानहिं ॥ जेहे गजपद रक्षक चारो । एक एक शरतिन कहं मारो ३०९ ॥ तबहंसि इन्द्र तिते शरमारी । तिनहिं काटि मग, दीनेडारी ॥ सेा लखिबलि बलनिधि रिसछाई । महा तेज धर शक्तिउठाई ३१० ॥ तेहि क्षण बासव बाण प्रहारी । करते काटि भूमि सेा डारी ॥ तब त्रिशूल व्रजि इन्द्रहि डांर्‍यौ । ताहू कहं मगही महं कार्‍यौ ३११ ॥ प्रास बज्रि तोमर शरनाना । त्यागनलगे दनुज सिरचाना ॥ जेजे शस्त्र कोपकरि डारे । तेते शक्र शरन सेां वारे ३१२ ॥ इन दोउन सब समर मचायो । दुहूं न दुहूं दलकाल नचायो ॥ तेहि क्षण बलि बलवान नवीनो । अन्त रहित ह्वै माया कीनी ३१३ ॥ तबसब सुर दलऊपर भारी । प्रकर्‍यौ शैल महा भयकारी ॥ जरत गिरहिं तरुके समुदाई । पर-वतशिखर शिलाअधिकाई ३१४ ॥ निकरे सर्प दर्प धरकारे । सुर दल भक्षण की मतिधारे ॥ खगपति घनेकढ़े तेहिकाल । करत नाश अरि दलविकराल ३१५ ॥ शूललिये कर कज्जल अंगी । धरु धरु बोलहिं निशिचरि नंगी ॥ निशिचर भूत पिशाच वेताल । मारु मारु धरु करहिं कराल ३१६ ॥ बरषहिं घन बज्र गरजि अंगार ॥ बिज्जुपात बरचारहिंबार । धूमकेतु दिशि पूरित ज्वाल ॥ सुरदल दिशि प्रगर्‍यौ तेहि काल ३१७ ॥

दो० बज्रों उमड्यौ अंबुनिधि चक्रंदिशि तें अति घोर ।
जातहलोर अकाश लौं करतशोर भरिजोर ३१८ ॥

सो० तब सब सुरभय छायध्यान धर्‍यौ भगवानको ।
तेहिक्षण तिनमहं आयप्रकटे प्रभु परमाधरन ३१९ ॥
वाहन बने सुपर्न सुन्दर वर्ण सुवर्णसेा ।
सुर समूह दुखहर्णपर्‍यौ असुरदल मरणसेा ३२० ॥

कवित्त ॥

शीशबनवारीविश्वगरब प्रहारी चारु तुण्ड पदधारी मन

भारी हरषातभे। पच्छन सों भूषित सुलच्छण ततच्छछी आरत के पच्छण पैं स्वच्छ सरसातभे॥ गिरिधरदास अंग प्रभासों प्रभा निवास गरब बिनाशकरि छबि बरसातभे। देवनर चाहन अदेव दरदाहन सुदेव बर बाहन तदेवदर• शातभे॥ ३२१॥

सवैया॥

सब भूषण भूषित अंगबने कटिदिव्य दुकूल औमालगरे। सुकपोलनि कुंडल डोलनिसों सबके मनकों अभिरामहरे। महिअंबरलौं तनकोबिसतारुप्रतापचछंदिशि भूरि अरे॥ अरि नाशन यो गरु डासन आसन चारु सिंहासन शीश धरे॥ ३२२॥

दो० जिमि जिमि चालहिं पच्छकों पच्छी कुल के पाल।
शामवेदघनश्यामश्रियतिमितिमिकढ़तरसाल३२३॥

चौपाई॥

चलतखगेश धरा अकुलानी। चति उच्छल्यो अंबु निधि पानी॥ घूमिरहे घनघने गगनमैं। डोलत पवन प्रचंड दिगन मैं ३२४॥ विज्जुलता चमकत चहुंओर। करहिं जोहार सकल खगसोर॥ भागे व्यालकाल अनुमानी। उतरि गयो असुरन सुखपानी ३२५॥ सिर सोहत सुकुंद जगस्वामी। आठ बाहु शयसोचन नामी॥ पीठत बसन घन तन बनमाल। अमल कमलदलनयन विशाल ३२६॥ कुण्डल मुकुट किरीटजड़ाऊ। जिहिलखि लजहिं सूरहिनराऊ॥ उरहीरन के हारसुहाए। कंकण कटक महा छबिछाए ३२७॥ निज आयुध भूषित सब करमैं। इकइकमहं शतशतरवि भरमै॥ सोहति अलक अहीश लजावनि। जग मन हरणि बनी सुसुक्यावनि ३२८॥

दो० आवतही भगवान के माया गई नशाय।
देवन पद बंदन कस्यो असुर रहे खिसिआय ३२९॥

चौपाई॥

काल नेमिदानव तिहिकाल। चल्यो प्रातचढ़ि सिंह

विशाल ॥ काल नेमितन बिस्तरकहईं। जगन बीच असको कवि अहई ॥ ३३० ॥ छप्पय ॥

सहस शीश गल सहस सहस पद सहस उदर धर। सहस दृष्टसुख सहस सहसनासिका सहसकर ॥ सहससूर सम मुकुट धरे सिरकर कंकण वर। भुज अंगद जग मगत सहस उरहार विमलतर ॥ सहसन अंगुरिन के मधिलसैं सहसन सुंदरी छबिभरी। जिमिमंदरलपटयौ बासुकीतिमि कटिमणि किंकिणिपरी ३३१ ॥ सहसन आयुधधरेभरे निज तेज सकलदिसिसुमनहार बज्रगरेपरेउर भूरिभरेरिसि ॥ चलतधरणि डगमगति अतिहि सोवनतनगावत। करउठाय घनटन्दब्योम बलकन्द फिरावत ॥ बरबेग वायुच सुधाभरी असुरनगह्योआनन्दमन। लखिकालनेमि कहं काल सम थर थर कंपे देवगण ३३२ ॥ नदीनाह जिमिबढ़ै पर्वमहंतिमि सो बाढ़ो। धरणि चरण शिरब्रह्मलोक लों लगिभोठाढ़ो॥ प्रबलप्रबल शिखि सरिसबीर बाढ़त दरशाई। दूजोनिरखि बिराट सुरन उरसङ्का छाई ॥ बलिछलन बढ़े बामनयथा तिमिरण बाढ्यौ दनुजबर। विंध्याचल सों ऊंचो लसोरोकि सूरथ क्रूरतर ३३३ ॥ भय न गहञ्जयहकहत असुरगणसों अति गरज्यो। गिरे सकलभुवगर्व सुनतखयको घनलरज्यो॥ शिखर बिखरि गिरिगये गिरिनतें महिअकुलानी। आकुल ह्वै उछल्यो व्योमलौं अम्बुधि पानी ॥ सबलोक शोक बहिबे भये धूरि पूरि तिजंपुर गयो। इमि महा गर्जना करि तबै कालनेमि चलतो भयो ३३४ ॥ धरतचरण थरथरतिधरणि चिक्करत दिग्गाकरि। चपत शेषफण कपत शीव अति भार सींव भरि ॥ कमठ अतिहि अकुलात बिथा धारत बराह रद। तहंलौं कम्पेजीव जहांलौं ब्रह्मअण्ड हद ॥ सुख श्रवण नासिका के बिवर बिथ्थरी के हरहिं मद। इमि चल्यौ कालसो रुधित बढ़ि कालनेमि बिकराल हद ३३५ ॥

दो० कालनेमि को चलत लखि इमिसबअसुरकराल।
महामोदगढ़ि बढ़िभिरे अमरसों तेहिकाल ३३६ ॥

चौपाई ॥

तेहि क्षण हरिसहाय कहं पाई। चले अमर गण अमरषछाई ॥ दुऊंदलसों अति सङ्गरमांच्यो। रण रस सबहिन को उरराच्यो ३३७ ॥ सिंहसरिस सबदानव देवा। लरहिं चतुर चाहत जयमेवा ॥ बाजन बाजहिं सकल जुझाऊ। उरमहं बढ्यौ युद्ध को चाऊ ॥ ३३८ ॥ शंख बजाइ बजाइ रिसाई। बरषहिं बिबिधि शस्त्र समुदाई ॥ महाप्रबलनिग दलतें कढ़िकै। मैंअब सबन वधत यह पढ़िकै ३३९ ॥ काल-नेमि नैरित शिरमण्डन। चल्यौशचुकी सैना खण्डन ॥ जासु रूपलखि जगत डेरायो। सुरके उरअतिसंशय छायो ३४० ॥ मुखतें तनत ऊताशन ज्वाला कियो तिहूंपुर परमबिहाल ॥ बढ़िबढ़ि बाजु सकल दिशि ताकी। आयुध भूषित राशि प्रभाकी ३४१ ॥ करनलगीं सुरदल संहार। त्यागण आयुध अस्त्र प्रहार ॥ तनतें कढ़े मेघनभ छावत। गरजतघोरबिज्जु बरसावत ३४२ ॥ मुष्टि प्रहारि बधे बज्रयोधा। कर पदतें कितने भरिक्रोधा ॥ तलतें उरतें आयुध भारी। वधे अनेक आसु असुरारी ३४३ ॥

दो० कालनेमि सुरकाल बनि मर्द्यो निर्जर सैन।
बड़ेबड़े योधा मरे अपर परे गतचैन ३४४ ॥

तोटक ॥

बज्र बाण सुराधिप अङ्गदियो। गजके सह आसु अडोल कियो ॥ पुनि जीति धनेशहि मोद मयो। गत प्राण जलेश करत्त भयो ३४५ ॥ यम जीति सहानुग कोप भर्यौ। निज तुल्य तवै तनचार धर्यौ ॥ शशि सूरज के पुर मैं धसिकै। सब सम्पति आसु हरी हंसिकै ३४६ ॥ सुरके मुख सोंजत बाह छिलै। अपने मुख राखेउ चाह छिलै ॥ बस वायु कियो पुनि जीति तहां। चलिगो बढ़िकै दिग अन्त जहां ३४७ ॥ सरिता सब काढ़ि धरीं तन मैं। अतिही रिसि तासु भरी मनमैं ॥ जितने जगभूत विकार रहे। जल तेज धरादि पुराण कहे ३४८ ॥ सब थापि शरीर अनन्द मयो।

दुसरो बढ़ि बीर बिराट भयो ॥ इमि देवन जीति अदेव महा । गरज्योकहि मैं अब एक रहा ३४९ ॥

दो० असुर छन्द बिनती करहिं जय जय शब्द सुनाय ।
सुर पूजित सुख चारसो लसोतहां छबिछाय३५० ॥

चौपाई ॥

तबसों गयो विष्णुके आगे । प्रेरित मृत्यु मरणके लागे ॥ देख्यो खगासीन छबिछावत । अरि अरदनहित गदा फिरावत ३५१ ॥ श्याम तामरस सोचन लोचन । कोटि काम कहं भरत सकोचन ॥ पीतबसन पुनीत बनमाला । कुण्डल झलक कपोल रसाला ३५२ ॥ भुज उदारु बसुचारु सुहाये । जिनमहं भूषण रतन जराये ॥ एक हाथ महं लसत सुदरशन । अरि असुकरसन जाको दरशन ३५३ ॥ सोइ भक्तन कहं परम सुदरशन । शुभ समताकहं करै सुदरशन ॥ दरशत सहस आर अति भारे । क्षण महं बज्र गिरि भेदन हारे ३५४ ॥ कवित्त ॥

एक एक आरन मैं फिरत हजारन हैं धारण विशूल सुखचारणके समुदाय । लाखन दिनेश औ द्विजेश अमरेश गण घूमहिं धनेश औ जलेश यौवा यमराय ॥ गिरधरदास नेकु प्रभाके प्रकाश होय विश्वको बिनाश कौन जानै जो खरनजाय। देवदल हरषाय दैयदल धरसाय अरिरूप सरसाब हरिकर दरशाय ३५५ ॥

दो० रतन अनेकन जगमगैं अस्त्र शस्त्र शिर मौर ।
भयोसुदरशनको तबहिंदरशन तेहितेहि ठौर३५६ ॥

चौपाई ॥

सोहत कंबु चारु कर दूजे । जाकहं पूजा हं तिजपुर पूजे ॥ राजहंस सो बरण सोहायो । गाय सकहिं कोउ नहिं नहिं गायो ३५७ ॥

सवैया ॥

दारत दानव दीन फिराद सों पूरत देव हृदै अहलाद सों । चारुजं बेदबसैं सुखअग्र समग्र बसैं सुर मध्यहि खाद

सों ॥ तीरथ अन्त मैं सन्त मैं पूजित जीत तुरन्त मैं दैत सुनाद सों। धारण ताहि किये करमैं गिरिधारण प्यार मये मरजाद सों ३५८ ॥

दो० पंचजन्य समअन्य नहिं कोउ बाजन तिहुंलोक।
अमरथोक उर सुखभरन करन असुर उर शोक ३५९ ॥

चौपाई ॥

तबसो गदा लखो अति भारी। दानव दर्प बिनाशन हारी ॥ जाके बल गतभीत सदाई। लरहिं अमरगण शंख बजाई ३६० ॥ कवित्त ॥

गरुता समुन्द दीन हंदकी हरणहारी सोहति दृचन्द श्रीमुकुन्द पाणिमैं सदा। नेकुही प्रहारनि प्रहारनि करति रजटारनि सकल सुर सन्तन की आपदा। छूटतहीं लूटतिहै रण दुश मन प्राण दैतन की जीति आस टूटनि उठै यदा। हरति प्रकाश भासमान को प्रकाश करि गिरिधर दास ऐसी खासहरि की गदा ३६१ ॥

दो० केशव की कौमोदकिहि बरणिसकै कवि कौन।
तौनलखी अतिद्युतिभरी अविबुध अवनी रौन ३६२ ॥

चौपाई ॥

तब निरख्यो पंकज छबि छायेा। जो बिधिहूकी आदि गनायेा ॥ बर बरणिका करणिका ताकी। शीतल नैन होत जिहि ताकी ३६३ ॥

कवित्त ॥

अतिअभिराम ता ललामता है बरसति दसगुनोदीपति बढ़ति रोज रोजहै॥ कमलाको ऐन और आटि कमलासन की कमला निवास प्रियभस्यौ छबि ओजहै। गिरिधरदास आसपास मैं सुवास पगी करतबिलास अलिमत्तनकी फौज है ॥ शोभित सुखद शोभासिंधु शुभश्याम करसुर अचुसूदन सुभाविक सरोजहै ३६४ ॥

दो० कमलनयन के कमलकर कमल निरखि दनुजेश।
कमल मित्र उदये निरखि भयेा कुमुदके भेश ३६५ ॥

चौपाई ॥

तब निरख्यो सारंग सुहायेा। जानै रण हर धनुहिं लजायेा॥ जातें निसरि सर्पसे बाण। रणमहि हरहिं असुर के प्राण ३६६ ॥ कवित्त ॥

जाके बलही सेां देवताके गण राजकरैं हेायकै निपूती सदा शापदेति दनुहै। धारतही हाथ मैं चिकारत दिशा के करि पारत प्रलैसी जनद्रोही गनतनुहै॥ गिरिधरदास जबै बाणवृन्द बरसत लाजकेां लहत प्रलैकालको जोधनुहै। सारङ्ग नयनजू के सारंग से हाथ बीच सारंग बरण शुद्ध सारंग सेाधनुहै ३६७ ॥

दे०॰ तैसेई धर सरपसे दरप भरे हरकाल।
सरपिसरपिंदुतसमरमैंकरहिं अमरअरिकाल ३६८॥

चौपाई ॥

तब हरि हाथ निहास्यौ नन्दक। बिधिहरादि हैं जाके बंदक॥ तीक्षण धारसकै केा बरनी। रोवैं बज्र रुधिरसन घरनी ३६९ ॥ सवैया ॥

ध्यानके है दरध्यान परी करिध्यान कहै असज्ञान धरैकेा। प्यारी महा गिरिधारन की जब धारीकरै तब धीर लरैकेा॥ लाखन शीश निमेष में काटति धारपरे सहप्राण तरैकेा। चारुरही लसि सेा असि श्यामकी मूठकी कीमति झूठ करैकेा ३७० ॥

दे०॰ बारि बारि तरवारिपैं दीजै बिज्जुसमूह।
जाहि निरखि उलटेफिरहिं दानव येाधाजूह ३७१॥

चौपाई ॥

तब बिशाल हरि ढाल निहारी। बरणिसकै केा अस मतिधारी॥ बरतुल बरतुल जासु न कोई। सरकुल गर्व खर्व करसेाई ३७२ ॥ कवित्त ॥

चारु अर्द्धचन्द अर्द्धचन्दतें दुचन्द द्युति सुखमा केा कन्द जामैं सेाहत परमहै। भांतिभांति जटित जवाहिरके पांति२ कांतिधर फूल तामैं ताराकी भरमहै॥ गिरिधरदास बज्र

श्यामछवि कों मोहकरै रणमहि जेठरवि घरम गरमहै । अरि को धरम हारी बरम करमकारी चरमरचित ऐसो श्याम को चरमहै ३७३ ॥

दो० असुर कालकी ढाल सो श्यामरंग दरशाय ।
जाहिदेखि दानवसयन सभय भागिदुरिजाय ३७४ ॥

चौपाई ॥

तब हरि हाथ पास अवलोकी । छणमहं जोसक बांधि त्रिलोकी ॥ पाणी पाशपास जबजाई । लखतहि आतुर फिरै लजाई ३७५ ॥ सवैया ॥

लाखन फंदपरे जिहिमैं मतिमंद अरातिनकों करैनाशहै । मन्दरछू कहं बांधि सकत्ति पुरंदर मेछ भटैवै प्रयास है ॥ हाथ धरे गिरिधारनजू मतिइन्दन को अतिही परकाशहै । पाशहैपाशतौभूमिअकाशलौंपासहैयातैंलसैबरपासहै३७६॥

दो० चासभरे असुराधिपपास देखि हरिपास ।
कालनेमि बलतें रहे खरेगिने जे खास ३७७ ॥

चौपाई ॥

हरिहि देखि उरको अघ खोल्यो । बज्रवचन चढ़िदानव बोल्यो ॥ यहीबिष्णु देवनको स्वामी । शंख चक्र धर नभ चरगामी ३७८ ॥ याकेबल सुरसंगर जीतहिं । सदा असुर गणको वधचीतहिं ॥ इहीदीह दानव कुलहंता । याहि भजहिं भिक्षुक तपवंता ३७९ ॥ दानव वेनुवंस को दावा । आजु याहि हम सन्मुख पावा ॥ हिरणकशिपु दोउ भाई भारे । मेरे जनक इन्हो ने मारे ३८० ॥ मधु कैटभ इन्हहीं बधिडारे । बड़े बड़े दानव संहारे ॥ आजुमारि इहिआनंदलैहौं । सुरनहारि असुरन जयदैहौं ३८२ ॥ अबतूनाहिं बचत बनमाली । इमि कहि चला गरजि अघशाली ॥ सुनि कै असुर वचन जग नायक । मधुर विहंसि बोले सब लायक ३८३ ॥ अल्पवीर्य बहुसमुझत मनमैं । जल्पहिं कूर सूरनहिं रणमैं ॥ आजु मारि तोहि व्याधि नशैहौं । निज निजथल सबदेव बसैहौं ३८४ ॥

दो० इमि सुनि कै हरि के वचन हंसिद।नव सिर मौर।
तजनलग्यो सब करनसों अस्त्रशस्त्र तिहिठौर ३८४ ॥

चौपाई ॥

बज्रि घुमायगदा अतिभारी। पन्नगारिके ऊपरमारी ॥
तातें व्यथितहेाय खगखामी। भयेजानुबलसूतलगामी ३८५ ॥
सेा लखि अतिरिसि हरिकेां आई। बज्रि दनुज वर गदा चलाई ॥ ताहि पकरि हरिफेरि प्रहारी। सिरकर हस्यौ चक्र निज मारी ३८६ ॥ तिन सेां बिगत लख्यो सेा कैसे। बिगत शिखर गण पर्बत जैसे ॥ बज्रि धरा अरि धरहि गिरायो। देवन जयजय शब्द सुनायो ३८७ ॥ तब बढ़िभिरे महाबल शाली। देाज बंधु सुमालीमाली ॥ तिन के शिर हरि चक्र निकारी। काटिदिये अवनी पर डारी ३८८ ॥ अनुजन मरत देखि तिहिकाल। माल्यवान बढ़ि असुर कराल ॥ महाबज्रसी गदा घुमाई। मार्स्यौ गरुड़हि कोप बढ़ाई ३८९ ॥

दो० जब सौं चक्र प्रहारि कै काटि अनु शिर आसु।
भूमि गिरायो देव पति करन अनुकुल नासु ३९० ॥

सो० माया गत रण पाय छायरहे उरमोद सुर।
बढ़िबढ़िशंखबजाय दख्योआसु दानव दलहि ३९१ ॥

चौपाई ॥

तेहि छण बासव बज्र उठाई। बलिसों बोले रोस बढ़ाई ॥ रेमठ तू माया करि करिकै। जीतत बाहन अघ मति धरिकै ३९२ ॥ आजु बज्र तें हरि शिर तोर। परम मोद दैहौं सुर ओर ॥ सुनि हंसि बलि दानी शिर मंडन। बोले चंड अपर बलखंडन ३९३ ॥ नेरणकरहिं वीर व्रत धारी। तामैं अबशि जीतिकै हारी ॥ कर्म विवश जनजीवहिं मरहीं। पण्डित तासु शोच नहिं करहीं ३९४ ॥ इमि कहि चापकर्ण लौं मार्स्यो। तानी विशिख बज्र से मार्स्यो ॥ तेहि सहि महा क्रोध सेां भरिकै। बोले अब न बचत तू ठरिकै ३९५ ॥

दो० बज्र पाणि कर बज्र लै मार्‌यो तीक्ष्ण धार।
सरथ बाणगत बलिगिरो भो अति हाहाकार ३९६॥

चौपाई॥

सो लखि जंभ महा रिसिछायो सिंह सवार आसुतहं आयो॥ कर पर दरखि गदा लै भारी। गज समेत सुरराजहि मारी ३९७॥ लगे प्रहार व्यथित ऐरावत। भयो जानुबल भूतल आवत॥ तब मातलि रथ लायो धोरे। दश शत जिन महं जोरे घोरे ३९८॥ गज तजि रथहि चढ़े सुरराज। निरखि हस्यो दानव शिरताज॥ तबहिं शूल मातलि उर मारो। ता कहं सहि रहि गयो बिचारो ३९९॥ तब वासव बढ़ि बज्र प्रहार्‌यो। काटि जम्भ सिर भूपर डार्‌यो॥ जम्भ बधन नारद सों सुनिकै। नमुचि पाक बल धायेसुनिकै ४००॥ रे रे इंद्र महा अघकारी। छल रत सदा भीरु उर भारी॥ आजु मारि तोहि भूमि गिरैहौं। बलि मारणको शोक हिरैहौं ४०१॥ इमि कहि कहि बल निधि भट तीनो। शरण शक्र रथ छादित कीनो॥ बलबल धर बलिरिपुहि प्रचार्‌यो। सहत बाण घोरन कहं मार्‌यो। ४०२॥ पाक सहस रथके मधि हनिकै। शत शरहते मातलिहि गनिकै॥ नमुचि पंचदश अति अनियारे। महाकोप भरि इंद्रहि मारे ४०३॥

दो० वरषि बाण अभिघात से तीनहं तेहि खल कोपि।
सरथ शक्रकहं आसुही दियो गोपि उर चोपि ४०४॥

चौपाई॥

सो लखि देव सकल भय छाये। हाहा करत भये घबराये॥ काटि बाण पंजरको मन्दर। ता अन्दर तें काढ़े पुरन्दर ४०५॥ मारन केतु देतु छबिभारी। धारणकिये कुलिश असुरारी॥ तब लौं दनुजन अनुजन को दल। दलिकै करत भये अति हलचल ४०६॥ सहस नैन निज सैन निहारी। जिमि खेती तुसार की मारी॥ अष्टधार युतबज्र उठायो। शचुन ऊपर आसु चलायो ४०७॥ मारि पाक शासन बल

पाकहि। रणमें करत भये निज साकहि॥ सोलखि कोप शोक उरछाई। गरज्यो नसुचि असुर करराई ४०८॥ घण्टा घुन्द विभूषित भारी। निर्मित रत्न शूल करधारी॥ अब न बचत तूं इमि ललकारी। मारयों अरिहि सघोर सुरारी ४०९॥

दो० ताहि अमित शरमारिकै व्योमहिं काट्यो शक्र।
हस्यौससुचिशिरकुलिशसोंबज्रहिनैनकरिवक्र ४१०॥

शिरधर धरि सोउठा बहोरी। लरै समर महं भांति अथोरी॥ देखि जियत तेहि तहं रणदेश। मनमहंसोचत भये सुरेश ४११ याते वधे अनेकन बीर। दृढ महा तप पुंज शरीर॥ बड़े बड़े पर्वत के पक्षण॥ काटि कियो तिज्जपुर को रक्षण ४१२॥ सोहसअल्प असुर पर मारो। मरिकै जियो सोच यह भारो॥ हृदय विचार करतइमि ज्ञानी। तिहि क्षण होतभई नभवानी ४१३॥ गीले सूखे मरिहै नाहीं। यह बरदान अहै इहि पाहीं॥ तातेदूजी करज उपाई। जासहं मरै अमर दुख दाई ४१४ सोसुनि बात हृदय महं धारी। फेन लख्यो शत हय क्रतु कारी॥ शुष्कन गीलो गुणि कर लीनो। परि हरि अरिहि गर्भ बिनुकीनो ४१५॥

दो० देव कुसुम बरसत भये करहिं गंधरप गान।
गावहिंनाचहिंअप्सरा ताकहिंचढ़ीविमान ४१६॥

चौपाई॥

अपर असुर जे रणमद माते। लरत रहे तेहि बल दरशाते॥ तिनहिं अनल अनिलादिक याचा। शस्त्र चलो भरि भरि क्रोधा ४१७ तब विधितहं नारदहि पठायो। तिन तहं आय सुरन समुझायो॥ हरि प्रताप तुम अस्तुत पायो। जीति लही बलि शचु नशायो ४१८॥ अबनलरुज नृप नीति विशारद। इमि कहि गये भवन चलिनारद॥ तजिहत शेष दनुज गत शङ्का। सुर निज पुर प्रविशे दै डङ्का ४१९॥ बचे असुर तब भय गत ह्वैकै। बलिआदिक

के सिर धर लैकै ॥ अस्ताचल महं राख्यो सबहीं । कवि तहं तिन्हहि जिवायो तबहीं ४२० ॥ ते जीये जिनके हे शिरधर । संजीवन विद्याके बल बर ॥ बलि उठि तेहि क्षण वैसे कैसे । सोयो उठै नींद गत जैसे ४२१ ॥

हरिगीती छन्द ॥

गतनींद से उठि आपु वैसे हारि खेदहि नहिंकियो । जग विदित ज्ञान निधानसो भवतव्य गुणि मनमैं लियो ॥ इमि उनइस शत आठकार्तिक कृष्ण आठैंदिन रच्यो । कच्छप चरित फल चारि प्रद सुनि जो श्रवण मङ्गल मच्यो ४२२ ॥

दो० मथ्यो आपुही एक वपु धस्यो एक वपु शैल ।
तिनहिंत्यागि औरहि भजैको असमानवमैल ४२३ ॥

सो० सुरगण जिनकी आस दिविराजत करिमनहिंथिर ।
भारतगिरिधरदास तिनहरिपदकोधूरिशिर ४२४ ॥

इति श्री गिरधरदास विरचितं कच्छप कथामृतं समाप्तम् ॥

अथ बामन कथाष्टत लिख्यते ॥

दोहा ॥

दो० चरण कमल गुरदेवके देत मूरि आनन्द ।
सुमिरत संकट कटत सब मिलतसुदितनंदनन्द १ ॥
श्रीमद वल्लभ वंदिकै वरणत बामन रूप ।
जासु प्रभाव न जानहीं प्रजाभूत अहिभूप २ ॥
सो० वामनपद अरविन्द दूरिकरत भवइन्द कहं ।
सुमिरि सुकश्यपनन्द चहत रचन वर छंदकहं ३ ॥
दो० बलि बलधर बल नाशकरि समरधीर सतवाक ।
जबैपाक शासन लगे शासननाक चलाक ४ ॥

तब उत बलि असुरन महं बैठे । काकर्तव्य शोच यह पैठे ॥ सुधापान करि विक्रम मये । प्रबल देव हरि बलसों भये ५ ॥ इहीशोच शोचत गुणि आरज । बोले बचन शुक्र आचारज ॥ महायज्ञ करि हरिहि रिझावो । तबतुमराज अकंटक पावो ३ सुनिबलि हृदय बज्रत हर्षाई ॥ कीनो यज्ञ जगत सुखदाई ॥ कवि आचारज बलि जिजमान । कौन करै सो यज्ञ बखान ७ बिधिसों संपूरण मख कीनो । विप्रन दान अनेकन दीनो ॥ तासों दानव वरसों हालो । परम प्रसन्न भए बनमालो ८ यज्ञ विश्वजित सो छबि पूरो । निकरो सुरथ अगिनतें रूरो ॥ जाकेहय सुरपति हय ऐसे । बरणन तासुकरै कविकैसे ९ तेहि छणतहं आए प्रहलाद । दिए धनुष शरसह अहलाद ॥ शंखदियो कविविजय स्वरूप । तेहिलै लसे दनुज कुलभूप १० ॥
दो० गुरुसो आशिरवाद लहिइमि बलिविक्रम ऐन ।
दनुजन दियोनिदेश यह आसु सजावज सैन ॥

छप्पय ॥

पूरण कुम्भ निकुम्भशिखी सित केश चतुरकर । गजस्कन्ध गजशिरा गजोदर महाषड्भवर ॥ कांचनाक्ष व्याघाक्ष जटी मीनाक्ष गजेक्षनु । धूम्रश्मश्रु भ्रुव चंडरौद्र गोदंत महाहनु ॥ गोव्रज गोखुर विशुसलभ क्रथ कुलभ श्वेत शिरदान पति । शतभुज अस्थिक सप्तमनर ककाल कंजसि विसूरअति १२ ॥ ऊर्ध्ववदनकर सहस सहसपद कृष्ण कृष्णमुख । पंकदिग्ध तनु अहर चन्द्रतापनस मरोमुख ॥ वेगवान अति कीर्त्ति समुद्र विरूप नैनहर । प्रियदरशन सुप्रसाद शैल कंपीमद्यपवर ॥ अरुकेतु वाम विचरविकट वज्रनाभ नारी वरुण। कलसोदरारिद चन्द्रहाप्रवर वीरमर्दन अरुण १३ सागर मथन विदर्भ गविष्ट वरिष्ट शशिध्वज । सूचीमुख अतिकंठ विकचकुशनेच महाध्वज ॥ खंजवाक्ष अतिक्रोध मांसभक्षक उत्कट भट्ट । चंडशक्रि शुशूष भूतलोन्मथन समरपट्ट । कपि कंठकिरीटी विकट अरु सुरयाची क्षिति कंपकर॥ सोमप मांसप कुम्भांड खल बल प्रलंबतन लंबवर १४ ॥

दो० मरुताशन अरुप्रियंकर एकनयन पुनिमुण्ड ।
चले कुलाकुल आदिलै भले असुर के झुण्ड १५ ॥

चौपाई ॥

विविधिभांति के आयुधधारे । गरजत जलद सरिसरंग कारे ॥ झलकत वरम मुकुट मणिहार । लकत चले असुर सरदार १६ ॥ मायावान शस्त्र धरसूर । धीरवीर विक्रम भर पूर ॥ महारथी जे परम गनाए । बचलत भए तबते बलछाए १७ ॥ छप्पय ॥

चल्यो बाण बलवान बाणधनुधरि अतितरजत । रिपुशशि राजसचाज बाजदश सतधरि गरजत ॥ श्यामअंग रंगरंग्यो भटसंग अनेकन । गदापरिघ असि चर्मधरे उच्छाह भरे मन ॥ मणि कनक किरीटहि शीशधरि असुर ईश छाजत भयो । इमिसैन बीचअरि जैनवर बलिनंदन राजतभयो १८॥ चलो बलासुर खच्छलच्छ खन्दनलैसंगा । नीलांबर कहंधरे

कसुनियां केशर रंगा ॥ सहसरिच्छ समुदाय लगे रथ घींचहिंजाका। तैसीही फहरात व्योम महंकाकपताका॥ नगमुकुट शीशजग मगत अति असुर सैनमहं खगतछबि। मनुभोर घोरसागर दिशा मुदित देखियतउदित रवि ॥ चलो नसुचि असुरेश सहस बाघन के रथपैं। जे अश्वनतें चपलचलैं चौंकतरणपथपैं ॥ धनुषबाण करधरे अरे बखतर नगनाना। शारदूल करकेतु वाहिनी मधिफहराना॥ बर वीर बरोबरके चढ़े साठ सहसरथ पथपै। धनुषबाण कर धरे बखतर नग नाना॥ शारदूल करकेतु वाहिनी मधि फहराना। वरबीर बरोबर के चढ़े साठसहस रथपैंलसैं॥ सुरसंगजंग करिबे चहत जिन्हहिं देखि आयुधखसैं २०॥ मायावीमय असुरचलोबढ़ि देतनगारे। अयुत सहस संग रथीगदा असिचापहि धारे॥ व्याघ्र चर्म को सुरथलसत नगराज पताका। मणिमय खगमृग बने चित्र कंचन के चाका॥ रणघन समगरजत पवनगति पूरित शस्त्र समूह अति। दृगगत भ्रुकुटि जामैं लगे लखि रिपु जय आसा भगति २१॥ चलोपुलोमा तिमिर शैलसम उन्नत तनवर। सोहालोहा सुरथरतन मयमय अतसुन्दर॥ लागेझंटसहस्र चपल गरजत अति भारी। सुनिकै दुग्गमन दूर दुरैं जेहि आयुधधारी॥ ध्वजबीचखग्गमग तमहरत तड़िता समजग मगकरत। संगसाठ सहस सुरथी सुभट जंगउमंगहि उर धरत २२ चलो असुर हय ग्रीवलिए हयग्रीव असुरसंग। लाखरथीवरबने श्वेतभूषणभूषितअंग॥ श्वेतवरण तनवसन श्वेतघोरे रथघोरे। श्वेतमुकुट शिरलसैं श्वेतकुण्डल दुऊं-ओरे॥ सिरश्वेतचमरदुऊं दिशिढुलैंअतिप्रतापदलमैंछयो। रणलरन हेत सब सुरनमेंदैडंका चलतोभयो २३ चलेवीर प्रहलाद करन अहलाद सबन उर। सकल शास्त्र संपन्न नीतिकी राशि धरमधुर॥ ताल केतु सुविशाल लसतकंचन रथभारी। कोटिदैत्य संगबने अनेकनि आयुध धारी॥ मणिमोर्छल परवा चमर वज्रशीश फिरावहिं असुरगन।

इमि चले भली विधि खलभले जिन्हहिं देखि सुर सडरमन २४ चले तबै अनुहाद हिरण्य कशिपु सुत बीरा। लीने संग सुढंग कोटि सुरधिनकी भीरा॥ गदाभुशुण्डी परिघखग्ग सुगदर कहंधारे। जगमगात आभरण गातकारे महंभारे। रथचलत हलत वसुधासकल वसुधा अरिको उर करत॥ वर गरजि गरजि टंकारि धनु दशहु दिशा महं धुनि भरत २५ संवर स्यंदन बैठिचलो बढ़िकाल समाना। लोहित लोयन लोलनसैं करमैं धनुवाना॥ तीनलाख रणधीररथी रक्षहिं चहुं ओरा। क्रौंचकेतु फहरात चलतमन तेंबढ़िघोरा॥ वरगरजतअतिजीमूत स्वनसमर महा मजबूततन। अतिप्रबल असुर पुरहूत रथचलो करन पुरहूत सन२६ चलोविरोचनदैत्य अग्नि समकरत प्रकाशा। गजध्वज सिर फहरात बातवसचारहु आशा॥ रतन जड़ोमनिसुरथ कोटिभट सोहहिं संगा। बाजहिं भेरीशंख पटह दुंदुभि बहु रंगा॥ वरनाग तुरगस्यन्दन सुभटआयुध बहुधारे लसैं॥ विकराल समरहित ताण्डै कमर कसैं हर्षित हमैं २७ चलो सदंभकुजंभदनुज संग स्यंदन भारे। प्रासशरासन शक्तिगदा असि चरमहिंधारे॥ तालकेतु फहरात रुचचामीकरकेरो। कज्जलगिरिसों अङ्गलख्यो कोसनकोघेरो॥ मणिहीरालीला लालके भूषण तनराजहिं घने। छविधाम शुभगनग श्याम पैं औषधि से जगमग बने २८॥ असिलोना भटचले भयावनरूप बनाये। संकट चक्र समनैन गुफा सम आननवाये॥ महा सरपसी जीह बलाहक सोरंगकारे। पर्वत बिटप शिखर आदि आयुध कर धारे॥ रद खड़े बड़े भीषम भयद तैसेइ सहजन संगभट। पर कटक काटन काटन करत विकट ठटन धरमरु रट २९॥ चलो हल बलसींव बंधुबल कोबल संगा। अरुण बदनतन श्याम हरित कच सित दरङ्गा॥ चक्र केतु हय सहस युक्त रथमैं अति राजै। कनकमाल उरमेघ मध्य जिमि दामिनि छाजै॥ घनसिंहनाद कहं करत रण धरत विविधि आयुधप्रबल।

इमि शोभित सेना महं भयो लिये रथीगण दृढ़खल ३० ॥ एकचक्र भट चलो तबै रवि चक्र समाना। विष्णु चक्र सो दुसह सुरथ ऊपर दरशाना ॥ असी सहस संग रथी चित योधा बनशाली। महाउदरण धीर वीरवर कञ्चन माली ॥ मद मत्त हस्त आयुध धरे कस्त्र शचुदलपैं करे। अति अस्त्र शैल सम सांवरे भट सोहैं भटता भरे ३१ ॥ चलो राजु सहचाजु पीत भूषण अरु अंबर। शत आनन शत उदर पुछनि पग मस्तक अंबर ॥ लोहकवच तनसोह कनक कोसकुट जटित नग। संग कज्जल अद्रि कोटि सुभट उन्मत मानहुं नग ॥ जब सुरथराजि गरजत भयो थरथर थर धरकी धरा। सुनिसो सब सुरदल डरभरा समरहित सोचहिं धरा ३२ विप्र चित्त भट चलो क्षिप्र विधि सम छबिधारी। हर वर पाये आपु वरद दानव वर भारी ॥ लिये सकल परिवार वेद ध्वनि चारुज ओरा। श्वेत बसन आभरण माल खंदन अरु घोरा ॥ रथ हंस केतु अति फर हरै हंस सरिस द्युति रङ्गीलसि। सित छत्र विराजत तच जिमितुहिन शैलपर उदित शशि ३३ ॥ केशी दानव चलो देह द्युति अंबुद ऐसी। चंचल नैन विशाल लाल पुनि माल सुतैसी ॥ शत लोचन शतबाजु धरे शतभूषण भारे। जंट केतु फहरात लगे रथ भैंसा कारे। घनघुंघुरूघंटा बजुबजैं सायधो बावन सहस। इमि चलोभलो तित लरन हित धरे उचित चित बीर रस ३४ ॥ दृढ़पर्वा बढ़ि चलो चारु रथ कनक खचित पैं। सारस हंस मयूर रतन मय सुघर रचित पैं ॥ लीने लाखन भीर बीर कर तीर धनुष कर। मुकुट महा द्युति शीश भरे भटईश बली बर ॥ निज ताल देत उत्ताल अति काले मेघ द्युतिलालदृग। सुरदल ऊपर चलतो भयो मनहुं सगन पर नाथ खग ३५ चलो प्रबल बल दैत्य चारु रथ चढ़ि बल छायो। पहिरे कुण्डल क्रीट भुजन बाजू सरसायो ॥ पुनि पुनि लेत हमाल गरजि कै आनन पोंछै। पैठत रिपु दलबीच बली निज ऐंठतमोछै ॥

भेरीतुरही बरदुंदुभी चहुं ओर बाजति भईं। रण रीति नीति अरु प्रीति सब सूरसंग राजतिभईं ३६ ॥ चलेकली बलिराज साज सो कौन कहै कवि। कनक रत्न के कलश देखि शशि दुरैंसुरैं रवि ॥ घण्टा घुंघुरूघने करैं टण्टा अति भारे। घेरि रहे सब दैत्यवीर आयुध धरकारे॥ अपसिरा बाजि शिरसिवि कुपथ बिकच मतंग शतान्नजय। दशसुभट निकुंभ दुरायसह रच्छहि राजहि रण समय ३७ ॥ कनक मयो मय रचित सुरथ सब काम जड़ाये। सारसहंस मयूर कीर राजहिं छबिछाये ॥ गजमुक्ता झालरनि लसत कूबर मणिकेरो। चक्र चार अतिचीरु शब्द घन सरिस बड़ेरो ॥ सब घोरे घोरे वर्ण बरजोरे थोरे उमिरके। सब भूषणभूषित लसहिं गत दूषन नाशन तिमिरके ३८ ॥ विजयमाल कहं धरे गरे मोतिनकी माला। माथे कनककिरीट कौन छबि कहै बिशाला ॥ धारे आयुध विविध शक्ति शर असनि कृपाना। भिण्डिपाल अरु सुशल रासन शूल महाना ॥ शिर शुभग छत्र चामर दुरहिं सुरछल विजन सुहावने। तहं अस्तुति करहिं अनेक बिधि याचक गण मनभावने ३९ ॥ चलत असुरदल बजैं शङ्ख दुंदुभि सहनाई। धरतधीर गण चरण सकल धरणी थहराई ॥ विप्रन दीनो विजय पच आशीष सोहाई। तिनपैं बलिधन सरिस सुधन बरषाबरषाई ॥ जेयाचक बंदी सूतगण संग गानकरते चले। तिन सब कहं तहं देतेभये मणिगण आभूषण भले ४० ॥

दो० इहि बिधान चलती भई दानव सैना घोर।
प्रलय पयोनिधि समउमड़ि सुरपुरपर सब ओर ४१ ॥

चौपाई ॥

सुनिकै असुरसैन करसाज। सुरन सजावत भे सुरराज ॥ गुह्यक चारण स्वयंप्रकाश। यक्षरक्ष अहिसहित कुलास ४२ ॥ किन्नर सिद्ध गंधरव शैल। सागर सकल चले रणशैल ॥ मंगल बुध गुरुमंद जयंत। रणहित चलेभले बुधिवन्त ४३ ॥ बरे बरे बलभरे सुरेश। चले पृथक कढ़ि करि भट भेश ॥

एकएक बलवीर्य निधान। बरनैसो असकौन जहान ४४ ॥

छप्पय ॥

चले धनद बल धाम गदा सोहत कर भारी। बन्यो जड़ाऊ सुरथ सहस हययुत मनचारी ॥ यक्ष रक्ष बैताल करोरन संग बलधारी। गदा परिघ असि शूल हाथलीने रणकारी ॥ बर श्वेतछत्र शिर सोहई जिहि लखिउडपति मोहई। रथ ध्वजाबनी कांचनमई निरखत दामिनि द्युति हई ४५ ॥ चले प्रेतपति हाथदण्ड ब्रह्मण्ड बिनाशन। अरुण नयनतन उच्च सकल दिशि भरत प्रकाशन ॥ पितृदेव गण व्याधि विविधिविधिलीने संगा। मृत्युपासलै पासखरी अति याचत जंगा ॥ बर रत्नमाल सोहति गरेशीशमुकुट बज्रनग जरे। नवनीलवसन कहं तनधरे लरन हेत रणमनके ४६ ॥ चले वरुण बलसींव बैठि सितस्यंदन भारी। श्वेत छत्र शिर लसतकेतु दरशत रविकारी ॥ संगजंगहितकिये जादसमु-दाय भुजंगन। रक्षहिं नाथहि घेरि खरेते भरे उमंगन ॥ इमिसोहे सहितजलास चितपास हस्त अरि नाशहित। जय जय बोलहिं निरजर अमित ढुरत चमर दुइ ओर सित ४७ ॥ चले प्रभाकर परम प्रभाकर बिक्रम आकर। सुन्दर स्यंदन बैठि करिय किमि बरणन ताकर ॥ शंखचक्र कहंधरे भरे संगरके चायन। संगसप्त ऋषि वेदपढ़हिं सुर विजय परायन ॥ सुरसरसिज गणकहं दिवसमणि दानव तमपर दिवस मणि। इमिभये सुशोभित दिवस मणि सौंह सैनलखि दिवस मणि ४८ ॥ चले निशाकर प्रबल गुणाकर अति छबिछाजत। सुरङ्ग कुरङ्गको सुरथतुरङ्ग लखिकौजिहि लाजत। कर सोहत गुरुगदा करत तमदूरदिशनको। श्वेत पत्रशिर श्वेत बन्यो निशि मणिके मणिको ॥ उड़गन कोटिन भट साथ मैं आयुध धारे हाथ मैं। द्विज पढ़हिं विजय श्रुति गाथ मैं सुरुचि तिलक दै माथ मैं ४९ बिबि अश्वनी कुमार मार मन हरण चलेरन। सुन्दर सुरथ सवार किये सिंगार सुभग तन ॥ अंबुजकी उरमाल हार मणि के सुढार

धरि। संग औषधी अपार जारिजे क्षारकरहिं अरि॥ शिर बर किरीट कलगीलगी चक्र ओर दुति जगमगी। कर असि छबिलखि तड़िता भगी सेन शत्रुकी डरपगी ५०॥ चले आठ वसुभले बैठि स्यंदन कंचनके। लागेजामें तुरङ्गसुरङ्ग आभरण रतनके॥ लाखन सोहैं साथबीर नाशन रिपुगणके॥ कानन कुण्डल खरे लसैं द्युतिभरे। नभ धुना सोहावनि फरहरै निज सैना की डरहरै। अरि धीरज दृगगोचर हरै शोभा सबमनबरहरै ५१॥ चले द्वादश रुद्रश्वेत वृषभनपर चढ़ि-चढ़ि। धूम्र बरण दृग अरुण हिये अतिही रिस महिमढ़ि। कर त्रिशूल कहं धरे धरङ्ग मारङ्ग यह पढ़ि पढ़ि। दृढ़ भुज सोहत भये सैन महं रण हित बढ़ि बढ़ि॥ बरजटा जूट शिर छाजई सुमन बीच बिच राजई। संग प्रबल प्रेत दल गाजई सुर महं शोभा साजई ५२। विश्वेदेवा चले सकल रवि सरिस प्रकासा। कमल माल उर अमल लसैं अलिगण चहुंपासा॥ बैडूरजके सुरथ सजेध्वज लगेअकाशा। तेजराशि बलराशि गरजि पूरत सब आशा॥ आयुधगण बिबिधि प्रकारके शशि रवि पवि अनुहारके। तेराखेसुरथ संवार के जयद अमर सरदार के ५३॥ चले साध्य गण भरत दशङ्ग दिशि परम प्रकाशन। शस्त्र सहित भुजआठ समर पर काठ कृतासन॥ बीरासन आसीन टंकारत पीन शरासन। कोटिन गन्धर्व सिद्ध साथ महं भरे झलासन॥ ध्वनि शंखपूरि दशदिशि भरत द्युतितें जग जग मग करत। रथ चलत धरणि धर थर थरत असुर सकल उर महंडरत ५४॥ चले मरुतगण मेघसरिस अंग गरजत तैसे। सुशस्त्र शक्ति असि गदा परिघ धरि धरि रथ वैसे॥ तिनके तनके कनक रतनके भूषणकैसे। मेरु शिखरपर लसत अने-कन उडुगण जैसे॥ अति गरजि गरजि कै महिभरत अति भय अरिगण महिंभरत। सुरहिये मोद धनुगहि भरतउर प्रमोद रण चहि भरत ५५॥ रण गुरुकरमा चल्यो युद्धमेंशुभ विश्वकरमा। कंचनबरमा सुभटधीरधर मांगतभरमा॥ गर

माणिक मणिमाल नीलपट सम नाफरमा ॥ कनक सुरथ आसीन किये करमैं असिचरमा। दिनकर समद्युति अति जग मग तरण उमंग मन मैं पगत ॥ धनु ध्वनि सुनि सुनि सब रिपु भगत बर प्रताप पुरयो जगत ५६ ॥ चले अग्नि बलसींव सात सोहत भुजभारे। देाय बदनपद तीनि तीनि लेाचन रतनारे ॥ धूमकेतु फहरात शीश रथ के हय कारे। पीलेकेश विशेष सुनीले अंबरधारे॥ शिर क्रीटमुकुट सेाहत शुभग मग डग उग जग मग तनग। अति भस्यौ तेज तें सकल जग मनमहं अति रणकी उमग ५७ ॥ चले इंद्र सुर राज साज बरणै असकोकवि। सेाहत असनीदेाय गदा सुदगर कृपाणपवि॥ व्याघ्र चर्मकेा चर्म बर्म जग मगतकेाटि रवि। हीरा लीला ललित लसुनियां धरहिं महा छवि ॥ दिशि घेरि रहे दिशिपालगण आयुध धरे करालतन। सुर शत्रुबंश के कालरण शेाभासींव विशालपन ५८ ॥ आत पत्र सिरछत्र यमत अमृत सुखदाई। ध्वजमैं गजबर सजत छजत कलसा अधिकाई ॥ हेम जालतें खचित जान मधि मणि भाई। करत शेार अति घेार मन केस मगाई ॥ सब ताजी बाजी छबिभरे कर लगाम मातलिधरे। बलि शत्रुसैन दिशि रुखकरे चले शक्रदल मैं हरे ५९ ॥ शीश मुकुट मणि जटित देखिलाजत दिननायक। कुण्डल कानन लसतसदा सुरगण सुखदायक॥ भूषणबने अनेक एकतें एक सेाहायक। बिजय तिलक शिर दिये बिजय जगकरिबे लायक ॥ दुर्ज्जय घेार दुरत सुरछल बंबर सूरसुखी सित बिजनबर। जीवादिक मुनिगण बेद धरदेत अशीश अनन्द घर ६० ॥ बाजत शंखनिशान भेरिझालर सहनाई। जय जयध्वनि दशदिशनि छात छबि बरणि न जाई ॥ बन्दी मागध सूत बखानहिं अस्तुति गाई। तिनकहं दीन्हे दानघने सुखभरि सुरराई ॥ संगमेघ पक्ष किन्नर सकल घेरि रहे रथकहं प्रबल। बर वरषत मोदक फूल फल अक्षत दुर्बामंच जल ६१ ॥

दो० इमि सुर असुर समूह बढ़ि क्रोधभरे तेहि काल।

लाललाल लोचनकिये कीनो युद्ध कराल ६२ ॥

चौपाई ॥

नाना शस्त्र अस्त्र दुहंदिशि सों। मारन वीर लगे भरि रिसि सों ॥ गदा असनि असि चक्र कृपाण। भिण्डपाल तोमर धनुबाण ६३ ॥ गहेवीर विधिकी उतकरषा। वर्षहिं बर बारिदसी वरषा ॥ तुरङ्ग मतंग सुभट रथ नाना। करहिं परस्पर अतिघमसाना ६४ ॥ दानव देव दुहंदिशि सों बढ़ि। अभिरे अभैसभै रसिसों मढ़ि ॥ तिहि छण उभै सैनके भटसों। भैरण द्वन्द मारु धरु रटसों ६५ ॥ भिरे उबाणतें पंचम मारुत। भट साविच नाम बढ़िकै द्युत ॥ बल दानव ध्रुववसुसों बढ़िकै। भिरेवेगसों इतलखु पढ़िकै ६६ ॥ धरवसु सों नसुची शर छांड़त। अभिरे अमरसैन भय मांड़त ॥ मयतें विशुकरमा रणधीर। भिरो महामायावी वीर ६७ ॥ भिस्यौ वायु सों असुर पुलोम। प्रकट करत निज तनको जोम ॥ हयग्रीव दानव बलछायो। पूषाकेसंग द्वंन्दमचायो ६८ ॥ भगसों संबर संगरकरई। आयुधविविध भांति परिहरई ॥ शरभ सलभ दैदानव भारे। भिरे चन्द तें रणमतवारे ६९ ॥ विष्वकसेन साध्यके साथ। भिरोविरोचन दानव नाथ ॥ असुर कुजंभ अंशकेसंग। भिरिकैकीन्हो अभुदुत जंग ७० ॥ असिलोमा मारुत सों भिरि कै। भ्रम बिन विक्रम कीनो घिरिकै ॥ दृच संग अश्वनीकुमार। मिलिकै करत भये अतिमार ७१ ॥ एकचक्र चक्रहि कर धरिकै। भिस्यौ साध्यतें अतिहि अकरिकै ॥ बलबलवान भिस्यौ धनुहाथ। भटमग व्याध रुद्रकेसाथ ७२ ॥ शतसिर राज सैनसों कढ़िकै। भिस्यौ अजैकपादसों बढ़िकै ॥ केशी धूम्रनैन कहंघेरी। भिरतभयो बजबावत भेरी ७३ ॥ दृषपर्वा निकुम्भहि घेरी। कीनोयुद्ध मारु धरुटेरी ॥ भट प्रह्लाद कालके संग। जंगकीन्ह उरपूरितुमंग ७४ ॥ अनुह्राद धनपति रथ करहीं। धनुकौ शब्ददिशन महं भरहीं ॥ वरुण विप्रचित्ती बलशाली। करे लोल रथ कंचन माली ७५ ॥

बलि असुरेश शक्र समरेश । करि कीन्हो घर पूरित देश ॥
इमि सुर असुर परस्पर भारे । सुभट भिरे अरि अहंन हारे ७६ ॥

दो० उदित सकल सूरज भये होत कठिन पविपात ।
प्रलयकाल सो कालतहं भयो भयद दरशात ७७ ॥

सो० प्रगट बज्रत उतपात धूम उठे सुरि गिरिन तें ।
खर खरात कट बात बालू वरषत ब्योमसों ७८ ॥
सबको मन अकुलात थर थरात धरती सडर ।
दिन में उल्कापात दिशा दाह दरशात नित ७९ ॥

चौपाई ॥

सुर असुरन कर संगर भारी । देखत ब्योमबीच सुख चारी ॥ स्यन्दनसहस प्रभूकोभारी । सुवरणविरचित अति द्युतिधारी ८० ॥ जगमगात नगसबदिशिताके । तैसेइ सहस अश्ववर बांके ॥ गजमुक्ताकी झालरि सोहै । हंसकेतु शशि की छबि मोहै ८१ ॥ श्वेतछत्र सिर अतिसरसावै । घूमत सुधा फुहीबरसावै ॥ सुरछत्र चंवरढुरै दुऊंओर । दिग्गन प्रताप प्रकाशनघोर ८२ ॥ चारमुकुट शिरचारु सोहाता । इमिदेखत रणव्योमबिधाता ॥ चारऊवेद मूर्त्तधरसङ्ग । सिद्ध महर्षि लखहिं रणरङ्ग ८३ ॥ भृगु मरीचि नारद अंगिरा । पुलहपुलस्त्यलिखे संगगिरा ॥ षटयोगेश्वर तेजनिधान । वैखानस शिखियोनि सुजान ८४ ॥ श्रुति उपनिषद सकल मखदेव । बालखिल्यदेखहिं रणभेव ॥ ए सब सेवहिं विधि कहं भारे । ति करसुहिं वेदबिधिधारे ८५ ॥ सब उरचाउ समर करधारि । देखहिं देवअसुरकीमारि ॥ सोपरिवारसाथ इमिज्ञाता । नभमहं शोभित भयेविधाता ८६ ॥

दो० चारिवेद चारिऊ दिशा चारिबदन छबिरासि ।
जगनिवास सङ्गर लखत प्रजानाथ मुदनासि ८७ ॥

चौपाई ॥

दुऊंदलसों रणमाच्यो भारी । तुमुलशब्द सबदिशि भयकारी ॥ गोमुख डम्बर झर्झरभेरी । सुरजपटह दुन्दुभिकहं

भेरी ८८ ॥ तरन लगे सिगरे रणधीर। रणमख बिरचेउ दानव बीर ॥ नेताभये तासु प्रहलाद। होता नमुचिभरो अहलाद ८९ ॥ भये अध्वरज बीर बिरोचन। उपकल्पक भो दृढबली रण ॥ यष्टाबाण शचु भयदाता। मयतहंहोत भयो उदगाता ९० ॥ ऐन्द्रपाशु पत अस्त्रचलैया। अनुशाद भो मंत्र पढ़ैया ॥ बलब्रह्मादानव कुलनाहा। करत समर मद्दं देवन खाहा ९१ ॥ बैर समधितें भट हुतवाह। ज्वलितबने रथबेदीमांह ॥ भेरी झालर शंखनुझाझ। करहिं यज्ञमहि पूरित राऊ ९२ ॥ बकी पुलोमा बलतेहि बार। श्रुवा शरासन शर घृत धार ॥ तरपतसमर यज्ञ आरंभा। रथ के केतुलसे मखखंभा ९३ ॥ भल्ल भले कुशसे छबिछाये। तोमरवर घट सोम भराये ॥ पुरो डासभट गण के शिरतहिं। द्विज कंकादिक द्विजगण जेवहिं ९४ ॥ जंभ कुजंभ राज असिलोमा। केशी हयग्रीव बलतोमा ॥ विप्रचित्ति ये बीर बड़ेरे। भेसदस्य मखसंगर केरे ९५ ॥ प्रस्थानिक कर्महिं तेहि पर्वा। करतो भयो बीर दृषपर्वा ॥ दीक्षित बलिमेना चित्र ताकी। संग उमंग भरी अति बांकी ९६ ॥ कालनेमि भट कंचन माली। मख दक्षिणा भयो बलशाली ॥ शिल्पक संबर धीर धुरीन। बिरचेउ समरसूर कालीन ९७ ॥ करि रण यज्ञ असुर सरदार। पहुत विजय फलपहुन उदार ॥ इमिते दानवबीर बड़ेरे। पीवहिं रुधिर अमरगण केरे ९८ ॥ समर सूरदानव अति कारे। भारे रण गर्जहिं विकरारे ॥ घन समतनु धनु तड़ित उज्यारा। वर्षहिं महा बाण की धारा ९९ ॥

दो० प्रास परिघ असि असनि धनु मुद्गर परशु प्रहार।
शूल परश्वध तरुगदा दुहुंदिशि करहिं प्रहार १००॥

चौपाई ॥

हयहिंसन बारन चिक्कार। तालशब्द दानव ललकार॥ शक्ति शूल तन बाण खनक्कनि। स्यंदन घण्टा झांझ झनक्कनि १०१ ॥ शङ्खादिक बाजनकी गाजनि। धनुटंकारशचु

भयसाजनि ॥ महा शब्दते पूरयो लोक । सबके हृदय विदर्न शोक १०२ ॥ दानव वपु महं भूषण भारे । तड़ितधरे जिमि जलधर कारे ॥ शक्तिपंक्ति दुहुं दिशिते छूटहिं । वज्र समान प्राण पर लूटहिं १०३ ॥ फेरि फेरि रथ घेरि घेरि कै । हेरिहेरि रिपु टेरि टेरिकै ॥ भोरे भयंकर भेरि भेरि कै । भिरे वीर दिशि द्युति बखेरिकै १०४ ॥ झपटि झपटि हटि चपटि चपटिकै । दपटि दपटि डटि लपटिलपटिकै ॥ गर्जि गर्जि अति तर्जि तर्जि कै । लरहिं वीर छल बर्जि बर्जि कै १०५ ॥ तमकि तमकि रण चमकि चमकि कै । ठमकि ठमकि बढ़ि जमकि जमकिकै ॥ तरपि तरपि पुनि सरपि सरपिकै । खसे रुधिर महि तरपि तरपिकै १०६ ॥ मरदि मरदि अरि अरदि अरदि कै । नाहरसे रण नरदि नरदि कै ॥ भेदि भेदि तन छेदि छेदि कै । दीने दुश्मन खेदि खेदि कै १०७ ॥ डांटि डांटि रिसि ठाटि ठाटि कै । काटि काटि महि दीह पाटि कै ॥ हेलि हेलि रण फेलि फेलिकै । ठेलि ठेलि रथ पेलि पेलि कै १०८ ॥ केलि केलि धनु मेलि मेलि कै । रहे बीर शर रेलि रेलि कै ॥ बली बीर दानवअरु देवा । करहिंसमरचाहत जयमेवा १०९॥

दो० दुहुं दिशन के बाण सों पूरि गयो असमान ।
मारु मारु धरु मारु ध्वनि पूरी सबके कान ११० ॥

कवित्त ॥

जात महिमसकि धसकि महि धुरजात कूरम खसकि जात कोलही कसकि जात । जग घहरात रवि रथ घहरात पविपात दरशात औ समुद्र सात हहरात ॥ चण्ड अति बात महि मण्डल अखण्ड मण्ड शब्दना अमात काल प्रलै कोह्र सरमात । मूंदि मूंदि मनरण कूदि कूदि काल केसे सूदि सूदि सुरन असुर हिय हरषात १११ ॥

दो० तहं सावित्रहि देखि कै बधन हेत भटवान ।
बाणनतें छादित कियो स्यन्दन तासु महान ११२ ॥

चौपाई ॥

ज्वलन ज्वलत जिमि ज्वालामाल। तिमि सो भयो समर बिकराल ॥ तब सावित्र मरुत बलधाम। लीनो शक्ति बाण बध काम ११३ ॥ तड़िता सम मारी भरि जोर। तिमि पर्वशृङ्गश्यामगिरिओर ॥ सो लखि बाणबाण निजमारि। करि द्वै टूक दई मग डारि ११४ ॥ शक्तिहि व्यर्थ देखि सुर सोई। लीनो खड्ग क्रोध बसहोई ॥ चंदङ्ग ते दुचंद बर परमा। निसितधार बिरच्यो विश्वकरमा ११५ ॥ द्रुतनेइके अंतर मैं बान। मारि मारि क्षुरधार महान ॥ भरिदीनों सब स्यंदनतासु। नेकङ्गनाहिं रहा अवकासु ११६ ॥ धनुष पांच शत चमकत भारी। जिमि अति घन बङ्ग बिद्युत धारी ॥ तब भयङ्कायचलाय सुरथकों। गोसावित्र पाछिले पथकों ११७ ॥ गरज्यो सुत तब दानव बरको। अमरनकर उर धरधर धरको ॥ बरषत बिपुल बाण की धार। चलेउ इन्द्र पहं भूप कुमार ११८ ॥

दो० ध्रुवसु ऊपर कोप भरि बल बल निधि तिहिकाल।
बधन हेत अति बेग सों मारी गदा कराल ११९ ॥

सो० चामीकर को बर्म चर भयो स्यंदन सहित।
भस्यो हृदयमहंभर्म बसुके असु व्याकुल भये १२० ॥

तोटक ॥

बसु मोतब धीरज धारिमन। अतिकीन्ह भयंकर मारि रनै ॥ असिभल्ल त्रिशूल प्रहारि सरै। रथ छाय दियो खलकारिपरै १२१ ॥ लखिसो बलबीरि रिसायतदा। गहि बज्र समान महान गदा ॥ धसि देवन मैं अति कोपठयो। यम पैं बङ्ग बीरन को पठयो १२२ ॥ हय बारन स्यंदन बीरहतो। सुरधीरज भोनत बीरहतो ॥ भट भागत भेरण तेंसगरे। लखिकाल समान कराखडरे १२३ ॥ बसुसो धरि चापहितौनघरी। घनसोबलपैं शरवृष्टिकरी। तिहिधारत सो तनपैं सिगरी। जिमिपावसवृष्टि महान गिरी १२४ रण धावत दानव काल जिमी। हलती तिहि काल

विशाखजिमो ॥ जिमिबारन नासतखेत महा। पुनिभासत ज्यौं घन मैं तमहा १२५ ॥ तिमि पीसत शचुन रोसमयो यम सेा बल सेा रण मैं उदयो ॥ सुरभागहिं आरत नाद करी। जिमि देखि हरी बनकी बकरी १२६ ॥

दो० आप अनिल तिहि कालबढ़ि दोऊ मेघ समान।
बलसेां बलसेा कढ़िनए बलपैं बरषत बान १२७ ॥

चौपाई ॥

धनु कहं धारितवै दनुजेश । काटेतिनके बाण विशेश ॥ तब धुव धुव रण कारण विचारि । भिरे सवेग बलहि ललकारि १२८ ॥ ते दोऊ सुर असुर महान। अद्भुत विधितें बरषे बान ॥ सिंहसिंह जिमि बारन बारन । तिमि रण करहिं घात पर बारन १२९ ॥ फेरिफेरि रथ भेरत भेरी। लरतेभए मारुधरुटेरी ॥ आपुन डारहिं परशर बारहिं ॥ धनु टंकारहिं सैना मारहिं १३० ॥ घात बिदारहिं नाम पुकारहिं । अरिहि प्रचारहिं बधन बिचारहिं ॥ पर बल टारहिं निज विस्तारहिं । लरहिं दोऊ इमि कोऊ न हारहिं १३१ ॥ लरिधनु असिचरमनतें बीर । कुस्ती करन लगे रणधीर ॥ मल्ल समान क्रोध कहं धरि धरि । लरे लरनकी बिधि सबकरि करि १३२ ॥ दोय घरी लखिबल घनतें। भगो आसु वसु असुर रणतें ॥ तबतेहि जीतिदनुज रथ राजी। चल्यो इंद्र दिशि जम समगाजी १३३ ॥

दो० तिमि नमुची धरतें अतिहि होत भई धरमार।
दोऊ अतिहि पराक्रमी अमर असुर सरदार १३४ ॥

तोमर ॥

दोउनैन को करिलाल। लखते खरेजिमि काल ॥ पुनि ठोंकि ताल उताल। विरच्यो सुयुद्ध कराल १३५ ॥ धर देव सेा तिहिकाल। परपैंतजो धरमाल ॥ तबबाणते सम ब्याल। बढ़िकै चले मन चाल १३६ ॥ नमुची रथै इमि छाड़। गरजो हिये हरषाइ ॥ लखिसेा निशाचर राइ। विहसेा कमान बजाइ १३७ ॥ बसुबाण आसुहि काटि।

नव आयुमारेउ डाटि ॥ सहिताहि सोरिसि ठाटि । पर पैंदिये शरपाटि १३८ ॥ नसुचीतबै बलवान । परके दृथा कियबान ॥ रथ फेरि फेरि सुजान । करते भये घमसान ॥ १३९ चलजै बजाइ बजाइ । दलकों सजाइ सजोइ ॥ सुरथै चलाइ चलाइ । दिशिमैं दिये शरछाइ १४० ॥ धरियो पुकारि पुकारि । बरछी प्रहारि प्रहारि ॥ रिपुकों विदारि विदारि । अभिरे प्रचारि प्रचारि १४१ ॥ रथकों मिलाइ मिलाइ । धनुकों घुमाइ घुमाइ ॥ बलकों लखाइ लखाइ । शरके तजै समुदाइ १४२ ॥

दो० इमि सम सङ्गर दुज्जन को देखहिं दुज्जं दलवीर ।
दुज्जनसराहैं बज्जतविधि दुज्जंदिशिकेरणधीर १४३ ॥

चौपाई ॥

दोऊदिशि शरछावहिं दोऊ । गिन दोऊ सम और न कोऊ ॥ दोऊ बाण बाण पैमारैं । दोऊ काटि ताहि महि डारैं १४४ ॥ दोऊ समर भूमिमैं घूमैं । दोऊ वारनके सम झूमैं ॥ दोऊशस्त्रदुज्जनके काटैं । दोऊवीर दुज्जनकों डाटैं ॥ १४५ दोऊमारि भटन महिपाटैं । दोऊ अतुल पराक्रम ठाटैं ॥ दोऊ भली भांति रणसीझे । दोऊ दोउनको बधईझे ॥ १४६ इमि लरि नसुचि बीर मतबारो । महा चक्र धर ऊपर मारो ॥ सूरसरिस बररागि प्रभाका । गिरयोजस्यों रथ सहित पताका १४७ ॥ टूटो कवच जरेतन अंबर । भभरि सडर धर भाग्यो अंबर ॥ इमि बसुसेा दानव जय लहिकै । विबुधन वधन लग्यो धनु गहिकै १४८ ॥

दो० तिमि मय विशुकरमा दोऊअद्भुतरण विधिकीन ।
दुर्दिन दुसह दुजीह से बाणनको करिदीन १४९ ॥

गुरु तोमर ॥

विशु कर्म विक्रम धामको । धनुचारु चिचित कामको ॥ तजिबे लग्यो वर बाणको । हरते सुजे पर प्राणको १५० ॥ मय आप चाप टंकारिकै । सब बाण ता थर वारिकै ॥ निजबाण कोटिन मारिकै । गरजत्त भोलल्लकारिकै १५१ ॥

तबदेवसेा प्रति केापिकै। कर शक्ति खेानि सुचेापिकै॥
पबिसी महाछबिसेा धरै। मगमग्गमैं तमकेा हरै १५२॥
परपैं तजी हियहेरिकै। नहिंतूबचै यह टेरिकै॥ तबसात
बाण निकारिकै। धनु केश ऊपर धारिकै १५३॥ मयअट्ट-
हास प्रचण्डकै। तिहिडारि दीनि दुखण्डकै॥ इमिकाटि
विक्रम ठाटिकै। मय विश्वकर्महिं डाटिकै १५४॥ शर
घोर त्यागेउ जोरसेां। सुरपैंबली सबओरसेां॥ शरतेचुधा
धर व्यालसे। बढ़िकै चलेरण कालसे १५५॥

दो० देवतबै अपने विशिख तिनके सधिमैं मारि।
काटि काटिकै बीचहीदीने महिमैं डारि १५६॥

चौपाई॥

देाऊ भिरे बीर विधि धरिधरि। दुसह महान बाण
झरि करिकरि॥ मण्डल सरिस समर महि चरिचरि
रथ बढ़ाइ अरिसन्मुख अरि अरि १५७॥ सुर असुरन के
प्राणन हरिहरि। मृतक समूह दिये महि भरिभरि॥
लखि इमि रण दुऊंदल भट डरि डरि। गेदुऊंके सन्मुखतें
टरिटरि १५८॥ तबमय धारिगदा अतिभारी। रत्नरचित
मणि खचति प्रहारी॥ तबसेां नाइधुरी कहंतेारि। घेारा
पटै दिये यम ओरि १५९॥ गरजि बज्जरि दानव तिहि
काल। बरष्यौ व्यालसरिस शरजाल॥ एकबाणतें मरिसज-
बूत। संगरमहिं मरंसूतेा सूत १६०॥ काटिएक शरतेंपुनि
केतु। दलमरं छाइ दियेा शरसेतु॥ लखिकै सूत हयनसह
नष्टा। खरे भये महि धनुधरि त्वष्टा १६१॥

दो० रिपुहिनिरथ करिदनुजदिपु विक्रम मय मय बीर।
कालसरिस गर्जत भयेा त्यागत तीक्षण तीर १६२॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

पुलेामा तबैयुद्ध मैं बीर्य तेामा। लरयेागर्जतेा ज्येांमहा
मेघ व्येामा॥ बलीवायुके संगदानेा अरूझेा। छुरै कालसेा
कालसेा शत्रुसूझेा १६३॥ महा सर्पसे दर्पतें बाणअपैं।
लहै धारतें भूमि केा भूमितपैं॥ बड़े बीरकेावेगसेां आसु

अहैं । कपर्दी विमर्दै यथा हांकि बर्दै १६४ ॥ दसौं ओर नाराच नागेंद्र कैसे । चली देव की सैन में ते प्रवेसे ॥ डरै देव ताके निजै ओर ताके । भुलैं बीर ताके जिन्हों के पताके १६५ ॥ दयो छायकै वायुको जानभारी । घने बाण को देत भूपाल डारी ॥ भरयौ पच तें अचुके आत पचै । सबैयों गिन्यो ना बचै बायु अचै १६६ ॥ महाभेरि कों फेरिकै टेरि नामैं । रथै फेरिकै हेरिकै वीर्य धामैं ॥ दिये छायकै बाण भारे करारे । तजैं ज्वाला माला यथा नाग कारे १६७ ॥

दो० तबै वायु निज आयुहित मारतभो नववान ।
ताकहं लखसम गुणिभयो गर्जत असुरमहान १६८॥

चौपाई ॥

वायुतबै उत्तम जब साधी । कीन्ही प्रकट भयङ्कर आंधी ॥ परके शर उड़ाय पणधारो । बीस बाण दानव कहं मारो । १६९ ॥ तबदस पवन साधुकहि पवनहिं । गरजे खलनसके सहि तबनहिं ॥ भट पौलोम समर मइंकूरे । धनुधरिधरि झगरे रिसि पूरे १७० ॥ पवनहिं छाय दयो बाणनतैं । परम बीर जय की ठानन तैं ॥ सात रथी सातऊ दिशि घेरी । बरषे विशिखन बांचत टेरी १७१ ॥ तबै पवन गिरि महा उखारी । तिनके सिरपैं दीनो डारी ॥ ते तब सब चूरण तन भए । पवन सबै लखि आनंद मए १७२ ॥

सो० सोलखि गर्जि पुलोमचल्यौ राऊ जिमि सोम पै ।
उन्नत तन तमतोम जोम भस्यो शर नवत जे १७३ ॥

दो० तबै अनिल अतिकोप करि कीनों बेग प्रचण्ड ।
भस्यों बवण्डर असुरदल दसदिशि धूरअखण्ड १७४ ॥

चामर छन्द ॥

दैतके समूह में अमूह बाण छाइकै । काटि काटि बीर कों दिये धरागिराइ कै ॥ लाख धार-लोऊकी कराल युद्ध में कढ़ी । दैत ओरतें महानदी समान सो बढ़ी १७५ ॥ ब्याल सी खसैं करालबाऊ बीरकी कटी । कच्छसी प्रतच्छ

ढाल मच्छसी असी ढटी ॥ अंग कुञ्जरान के सुदीप से दिखातहैं। नक्र से हयादि चक्र चक्र में विभातहैं १७६ ॥ बालु से जवाहिरात जाहिरात लौंकते। बीचबीर मुंसमे कढ़े सप्राण चौंकते ॥ तीर पैं सिखार यूथ मोद पूरि गाजते। गीध काक आंतलै अकाश बीचभाजते १७७ ॥ सैन देव दैत्यकी दुहूं किनारसीबनी। कादरै डरावनी सोहावनी भटै घनी ॥ तानदी महान को पुलोम सेतुबाणको। दैत्य मोद दान को रच्यो सुभट्ट ठान को १७८ ॥ बायु को सुघेरिकै पुलोम भेरि झेरिकै। हेमपुंख ढेरिकै तजे नराच टेरिकै ॥ दैत्यके मझार मैं धरो बधौ पुकार मैं। बायु लागतो भयो बनेश ज्यों सियार मैं १७९ ॥ मर्दि मर्दि अर्दि अर्दि नर्दि नर्दि काल सों। ढेरि ढेरि मारि बीरकी करी बिशाल सो ॥ गर्जि गर्जि तर्जि तर्जि क्रुद्ध ह्वै युद्ध मैं। आठ सै बली बधे बिरुद्ध युद्ध उद्ध मैं १८० ॥

दो० तब पुलोम बरष्यो विशिख सहि न सको सो बाय।
भग्योबायुमगव्योमजेहि अजहुंलखहिंमुनिराय १८१ ॥

चौपाई ॥

हय ग्रीव पूखासन रणकै। दयो समर महि शरको बन कै। मण्डल समअखण्ड धनुकीने। लख्योदनुज रविसी छबि लीने १८२ ॥ त्यागत अन्तर नेक न परई। शरपर शरशर दिशिदिशिभरई ॥ काढ़तधरतचलावतबाकै। लखैं न कोउ दोउ दल भट बांके १८३ ॥ बाणसर्प मे रतन जड़ाये। गीध पक्ष दोउ पक्ष बनाये ॥ फलखि फलखि से प्राण विनाशन। छूटत भरहिं प्रकाश न आसन १८४ ॥ जित देखिय तित बाणहिं बाना। नहिं जहान महं रहा ठिकाना ॥ विद्युत के समभरहिं उजार। शचुसैन तिमिकरहिं उजार १८५ ॥ पूष्वा कहं भट अश्व ग्रीव। सुरथ सहित छायो बलसीव ॥ भयेअदृश्य बाणतेंसोई। जिमि रविघने घननतेंहोई १८६ ॥

दो० मूसा से अरि शरण गुणि पूषा निज शर मारि।
जारिडारि दीनेधरणि परम क्रोध विस्तारि १८७ ॥

मल्लिका छन्द ॥

भानु के महान बाण। भानु से मरीच बाण॥ रूक्ष पुंख के निधान। दैत्य के हरत्त प्राण १८८ ॥ बाजि ग्रीव दान-वेग। तैसोई करालवेग ॥ बान बर्षिकै बिशेग। पूरि दीन्ह युद्ध देग १८९ ॥ काल से कराल बीर। कोप पूरि युद्ध धीर॥ त्यागते अखण्ड तीर। ज्यौंमहान मेघ नीर १९० ॥ युद्ध भूमि भूमि भूमि। फेरि बान घूमि घूमि ॥ शत्रु सैन पैठि पैठि। बीर मूछ ऐंठि ऐंठि १९१ ॥ घोर दावआनि आनि। चारु चाप तानि तानि ॥ शत्रु बीच डोलि डोलि। प्राण लेहिं बोलि बोलि १९२ ॥ युद्ध भूमि मैं पिशाच। मोदिकै करैं सुनाच ॥ योगिनी कपाल पानि। खोजुकों पिवैंभुखानि १९३॥ भूत प्रेतरक्त झुण्ड। बीरकेचबाहिं सुण्ड॥ आंतलै उड़ाहिंकंक। ओणितै पियैं निशंक १९४ ॥ अप्सरा चढ़ीं विमान। बीर को बरैं सुजान ॥ देवदैत सों महान। युद्ध होत भोसमान १९५ ॥ फेरिफेरि कै कमान। टेरि टेरिकै भटान ॥ हेरिहेरि मर्मथान। बीरको बरैं सुजान ॥ दैत्य शायकैप्रहारि। केतु काढ़िदीन डारि॥ बज्रतुल्य बाण मारि। छेदि चाप भूमिपारि १९७ ॥ कोप पूरिलल्लकारि। त्यागि दीन्ह बाण चारि॥ बाजि भानुके सुरारि। आशु हीवधे बिचारि१९८ ॥

दो० बिरथ बिधनु पुषातबै भगो इंद्र के पास।
हयग्रीव बरजत भयोकरत अमर दलनास १९९ ॥

चौपाई ॥

भगसंबर संगरके माहीं। लागेकरन भटनकी नाहीं ॥ तहांदनुज चापहिटंकारो।पूरिगयोमहि मंडलसारो२०० बिजुरी सरिस प्रकाशत आसा। तजनलग्यो शर सहित हुलासा ॥ ताके शरकी झरलखि भारी। डरत भई सुर सेना सारी २०१ ॥ तब भग मग मग जग मग करतो। मारुमारु धरु ध्वनि दिशि भरतो ॥ टंकारत भारी कोदण्डहि। चलोचण्ड शरपूरि घमण्डहि २०२ ॥ तबते दोउ

भट स्यन्दन जोरी। खेलन लगे ललित रण होरी॥ रुधिर रङ्ग वरषावहिं भूरी। लाल गुलाल उड़ै रण धूरी २०३॥ शर वरषहिं हरषहिं अधिकाई। सिरन कोरि दम कला बनाई॥ लागे गदा शीश बज्र टूटहिं। समर कुंकुमाके सम फूटहिं २०४॥ धरधर मारु मारु सेा गारी। बाजेबाजहिं डफरुचिकारी॥ शेात धमारि मारि अति भारी। केसूतरु मे सकृत सुरारी॥ २०५॥

दो॰ भगकहं तब भेदत भयो संबर शरके जोर।
गरुड़महाअहिको यथा गरजिघोर तेहिठोर २६०॥

बसुकलाछंद॥

तबभग रिसाइ। निजशर चलाइ॥ काटे महान॥ सब शचु बान २०७॥ चौंसठि बहोरि। धनु बीच जोरि॥ अपने नराच। कहि अब न बांच २०८॥ मास्यो सुरेश। रिपिकै विशेश॥ तिहि सहि कराल। दानव विशाल २०९॥ धनुको अकर्षि। बज्र बाण वर्षि॥ दिय भगहि छाइ। विक्रम बढ़ाइ २१०॥ माया अरोपि। नभ गयो कोपि॥ नहिं सेा दिखाय। धनि धुनि सुनाय २११॥ बरष्यो प्रचण्ड। शायक अखण्ड॥ देवन उदण्ड। किय खण्ड खण्ड २१२॥ भगके शरीर। भरिदियेतीर॥ तिलभर अवान। रवितन रहान॥ २१३॥ सेा लखि दिनेश। धनु धुनि विशेश॥ निज अस्त्र डारि। पर अस्त्र वारि २१४॥ राजेश दाप। टंकारि चाप। शंबर सुरारि। माया पसारि २१५॥ छलकै महान। मोह्यो सुरान॥ आपुहि अप्रान। महिपैं दिखान २१६॥ शतधा शरीर। करिपस्यो वीर। पुनि बल निधानु। तिहि लख्यो भानु २१७। दिग्गज सवार॥ गर्ज्जत अपार। पुनि भेा विकस्त। भरकोप्रशस्त २१८॥ पर्वतसमान। पुनिसेा दिखान। घनसेा स्वरूप। नभमैं अनूप २१९॥ पुनि भूमि बीच। लखिपरेा नीच॥ सुर सैन पैठि। गरज्यो सुश्रैठि २२०॥ इमि देखि भेव। डरि भगे देव॥ जित जाहिं भागि। तित लखहिं आगि २२१॥ शंबर अनेक। धावहिं रुटेक॥ पुनि

भरि घमण्ड। ह्वै घन अखण्ड २२२ ॥ बरष्या प्रचण्ड। गिरि उपलखण्ड ॥ ह्वै शिखि महान। दाह्यौ सुरान २२३ ॥ अति ज्वलितज्वाल। सबदिशि विसाल ॥ रथ गज पताति। दाहे विभाति २२४ ॥ पुनि महा शैल। ह्वै गयो फैल ॥ तातें कठोर। असि निशितधार २२५ ॥ बरष्यो अखण्ड। रिपु करत खण्ड ॥ इमि लख्यो तौन। सेा कहै कौन २२६ ॥ रवि मरुत आदि। घनसरिसनादि ॥ जे करहिं पात। आयुध उदात २२७ ॥ तेहि ग्रसत तौन। अतिवीर्य मौन ॥ लखि इमि त्रिमति। सेना नशति २२८ ॥ अति डरहिं पागि। भग गयो भागि ॥ जितरहे शक्र। अति समर वक्र २२९ ॥ तब असुरतौन। भगभयद जौन ॥ गरज्यो उदण्ड। उरभरि घमण्ड २३० ॥ सेा कोप पागि। जितरहे आगि ॥ तितगरजि जोर। बोले कठोर २३१ ॥

दो० आगिभागि मतिजाइयो मेातें अतिडरपागि।
तेाहिदहेगिो भाषि इमिलेापभये। जयलागि २३२॥

चौपाई ॥

निशि करगीत अस्त्र तिहि बारा। कोपि असुर सेना महँमारा ॥ नखतट दलैकाल समान। लागे करन घरन के प्रान २३३ ॥ वेगन चलत दलत दल भारी। भये भीत कर शिखि द्युतिधारी ॥ सुरथ तुरङ्ग मतङ्ग सुभट्टहिं। दहत भये करि अस्त्र झपट्टहिं २३४ ॥ महा वायुजिमि विटप उखारै। तिमि बधि बड़े बड़े भटपारै ॥ अस्त्र वेगतें मरिमरि वीर। परे रुधिरतें भरे शरीर २३५ ॥ ताकी छबिबांकी रणताकी। कहहिं असुर यह प्रलय पिनाकी ॥ शशि के मरदे मरदे सुरदे। परे भूमि असु जमहिं सपुरदे २३६ ॥

दो० सुधाकरहि दनुजन लख्यो दुधाकरत अरि अंग।
समै समै भागत भये त्यागत संगउसंग २३७॥

रोलाछन्द ॥

देखि इमि निशिनाथको निज करतसैना खण्ड। दान-वनके चन्द्र सूरज सरभसलभ प्रचण्ड ॥ तालसे टंकारि धनु

उडगाय अपरजाय। छायदीन्हो सुरनपैं बढ़ि गरनके समुदाय २३८॥ देवतानेभग्नि इतै उतदैत्यके भग्निसूर। पूरिदीन्हें दिशन शरअरु चूरकीन्हे सूर॥ जलदसंवर्त्तक सारस भेरव प्रवर्त्तक तीन। पोनधीर धुरीन कीं तनहीन करि कैदीन २३९॥ समरमैं रथ फेरिफेरि निशानकोंबजावहू। तुमुलशब्दहि करत भे निज दल बढ़ाइ बढ़ाइ॥ भेरि शङ्ख दुंदुभि बजे दोऊ ओर। लग्यो संगरघोर होनेभयो सब दलशोर २४०॥ कटे सुण्ड वितुण्डके बज्र सुरथ हयके झुण्ड। भटन के बज्र बरण्ड डोलहिं बरनि नावहिं मुण्ड॥ कटेकर पगशीश धरउर पटेसोरणभूमि। भूत प्रेत पिशाच विलसहिं तायले अतिझूमि॥ २४१॥ शूल शक्तिभुशुण्डि शायक भटकरनतें छूटि। लूट आनरिपुनकेमहिपरे राजहिं टूटि॥ सुभटकी ललकारतुरंग पुकारिद्विरद चिकार। भरी ध्वनि कोदण्डकोटङ्कारशस्त्र प्रहार २४२॥

दो० द्रुमि निशिकर अरु दैत्य दै लरै नैन करिलाल।
कालसमानकरालरव चालिच्यो तिहि काल २४३
दो० अतिकराल तिहिकाल असुरनसों अरसुरनसों।
सङ्कर मच्यो विशाल नच्यो काल मनु मुदरच्यो २४४

चौपाई॥

अमर असुर निजधनु आकरषहिं। वरषहिं विशिख हृदय अति हरषहिं॥ शरतें भिदे भभरि मन धावहिं। तिमि हय हू अति हंद मचावहिं ३४५॥ वीरनके वरकेतु फरकहिं। कादरके उर सडर धरकहिं॥ गदा परश्वध शूल चमकहिं। भरे वीर रसधीर तमकहिं २४६॥ समर भूमितनकटे पिरजहिं। भूषण उड़गण से छवि छज्जहिं॥ भये चाउ रणधीर गरजहिं। लरहिं टरहिं सुदित तरजहिं २४७॥ देखि समैरिपु हेरि अहरहिं। आयुध धरेभरे रस युजहिं॥ मनहुं सरिस रिस पूर झपटहिं। हटहिं नाहीं दटहिं डटहिं २४८॥

दो० शोणित सरित भयावनी कढ़ी बढ़ी अतिजोर।
सैनदेाऊभुकि लरिरही प्रलय सिंधुसीघोर २४९॥

बरवै॥

लरेउ विरोचन भटसों विष्वक सैन। दुंदुभिकहं वज-वावत लीन्हें सैन ४५० तेहिक्षण साध्य शिरोमणि दैत्यहिं टेरि। तीन वाण उर अंतर मारेउ हेरि २५१॥ ताकेलगे कोपतें दानव पूरि। धनुध्वनिकै वरशायक वरष्योभूरि २५२ विष्वकसैनहिं मारे अहिमेसात। धसे धारिते धरणी छेदत गात २५३॥ तिनतें वेधित ह्वैकै मुरछा पागि। विष्वक-सैन गयोरहि ध्वजतें लागि २५४॥ क्षणमहं चेतहि धरिकै तानि कमान। भयो दनुजके दलमहं वरषत वान २५५॥ तैसेइ वीर विरोचन रोचन युद्ध। सुरमहं शायक वरष्यो ह्वैकै क्रुद्ध २५६॥ जलधर के सम गरजत त्यागततीर। विवुधन वधत विविधि विधि दानव धीर २५७॥ विजुरी सम धनु चमकत श्याम शरीर। मारत परहि समर मैं विश्रुत वीर २५८॥ भागत गजो हांकि गज पदतें पत्ति। रघीश प्रीतिमि इमि सुर सैन भगत्ति॥ २५९॥ अपने शिविरहि मरदत भागहिंदेव। काल सरिस लखिदनुजहिं भरि भय भेव २६०॥ ताकी विशिखासन ध्वनि नाशनि धीर। सुनि सुनि ताके आवैं पास न वीर २६१॥

दो० उरे विरोचन वाणतें भरे हृदय दुखभूरि।
टरेबली सुर शक्र ढिग करे दूरि मगरूरि २६२॥

चौपाई॥

विष्वकसेन साध्यकेभारे। चौदह सहसपदातीमारे॥ तब हतशेष भटहिलैसंगा॥ चलेउदनुजपैं साध्य सुढंगा २६३॥ तेसब रिपुहि सबै दिशि घेरी। वरषे आयुध नैन तरेरी॥ तबहि विरोचन रिपु मद मोचन। लीनो खड्ग लाल करि लोचन २३४॥ काटत केतु शरासनशीस। भरोसमर महि-दानवईश॥ उछरि झपटि दपटि ह्वै आडो। करिअसि विधि रिपुतें भयमाड़ो २६५॥ रथतें हयतें भिन्नशरीर।

गिरहिं भूमिकटि कटिकै वीर ॥ समरविरोचन कालसमान।
करतभयो गहिचर्म कृपान २६६ ॥
दो० ग्रीषमश्रावत के कई गिरहिं कटेरनमाहिं।
श्रैलशिखरतें उपलसम इत उतअति दरशाहिं ॥
प्रभाभक्षीछन्द ॥

रणभूमि बीच अतिकोप पछाड़ । बज्रभटन मारि दीने गिराड़ ॥ जिमि अजायूथमहं सृगमहीप। तिमिलख्यो विरोचन सुरसमीप २६८ ॥ जेजाहिं सासुहें तासुवीर तेईंधन होहिंजुतासुतीर ॥ क्षणमैं इतउत डोलत प्रचंड। असिलिएलिए जनुकालदंड २६६ ॥ करिदये प्रचुतन खंड खंड अतितप्यो जेठजिमि मारतंड ॥ केते कमंध धरुधरु पुकारि रणदौरि रहेकर शस्त्र धारि २७० ॥ शोणित की सरिता कढ़ीलाल। तहिखड़े हौंहिं रोवां विशाल ॥ भटविष्वक्सेन अनीक मध्य। इमिलख्यो विरोचन सुरअवध्य २७१ ॥
दो० तिमिकुजंभ अरुअंध ए उभयलरे बलधाम।
महाऋषभ जिमिऋषभसों कीन्हीं अद्भुतकाम २७२ ॥
चौपाई ॥

अंधकार क्षणमैं करिदीनो। महितें अंबरलौंभरिदीनो ॥ दशसहस्र कुंजर संगलीने। अंशचल्यो तब अतिरिस कीने ॥ २७३॥ गणानीक कहं आवतजोई। कूद्योरथतें दानवसोई ॥ लैगदा वज्रसी भारी। चल्योकाल समबदन प्रसारी २७४ ॥ मर्दनलग्यो गजनकों धसिकै। बकरीबीच बाघसो लसिकै ॥ गदाप्रहारि प्रहारि प्रचारी। चूरचूर करिदीने डारी २७५ ॥
दो० लागेगदा महान गजघूमि गिरहिं गतप्रान।
यनेमगैं निजदल दिशा चिकरतशैल समान २७६ ॥
प्रमाणिकाछन्द ॥

कुजंभ दंभसों भरो। अरंभ मारिको करो ॥ तहांमनो महामरी। दुरहदेश मैं परी २७७ ॥ विभिन्न अंग भूमिकै। गिरैं अनेक घूमिकै ॥ किते विनास वारके। भगैं महा चिकार के २७८ ॥ विना मतंग वाणके। पराहिं

चास मानके॥ लहू भरे शरीरसों। करैं विकार भीरसों॥२८३॥ किते अदंत होयकै। पुराहिं घोर शोयकै बहोरि क्रोध पूरिकै॥ गदाहि दैतहूरिकै॥२८०॥ सुधारि चाम ठानसों। लगो तरक्ष बानसों॥ गजक्ष चंग हेरिकै। कुजंभ नामटेरिकै॥२८१॥ तुरन्त मारिकै धरै। हन्यो भगाय कुंजरै॥ बहोरि सेा रिसाइ कै। गदा लई उठाइ कै॥२८२॥ दिया॥ प्रताप छाड़कै। चल्यो चलाक धाड़कै॥ लहू सेा गरज्जिकै। चले भयो तरज्जिकै॥२८४॥ विशाल नैन लालकै। कियो विनाश सैनकै॥ दिशान घोर शोरभा। मचोर दैत्य चोरभा॥२८५॥ डुले पसारिका लसेा। कुजंभ ता थलै लसेा॥ स्वरूप जोहि कोवकै। कपालि अंतकालकै॥२८५॥ गदा प्रहारि घोरसों। पराहिं नाग जोरसों॥ मरहि देव केदले। बिराहिं जाइ जंगले॥२८६॥ उठाइ सुंड भागते। समीर धीर त्यागते॥ कुजंभ सिंह नाथलै। न देवकी कछू चलै॥२८७॥ दुखित्त चित्त होयकै। पराहिं जोर जोयकै॥ त्रिशूल पाणि शंभु सेा। लसेा गदी कुजंभु सेा॥२८८॥ चकाचयुद्धमें खरे। दुरहि मेघ से वरे॥ कुजंभ बेग पौनने। दिये उठाइ तानने॥२८९॥ निहारि सिंहकों यहा। सुगाभगें भगे तहा॥ मतंग लंगके बरे। मरेमरे डरे टरे॥२९०॥ कुजंभ को सुहें लहे। किये न देवता रहा॥ बहोरि शक्ति बल्लै। पठोदयो महाबलै॥२९१॥ बज्रमष्टा सुकोवरै। त्रदेव धेरबै हरै॥ निशान दुंदुभी बजैं। सुमन्त मेघ ह्व लजैं॥२९२॥ तुरंग बीर कुछुरोध सुरथतें भरीधरा॥ समुद्र सी त्रसुभ भी। कुजंभ सा सुहोभ भी॥२९३॥ तबै सबोधरण हली। लजे त्रदेवकी बली॥ आकाश धूरिसों भरेा। दिखाइ सूझना परेा॥२९४॥ कुजंभ सेा निहारिकै। गदाकरे सुधारिकै॥ दलैदलै तबै चलेा। त्रनन्दसों भरेाभलेा॥२९५॥ कुजंभ हूय जोहिकै। रहेा न सैन जोहिकै॥ तथापि धीरसों लरी। प्रचण्ड वेणि में धरी॥२९६॥ तहां कुजंभ कोपिकै। सहाप्रलै त्ररेापिकै॥ दिशानमें प्रकाशते। दिखै भयो विनाशते॥२९७॥ दो॰ दूमि कुजंभ कर त्रंशते भयो सयंकर युद्ध।

लख्यो दनुज महं क्रुद्ध अति कालरूद्र सो युद्ध २९८॥

चौपाई॥

असिलोमा मारुत संग लरई। अति हि बरा कमरणम हं करई॥ दीह सुशब्द चढ़ि दिशि भयछावत। मह मोदतें शब्द बजावत २९९॥ बजावत चापहि टंकारत। अब न बचत यह आजु पुकारत॥ वर्षत भये करो रणबाण। ध्वनिध्वनि कै कै कठिन कमान ३००॥ मर्दत रथ बारन कै यूथ। अर्दत रूथ खुर सुभट बरूथ॥ लख्यो वायु संग सो असिलोम। निमि खड्ग सो मयाछ तय तोम ३०१॥ नख शिखलौं सब चर्म मयानक। कोपत बोल बजत जनु आनक॥ कालरूप सो कालरणगाढ़ो। लख्यो दनुज अतिदीरघ दाढ़ो ३०२॥ दो० बल अगाध जलयाह भुज धनु अवर्त्त सरमीन।

चर्म कटे धरिधो लख्यो दनुज सिंधुसम मीन ३०३॥

सो० खड्ग ढीह शर दंतमुख फारे मरुत्त धनुष।

मर्दत सुरन समेत लख्यो दनुजरण सिंहसो ३०४॥

इंदिरा छन्द॥

सरन मारतो छाजतो भयो। रिपु विदारतो राजतो भयो। अतिहि कोपतें तर्जतो भयो॥ समर चोपतें तर्जतो भयो ३०५॥ तम अखण्ड में मारतखण्डसो। नगत अखण्ड में कालदण्डसो॥ सुभुज दण्ड में वज्र खण्डसो। लसत चण्ड में यों कोदण्डसो ३०६॥ हय रथूह सें आनज्यों धसै। अमर जूह में दैत्य त्यों लसै। वधि अनेकको नेकमें हंसै॥ निरखि टोलको वाहिनी चसै ३०७॥ असुर ढेरि के भेरि फेरिकै। सुरन घेरिकै नाम टेरिकै॥ दृगतरेरिकै चापफेरिकै। लरहिं हेरि कै चास गेरि कै ३०८॥ अपर प्राण हैं लूटते घने। अरहि प्राण हैं जूटते घने॥ निधित बाण हैं छूटते घने। तुरग यानहैं टूटते घने ३०९॥ बढ़ि प्रचारते शस्त्र डारते। रिपुन मारते भूमि पारते॥ सिर उखारते पेट फारते। सुभन प्यारतें वारहिं मारते ३१०॥ रुधिर की नदी वेगसों बढ़ी। अवण सों नदी युद्ध में बढ़ी॥ दुरु दिशान सो ता

थलैबढ़ी। अतिहि ग्रानसों ग्रैलसी चढ़ी ३११ ॥ कर गरे कटे पेटछ फटे। समरचौहटे लाखहींपटे ॥ लखिबलीडटे। नेकुनाहटे। इतरभै घटे आसुहीनटे ३१२ ॥

दो० असुर अमरतें रणकरहिं गज गजसों अतिभूमि।
बाजिबाजि सनबालहीं रथतें रथ रणघूमि ३१३ ॥

चौपाई ॥

बज्रभट भिरि पटकहिं रणधीरन। असुर चबाहिं किते सुरबीरन ॥ अतिसंघट्ट भयो दोउ ठट्टन। असि शर पट्ट मारुधररट्टन ३१४ ॥ छूटे केश कवच तनटूटे। आयुध बिना वीरबज्र जूटे ॥ शक्ति परश्वध करहिं प्रहार। बधहिं परस्परकरि ललकार ३१५ ॥ तब सकोप मारुत गहिभाला। गरजि करालशत्रु परधाला ॥ तातेंकह्यो धनुष बलयुतको। असिलोमा दिति सुत पुरन्दत को ३१६ ॥ काटि धनुवरण मारुत तर्यो। अगणित अगनि सरिस शरअर्प्यो ॥ तनबध धसे लसेते कैसे। वरगिरि बज्र अहि प्रविशत जैसे ३१७ ॥ तबसकोप द्वै उरभरि जोमा। दूजोधनुष धस्यो असिलोमा ॥ तातें तजन लग्योशर भावत ॥ हरि रथांग हरशूल लजावत ३१८ ॥ सहसन शीघ्र अमर के धरतें। करिकरि भिन्न भरी महिशरतें ॥ व्याकुल होय खोयकै चेतहि। पस्यो पवन रथतें रणखेतहि ३१९ ॥

दो० इमिमारुत कहं मोहिकै असिलोमा वनिकाल।
इकतिससहस बलीवधे शत्रु अनुगतेहि काल३२० ॥

सो० पुनिशर वरषत घोर सकल ठोर अति जोरमढ़ि।
तांकिनाकपति ओरचल्यो असुरसिरमोरबढ़ि३२१ ॥

समानिका छन्द ॥

इत लख्यकारमों। अश्वनीकुमारमों ॥ युद्धठान तोभयो ॥ क्रुद्धवीरता मयो ३२२ ॥ चारु चाप बाणतें। चर्मऔरुपाणतें ॥ भेरि कै महा लस्यो। व्योम शब्दमों धस्यो ३२३ ॥ वारमांति छावतो। शंखकों बजावतो ॥ विश्वकों हलावतो। भीमिरक्त भावतो ३२४ ॥ चापकों टंकारि कै। सिंह सो

डकारिकै ॥ बाणकों प्रहारिकै। दीन्ह अंधियारिकै ३२६ ॥ देव वैद्यसाथ मैं। शस्त्रधारिहाथ मैं ॥ यक्षरक्ष कोपसों। भे गरक्त चोपसों ३२७ ॥ चारि ओर घेरिकै। मारु मारु टेरिकै ॥ शूल बाण सों फटै। छाय लीनता भटै ३२८ दुहुकोप धारिकै। भल्ल मारिमारिकै ॥ काटि शत्रु आयुधै। गर्जतेा भयो युधै ३२९ ॥ आपने शरान सों। बीरकी धरान सों ॥ देव काटि काटि कै। भूमि दीन्हि पाटि कै ३३० ॥ तीन काल लोऊकी। आपगा कुद्रोऊकी ॥ तब तोर तें कढ़ी। दुहु जोर तें बढ़ा ३३१ ॥ चापकों अकर्षि कै। बाण वृन्द वर्षिकै ॥ गर्जतीस महसो। वारिदै जलहसो ३३२ ॥ कोप कों विशेष कै। देव मैं प्रवेश कै ॥ सोहतेा भयो तथा। व्याल आखु मैं यथा ३३३ ॥ युद्ध खेत खेत सों। देव ऊख सों बसेा ॥ ताहि नाशतेा लसेा। दुहुतन नागसेा ३३४ ॥

दो० देव वैद्य के भट तबै सहि न सके रिपु मारि।
उत्तर दिशि भागतभये आरत ध्वनि उच्चारि ३३५ ॥

चरण दोहा ॥

इमिलखिकैनिजदलगतिअतिमतिभटअश्वनीकुमार।
फिरऊफिरऊबढ़िभिरऊकहि चल्योएकसरदार ३३६ ॥

चौपाई ॥

शूलधरेअसुरहि ललकारत। भयोशंभुसमगोभाधारत ॥ गहिकै धनुष दुहुके कोखे। तीनबत्सरद मारे चोखे ३३७ ॥ तिनशरतें बेधित ह्वै सोई। कीन्ही गदा मदा कुल होई ॥ मारी शूर सुतहि सहजोर। सहि रहि गयो सुभट सहजोर३३८॥तबनिज शूलशत्रुप्रतिकूल। दीन्होंहुलकरननिरमूल ॥ ताहिगदातें भूमि गिराई। चल्यो सर्पपैं जिमि खगराई३३९॥ कूदि व्योमतें गदा प्रहारी। परैवज्र जिमिअल्प पहारी ॥ तातें अर्दित ह्वै भटभारी। दुहुभय शक्र के पास सिधारी ३४० ॥ अडिल्ल ॥

एक चक्र भटसक्र रणाजित देवमों। संगर कीन उमंग गहे भट भेव सों ॥ छाय दिये शर घोर करी न जोरसों।

देवन मैं सब ओर अनूपम तोर सों ३४१ ॥ तेसेइ ते सुर सुभट शस्त्र बरषावते। मारु मारु धरु मारु प्रहारु मचावते ॥ बीर झुके दुऊं ओर रुके नहिं नेकहू। धीर सबै रण हेतन कादर एकहू ३४२ ॥ एक चक्र को सुरथ एकही चक्र को। सहसन हय सह छजै लजै रथ शक्रको ॥ अपर लोगकों देत प्रेत पुर भोगहै। एक चक्र भट एक चक्र नृप जोगहै ३४३ ॥ देवन के सिर काटि दई महि पाटि कै। बांटि बांटि भर अंग गिराये डांटिकै ॥ तैसेइ निर्जर यूथ बधैं बज्र दानवै। मारिमारिकै शूलगदाअसनीसवै ३४४ ॥ भागहिं पागहिं चास निहारि प्रहार कों। लागहिं ते उरमैं छुर धारे धार कों ॥ यों मिलि दानव देवभरे अति जोम सों। संगर कीन महान भरी ध्वनि ब्योमसों ३४५ ॥

दो० तबहिं रनाजित चतुरचित सकलसाध्य सिर मोर।
मार्यो दानव राज पैं मथन अस्त्रअति घोर ३४६ ॥

चौपाई ॥

तातें कढ़े शत्रु समुदाई। छाय गये दानव दल आई ॥ एक चक्र निज आयुध मारे। पर आयुध निखण्ड महि डारे ३४७ ॥ पुनि निज दृग दृग दिग्तिम हरता। पवि सम शरन हने भट भरता ॥ बरष्यो बज्रहि बाण सो कैसे। भादव बारि बलाहक जैसे ३४८ ॥ तातें काटि काटि अरि अंगन। भरि दीनों सिगरो रण अंगन ॥ भागहिं अमर समर महं मारे। कमर धरे कर धीरज हारे ३४९ ॥ एक चक्र दृग बक्र सजोर। धसो विंतुण्ड भुशुण्ड की ओर ॥ कारे जलधरसो छबिधारे। भारे गजगर्जहिं बिकरारे ३५० ॥

दो० बिन गरदन बिन रदनके बिना पदन के कीन्ह।
मरदि मरदि दुरदन धरणि सुरदनसों भरिदीन्ह ३५१ ॥

भुजङ्ग छन्द ॥

लग्यों मारिबे डारिबे भूमि माहीं धरे भूरिको पै बन्यो काल जैसो। लसै केसरी नागके यथ मैं ज्यों लस्यो नागके यूथमैं तच तैसो ॥ लिये हाथ भारी गदा बज्रकीसी दुकै

मार मैं सो करै कोटि नाशा। यथा मेघकों पौन त्यों तौन सोभ्यो भगायो सबैते भगे चारि आसा ३५२ ॥ बहोरौं गयो बाजिके जूह माहीं लग्यो कोपपूरो करै प्राणनाहीं। कईरंगके संगके जंगमैते बधेमारि भारी गदाकों तहांहीं॥ चढ़े बीर भारे सबै शस्त्र धारे घने मारिकै आसही भूमि डारे। भगैं बोलि हाहा भरे त्रासकेते डरे दैतते देवयोधा गरारे ३५३ ॥ कहैं धीरनाये सबै यों डराये भगौरे भगौ शत्रु है बीर्यशाली। घरी एकमैं मारिकै डारिहै है सबै कोप पूर्यो यथा मुण्डमाली ॥ छये दुःखतैं देवता युद्ध भागैं लखै दैतके नैनमैं कोप लाली। तबै साध्यछ इंद्र की ओर आयो महा भीतछायो रणै त्यागि हाली ३५४ ॥

दो० तेतिस सहस्र मारिकै एक चक्र रणबक्र।
लख्यो श्यामहरि चक्रसम प्रमुदित दानव शक्र३५५ ॥

चौपाई ॥

तहां मृग व्याध रुद्र कहं घेरो। बल बलवान भिर्यौ धरु टेरी ॥ देव पारषद के समुदाई। बढ़ि बढ़ि भिरे निशान बजाई ३५६ ॥ त्यागन लगे शस्त्र विधि नाना। शूल शक्ति शर गदा कृपाणा ॥ तिनमहं लख्यो दनुज बर कैसे। अहि महं विनता नन्दन जैसे ३५७ ॥ सबके बाण बाण सों कटत। सब कहं सिंह सरिस रण डाटत ॥ सब पैं अपने आयुध पाटत। फिरत समर वर विक्रम ठाटत ३५८ ॥ तब मृग व्याध बाण बज्र मारे। दानव के मस्तक मधिमारे ॥ तातें पीड़ित ह्वै बलवान। गरजतभयो बनेश समान ३५९॥

दो० बज्रहि रुद्र करते भये दृष्टि बाणकी घोर।
छाय दिये सब ओरते अहिसे पर दल ओर ३६० ॥

शिखरनी छन्द ॥

तबै कूद्यो सोई हरसुरथ पैं मत्तगजसो। मरेघोरे चारों ध्वजसहित भोजान रथसो ॥ बली शूलीभूमैं यम समखरे ह्वै लसतभे। सुधारे कोदंडै लखि असुर सारे चसत भे ३६१ तहां मारे कारेशिव भटगरारे चमड़िकै। अटै लागेनाना

तजन रण मैं शस्त्र अड़िकै ॥ भयो हौरो भारी समर भट दौरो तुरतही । बधै छद्रै रुद्रै कहहिं इमिते दैत सतही ३६२ ॥ लगो भारो कारो बलप्रबल संग्राम थलमैं । करैधारेभारी तरून तरुसोइ शंभुदलमैं ॥ कटे घोरे हाथी सुभट सुर साथी सुरथह्न । नहीं दीखै खाली यम यथा तथा युद्धपथह्न ३६३ ॥ घनेघूमैं नूमैं विगत सिरके हेाय शरमेां। धरौ मारौ मारौ कहाहिं बज्रले कोपपरसेां ॥ महाभारी बाढ़ी रुधिर सरि संग्राम महिमैं । बन्यो दानौ मेाई खग पति यथादीह अहिमैं ३६४ ॥ मरे हाथी घोरे तन रुधिर बोरे सरसते । परे बारे आरे गत असु अघोरे दरशते ॥ उतै दानव योधा बल युत इतै रुद्रलसते । खरै कालैं दोऊ कमर कसते हेरि हंसते। ३६५ ॥

दो० महादेव बलबीर दोउ खरे धरे कटि चोण ।
भरी भूमि सुरदान तें रण के चारों कोण ३६६ ॥

चौपाई ॥

राज अजैक पादहर साथ । कीन्ह समर दानव कुल नाथ ॥ दोऊ बली बीर अति भारे । पंच बदन से गुणी गरारे ३६७ ॥ बढ़ी रुधिर सरिता भय दानी । मानहुं रौद्र करी रणधानी ॥ बल समुद्र तहं रुद्र अकरिकै। बरषे विशेष बीरविधि करिकै ३६८ ॥ असुर सुरथ कहं शरतें तोरा । बधे सूत सह चारज घोरा ॥ तब इकहरको गण रण बढ़िकै । मारी शक्ति इतै लख पढ़ि कै ३६९ ॥ तहां सकोप रुद्र रथभारी । करतें मलि मलि दीनेा डारी ॥ बधेउ अमित पारषदन कोपी । तूरण रुद्र रुद्रता लोपी ३७० ॥

दो० बरष्यो बाण प्रचण्ड ह्वै मेघ समान अखण्ड ।
खण्ड खण्ड देवन कियेा पूरि दियेा ब्रह्मण्ड ३७१ ॥

मालिनी ॥

उभय सुभट भारे। जीतकी आस धारे ॥ रणमहं बिकरारे । सोहते गौरकारे । तकि तकि शर सारे ॥ सर्पलौं दर्प वारे । बधि बधि रिपु डारे ॥ सूरमानै सुधारे ३७२ ॥ हर

तेहि लखकास्यौ। कोपि ह्वै बाण मास्यौ ॥ असुर धनु सुधास्यौ। काटि कै भूमि डास्यौ॥ पुनि परहि प्रचास्यौ। भल्लसोंही विदास्यौ ॥ शिखि सम वपुधास्यौ। देवता दारु जास्यौ ३७३ जलसुत सहनाई। ढोल भेरी सुहाई ॥ दुडुं दलनिबजाई। सूरकोंमोददाई ॥ ध्वनिदशदिशिछाई। कान तेंना सुनाई ॥ तुमुल अतिलराई। कौनसोंसे कहाई ३७४ ॥ धरणि रुधिरधारा। पूरिये। युद्ध सारा ॥ पलमिलि तेहि वारा। ह्वैगयो रौद्रगारा ॥ खग मुनकसियारा। तचकीनेा अखारा ॥ मिलिकरहिं अहारा। छब्बिबाढ़ीअपारा ३७५ ॥ सुरथहिरद घोरे। वीरहैं चारओरे ॥ सबरण रसबोरे। शत्रुके चित्तचोरे ॥ नभमहं ध्वजधोरे। सोहते पांतिजोरे ॥ जनु उड़हिं अथोरे। हंसके चारु छोरे ३७६ ॥ फरहरहिं पताके। युद्धयोधा पताके ॥ मुकुट गिरहिं ताके । ईशयों उच्चताके ॥ भटतहं रसछाके। ठानतेरारिबांके॥ बज्रसहित विधाके। त्यागते युद्धधाके ३७७ ॥ अमर असुर राजे। सूरतासाजसाजे॥ निजनिज दलराजे। हस्तमैं शस्त्रताजे॥ तेहि क्षणबज्रबाजे। चारिहूओरबाजे॥ सुनतजलदलाजे। आसुही भीरु भाजे ३७८ ॥

दो० इमि अजैकपद राक्षसों होतभयेा संग्राम।
कौनसकैकहितौन अब जौनकियो जयकाम ३७९ ॥

चौपाई ॥

तहं धूम्राक्ष रुद्र रिसिधारी। कोपि शक्ति केशी कहं मारी ॥ तैसेइ रौद्र रुद्रके योधा। डारनलगे शस्त्र भरि क्रोधा ३८० ॥ केशीरथ बढ़ाइ बरजोर। बरष्यो शिखिदेव दलओर ॥ तनन लग्यो आनलतें ज्वाल। समर सूरअतिही बिकराल ३८१ ॥ गरज्यो बज्रहि कोप करि सोई। ध्वनि सुनि रहासचेत नकोई ॥ ब्रह्मअण्ड अतिथरथरहाला। डरे देवलखिशत्रुकराला ३८२ ॥ लागेा समरहोम अतिभारी। देवदनुज गणको क्षयकारी ॥ आयुध दुडुंदिशि चले अनेकन। बधनलगे रिपु गण गहिटेकन ३८३ ॥

दो० सबै सूरसितें भरे सबै शस्त्र धरधीर।
सबै जीत आशाधरे सबै प्रहारहिं तीर ३८४ ॥

मौक्तिकदाम छन्द ॥

लरे भरिजोर सुजोर समुद्र। उतैभट केशि इतैप्रभुरुद्र॥ उड़ी नभरेणु गईदिशि छाइ। भरीध्वनि चारिदिशा अधिकाइ ३८५ ॥ भयेाघरको अतिही अंधियार। कछूनदिखाइ परै तिहिबार ॥ सुनाइ दशौदिशि शब्दहि शब्द। प्रलैमहं गर्जहिं ज्यों अति अब्द ३८६ ॥ मच्यो अतिही तित संगर घोर। बधैं पर वीरनकों दुऊंओर ॥ अपान विरान परै न लखाइ। बधैं तेहि सन्मुख जो मिलिजाइ ३८७ ॥ हतैं सुर देवन कों अति कोपि। दैत्य दैइत्यन मारहिं चोपि॥ भरी धरणी भट मांसहिमांस। काटेतनशोणितही चऊंपास ३८८॥ लसैं भटके तनशोणित वृन्द। बह्यो अतिवेगन युद्ध समुन्द ॥ चलैं असिपादप औरप्रहार। भरेसबशस्त्र दिशानअपार ३८९॥ गरज्जिगरज्जिलसैं दिशिछाइ। तरज्जितरज्जि चलैं हर्षाइ॥ दपट्टिदपट्टि झपट्टिझपट्टि। लरैं जिमिमल्ल लपट्टिलपट्टि ३९०॥ बधैं हरके गण दानवयूथ। दैत्यबधैं हरभट बरूथ ॥ परस्पर होत तहां अतिमार। परे महिमैं मरिकै कहजार ३९१ ॥ तबै भट केशि महा रिसि छाइ। कियेा अतिनाद कमान बजाइ ॥ तज्यो तबहीं कलिगात्र रिसाइ। कढ़ेवज्र आयुध के समुदाइ ३९२ ॥ हते तेहितें हरके भटघोर। बचे कछु जेांन भगे सबओर ॥ मची ध्वनि हा अरु हा तिहिठौर। सहैं सकिनाहिं अदेवको जोर ३९३ ॥

दो० इमि केशी धूम्राक्षभिरि भस्यौभूमि सबभुण्ड।
छैशिर सुण्डवितुण्ड के रुण्डचरण करमुण्ड ३९४ ॥

चौपाई ॥

इष पर्वानिष्कुम्भ दपटि कै। भिरत भए भरि जोर झपटिकै ॥ सूतहि कह्यो वचन इष पर्व। रण रथ चलु बढ़ाइ इहिपर्व ३९५ ॥ ममदलहिं कुपित ऐखर्व। तातें करिहैं। सिर विनु सर्व ॥ वरषिबाण त्रिबुधन कहं वधिहैं। वीरपनेा

करि निजजय सधिहौं ३९६ ॥ तब बढ़ाइ रथ चल्यो सवेग। वरषत सस्त्र सुगिड असितेग ॥ सके नसहि सुरमारि असुर की। भागे राहलिए निज पुरकी ३९७ ॥ तब निष्कुम्भ फिरज्ज यज्ञ टेरी। भिरत भयो बजवावत भेरी ॥ फिरि फिरि अमर समर अभिलाषे। शचुहि घेरि मारु धरु भाषे ३९८ ॥ तबते उभय अभय सरवरषे। फेरि फेरिधनु हर धनुसरखे ॥ चितैचितैरिपुओर तिरीछे। लरते भएविजय कहंईछे३९९ ॥

दो० लसे दुहुंके बाणमें दुहुं लहु युतगात।
कुसुमित किंशुक विटपसे करतबाण बरसात ४०० ॥

चंचला छन्द ॥

देवकोप पूरि पादपै तज्यो उखारि एक। तोहि बीच हीं गह्यो अदेव धारि युद्धटेक ॥ ताहितें हते अनेक देव जेहते लरत। शीशपैरहाथ हीन लाखहूं भयो करत४०१ ॥ शुण्ड के बिना बितुण्ड झुण्ड दैत्यते दिशान। टूटि कै परैं सुरथ्य वाजि लाखहीं अप्रान ॥ दैतकोंनिहारि देव जोरसों चलोरिसाइ। श्यामशैलसों लरनकों मनोसुमेरुजाइ ४०२ ॥ जूटते भएदोऊ विशाल ठोंकि ठोंकि ताल। कोपसों भरेतजें करालखाल अग्नि ज्वाल। सोहतो अदेव संगदेव तौन युद्धधीर। टेरि कै भयंकरै मनोरणै करत्त वीर ४०३ ॥ कूदिकै अचूक दैत नेहनो प्रचण्डमूक। ताहि धारि ह्वैगयो घरीकलों अचेत मूक। धीर धारि कै बहोरि सो सुधारि कै सुचाप ॥ बाणसों भस्यो दइत्यके दलै महा प्रताप४०४ ॥ अट्ट हास कै प्रगट्ट भट्ट तब दानवेश। बाण वर्षि कै दयो पुराइ शुद्ध युद्ध देश ॥ यचजाहिं देव तब शत्रु के लखाहिं पच। सूटते कमान हीं प्रतच्चलच्च ह्वै इकच्च ४०५ ॥

दो० दृषपर्वा निष्कुंभइमि लरेतहां विकराल।
देवसैन भागतभई जानि दनुज कहंकाल ४०६ ॥

चौपाई ॥

तहं प्रहलाद काल तेहिकाल। करत भए संगर विकराल ॥ समर समय कविराज पुरोधा ॥ विजय योग असु-

देखहि सोवा ४०७ ॥ होमि हुतासन विप्रन दान। दीन्ह विविधि जो जामन मान ॥ उसना विजय माल सिर बांधी। श्री प्रहलाद चलेरण आंधी ४०८ ॥ लरतकाल संग जानि सुजाना। रक्षा शुक्रकरी विधिनाना॥ अयुतशिष्य बैठे जप काज। दनुजराज जिमि जोतहिं आज ४०९ ॥ कनक कलश स्यंदन पैं दीनो। मंत्रित वेदमंत्र सों कीनो॥ आशीर्वाद सहित असुरेश। चले सुरथचढ़ि हरषि विशेष ४१० ॥ साथ स्वस्तिवाचन करिकरिकै। वीरअनेकन चलिअकरिकै ॥ बाजन वृन्द अवाजहिं साजहिं। जोसुनि अम्बरअंबुदलाजहिं ४११ ॥

दो० कमलमाल उरमहं लसत अमल भरत दिशिबास।
काननकुण्डलझलमलैंरविसमकरैंप्रकाश ४१२ ॥

नरेश छन्द ॥

धनुशायक सोहत हाथमैं। भटराजहिं कोटिन साथमैं॥
सब सुन्दरचाप फिरावते। असिभल्लनकों चमकावते ४१३ ॥
तिमि सेनप सोहत बांकुरो। उर वीरपने कर आंकुरो ॥
मधिव्यूह विराजत नौनहै। सुरजोतनयोग सुगौनहै ४१४॥
संग लाखन बारन झूमते। हयमण्डल के सम घूमते ॥ रथ
राजहिं साजहिं मोदकों। लियेसारथिहाथ प्रतोदकों४१५॥
चहुंओर चली चतुरङ्गिणी। जिमि आवण मास तरङ्गिणी॥
बर बाजि नचावहिं भावने। सबदेवन दुःखबढ़ावने ४१६ ॥
अति दानव सैन विराजई। जहं भेरि अनेकन बाजई ॥
लखि देववधूयिनि लाजई। उरमैं अतिसंशयछाजई४१७॥
असिशूल परश्वध औगदा। शरशक्ति भुशुण्डि चलेतदा ॥
अति गर्जहिंवीर भयावने। रणतर्जहिं शत्रुडरावने४१८ ॥
भट शङ्खबजावहिं जोरसों। ध्वनिपूरहिं दोनहुंओर सों ॥
धरुमारु पुकारहिंसोरसों। सबशस्त्रचलैं सबठौरसों४१९ ॥
तुरही सङ्खनाद सोहावनी। बहुबाजहिं मेघलजावनी ॥
प्रह्लादभिरे जबकालसों। धरुमारुपुकारु करालसों४२० ॥
उलका नभतें गिरतीभई। डरदेवहिये थिरतीभई॥ कटु
बातचल्यो अति दूरितें। नभ पूरिगयो सबधूरितें ४२१ ॥

प्रह्लाद भरे आनंदसों। रणचाहत भे अतिस्वादसों॥ सब दानव देव सोहावने। मिलिजूटतभे भटभावने ४२२॥

दो० तबहंसिकै प्रह्लादजू बोले बचनबिशाल।
अरेकाल इहिकाल मैं तेरोकालकराल ४२३॥

चौपाई॥

आजहमारे शरतेंमरिकै। सोहैंगे निरजर महि परिकै॥ सुरतें असुरमरे जेरणमैं। सर्ग सुखीह्वै हैं इहिक्षणमैं ४२४॥ आज आज्ञा से भगि हैं देव। लखि हरिजन कहं हरि सम भेव॥ मेरे शर रविकिरिण समान। चमकहिंगे दशदिशन महान ४२५॥आजमारिकै अमर समाजा। प्रमुदितकरिहौं बलि निजराजा॥ मेरो अक्षय बाणसदाई। बर्षांगो शर बेग बढ़ाई ४२६॥ कोउन रहैगो मेरेआगे। लागेशर बनि परिहै भागे॥ खण्डखण्ड करि अरि केयुत्थ। महिमें घनी लुटैहौं लुत्थ ४२७॥

दो० दिति नन्दन नन्दन बिपिन आनन्दनतें पूरि।
बिहरहिंगेलखिअमर उरबिहरहिंगे दुखमूरि ४२८॥

सो० इमिकहिकै हरिदास हरिसमान गरजत भये।
भरिशचुनउरचास दलनलगे दलरिसि छये ४२९॥
साठसहस सुतसंग धर्मधीर प्रह्लाद सम।
दाता सुमति सुढंग शस्त्रअस्त्र शत शास्त्रधर ४३०॥

कोकिलछन्द॥

असिशर शक्ति शूल परिघा धनुबाण गदा। तजनलगे महान रिसिकै बर वीर तदा॥ रण रस पूरि पूरि उरमैं अतिकोपभरे। करिरिपु चूरिचूरि तुमैंदरशाहिंखरे ४३१॥ फिरिफिरि फेरिफेरि रथकों रण अंगनमैं। तजितजि बाण लोऊभरते भट अंगन मैं॥ गरजत तर्जि तर्जि सुदसों छवि छाइरहे। वर्षत बाण मेघसम चापबजाइ रहे ४३२॥ दिति सुतजूह मोद भरि युद्ध बिहारि रहे। रिपुगण कों अपान करि भूमहंडारिरहे॥ मणिगहना सुधारि तनतेज पसारि रहे। मुकुट बनेजड़ाउ लखि सूरज हारिरहे ४३३॥ असुर

अजेय काल संग संगर ठानि रहे। निजजय हेतु धीर धर मारु बखानिरहे॥ गज रथ अश्व वीर भिलिमारि मचाइ रहे। सरअसि शूल शक्ति दुहुंओर चलाइरहे ४३४॥ इत भटकाल लालदृग ढाल कृपाण लिये। चलेउ कराल कोप करि समरचोपहिये॥ संगमहं व्याधियूथ वज्रदण्डहि हाथ धरे। सदल बढ्यौ महान बल मृत्युहि साथकरे ४३५॥

दो० गरज्यो चण्डउदण्ड अति कालवीर वरिबण्ड।
ब्रह्मअण्ड खण्डन करन तेज तरुन मार्त्तण्ड ४३६॥

सो० धस्यो शत्रुगण माहिं धरुधरु मारु प्रहारु कहि।
वर्षनलग्यो तहांहिं असनि गदा असिशक्तिशर ४३७॥

चौपाई॥

प्रह्लादहि प्रचारि अति भारे। आयुध सकल सरादि प्रहारे॥ व्याधि बधहिं बलनिधि दितिपूतन। दानव व्याधि वृन्द मजबूतन ४३८॥ केतेपरे शूलतें झूले। रुधिरभरे किंशुक जिमिफूले॥ केतेकटे खड्गतेंराजें। केतेभिन्न शक्तितेंछाजें ४३९॥ केते परिघ पटातें छेदे। केते परे बाणके भेदे॥ केते भिण्डपालतें मरे। केते परे पाशबंधि गरे ४४०॥ केते करि करि बसन दुखारी। कस्तीकरि बैठे भरिसुखी॥ केते व्याधिदनुज पुनिकेते। भरे परेमहि शोभा देते ४४१॥ भयो तुमुल रण शब्द प्रचण्ड। भरिगो यह अखण्ड ब्रह्मण्ड॥ धरु धरु मारु मारु धरु धाय। जहं सुनिये तहं यही सुनाय ४४२॥

दो० दनुज पाल अरु कालदलमि भिरेकोपि तेहिकाल।
छये व्यालविकरालसे रणविशाल शरजाल ४४३॥

अद्भुतध्वनि॥

परमबली प्रह्लाद भटबढ़े बढ़ै जिमिनद्द। देवनसों भिरते भये शोभित करि रणहद्द॥ हद्दहरि मरद्दह पटिसमद्द-हटिवज्र। कद्दह सतरु रद्दहरसि दुरद्दहबिरज्र॥ पद्दहसन अरद्दहसत विसद्दहरधर। जद्दहनुज दृद्दहरघत मद्दहरि पर ४४४ लतनिमलै गजराज जिमि शिखि दाहै द्रुमखण्ड। तिमिनाश्यो प्रह्लादनै अरिदल धंसिकरि झुण्ड॥ झुण्डझुगरि

अनुण्डडुगर अनुण्डडुोलत। भुण्डडुरनिअकुण्डडुपटि अपुण्ड डुोलत। भुण्डडुगत भुपुण्डडुग गतभुण्डडुोलत। भुण्डडुगमग रुण्ड डुकरि बितुण्ड डुोलत ४४५ ॥ कियकराल रण काल दृगजाहिर योधा जग्ग । परकुल काल बिशाल करलिये ढाल अरु खग्ग ॥ खग्गग्गहि जगमग्गग्गरजि चमग्गग्गन मय ॥ उग्गग्गति डगमग्गग्गहि चट्टग्गग्गत भय । जग्ग ग्गरट्ट समग्गग्गठन सुभग्गग्गमति लिय। मग्गग्गरदि अट-ग्गग्गजगत पग्गग्गरकिय ४४६ ॥ सतसहसन बिधि असुर बर मारि करी अतिजब्बरसत। अब्बब्बचतन सब्बब्बकत गज-ब्बब्बदिन्नत। ढब्बब्बुत अजब्बब्बधत चरब्बब्बनिसत ४४७ ॥

दो० इमि भगाइ दल कालको कालसरिस बनि आप।
धनुष्वनि दिग्विपूरणकरी शंख बजाइ सदाप ४४८ ॥
भिरे काल प्रह्लाद दोउ कोपभरे तेहिठौर।
इनसों भटको उ जगतमें भयो नचैहै चौर ४४९ ॥

सो० ककुककाल खरिकाल सहिन सक्यो बिकरालशर।
तज्यो समर उत्तालगर्ज्यो दानव पाल तब ४५० ॥

चौपाई ॥

अनुह्लाद बजवावत भेरी। भिरो सकोप घनदकहं टेरी ॥ वर्षेउबाण वारिधर जैसे। तेसब सर्प सरिस तनऐसे ४५१ ॥ जनकसमानमहाबलसाली। दीनवमनि भटमनिमनिमाली॥ काल बिशाल बाण को रचिकै । रणमहि रह्यो काल सो नचिकै ४५२ ॥ मर्दिमर्दिकै सुर्दनके ठट । अटवी पूरिदई भटसों झट ॥ सोहत रण अंगन रुचिकारी ॥ जिमि बसन्त प्रफुलित तरुभारी ४५३॥ कढ़ीरुधिर सरिता अतिभारी ॥ कटेअंग अगणित झषधारी ॥ पंकमेदको आन्तसेबार। फेन मीपराजै मधिधार ४५४॥ गीधहंस सारस बकंकंक। बेला सरिसयेऊ दलबंक॥ करपग कमल कुमुद अधिकाई। खाल बिसाल परीकछं काई ४५५ ॥

दो० अनुह्लाद के बाणासों बिमुख देखि निजसैन।
भिरे चापटंकारिकै धनाधीश बलऐन ४५६ ॥

तृभङ्गीछन्द ॥

धनुकोविकरारो शब्द पसारोतिहुंपुर सारो पूरिगयेा। दनुजै खलकारो बल बिस्तारो उरशर मारो तेज भयेा॥ सोंबाण गरारो अरिहिय फारो धरनि सिधारो बेगछयेा। जिमि परवत कारो बिज्जु बिदारो तिमि भटभारो लसत भयेा ४५७॥ तब दानव नायक सब बिधिलायक मारेशायक कोपि अती। तिनबर्महि छेद्योहिय कहं भेद्योरणमहं खेद्यो यत्नपती॥ पुनिगरजन अतिकै जीतन मतिकै यत्नन हतिकै भूमिभरी। तबसंकट पागीसेनाभागी लखिरिपुजागी तौन घरी ४५८॥ धनुलै धननायक बररण सायक परदुखदायक बाणहने। तेसब अरितन में प्रविशे क्षणमें पविजिमिघनमें निशितबने॥ तेहिसहिकरि घनरवदानवपुंग बरणकोपित भौरूप धस्यौ। अतिराते लोचन सुरमद मोचन निज भट रोचन नाद कस्यौ ४५९॥ द्रुम बिटप उखारो सुर पर मारो दलहि बिदारो आसुतहां। जिमि लखि मृग राजैं मृग भय साजैं तिमि सुर भाजैं धनदजहां॥ पुनि धनपति घोरन बधिशर जोरन जमपुर ओरन पठैदियो। पुष्पकचढ़ि स्वाहन तब नर बाहन पर दल दाहन युद्ध कियो ४६०॥ तेहि क्षण रण पर्वत रच्यो असुर मत गजतन दरशत शिखर जहां। भट बिटप अनेक सुमन आभरण निरझर सुरतन रुधिर तहां॥ सुन शिवास्यार मृगकाक गीध खग राजहिं तानग समर पथी। महि आंत बिलासी बिबिध लतासी कंदर खासी बिप्ररथी ४६१॥ मनि पंगति जाहि रहै पल बाहिर सोई जवाहिर खानि बनी। जहं तहं बानावलि लसति अतिहि भलिसेा भ्रमरावलि सरसघनी॥ गजके शिर सोहहिं लाखन जहिं तहिं ते तागिरि महिं मतवाले। औषधिसे जग मग सर फलता मग दरशहिं रणमगअति आले ४६२॥ इमि संगर भारी सुरभयकारी। सुभट सुरारी जोर रच्यो। धरु मारु मारु धरु भागु भागु टरु ना टरु ना उरु शोर मच्यो॥ योधा बज्र गरजहिं हरि

सेतर्जहिं बाण विसर्जहिं ताकिपरै। इतछत बज्रघावहिं घोर मचावहिं नाम सुनावहिं डारि डरै ४६३ ॥ केतेमरि गिरते रण महि थिरते तिनपर फिरते कंकतहीं। बज्रबली अकरते संगर करते लरते डरते नेक नहीं ॥ हय बारनके टट करहिं कटाकट बीर पनो भट खोलिरहे। पलरा करि ढालहिं लैकर बालहिं शत्रु कपालहि तोलि रहे ४६४ ॥

दो० इमि ताघल के युद्ध मैं बनिकै सेर कुबेर।
शरहि बरषि मरदत भये असुर टेर तेहिबेर ४६५ ॥

चौपाई ॥

तब प्रहलाद अनुज रिसिछाई। शैल सरिस गुरु शिला उठाई ॥ मारी कोपि धनद के ऊपर। कूदि गये लखिसेा रण भूपर ४६६ ॥ अंगन सहित सुरथरण अंगन। चूरभयो लै सुभगतुरंगन ॥ तब धनपतिके गणकहं सोई। बधन लग्यो कृतान्त सम होई ४६७ ॥ मारि मारिकै भट समुदाई। डारि डारि सब पुञ्जमि पुराई ॥ पुनि उठाइकै महा पहार। धनपति ऊपर कियोप्रहार ४६८ ॥ तदा गदाकर लै नर बाहन। मारत भयो छयो उच्छाहन ॥ सहितेहि दनुजलालकरि लोचन। गरज्योप्रबलशत्रु मदमोचन ४६९॥ मार्यो बज्रहि महागिरि गहिकै। तैंअब आज बचत नहिं कहिकै ॥ धनपति भये निधन से लागे। रण महिं परे चेत कहं त्यागे ४७० ॥

दो० धनाध्यक्ष कहं बिकल लखि घेरिरच्छ अरुयक्ष।
रक्षत भये प्रतक्ष सब समर बिचक्षन दक्ष ४७१ ॥

मोदक छन्द ॥

विश्वेश्वरनै तब चेतगह्यौ। युद्धांगनमैं उठि मारुकह्यौ ॥ भेागर्जत कोपि महारणमैं। ब्रह्मांड गयो हलि बाहणमैं ॥ ४७२ ॥ कालानल सेानर बाहनकेां। देख्यौ अरि मस्तक ढाहनकेां ॥ भागेडरि दानव चासभरे। दैत्येश कह्यो तबको पधरे ४७३ ॥ हे हे अतिनेमि सुनेमिबली। दानौघ रक्षक देवदली ॥ क्योंभागत प्राकृत से डरिकै। जैहेा कित

संगर तें टरिकै ४७४ ॥ मैं मारतहौं छणमैं धनदै। देखौ रणको अपनो मनदै ॥ मारे सुनि दानव यूथ फिरे। भारे बढ़िकै मढ़िकोप भिरे ४७५ ॥ लागे करिबे धरु मारु घने। पागेरण मैं रणधीरबने ॥ मारैंपरिघा असिप्रासगदा। धारैं रण चोपहि पूरिमदा ४७६ ॥ जूटै बहु आयुध हाथधरी। टूटैं हरिसे अति नादकरी ॥ मूका थपरा तल तें मरदैं। कोपान्वित ह्वै अरिको अरदैं ४७७ ॥ पिंगास दृश्य देाऊ बढ़िकै। पंचाननसे दरसों कढ़िकै ॥ पूरयोदिशिवाणप्रहारनतें। धरयौ रिपुचण्ड प्रहारनतें ४७८ ॥ देाऊ भरिकोप महाभंगरे। वीतुण्ड समानकरैं रगरे ॥ पूरीमहि शत्रुनको हतिकै। बांचैनहिं कोउ इहै मतिकै ४७९ ॥ चारौ दिशि युद्धपरे सुरदा। छयो उनपै रणको गरदा ॥ काटे महिपैं गजबाजि परे। शोणित कनतें सब अंग भरे ४८० ॥

दो० तब दश सत शित बाणतें कोपित दनुज प्रधान ॥
वेध्यो वज्र प्रधानकहं घन सम गर्जि महान ४८१ ॥

चौपाई ॥

तातें स्रवतरुधिर तनकैसे। श्याम शैल वहु निर्झरजैसे ॥ बहुरि विकल ह्वै धीरज धारो। गरजि गदा दानव कहं मारी ४८२ ॥ देखि गदा घन पतिको आवत। भयो दनुज निज गदा चलावत ॥ खरिमग उभय परीं वेकैसे। गर प्रयोग पर पुनि गर जैसे ४८३ ॥ तब गहि गदा औरधन नायक। चले गरजि रिपु पैं दृढ़ घायक ॥ सोखि महा शैल धरि हाथ। इततें बज्यो दनुज कुलनाथ ४८४ ॥ तिहि गिरि धरे लख्यौ नर वाहन। काल सरिस आवत रण चाहन ॥ त्रास सहित ह्वै बुद्धि निवास। डरि टरि गये इन्द्रके पास ४८५ ॥

दो० इमि लहि विजय कुबेरतें दनुज सेरतिहिबेर।
फेरिफेरि धनु बधिकरी ढेर भटन कोढेर ४८६ ॥

सो० विप्र चित्तके संग वरुण जंग करते भये।
उरमहं भरे उमंग रंगेरङ्ग रणके महा ४८७ ॥

मनोरमा छन्द ॥

दिति सुवन की अरमारि महाकहं। सहिनाहिं सके जलनाथ बलीतहं ॥ हगलाल किये तिहिकाल महामति। रणराजत भेदलपाल धरेरति ४८८ ॥ पविव्यूह महाविरच्यो रिसितें भरि। संगसोहत हैं भट अस्त्र घने धरि ॥ अरधार अखण्ड तजैंजिमि आपद। करिदीन बलीगणमैंअति आपद ४८९॥ रविसीवरक्रांतिभरी रणके अधि। बज्रवीरन डारि दियेतितहीं बधि ॥ परिघांकइंधारतदैतभयो तब। तिहि जानत भे यमदण्ड तहां सब ४९० ॥ मणि चिचित काम अनेकन राजन। रविसेा परकाश सबै तम भाजन ॥ तेहि तौन भमावत सोहत सेा छनु। सुर नायककेतु फिरैं नभ मैं जनु४९१॥ लसतोसुभयो भटताहिघुमावत। बर कुण्डल क्रीट दिशा चमकावत ॥ छबि तासु लखी तहं बीरन है किमि। बज्र बिद्युतके सह मेघ महाजिमि ४९२ ॥ परिघारन घूमत पौन बढ़ो घन। चितगी चहुंओरन घोरकढ़ी रण ॥ अरु अस्त्र महान बह्यो रण अंगन। डर छायगई सब देवन के मन ४९३ ॥ रबि चन्दन छत्र दिशानभ साथहि। तित घूमत देखिपरैं भट हाथहि ॥ हरषे सब दानव जानि भई जय। बरषे सुर लोचन आनि महाभय ४९४ ॥ बिन दुन्दुभ डरे सिगरे रण अंगन। गुनिकै परिघा पर भाव घनी-गन ॥ तब त्यागेउ ताहि सकोप महाबल। जितहेा जल नायक को सिगरोदल ४९५ ॥

दो० तापरिघा तें अयुत भटगये जहां यमराव।
तरे परेते पिसिमरे जरे तेजपर भाव ४९६ ॥

चौपाई ॥

इमि करि नाश बरुण के दलही। गर्जत भयो असुरता थलही ॥ बज्रुरि घुमाय परिघ सेा भारी। मारेउ जलपति कों ललकारी ४९७ ॥ लगि तन टूटि परो छितरायो। मनु गिरिशुमार टूटिमहि आयो ॥ ताके लगे बरुत भे ऐसे। धरके धरणि धरणि धर जैसे ४९८ ॥ मरे अनेक पासके बीरा सुर

मणि व्यथित भये अति पीर ॥ पुनि भरि कोप पराक्रम शाली । वरषेबाण असुरपरहाली ४९९ ॥ लिये संग झखनक्र भुजंगन। सरित सिंधुसह जंग उमंगन ॥ श्वेत वसन मोतिन की माल । श्वेतछत्र शिरफिरत रसाल ५०० ॥ निजबीरन सों जलपति अैसे । जलपत तुम अब लरज्ज अभैसे ॥ मैं बधिहौं दानवसिरताजहि । इमिकहि कीन्होंशब्द दराजहि ५०१ ॥
दो० तबसब भट दिगपालके गरजि गरजि गहिचाप ।
अरकर वरषाकरतभे भरिकै दिशन प्रताप ५०२ ॥

लच्छीधर छन्द ॥

शचुके यूथकों वेगसों देखिकै । दैत्य को भूप सो युद्ध मैं तेखिके ॥ बैनते याखकोछांड़िदे तो भयो । नाग मैं चास कों मांड़ि देतो भयो ५०३ ॥ युथके युथनागारिके धावते । खातज्यों भातल्यों नागकों खावते ॥ टूकह्वै सर्पकेते धरा राजते । देखिकेते भरे चास सों भाजते ५०४ ॥ योंबधे वीर भारे जलाधीशके । भूमिराजैं परेते बिनाशीशके ॥ देखिसो देव टंकारि कोदण्डकों । युद्धधाये धरेयुद्धके ढंगकों ५०५ ॥ देखि दानवभयो तालकों ठोंकतो । सिंधुकोंतीर ज्यों त्यों परैरोकतो ॥ प्राण भै छांड़िकै जीति आशाधरे । क्रुद्धपाशो बहे वीर्य राशीकरे ५०६ ॥ देव योधा तबै बेगसों कोपिकै । बाण के वृन्द दैत्यै दियो तोपिकै ॥ देखि सो क्रुद्ध ह्वै सिंह शोचिक्कस्यौ । आसुहो शचु के शस्त्र नासै कस्यौ ५०७ ॥ मारिकै बाण बारीशके जानके । अस्त्रचारौ सुकीने बिना प्राणके । बाण वरष्योबहोरोदशौं औरमैं । पूरिदीनी महा चासता ठौरमैं ५०८ ॥ मारिकै डारिदीने घने वीरकों । टारिकै डारिदीनी घनेधीर कों ॥ जारिकै छारज्यों अग्नि तूलैकरै । विप्रचित्ती तथाशचु मूलैकरै ५०९ ॥
दो० इमिदानवतें चसितह्वै सदल वरुण बलसीव ।
भागेसुर वर शक्रढिगभगे यथा अतिक्लीव ५१० ॥

चौपाई ॥

देव परानय लखि रिपु नाशन । परमकोप कहं गह्यौ

ऊतासन ॥ पिंगल नयन विष्णु सुखदेव । शिखि हिरण्यरेतावर भेव ५११ ॥ सहस अर्चिवर ब्रह्म अनूप। पावक हव्य कव्यभुकरूप ॥ चित्रभानु मतिमान महान । स्वाहास्वधा नाथ भगवान ५१२ ॥ सप्तअर्चि सब पाप विनाशन । ईश हिरण्य गर्भ परकाशन ॥ हव्यभाग धर हरि अवि नाशी। रुद्रस्वरूप विश्व घटबासी ५१३ ॥ धूमकेतु जगहेतु धनंजय। पावक पुण्य रूप समतिंजय ॥ नीलवसन भूषण निज रंग। वायु चक्ररथ नीलतुरंग ५१४ ॥

दो० जीवपंचधा होइकै करत सबन में बास।
सोइअरिनाशनहितचले करतदिशन परकास५१५॥

सो० अग्निअस्त्र करधारि अग्निकोप विस्तारिकै।
गर्जेउयुद्ध प्रहारिदैत करोरन मारिकै ५१६ ॥

कवित्त ॥

जारि जारि दीनेकरि छारि छारि सचुगण चारि चारि रथपथचतुरंग टारिटारि। मारिमारि भटठट पारिपारि दीनेकिते दारिदारि तनकहं रथदए डारि डारि ॥ धारि धारि चोप परघात वारि वारि दए वारि वारि पट तव तिन दए फारि फारि। इमि हारिहारि अमरारि रारि पावकसों झारिझारि करकों पराएदग ढारिढारि५१७॥ जरततुरंग तंगसहित सुरंग अतिजरत मतंग जेउतंगअंग कारेहैं। जरत सुरथ संग परम सुढंग गति विगत उमंग सूत धूत जेगरारे हैं ॥ भटबज्र जरत निखंग धनुवाण धारे जंगल भुजंग समजंगरो सवारे हैं। संगर के संगतें कुरंग सुख भागैं दैत्य ज्योंकुरंग भंगमन सिंहके प्रहारे हैं५१८ ॥ खवर अकाशन प्रकाशन भरत भूमिनाशन प्रबलपिसितासन खसो महत । ग्रासन महीप पाक ग्रासन को धारि शिरसाथ लैवताशन सिंघासन वलीटहत ॥ हासन दहत विशिखासन धरनहारे आवत सहासन जेपासन रणैचहत। आसन मैं मासन की राशिकरी आपैं कंकआवहिं तमाशन जुताशन की जै कहत ५१९ ॥

दो० भागे अतिही बिकल ह्वै सकल असुर समुदाय।
देखिसके नहिं अग्निको भग्नितभये अचाय ॥ ५२० ॥

चौपाई ॥

जे सेनापति प्रथम गनाए। ते सब भागि गए भय छाए ॥ सब संवर अरु मय बल धाम। दोउ मायावीभट सर नाम ॥ ५२१ ॥ घुमड़ि घुमड़ि घन सरिस अपार। बरषत भए घोर जल धार ॥ तातें हव्य वाह बुत गए। तब सब अमर शोक युत भए ॥ ५२२ ॥ सो लखिकै अंगिरा कुमार। आइ करी अस्तुति उच्चार ॥ कनक रेत अक्षय रिसि रसना। सबभुक्के लिहानछत असना ॥ ५२३ ॥ आत्मा पवन हुमारे अहहीं। आप आपतें आगम कहहीं ॥ पावक दशऊ दिशा मह तोरी। किरिण प्रकाशहिं कांति अघोरी ॥ ५२४ ॥ तुमसब जगत रूपह्वै पूरे। पालऊ करऊ हरऊ तुम रूरे ॥ हव्यासन तुममखके राइ। तुमहिं यजहिं मुनिके समुदाइ ॥ ५२५ ॥ तुमहिं अन्न पावन कहं करहू। तुमहि प्रसन्न होय जय धरहू ॥ तुमहिं प्रकाश करत नहिंदूजो। तुमहिं विरंचि विष्णु हरपूजो ॥ ५२६ ॥ तुमहि सकल देवनके राई। तुमहिं प्रतिष्ठा तिष्टऊभाई ॥ तुमहिं औषधी रसके करता। तुमहिं प्रलय महं जग संहरता ॥ ५२७ ॥ देवनके हितजन सुखदाई। तुम बऊधे दैत्य समुदाई ॥ तुम सर्वस्व करऊ जो चाहौ। रिपु बस परिकै दीन कहा है ॥ ५२८ ॥

दो० मारऊ रणमैं दानवन टारऊसुरको भार।
धारऊ अपने तेजकहं जारऊ शत्रु कतार ५२९ ॥
धूमकेतु अति धूमतें सुर हजूमलै जूमि।
भूमि भरऊ सुरदानतें सुभटठानतें झूमि ५३० ॥

चतुष्कला ॥

सुनिकै। गुणिकै ॥ मनमैं रणमैं ५३१ ॥ वरभट। शिखि झट ॥ रिपुहित। प्रजुलित ५३२ ॥ भेभल। तायल ॥ दिति के। सुतके ५३३ ॥ दलमैं। पलमैं ॥ दहिजिय। दुखदिय ५३४ ॥

कोपहि। चोपहि॥ धरिसत। दारुत ५३५॥ भटहय। रथ गय॥ दहिदहि। सबमहि ५३६॥ भरिदिय। सुदिहिय॥ इमिसुर। भटधुर ५३७॥ जयलहि। रणमहि॥ रोनित। भेहित ५३८॥

दो० ज्वलनज्वलित जब होतभे मायागई नशाइ।
कहत भये प्रह्लाद तब बलितें बलहि बढ़ाइ ५३९॥

चौपाई॥

तुमहिं अग्नि रवि जल महि व्योम। दिशि नक्षत्र पवन पुनि सोम॥ भूत भविष्य भवतके ज्ञाता। तुम सर्व्वज्ञ दियो वरधाता ५४०॥ अमर अजेय अहज अविनासी। हरितुमरे घट अन्तरवासी॥ तुमजो करनचहौ सोहोय। तुमसम है जग अपर न कोय ५४१॥ तुमहिं कीन्हबिधि सबबिधिउत्तम। रण वित्तम वरदानव सत्तम॥ मारउ रिपु असुरन सुख छावउ। सुरन भजावउ शङ्खबजावउ ५४२॥

दो० सुनिकै रण अतिबक्रहै चल्यो सदल जितशक्र।
मनउं चक्रधर चक्रधरि चले निपातन नक्र ५४३॥

छप्पय॥

चलत हलतसह अचल धरणि दलमलत शेषफन। टलत कमठ बाराह दलत खलभलत शचुगण। छलत पवन उच्छलत सिंधु बिचलत दिगवारण॥ ढलतसूर रथजलत ज्वलन आदिक सुरकेमन॥ चलकाननकुण्डल झलमलत कर कहं बलि वर बल मलत॥ शुभसगुण सकलजय फलफलत। दुसमन दुख पलपलत ५४४॥ घूमिघूमि रण भूमि रुधिर की सरित बरहत। भूमि दुरदसम जूमि जबर कहं विबुधन बहत॥ सिंहसमान महानकोप कहं ठानिनरहत। अरिन अरहत झपटि दपटिदटि मसकि मरहत॥ असिशूल शक्ति परिघा गदा हरषत बरसत दिशिविदिशि। सुरनासुआसु कीनो रणहिं रिसिधर बर परदल प्रविशि ५४५॥

दो० बलदूंधन आयुध धुआंबेग वाजंको वाय।
रिसिष्टततैं कालाग्नि बलिदाह्यो सुरसमुदाय ५४६॥

सभै सभै ह्वै अमर गण भागे बासव पास।
हाथ जोरि बोलत भये विजय निराश उदास ५४१॥

चौपाई॥

धाता इन्द्र अच्युत तुम नायक। ईश्वर अव्यय अनुपम लायक॥ बलि मारे रण अमरण गनि गनि। हम आये रण तजि भय सनि सनि ५४८॥ ऐसो सुरअबअहै न कोई। जोइ सकै बलि की दिशि जोई॥ सुरमूषक महं बिलसत बलि अहि। शक्र खगेश हमऊ तेहि रणमहि ५४९॥ बधऊ बेग सेां असूर समूह। जामें विजय लहहिं सुरजूह॥ सुनिकै चले कोपकरि रणमैं। लसे अग्नि सम रिपु गणबनमैं ५५०॥ नागकेतु शिर बर फहरातो। पवि कर धरि पवि सम घहरातो॥ नैन सहस्र जैन रिपु गणको। विक्रम ऐन चैन रव घनको ५५१॥ चारऊ ओर पढ़हिं द्विज बेद। सुख पर समर खेद को खेद॥ महाधार धृत शचु विदारण। कीन्हें हाथ बज्र को धारण ५५२॥

दो० दलत देखि निज सैनकहं बलि शक्रहि ललकारि।
भिरिअद्भुतयुद्धहिकियो आयुधअमितप्रहारि५४३॥

हरिगीती छन्द॥

आयुध अनेक प्रहारि दोउ भट घोर संगर करत भे कोदण्ड की टंकारसों दिशिचार महं ध्वनि भरतभे॥ तहं भेरि भेरि सुभेरि नामहिं टेरि टेरि रिसाइ कै। शरछाइ महि नभलौं दिये निज फोज ओज बढ़ाइ कै ५५४॥ तेहि काल दोउ दल पाल लोचन लालकरि छाजत भये। शर जाल दिशन बिशाल रचि रण कालसे गाजत भये॥ सुर-चंग चंग मृदंग संग उपंग बज्र बाजतभये। उरजंगजनित उमंग सुन्दर ढंगसों राजत भये ५५५॥ रणरङ्ग गङ्ग तरङ्ग महं चतुरङ्ग के भट न्हावहीं। तन भंग होत सुरंग अंग अनंगके सम पावहीं॥ चढ़ियानकरहिं पयानसुर असवान भानु प्रभा धरे। गन्धर्व गान बंधान सों सह अप्सरा संगमें खरे॥ ५५६॥ रणधरा शोणित भरा सिर कर गरा

कटि कटि राजहीं। तन कटे कितने सुभट श्वगय दशऊं दिशि महं भाजहीं॥ बऊ कंक स्यार अशंक रण महं रहे जित तित घूमिकै। लै रुधिर थाली फिरत काली मुण्ड माली भूमिकै॥ ५५७॥ तब पाक शासन असुर नाशन तजि ऊताशन अस्त्रकों। भरिदई महितातें सकल बरबरषि अगणित शस्त्रकों॥ लखिअसुर वारुणअस्त्र दारुण त्यागि तेहि नाशत भए। पुनित्यागि शर असि असनि युग दर देव दल त्रासत भए॥ ५५८॥

दो० तब सकोप बज्रहि गहेउ बज्रपाणि तेहि काल।
मारनचाहेतहंसुनीव्योमगिरासुरपाल॥५५९॥

चौपाई॥

फिरऊ शक्र न थिरऊ रण माहीं। बलितें विजय पाइ हौ नाहीं॥ यज्ञ प्रताप धरम आचरण॥ विद्या बुद्धिनीति बल धरण ५६०॥ है अजेय दानव सब बातन। इहि जिति हैं भगवान सनातन॥ ब्राह्मण बेद धर्म सुर रक्षक। विश्व परा गति अवगुण भक्षक ५६१॥ परतें परतर प्रबर प्रराबर। गदा रथांग शंख अंबुजधर॥ सहस शीष सहसाक्ष सहसपद। पुरुष पुराण हरण दुसमन मद५६२॥ जेता अज अजेय गुण धाम। सेा जीतहिंगे असुर संग्राम॥ सेा सुनि सुरन महित सुरराज। फिरेसमरतें दुखित दराज ५६३॥ तब दनुजनके बजेनगारे। जय बलिकी सबकहहिं पुकारे॥ सिंहनाद करि करि मन मूंदहिं। दानव बीर समर महि कूदहिं ५६४॥

दो० पाइ बिजय पावत भये सुरपति पद बलिराज।
बजि सबतें जेते भये परम प्रबल शिरताज ५६५॥
मय शंबरकर पटह लै फिरे तिहुंपुर मध्य।
बलिकी विजय सुनावते मन भावते अवध्य ५६६॥

चौपाई॥

अनुह्लाद प्रह्लाद मयादिक। रक्षहिं प्रजा धर्म मरयादिक॥ मत मथ बर्तमानभो जग मैं। नीति रीति राजी

मग मग मैं पूरि ॥ पाप तापकर भयो अभाउ। प्रगटयौ धरम परम परभाउ ॥ चारबरण आश्रम पुनि चार। भये विराजत धर्म अगार पूरि८ ॥ चारु चार चरणनतें धर्म। राज्यौमहि महिं उदित अधर्म ॥ बलिको राज सकल सुख बरसत। नर सुनि खग मृग नग जग हरषत पूरि९ ॥

दो० बली बलिहि लखि धर्मयुत कामना धमन स्वरूप।
आय भई भाषत बचन सुनउ दनुज के भूप पू१० ॥

चौपाई ॥

हे बलि मैं प्रसन्न तव ऊपर। देखि पराक्रम अतुलित भूपर ॥ भुज बल सुर बलदीन भगाई। तातें मैं आई हरषाई पू११ ॥ तू जादा परदादा हूतें। जोत्यो जगत धर्मके बूतें ॥ बहुरि देखि हरि मैं मति तोरी। अहै कृपा तोपर अति मोरी पू१२ ॥ राजउ राज अकण्टक राजा। मैं तव भवन बसत सहसाजा ॥ हरि मनोरमा रमा सुजान। इमि कहि रहीं असुर अस्थान पू१३॥ क्षमा प्रभा धृतिही श्रुति कीरति। मूति नीति स्मृति प्रीति दयामति ॥ तुष्टि पुष्टि मेधा विद्या श्रुति। कांति शांति पुनि मुक्ति क्रिया गति पू१४ ॥ श्री ह्रीं इड़ादि जिती जगदेवी। बलिपैं रहीं रमा पग सेवी ॥ रिद्धि सिद्धि अप्सरा विभूतिन्ह। शोभा लही प्रपूजि बिभूतिन्ह पू१५ ॥

दो० इमि राजहि करते भये बलिदानव सरदार।
धर्मधीर नृपनीति वित शुचिसत बचनउदार पू१६॥

चौपाई ॥

इन्द्र सुरन सहरणतें भागे। रोयेआय अदिति केआगे ॥ सुनि विरतान्त सुतन को मातु। बोली भरि करुणा तें वातु पू१७ ॥ हे सुत महाबली बलिराजु। तुम न जीति सकिहै सहसाजु ॥ हरि विन कोउ नाहीं जगमाहीं। जीतिसकै जो असुरन पाहीं पू१८ ॥ तातें कहउ तातसों बाता। सो तुमरो हित करिहैं ताता ॥ इमि कहिकै लै सुत समुदाई। कश्यप सदन अदिति चलि आई पू१९ ॥

गौर स्वरूप सुनोश पुरंदर। तप तें क्षयित गात अति सुन्दर॥ ग्रीषजटा मंडल दर्भासन। वल्क कलधरे भरे परकाश्रन ५८०॥ वरउपवीत धरे अति चारू। मनऊ मेरुतें सुरसरि धारू॥ अग्निहि होमि अगिनि में राजे। देखि देव के संकट भाजे॥ ५८१॥

दो० घेरि रहे ब्राह्मण बहुत ऊतभुक से द्युति मान।
वेद मनऊ मूरति धरे परमा भरे सुजान ५८२॥

कवित्त॥

द्विज के किलादि से पठहिं वेद मंच द्विज ठौर ठौर यज्ञ कुण्ड किंसुक अनन्तहैं। दौर रहे शिष्यगण वन मधि भौंरकैसे सुमन सुगन्वित बिटपसम सन्तहैं॥ बौरे सुरसाल से रसाल हरिभक्ति बौरें गिरिधर दास केते साधु मति मन्तहैं। आश्रम में बैठे प्रमुदित वटु कन्त कैसे सुरमणि हारे छबि धारेमुनि कन्तहैं ५८३॥ सबसों दुसहतप तपन समान दुरे कामक्रोध आदि मृगदरगैं नदिननिसि। नाना बिधिताप द्वन्द कमल समेत सूखे पापके तलावतेज परभाव दग्धदिसि॥ आरत विपत्ति बन बेलि गणसूखों दीठि पाइ कै लुआरिडारे मलै मूढ दुखघिसि। गिरिधर दास लसे भीषम प्रभाव ऐसे ग्रीषम से साथ लै सभी समरि सिन रिसि ५८४॥ सघन घटा सेा धरे मृग चर्मचारू बकपंगति सेांधरे उपवीत बरतनमैं। गिरिधरदास पवि पीत सेा है जटा सीस फूलन की माला इन्द्रधनुकसै घनमैं॥ मतकथा धारावरसावैं सुख सरसावैं प्रेमरूपी सरिता बढ़ावैं चाहि मनमैं। मेार से नचावैं मन मन्ह के किशेार आगे पावस बिराजे सुनि रानद सुनि गणमैं ५८५॥ इन्द्रीन दीनदजोर जीति कियो दूर राख्यो ज्ञान कर्म वारि को प्रमाण लौं महा बरद। शंकपंक सूख गए मोहतम रूपमेघ नेकुना दिखातिहै कछू कुवास नागरद॥ गिरिधरदास चित प्रफुल्लित पंकज से शीतल सुभाव पौन हरतु सबै दरद। सुजस अमल सेाम लख्यो जग व्योम सुनि उड़गण तेा मसह

कश्यपलमे सरद ५८६ ॥ हरिमाया जोर जग दुसहदिवाकरकों हरि भक्ति शीतबल तुच्छ करि मतिमत्त। गिरिधर दासतन दिन छयकरि ध्यान धारना बढ़ाइ राति सरिस भली समंत ॥ उज्ज्वल सुयशछायो तुहिन समान भुवदंत विद्यारथी खफछठेपठेते दिगंत। ऐसेलखि वैसेसब अदिति सुतन प्रिय अदिति पतिहि निमिरतु दरसे हिमंत ५८७ ॥ नाना मखकरैं अति आगि है सब सबहि प्रिय धूम दिशि छायेा सेानिहारसेापरै निहारि। पाइहिम योगके संयोग के संयोग कों विरागबारि महा शीतमय तापहरलेऊ निरधारि ॥ गिरिधरदास खान पानरस भेाग रूप कर्म ज्ञान अर्चनादि विधिस्मृति अनुहारि। शिशिरसमान देख्याजनक सुरनवेद सिरपाठभतकरति कान दुखहारि ५८८ ॥

दो० ध्यान धरे श्री शंभुसे भरे भागसों भूरि।
अमलमरीचि मरीचि सुतकरत दिशातमदूरि५८९॥

कवित्त ॥

कैधौं जानि युद्धतें बिमुख दृगमूंदि लीने कैधौं वलिवीर धर्म धीर तानि हारे हैं। कैधौं दोऊ बंश हानि जानि मन मुनिरायभये मौन कैधौं भवितव्यकों विचारैहैं ॥ कैधौं जग ओर तें सकोर लीनों मनिजन गिरिधरदास वेदबाक निरधारै हैं। कश्यप जू कैधौं देव देव बासुदेवजू को ज्ञान के निधान बुद्धिमान ध्यान धारैहैं ५९० ॥

दो० इमि निहारि जनकहि तबै सबै देव शिरनाइ।
हाथ जोरि वृत्तान्त कहं दीने दीन सुनाइ ५९१ ॥

चौपाई ॥

हंसिकै कहतभये मुनिज्ञाता। चलऊ तहां जहं अहहिं बिधाता ॥ इमि कहि सुतन सहित सुत के हित। कश्यप गये सभा बिधिकीजित ५९२ ॥ देखी सभाबिभासत आसा। कौन कहै छवि तौन खुलासा ॥ युतिकर शब्द सकल मुति पूरेा। मनभो हरेा गयो श्रमदूरेा ५९३ ॥

हरगीती छन्द ॥

यम दूरिगो मुनि मण्डलीमहं निरखि देव कमण्डली। सब शास्त्र बेदपुराण बपुधर लसहिं जित सुखद्युति भली॥ संसार जा खेलवार में यह होत सह सब लोक के॥ सोइ लसत कमलासीन दरशत शोक भागे शोक के॥ ५९४॥ भृगु अत्रि पुलह प्रचेत दक्ष मरीचि नारद अंगिरा। गौतम वशिष्ठकुमार कर्दम विधिहि सेवहिं सङ्गिरा॥ महिवारि तेज समीर नभ मन प्रकृति विद्या राजहीं। संकल्प प्राण विकार क्रतु सब जगत कारण छाजहीं॥ ५९५॥ रस शब्द गंध स्वरूप अरु अस्पर्श तहं मूरति धरे। धर्मार्थ काम विगार मेल सुभाव सब सन्मुखखरे॥ रवि इंदु कुज बुधजीव भृगु शनि राज केतु बिराजहीं। वाणी सकल विधि नारि विष्णुकरमा परम छबि छाजहीं ५९६॥ क्रम पद जटा घन संहिता श्रुति अंग सब तहं राजते। क्षण लव मुहूरत दिवस निशि पख मास चतुरभ्राजते॥ तिथि बार योग नक्षत्र संवत सबहिं लै लै नामकों। परिणाम को करते भए सुख मिलन हित पर नामकों॥ सुत सहित लखि कश्यपहि तहं मुख चारि हृदय विचारि कै। कहते भये वाणी महत आनंद गहत निरधारि कै॥ ५९८॥

दो० हम जाना जिहि हेतु तुम आये मेरे पास।
कहतअहौं तुमसों अहो सुनऊ सत्यइतिहास ५९९॥

चौपाई

जो अजेय अच्युत अज ईश। कर्त्ता हर्त्ता प्रभु जगदीश॥ शंकरअरुहमतें परजोइ। बलिदानब कहंजीतैसोइ ६००॥ सबकी आदि अनादि अनन्त। जा कहं भजहिं सकल भगवन्त॥ हम सब नहिं जानहिं बिभु लीला। सेा हम कहं जानहिं गुण शीला ६०१॥ क्षीर सिन्धु के उत्तर आऊ। करऊ तहांतप उर भरिचाऊ॥ जबप्रसन्न ह्वैहैं भगवान। तब तुम नहिं सुनिहौ निज कान ६०२॥ गिरा सनातन मंगलखानी। ब्रह्ममई परब्रह्मबखानी॥ सुखमों भरी सकल

दुख हरणी। करुणा करणि कृपा निधि बरणी ६०३॥

दो० वरमति तव तुम सब तहां वर मांगेऊ जय छोऊ।
तुमप्रभु हमरेबन्धु अब होऊ हरऊ दुखद्रोऊ ६०४॥

बसन्ततिलका छन्द॥

श्रीपद्म पुच वचनै सुनि देव भारे। चाले प्रणाम करिकै उर मोद धारे॥ लीने पिता जननि मौं मति प्रीतिरङ्गी। भीने महा हरष सों सुर राज संगी ६०५॥ नाना पहार सर सिंधु जोहैं। राहैंभले चलत कश्यप पतसो हैं॥ क्षीरोद उत्तरगये तबप्रेमपूरे। पीयूष यानमधि मैंसब देवरूरे ६०६॥ अत्तादई जनकनैसुत बोलि ऐसे। हज्जार संवत रहो तुम दर्भ वैसे॥ मौनोतपो हरि पदांबुज ध्यान धारो। जोचित्त है सकल कारज होइ भारो ६०७॥ लागे तबै परमतेज स्वरूप धारे। गोबिन्द चंद भगवन्त अनन्त प्यारे॥ आनन्द कन्द नन्द नन्दहि जौन ध्यावै। संसार मध्य मन बांछित तौन पावै ६०८॥

दो० तब कश्यप करजोरिकै करिकै बिबिधि प्रणाम।
हरि स्तुति करिबे लगे बिद्या बुधि गुणधाम ६०९॥

शार्दूलबिक्रीड़ित।

राधाराधित बिग्रहं रसगृहं राधागृहस्थं प्रभुं। नागेशार्चितमादिनागशयनं नाकेशकेशंबिभुं॥ देवीनाथबिनाथनाथबिगतंबिघ्नेशकृपासागरं। द्वन्द्वातीतमनामितमजंनन्दानन्दजंनागरं ६१०॥

मालिनी॥

मधु बिपिन बिहारी। पद्म भृत्पद्म हारी॥ सुख मय भय हारी। दुष्ट गर्व प्रहारी॥ अघमय जनतारी। चारु कल्याणकारी॥ सकलहृदयचारी। पातुनश्चक्रधारी ६११॥

मनोरमा छन्द॥

कमला भृद पूर्वसुरा जहरार्चित। नरपश्चिम कालगति प्रदभान्वित॥ रतिभृत्मित रुत्तर सारथि बंदित। करुणांकुरु सज्जन दक्षिण मार्थित ६१२॥

आर्या ॥

विजय धनंजयविजय दहे हे हेरंबार्च्य बलभ्रातः। कुरुक-
रुणा मरिमर्द्दन यशोदानंद यशोदातः ६१३ ॥

शिखरिणी ॥

अमारे संसारे खलुकलुष सारेसुरपते। विकारे भाकारे
निखिल सुखहारे बरमते ॥ विषत्स्थो स्वामिस्तव चरणभ-
क्तिर्हितरणिः। प्रसीदप्राणेशत्वमसिभवनीहारतरणिः६१४॥

वसुकला ॥

वसु वसुकलार्क । नयनामलार्क ॥ कपिध्वजभिराम।
मांरक्ष राम ६१५ ॥

चतुष्कला ॥

नतभव। केशव ॥ माधव। मासव ६१६ ॥

अनुष्टप् ॥

बासुदेवाय देवाया निरुद्वायाघ हारिणे। अभिरामाय
रामायनमः पंचेषुधारिणे ६१७ ॥

वसंततिलक ॥

आनंदविग्रह धराय धराधराय। गोलोक नित्यनिलयाय
लयास्पदाय ॥ सर्वेश्वराय विधिशर्व विपूजिताय। तस्मै-
नमः सकल मंगल मंगलाय ६१८ ॥

दो० तमोध्वमोघ्नट दनुज दर य मोपमोन्नत काय।
रमोक्तमोरसि जांकिने नमोऽज मोदकराय ६१९ ॥

मो० इन्दारक इन्देश मंदस्मित मंदारधर।
कुरुकरुणां कुरुजेश गुरुसुखकर करुणांबुधे ६२० ॥

चौपाई ॥

वासुदेव बसुदेवा नंदन। देव देव राधा रति चन्दन ॥
रमा रमण राजीव विलोचन। भय भंज मोचय गज भय
मोचन ६२१ ॥

बरबै ॥

आनन्दक नंदक धरनंद कुमार। कुरु करुणा मरुणांघ्रे
करुणागार ६२२ ॥

तोमर ॥

कमला लयालयगाय। कमला लयायलयाय ॥ करुणा कराय शुभाय। हरयेनमः सुखदाय ६२३ ॥

गुरुतोमर ॥

मतिमंत मंतक वंदितं। भगवंत मंतर नंदितं ॥ घुमि-मंतमंत गतिप्रदं। पुरुषंभजे पुरुषार्थदं ६२४ ॥

मौक्तिकदाम ॥

क्षमावर मावर माधर रूप। विभाधर भाधर भाकर भूप॥ विनायक नायक शायक हस्त। प्रसीद विनायकपूजित शस्त ६२५ ॥ भुजंगप्रयात।

दयासागरं नागरं नागसंस्थं। सुकंजस्थितं कंज जन्मेश कंस्थं ॥ यशोदेश पुत्रंयशो देशपेशं। भजे गोकुलेशं सदागो-कुलेशं ६२६ ॥ लक्ष्मीधर ॥

रामरमापते मापते क्ष्मापते ॥ पद्मकोशस्थ पद्मास्थप-द्मायते। ईश इन्दारका धीश इन्दापते ॥ पाहिनंद प्रिया नंदनंदायते ६२७ ॥

तोटक ॥

परमावर मावर विश्वपते। विधि शंकर शंकर दिव्य-मते॥ जलभूधरभूधरदेवरते। करुणांप्रकुरुत्व मनन्यगते६२८॥

मोटक ॥

गोपीवर पीवर पुण्यते। श्यामाधव माधव मुक्तमते ॥ दीनेश दिनेश मनुष्यहरे। यीनाथ दयांकुरु देवहरे ६२९ ॥

अडिल्ल ॥

अर्कप्रभशशिवदन कुजान्तक बुधगते। विश्वगुरो भार्गव स्वरूप रसमयमते ॥ मन्दस्मित धर राज्ञ शिरोहर वरप्रते। वृषभ केतु विधिवंद्य दयांकुरु कुरुपते ६३० ॥

चंचला ॥

चंचलाप चंचलाच्च चंचलाभ चर्चिताय। नीरदाभ पद्म नाभ लोक कोटि लाभदाय ॥ विश्व रूप विश्व भूप विश्व कूपतारकाय। माधवायतेनमोरमाधवायमाधवाय ६३१ ॥

मल्लिका ॥

शोक दुन्द खण्डनाय। धेनु लोक मण्डनाय ॥ भक्ततापचन्दनाय। तेनमोमि नन्दनाय ६३२

प्रमाणिका ॥

नगेशगेशमच्युतं। खगेशगेशमद्भुतं ॥ खगेशगेशवंदितं। भजे व्रजेश नंदितं ६३३ ॥

समानिका ॥

लोक मोद कारिणे। कोटि शोक हारिणे ॥ इन्दिरा बिहारिणे। तेनमोज धारिणे ६३४ ॥

छप्पय ॥

श्यामनीरद श्यामलधाम तामरश लोचन। श्यामारमण रमेशमेशपरमेश बिलोचन ॥ कृष्णांबर कृष्णांग कृष्ण कृष्णार्चित सुन्दर। कृष्ण कृष्ण भयहरण कृष्ण गुण कृष्ण भयहर ॥ जन दुःख बनानल कमल कर कमलावर कमलात्तधर। कुरु करुणा मरुणानुजबिभो बरुणार्चिततरुणाघहर ६३५ ॥

सवैया ॥

हे खलना खतिका मधुमाधव पातक पुञ्ज बनानलहेनव। दानवताप बिनाशन नीरद हे कमलांबक हे कमलाधव ॥ हे गिरिधारण पाप निवारण बारण तारण रूपमनोभव। हेभवकारण हेभवधारण हेभवबारण माधवमामव ६३६ ॥

चरणा दोहा ॥

प्रबल हय ग्रीव ग्रीबाहर परमपुरुष पीनाय। पापतमोहर्त्ता सुख कर्त्ता नमोदिव्य मीनाय ६३७ ॥

त्रिभंगी ॥

धरणी धर धोधर धरणीबर बरकरि रगीबर बर रूपि विभो। सित शूकर बपु धर मखमय सुन्दरभय हरदरकर पर प्रभो ॥ सुरबर दितिजार्दनदेव जनार्दन भक्त भयार्दन भूमि पते। कुरु कृपा मधार्दन जन शोकार्दन खल लोकार्दन दिव्यमते ६३८ ॥ चामर ॥

चटुभटंरणोत्कटं महासटं दृहज्जटं। कोप पीनदीन दुःख

हारि चंचलापटं ॥ दैत्यनाथ नाशनं रविप्रभं प्रकाशनं। यो नृसिंहमीश्वरं भजे विनायकाशनं ६३९ ॥

झंझरी छन्द ॥

गुण मन्दिर मन्दर गिरिधराय। सुन्दरतर कच्छप विग्रहाय ॥ मणि भूषिताय कमलाबराय। हरये नमोघहर दर कराय ६४० ॥ नरेश छन्द ॥

बलि बन्दित निर्जरनन्दितं। द्विजरूपमजं खजनार्थितं ॥ सुरपानुज पण्डित पावनं। प्रणमामि रमावरवामनं ६४१ ॥

कोकिल छन्द ॥

दराशत बाज बाज हर भार्गव विप्रपते। सुर सुरभी प्रिये शरनभमण्डन दिव्यमते ॥ यदुकुल नाशहेतु भटकेतु सुयुद्धरते। कठिन कुठार हस्तकरणां कुरुविश्वगते ६४२ ॥

इन्दिरा छन्द ॥

वरधनुर्द्धरं वर्यसागरं। गुरुगुणाकरं केशवंपरं ॥ अरि शिरो-हरं राघवंवरं। जनक जावरं नौमि सुन्दरं ॥ ६४३ ॥

भुजंग छंद ॥

हलाकर्षणं शुद्ध संकर्षणं काश्यपी धारिणं तारिणं धैर्य वंतं। सदासीरहस्तं महाबीर शस्त्रं कपीशांतकं शांतकं सांतकांतं ॥ प्रलंबांत कश्चेनु कारिंभजे धेनु वृन्दानुगं वेणुपा-णिंशुभांगं। भुजंगार्चितं व्योमगंगानिभं मुक्तसंगामलंतंभु-जंग प्रभांगं ॥ ६४४ ॥

रोला छंद ॥

सदाहिंसा धर्मतत्परतत्पराय पराय। अमरपूजितचरण पंकज पंकजा सुखदाय ॥ शास्त्र सम्मत सम्मताय शुभायसं-शुद्धाय। बुधविपूजित पूजिताय नमोस्तुते बुद्धाय ६४५ ॥

हरिगीती छंद ॥

यवनांतकाय भयांतकाय धरान्त पत्तन चारिणे। कलि कल्मषारि सुरार ये द्विज नंद नंदक धारिणे ॥ भववंदिताय सदा सदाय हनद्दितास्त्र विहारिणे। प्रणतोस्मि तत्सैक-ल्किने किल कालिने कलि हारिणे ॥ ६४६ ॥

कवित्त ॥

वेदमंदरोद्धृ रस्थितोयो मीनकूर्मरूपी यमाश्रित्य यमाश्रिता वादि दितिजौरणे। बलि र्बिलं नीतो येन गिरिधर दास सखै हैहय दशास्य वधयशो मृदुभुभुजणे ॥ यस्माद्वेनु केाम मार यद्वायस्या हिंसायाम धर्मेनाश मेष्यति प्रभृते यस्मिन् त्यागणे। हे दशावतार रूपकृष्ण गोपभूप सुत कुरुकरुणा मनूप रक्षमांप्रति क्षणे ॥ ६४७ ॥

अमृत ध्वनि ॥

भृत्य सुखद सुखमा सदन सुरवर सुन्दर हाम। पातक हारो पातुत हेबो गिरिधर दास ॥ सत्तत्तपो दृढत्तत्तल्य गतत्तत्तकीं। भृत्तत्तठजल भृत्तत्त्त भृद सत्तत्तकीं ॥ हृत्तत्तस्वि भृत्तत्तत्त्त महत्तत्तन जित्। यत्तत्तरत्त कुभृत्तत्तरणि र्दृत्तत्तरभृत् ॥ ६४८ ॥

नाराच छंद ॥

पठंतिये नराःशुभा शुभंभु विप्रभोस्तवं। मुनींद्रनिर्तरैः छत रमापति प्रियंनवं ॥ समस्त सिद्धदायकं प्रशस्तमद्भुतं वरं। नमंतितेहरेः पदंपरंपदंमनोहरं ॥ ६४९ ॥

दो० सुनि सुनिकी अरु सुरनकी अस्तुति अंबुज नैन।
भए सुनावत व्योमतें बासुदेव बरबैन ॥ ६५० ॥

चौपाई ॥

मैं प्रसन्न बर मांगऊ भाई। तबहिं कहत सुनि शीस नवाई ॥ हे जगदीश दीन दुख हारी। जौंवर देत देव हितकारी ६५१ ॥ तौ प्रभु होऊ सुरनके भ्राता। करऊ श्रेय सबको जग त्राता ॥ तबहिं अदिति अति प्रमुदित गात। मम सुत होऊ कही यह बात ६५२ ॥ सुरसिगरे तब बन्दत चरणहिं। कहते भए प्रणत दुख हरणहिं ॥ हे भगवानहरऊ भयभारी। बंधुहोइ सुखदेऊ मुरारी ६५३ ॥ सुनिइमि सबकी बाणीज्ञानी। बऊरौंबोले शारंग पानी ॥ एवमस्तु करिभ्राता नाता। राजतुम्हैंदैहौं सुरत्राता ६५४ ॥

दो० अपने अपने थान को शऊ देव मति मान।

मैंधरिहौं जिन रूपकहं जानऊवचन प्रमान ६५५ ॥

आर्या ॥

सुनि हरिके इमि बचनै भारे देवता सबै हरषे। आए आए निज निज घरको पूरे प्रेम दुख आकरषे ॥ ६५६ ॥

सो० कश्यपसों सुरमात अदिति गर्भ धारत भई।

सुरउरहरष न मातहरिअस्तुति बहुविधिठई६५७ ॥

चौपाई ॥

संवतसहस गर्भ कहं धारो। भरोतेजतें आश्रमसारो ॥ भादोंशुक्ल द्वादशी आई। श्रवण नक्षत्रसुखद सुहाई ५५८ ॥ तहं मध्यान्ह समयजग पावन। प्रगटे दुःख दुरावन बावन ॥ हरिजनमे तेहिक्षण सुरजनमें। भयो अनंद प्रगट अरु मनमें ६५९ ॥ ब्रह्मा शंकरादि सुर भारी। अमित भांति अस्तुति विस्तारी ॥ ऋषि अरु पितर यक्ष गन्धर्व। सहित अप्सरा आए सर्व ६६० ॥ भरद्वाज कश्यप यमदग्नि। विश्वामित्र अत्रि सम अग्नि ॥ गौतम पुलह पुलस्त्य मरीचि। दक्ष अंगिरा धरे दधीचि ६६१ ॥ दक्ष च्यवन औरव कपि बाम। अकपि बाम अत्रि विश्व सुजान ॥ तंब हिरण्य रोम अति नामा। वेद सिरा अतिबिश्व सुधामा ६६२ ॥ विरजसहिष्णु गर्ग पर्जन्य। सत्य नेत्र पृथु भक्त अनन्य ॥ बामन जन्यअग्र तुर बाजू। सुमनि पदभु आविभरिचाजू ६६३ ॥ पुनि पुनि प्रमुदित बंदत चरन। लागे हरिकी अस्तुति करन ॥ भयो महा मंगल तेहिकाल। अजकेजनमे जगत निहाल ६६४ ॥

दो० व्योम भीर भारी भई दिखियत यानहिं यान।

सकल अप्सरा गंधरव गावहिं सुन्दरतान ॥ ६६५ ॥

छप्पय ॥

सूर्यवर्च्च शशि बर्बच रघ कलि गोमायू। जुगप तनय पर्जन्यहहाजुह अरुणनायू ॥ चित्रसिरा अरुहंस अनघ गुण गान विशारद। आए तुंबरु सहित लिए गंधर्बन नारद ॥ ए सकल परम प्रमुदित तकलअमल पूजि प्रभु पद कमल ॥ कलगान चारु करिबे लगेपगे प्रेम पुट कर जमल ॥ ६६६ ॥

शुभा पुंज कमला मेनका अरु सहजन्या। काम्यसार द्वजी लक्ष्मणारंभाधन्या॥ मनोरमा सर्वशो अद्रिकाविद्युतपरना॥ ललिता परमाधिनी अनूका कंचन बरना। सुरबार नारि सुर तालसों उरविशाल रस राचतीं॥ तिहिकाल निहाल निहारि हरि भई नाकपत नांचतीं ६६७॥ मिच अर्थमा बरुण अंसभग पूषाधाता॥ विवखानमतिमान सुत्वष्टासविता ज्ञाता॥ विष्णु सूरये सकल लसे रसरसे प्रणत तित। सर्व निरित मृग व्याधअजै कपाद अपराजित॥ अरु हवन कपाली थानु भव अहिर्बुध्न उरअतिहि बहि। ए सर्व सर्व सोहे तहांबदत सर्व सुराधिपहि ६६८॥ विश्वेदेवा साध्य मरुत वसु अश्विमि नंदन। गरुड़ अरुण पुनि सर्पसकल पूरे आनन्दन॥ और अनेकन परम धरणिके कारण जेते। रूप धरे गुणभरे खरे करजोरेतेते॥ जय जय शुभ श्री आनन्द-घन घनश्यामल भलवपुधरे। बर कृपाकरऊ सब दुख हरऊ दीन बंधु सबतें परे ६६९॥

दो० हाथजोरि बोलतभये चारिबदन गुणधाम।
व्यापक प्रनतें विष्णु यह तुमरोनाम ललाम ६७०॥

शार्दूलविक्रीड़ित॥

जाके बीच समस्त बिश्व बिलसै जो बिश्व स्वामी अहै। जाकोनामऊं बिश्ववेद वरणै जोबिश्वपालैदहै॥ बिश्वाधार उदार जाहि कहियै जो बिश्वस्वामी अहै। जाको नामऊं विश्ववेद वरणै जो विश्वपालैदहै॥ बिश्वाधार उदारजाहि कहियै जोविश्वछायेरहै। सोईबामन होइ धारि छलकोंया विश्वमांगैचहै ६७१॥ जाकेपंकज सेवलाभ पदहै श्रीशंभु ब्रह्माअली। नित्यानन्द तड़ाग साधुमनमें पानीय प्रेमावली॥ रागीको अनुराग भानु उदयो चिन्ता अंधारीदली। सोई बामनहोइ भे जन्मते त्रैलोक्य काजैछली ६७२॥ जाकेहेत तपैं अनेक तपसी योगींद्र ध्यानैधरैं। चारोंवेदपुराण शास्त्र मिलिकै आख्यान गनैंकरैं॥ ब्रह्मासेष दिनेश ईशसगरे पारै न पावैंडरैं। जन्मसेा अति जो सुरै सुखदहैं आनन्द छावैं

घरैं ६७३ ॥ बोले वामनजू तबै विहंसिकै इंद्रादि सों बात कों। मोकों का करतव्य भाषहु अबेप्यारेलघुभ्रात कों ॥ बारम्बार प्रणामकै कहहिंते संसारके तातकों। दीनानाथ दयाल दूरकरिये शचून को घातकों ६७४ ॥ गायत्री कहं बामनै सुरगुरुदीनो तहांताच्छना। कोपीनै जननी सुदण्ड अग्निदीनो हरकवेमना ॥ पृथ्वीके हरिचर्म कुचनभनेमाला मरालासना। ब्रह्मादीन्ह कमण्डलै दुखदलै आनन्द बाढ़्यौ घना ६७५ ॥ दीनो कश्यप मेखला हरषि कै सप्तर्षि दर्भै दियो। आनन्दसिगरे जबै बटुकके यज्ञो पवीतैकियो ॥ जैजै-कार करैं भरे सुखमहा फूल्यो सबैको हियो। दीक्षापाइ सुरेश योंतिहिथलै भिक्षाधरे सोहियो ६७६ ॥

दो० नच्चरी कुची जटी बलि कुचीके यज्ञ।
भिक्षाहित जातेभये परम सुज्ञसर्वज्ञ ६७७ ॥

मालनी ॥

मखमहि चलिआवैं। तेजआकाश छावैं॥ लखिसुरसुख पावैं। मोदभारी बढ़ावैं ॥हरि बटुगुण गावैं। फूल माला चढ़ावैं ॥ बलि रिपु बलिजावैं। जैमनावैं सुहावैं ६७८ ॥ बटुक दरशपाये। दैत्यआश्चर्य छाये ॥ बलिढिग सब धाये दूरितैं शीश नाये ॥ वपुवरण बताये। विप्रआगौन गाये ॥ सुनि हिय हरषाये। देखिवे आपुआये ६७९ ॥ बटुक बदन जोहैं। चित्तमैं पूरि छोहैं ॥ नलिन नयन सोहैं। चापसी चारुभोहैं ॥ रति पति सतमोहैं। विष्णु स्वामी मनोहैं ॥ द्विजबर बह कोहैं। आवते यज्ञ जोहै ६८० ॥ इमि हरि ढिग आये। देखि राजा लुभाये ॥ चरण परशि भाये। यज्ञ अस्थान लाये ॥ बिनयकरि बिठाये। पाय पानी धोआये ॥ सब मह छवि छाये। बिप्र राजे सुहाये ६८१ ॥ तेहिछण बलिज्ञानी। दिव्य लावण्यसानी ॥ सकल सुख निशानी। कान मैं मोद दानी ॥ मन मथन मथानी। कारिणी खेद हानी ॥ सरसहरस खानी। चारु वाणी बखानी ६८२ ॥ प्रभु तव पद प्यारे। धाम मेरेपधारे ॥ दुखकलुष गरारे।

भीति धारे सिधारे ॥ जप तप मख भारे। जे किये हे हमारे ॥ अबहिं सुफल मारे। मेनिहारे तिहारे ९८३ ॥

दो० अब कछु मांगऊ करि कृपा सो दैहैं द्विजपाल।
सुनिसुनिकै गुणिकैकहत चुनिकैबचनरसाल ९८४ ॥

चौपाई ॥

कसन कहऊ अस रस भविवानी। तुम रण दान सूर विज्ञानी ॥ कोकर तुमरे बंश बड़ाई। ब्रह्मादिक इक इक अधिकाई ९८५ ॥ हिरण्याक्ष तुमरे परदादा। जिनतें भगे बिष्णु डरि नादा ॥ जब बैकुण्ठ गये लै शूल। तबहिं दुदे दुनियांके मूल ९८६ ॥ दादा ऐसे भक्ततुम्हारे। जिनके हेत बिष्णु वपु धारे ॥ पिता तुम्हारे ऐसे दानी। तज्यो प्राण रिपु द्विजकी बानी ९८७ ॥ अहइ धर्मपुल कुलकुल तेरो। ताते मो मांगन मन मेरो ॥ जौ तुममोहिं देत करिनेऊ। तीनि चरण धरणी कहं देऊ ९८८ ॥ सो सुनि हंसे दनुज कुल त्राता। बोलत भये बात बर ज्ञाता ॥ सब जानो पै मांगन जानो। बहुरि मांगिये जो मन मानो ९८९ ॥

दो० देश खजाना धाम धन जो चाहो मुनिराय।
चाह होय तौ आपको व्याहउ देउं कराय ९९० ॥

सो० सुनिकै बलिके बैन कंज नैन जग जैन तब।
बोले छलके ऐन कोटि मैन छवि लैन सब ९९१ ॥

चौपाई ॥

मोहि नहिं धाम ग्राम ते काजा। लोभी विप्रहि दीजै राजा ॥ तिनतेहिं मैं मैं कुटी बनाई। करिहौं तित अध्ययन सदाई ९९२ ॥ है संतोष वृत्ति मम भाई। विप्रहि लोभ सदा दुखदाई ॥ ज्यौं ज्यौं लगै लाभ पर पाई। त्यों त्यों होत लोभ अधिकाई ९९३ ॥ दीजै इतो जितो हम भाखो। श्रुति निषेध लोभहि करि राखो ॥ तब बलि एवमस्तु यह गायो। दान हेत पानी मंगवायो ९९४ ॥

सो० लखि कवि सिरताज कह्यो शिष्य सों बैन इमि।
करऊ न ऐसो काज यामें सबविधि नाशतुव ९९५

चौपाई ॥

और देऊ इच्छित इहि काल । पैन तीनि पग देऊ भुआल ॥ हैये विष्णु छली सुरकाज । हरि सब अवहीं दरिहैं राज ९९९ ॥ तबबलिकह्योकह्यौ मैंदैन । अबक्योंनाहिं कहौं गुण ऐन ॥ मोहि अधर्म होइहै आरज । सो सुनि बोले शुक्राचारज ९९७ ॥ सर्बस हानि जानिये नहीं । श्रुतिकहं असत दोषनहिं तहीं ॥ पुनि ज्यों द्विजहि कहौ तैसांचो । यहतौ विष्णु छलीनै जांचो ९९८ ॥ अबहींभलो और कछुदीजै । इन पदको प्रमाण नहिं कीजै ॥ यहहित विहित बातमें वरनी । नृपति धरम गुणि चाहिय करनी ९९९ ॥

दो० नीति रीति में प्रीतिकरि चलै जौन नर पाल ।
नीति लहै गत ईतिसो करऊ प्रतीति भुआल १००

कवित्व ॥

ऐसोदान दीजै जामें फिरऊकरीजैदान सोनो पहिरीजै ऐसो जामें नहीं टूटै कान । ऐसी रीति लीजै निबहीजै जामें जन्मभरि ऐसो नाचलीजै जोगिरीजै सुखभर आन ॥ बोझो सो उठैये पहुंचैये लै मंजिल जाहि थकि रहि जैये दुखपैये सोकहानिदान । गिरधदास शोचकीजै जोसकीजै करि नातरु तकीजै शोक मोह दीनता गलान १०१ ॥

दो० इमि गुरुतें सुनि गुनि हृदय बलि धरमज्ञ सुजान ।
जोरि करहि बोलतभये वचन रचन कल्यान १०२ ॥

चौपाई ॥

यह सब सत्य कह्यौ गुरु ज्ञानी । पै मम मतसुनियेसुख दानी ॥ देह अनित्य सबैं जग जाना । जो दीजै सो अहै अपाना १०३ ॥ तातें देऊं तीनि पद दान । लेऊं तीनिपद पर अस्थान ॥ ज्यौं जगदीश विप्र बनियांचो । केवल तौन छपापन सांचो १०४ ॥ तौअस को मूरख जगमाहीं । जो यह कहै देऊंगो नाहीं ॥ होऊंत्योंहंसबचनकेरो । होइहि नाम बीचमें मेरो १०५ ॥ ऐसो पाच और जग पूजो । है

गुरु मोहिं कि मिलिहै दूजो ॥ धन्यभाग मेरो ऋषिराई। जातें मांगत आपुकन्हाई १०६ ॥

दो० यज्ञ करै यज्ञेशकों कौन देइ अस अज्ञ।
आपुहि मनमें समुझियै धर्मधीर सर्वज्ञ १०७ ॥

सवैया ॥

सम्पति ज्यों हरि हैं हरिजू हमरी तेहि बीच कहा कछुहानैं। है गिरिधारन की सगरी तेहि लेत कृपाकरि दानव हानैं ॥ जौनहिं देउं तबै सुख मारि सबै हरिलेइं महारण ठानैं। लोक की उक्ति कहैं तब लोक कि लात की देवी न बात सों मानैं १०८ ॥

दो० राज धर्म यश जाइ पुनि कोप करैं जगनाथ।
तातेंदानहिं देउंगो मोदक ममदोउ हाथ १०९ ॥

चौपाई ॥

इमि कहि विंध्यावलिसों बानी। बोले बलि बसुधापति ज्ञानी ॥ लाउ कनक झारी भरिबारी। ल्याई सुनत पियारी नारी ११० ॥ शुक्रकहाजौं बात नमानो। तोद्रुत होउतोर धन हानी॥ सोनसुना बलि धर्मनिधानासदा एकमति दृढ़रति दान १११ ॥ जिमि बन जात भवन तजिज्ञाता। सुनहिंन सुजनब्रातकी बाता ॥ तिमिबलिहाथ बारिधरि खल्यहि। भेसुख मढ़त पढ़त संकल्पहि ११२ ॥ दानवपतिनी निज करझारी। राजत जगमगाति द्युतिभारी ॥ लखि छबिसकल सभा गतिभूली। कनकबेलि जनु फूलहिंफूली ११३ ॥

दो० पद्मपानि के पानिमें पानिपस्यौ जबआनि।
आतसबाजी अग्निज्यों तुरतबढ़े सुददानि ११४ ॥

चौपाई ॥

धस्यौ विराटरूप तेहिकाल। चकितलखहिं सब हरिके ख्याल ॥ सिरस्वयंभु पुरपद पाताल। रविशशि लोचनतेज विशाल ११५ ॥ जेते लोकपाल दिकपाल। अंगअंग प्रति बसहिं रसाल ॥ ऋषि गन्धर्व यक्ष सुर व्याल। खगमृग निशचरउडुगन माल ११६ ॥ बसुआदित्य रुद्रकेजूह। सरि-

तसिंधु पुरश्चैल ममूह ॥ रमासरस्वति आदिक शक्ति। वेद पुरान शास्त्रकीपंक्ति ११७॥ वन्हिवारि महिव्योम बतासा। स्वर्गपताल लोकअरु आसा ॥ सब भगवत स्वरूपमहं जो-वहिं। असुर अतिहि अचरज तुतहोवहिं ११८ ॥

दो० एकचरण निज शेषसिर थाप्यो आनंदओर।
दूजोपद पठवत भए चारवदन के लोक ११९ ॥

चौपाई ॥

इमिवामन कहं बढ़त निहारि। भरेकोप सगरे अमरारि॥ आयुध अमित हाथ महंधारि। चले चोप रणको विस्तारि १२० ॥ छली छली इहि बधऊ पुकारैं। दनुज अथोर ओर ललकारैं॥ तेहिक्षण बलिभे कहत कितारि। हेदनुजो जनिछुवऊ मुरारि १२१ ॥ इमितिनकहं वास्यो बऊवारो। तदपि न तेमानहिं बलभारी॥ लपटिगए पद मैं ऋषिधारि। अबनबढ़ै न बढ़ै उचारि १२२ ॥ सोलखि हंसेविष्णु अवतारी। झटहिं दियोपदकोंझटकारी॥ झट झटप्रकट परेखलभारी। सोऊएकछवि सबननिहारी१२३॥

दो० बातवेग तरुतालतें फल सुगरहिं जिमिटूटि।
तिमिते सबगिरते भए वामन पदतेंछूटि १२४ ॥
कछुकननकोंहरिपारषद आइकरी अतिमारि।
दैत्यभभरि भागतभए हाहाशब्द पुकारि १२५ ॥

चौपाई ॥

एकचरण पतालतौं नाप्यो। दूजोचरण व्योमलौंथाप्यो॥ तीजो चरण अरेदै मोही। इमि कहि कहत जोहि अहि द्रोही १२६॥ बांधऊ वेगि असुर अभिमानिहिं। मिथ्या वादिहि मिथ्या दानिहिं॥ तब खगेश बांध्यो दनुजेशहिं। देखत सकल दैत्यसैनेशहिं १२७ ॥ हाहा कार भयो तेहि काल। बंध्यो देखिकै दानव पाल॥ पुनि प्रभु कह्यो अरे अभि मानी। तीजो पददै मिथ्या दानी १२८ ॥ नातर हो-इहि अधरम भारी। कहि कै देत न क्यों अघधारी॥ जो नाहीसमरथ देवेकी। कह्योकहा गुनिकै अविवेकी १२९ ॥

जलदी दै नत मारत तोही। भयो न्यादानो सुर द्रोही सुनि प्रभुबचन शीशकहं नाई। धर्मधीरबोले बलिराई१३०॥

दो० दीनबंधु सब सत्यये करुन कृपाकीदीठ।
पछिलो पगपग कीजिये नापि लीजियेपीठ १३१॥
धनतें चार गुणोधनी इमि सब कहहिं प्रमाण।
तातें प्रभु ले लीजिये तीजे पदको दान १३२॥

अनुष्टुप्॥

विष्णु नै पीठपैं धास्यौ पद चारु रसालकों। सुतलै बेग तें डास्यौ वरदान पालकों १३३॥

नराच॥

भये प्रसन्न सोम देखि दैत धीरकों तबै। धस्यौ सुहस्त मस्तकै प्रशस्तकै लखैं सबै। महत्तही चहत्त यौं कहत्त बात कों भये॥ मुकुन्द द्वन्द दूरकारि श्रीपती प्रभामये १३४॥ प्रसन्न मैं अहौं महान भक्त ईश तू भयो। निहारि तोहि मोहि होत मोद चित्तमैंनयो॥ सुनत्त बात ईशकी बली प्रसन्न होयकै। कहत्तयोंभयो सुवैननैन ओर जोयकै १३५॥

दो० हे प्रभु तुमईश्वर अहउ सबप्रकार सुखदानि।
लोकरिहौसो मोरहित जगहितसरसिजपानि १३६॥

चौपाई॥

तुमरे दण्डदिये तें सांई। मोहि न लाज डर हानि सदांई॥ अज अनादि तुम पंकज नैन। सबकहं दण्ड यथोचित दैन १३७॥ कृपाकरी भिक्षा मोहि दीनी। अपनो बिभव आप हरि लीनी॥ अहो भाग्य मेरे हैं स्वामी। जो घर यांच्यो खगपति गामी १३८॥ तेहि क्षणमैं आये प्रह्लादा। बलि प्रणाम कीन्हों लखिदादा॥ सजल नयनकछु लज्जित भये। नीचो मस्तककरि रहिगये १३९॥ तबप्रह्लाद दण्डवत्करिकै। हरितें कहतभये सुदभरिकै॥ कियो धर्म स्वामीकोस्वामी। इहिसिखदीन्ही अन्तर्यामी १४०॥ रह्यौ गुमानयाहि अधिकाई। कोनकरै मदममता पाई॥ तबविरंचिचारुज करजोरे। बोलेलखि वामनकीओरे १४१॥

दो० हे प्रभु ऐसी करिये जनि छोरिय बलि दनुजेश।
दाताकहं भिक्षुक नहीं बांधिसकै बिश्वेस १४२॥

सवैया॥

जो तुलसीदल आपुहिं एक चढ़ावतो सो गतिपावतो भारी। दीन्हु तिहूंपुर दानवनाह तिहूंपुर बांधेउ अंबुज धारी॥ छोटो स्वरूपकियो पहिलें छलतें पुनि आपुनिदेह पसारी। तापर पीठदई अपनी न अबौं किमि त्यागत हे असुरारी १४३॥

सो० यह सुनिकै गुण अैन कहत सरोरुह नैन तब।
कछु न कहहु तुम बैन मम अरु जनके बीचमें १४४॥

छप्पय॥

जबहिं कृपामैं धरहुं करहुं प्रथमहिं मदकदनहि। ता पैं जानहु मोरि कृपाजिहि धनपै मदनहिं॥ जहं मैं तहैं नाहिं जहां मैं तहं मैं नाहीं। तातें औगुण यासुहस्यौमैं गुणि मन माहीं॥ यह है ममभक्त किरीट मणि यह मम प्रिय तम रसमयो। यातै हमकों सर्वस दयोयातै सर्वस ममलयो १४५॥

दो० करहु सुतल बलिबास तुमसोना कहुको नाक।
दिविपति ह्वैहैकोउसमय धर्मधीरसतवाक १४६॥
इमि कहि बंधनछोरिकै धस्यौ माथपैं हाथ।
औरं अंगनिज सांगता दीन्ही दानवनाथ १४७॥

चौपाई॥

बरमांगहु बरण्योभगवाना। दरशदेहु नितदैत्यबखाना॥ एवमस्तु कहि हरि अरि धारी। बोले बहुरि नैन भरि वारी १३८॥ हे बलि हमतुमरे आधीन। तुमहौ सतबत धीरधुरीन॥ तुमतौ बंधे सुहृरत भाई। मोहि बांध्योनिज द्वारसदाई १४९॥ छलकहं कियो आपुछलिगये। बलिकी बलि सदैव हमभये॥ अहोधन्य हम हेबलिराय। तुम सो भक्त परमहित पाय १५०॥

दो० वचन कहत लोचन बहत महत प्रेमबस श्याम।

पुनिपुनिबलि पायनपरैं उरआनन्द समाम १५१॥
ऐसे प्रभुकहं छांड़ि जेकरहिं औरकी आश।
धिकधिकतासेजननिअरुजनकहिगिरिधरदास१५२॥

इन्दिराछन्द॥

बलि प्रभा धरे मोद सों छये। भगति सों भरे भाषते भये॥ प्रभु कृपाकरी दुःख सों गये। कुमति कों हरी पुण्य उदये १५३॥ तुमसमान कोदीनदुःखहा। अपुन जानको चित्तसों अहा॥ हरि सबै लियो दोष जोरहा। हरि हमैं कियो पुण्यमै महा १५४॥ सुखभरे तदाभक्तितेंमये। दनुज के दृदावोलते भये॥ अहङ्ग थीपते प्यारसों छये। अब सबै हते भावही दये १५५॥ निरखिकै सबै प्रेमसों छई। बलि त्रिया तबै भाषती भई॥ प्रभु भलोकस्यौ गर्वतागई। अपुन कै वस्यौभक्ति कोई१५६॥ विधि उमा रमा शेष शारदा। हरगजो क्षमा पूजते सुदा॥ धरण दोउकरै चक्र औगदा। सुखद किंकरै नाथहै सदा १५७॥ निरखिये जहीं आपहैं नहीं। तुमबिना कहींठांव है नहीं॥ नभ हवा मही तेज को मही। प्रभु अहै सही विष्णु नित्यहीं १५८॥

दो० आदि अन्त अरु मध्य तुम के सब अहङ्ग समन्त।
तुमहिं तजैं औरहिभजैं ते मानव अघवन्त १५९॥

सो० इमिसुनि सबकी बात शक्रभ्रात हर्षातअति।
पुनिपुनिपुलकितगात सुतलराजदीनोबलिहि१६०॥

चौपाई॥

सुन्दर बरणि न जाइ सुतल तल। पद्मराग मणिमण्डित थलथल॥ जेहिपालत अजेय बलि बरबल। प्रकट नीतिशुभ रीति अमलकल १६१॥ अहंगाजत राजत दानवदल। समर भयंकर सकल सकलभल॥ महल महल प्रति चहल पहल चल। सरित सरोवर निर्मल नवजल १६२॥ कुसुम कुमुद मंदार कमल भल। बहुविधि पादप वृन्द विमल थल॥ नम्रितडार भार भर बरफल। केको व्रत्यनि किलकोकिल कल १६३॥ नरवनिता विहार मणिमण्डल। हासविलास

भाव अतिकोमल ॥ मारुतमंद तापुसहसम दल। मिश्रित संग पराग नव चलल १६४ ॥

दो० जहांविराजत आपहरि अङ्ग गदा अरिसोह।
कहातहांकीछविकहियमहामोदसंदोह १६५ ॥

बसुकला ॥

जहंकणक वर्षि। सुखदेतधर्षि ॥ मणिजटितधाम। सोहैं ललाम १६६ ॥ बनविविध भांति। बहुविटप पांति ॥ अति लसे फूलि। अलि रहे भूलि १६७ ॥ शीतल बतास। पूरित सुवास ॥ बहुबनेरङ्ग। विचरहिंकुरङ्ग १६८॥ जहं सरसुदेश। सोहहिं विशेष ॥ जल पुरतज्योति। जगमगा होति १६९ ॥

दो० सरवरमें अरविंदमुखविविधि रङ्ग सरसाहिं।
फटिकशिलाके बीचमणिजरे चपलदरशाहिं १७० ॥

चौपाई ॥

सरिता सोहति उज्जल धार। फूले वारिजबनी कतार ॥ मनहुं धरणि सारीवर धारी। जैसो कसीदन सुघर संवारी १७१ ॥ जहरललाम चुनन छबिकारी। कनकसिढ़ी वर बनक किनारी ॥ मणिखामीते सरिकी लाख। नीचेतें झलकत रङ्गलाल १७२ ॥ जनु पहिरे भारीपाटनको। बर लहंगा नीचे साटन को ॥ तैसेइ धाम जंबहरी भारे। धन निधान सुखप्रद दुखहारे १७३ ॥ जामाभोति श्वेत सोइ दीसी। छज्जा छज्जेदार छजीसो ॥ गोला गोल अमोल बिराजै। कमरबंध मनु अनुपम छाजै १७४ ॥ जरेरत्नसोइ भूषण भारे। हैंमनु अङ्ग अङ्ग महं धारे ॥ हाटक के फाटक सरसाहीं। जगमगाहिं भरि प्रभा सदाहीं १७५ ॥

दो० सड़क सोहाई सुखभरी पूरित अतर सुवास।
हयगय रथमण्डित सदावरषति सघनझलास १७६ ॥
भारीशोभा सतलकी को करिसकै बखान।
जहांकरत बलिराजकों दानवकुल सिरचान १७७ ॥

चौपाई ॥

बलिको सभा विराजति भारी। बैठहिं जहं बलसींव

मुरारी ॥ शुक्र सरिस सोहत सिंहासन । तापर करत असुरपति आसन ७७८ ॥ शुक्र च्यवन भृगुआदिकमुनिवर । सोहहिं बैठे निगम मूर्त्तिधर ॥ बलि महाराज सभा महं शोभत । निज यश बलसुर मुनि मनलोभत ७७९ ॥ करत बारता वामनकेरी । मुनिमण्डली चहुंदिशि घेरी ॥ देखउ कपटकीनी चतुराई । छलनचहे मोहिसुर सुखदाई ७८० ॥ पै वामन डगमतें छलिगये । निशिदिन ठाढ़ द्वारपर भये ॥ हेगुरु अहो भाग्यहैं मेरे । द्वारपाल कैसब जिनकेरे ७८१ ॥ जौनदान देते मुनिराइ । यह सुख कहं मिलतो मोहि आइ ॥ जोइ दर्शन दुर्लभ विधि हरकों । सो नितकरियत प्रातपहरकों ७८२ ॥

दो० इहिविधिहंसिहंसिकैकरहिं बातदनुज सिरताज ।
राजहिं राज समाज मेंशचुलवा परबाज ७८३ ॥

सो० तैसे तिनके द्वारसोहहिं जगदाधार प्रभु ।
सुन्दरता आगार मारहजार लजाहिं लखि ७८४ ॥

बरवै ॥

बरन चारु बारिजसे लसहिं ललाम । नूपुर मधुरेबाजहिं जन अभिराम ७८५ ॥ जंघ रम्भ खम्भासम सोहति चारु । सुमिरत संतत संतन सुखदातारु ७८६ ॥ कटिलखि केहरि सोहत किंकिणियुक्त । मुक्तमनुज मनबंधन बंधनमुक्त ७४७ ॥ पीताम्बरवरलपटेउ शोभाधाम । घनहिं घेरि जिमिबिजुरी लसतिलल।म७८८ ॥ तैसियबर रोमावलि लखउ विचारि । उदर उदधिढिग उपजीकेसर क्यारि ७८९ ॥ करकरिकरसे सोहत उत्तमभाग । मरकतगिरितें निकरेजनु युगनाग७९० ॥ कंबुकण्ठ मनु लसी माल बिभाति । तन कलिन्द पैं यमुना जनु दरशाति ७९१ ॥ बदन देखि शशि सोहत तिलक सुभाल । नीलकमल युग तापर चापविशाल ७९२ ॥ कानन कुण्डल सोहत हीर प्रकाश । गुरु भृगुपति जिमि राजत शशि दृगपास ७९३ ॥ शीशमुकुट मणि मण्डित छबि भरपूर । किधौंसूरपैं शशिकै शशिपैं सूर ७९४ ॥

दो० इमि द्वारे बलिराजके राजतहैं सुरराज।
दीनबन्धु सुखमासदन भक्तवछल ताकाज १९५ ॥
स्वर्ग स्वर्गपतिकों दियो हियो मोदसोंपूरि।
एकरूप उपइंद्रह्वै रहे दैन सुखभूरि १९६ ॥
इमि यह वामनदेवको अहैचारु अख्यान।
सुनिपढ़ि गुणिमानवलहहिं बासुदेवअस्थान १९७ ॥
अपनोइकीनो विप्रबनिपुनि ठाढ़े बलिठौर।
असुप्रभुतनिको मन्दमतिभजै देवता और १९८ ॥
तातें मन क्रम वचन इकाकरिके सब विश्वास।
तरुणा तरु दुर्गम अहैभवसमुद्र जलचास १९९ ॥
सो० शास्त्रसून्यग्रह चन्द संवत कार्त्तिक पक्ष सित।
द्वादशि दिन सानंदकरी कथानिस्तरनहित ८०० ॥
दो० मन बलिबंधन प्रेमको सुतल सुक्तिलत बास।
बामन बामन आसुहो भजुसठ गिरिधरदास ८०१।

इतिश्रीगिरिधरदास बिरचितं बामनप्रभु कथामृतं समाप्तम् शुभमस्तु।

———

अथ परशुराम कथाऽमृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

चरणकमल गोपाल के देत अमल आनन्द ।
तैसेइ वल्लभ लालके दूरिकरैं दुख द्वन्द १ ।
अर्जुन मोह महीप भुजकामादिक परिवार ।
परशुराम को नाम सोइ छेदक कठिन कुठार २ ॥
सुमिरि हृदय गुरुदेवकों भृगुपति चरित उदार ।
बरणत बर विश्वास लैकरि दैहैं करतार ३ ॥

जयकरी छन्द ॥

भृगु सुत च्यवनभये मुनिराइ । सो निज व्याहचहे हरषाइ ॥ गाधि नृपतितें भाषेउ जाइ । देहु सुता निजमो कहंराइ ४ ॥ तबनृप शोचिशाप भयछाइ । कहतभये यह युक्ति बनाइ ॥ श्यामकर्ण हय सहस मंगाइ । तबहिं लेहु कन्यहिं हरषाइ ५ । मुनि मुनिगये बरुण पहंधाइ । तहं तें नृपहि दियो हयल्याइ ॥ सत्यवती गुणगण अधिकाइ । नृपति सुता व्याही सतभाइ ६ ॥ एक समय सो पति रुख पाइ । वोली वचनहिं शीश नवाइ ॥ मोहि अरु मम जननिहि ऋषिराइ । सुवन होय सो करिय उपाइ ७ ॥
दो० द्विज चरीके दोय चरुकरि दीने मुनिराइ ।
तेरो यह यह जननिको तियहि दीन्ह समुझाइ ८ ॥

चौपाई ॥

लै तेहिगई जननि के पास । चरुदै कह्यो तासु इतिहास ॥ लै तिय बुद्धि जननि कह धन्या । निज मोहि दै मम लै तें कन्या ९ ॥ तव चरु ह्वैहै नीको भारी । तातें मैं यह कहति विचारी ॥ तोहि तौ पति समर्थ सब अहैं । करिहैं क्षणहिं सकल सोचहैं १० ॥ इमिकहि बदलि चारु चरुखायो । सो वृत्तान्त च्यवनतप पायो ॥ कह्यो करमकीनो

महि नीको। होइ बिलोम बिप्र छत्रीको ११॥ सत्यबती तब बिनय बखानी। बोले बहुरि बचन मुनिज्ञानी॥ सुतको सुत छत्री सम होई। सुनिकै मोद गह्यौ मन सोई १२॥ तब यमदग्नि भये सन्तान। परम तेजनिधि जनक समान॥ तिन सुरेणुका नारि बिबाही। बसु मदादि सुत जनमें ताही १३॥ लघु श्रीराम श्याम बपुधारे। अक्षय चितिया दिन अवतारे॥ बल बुधि बिक्रमतेज निधान। कर कुठार बाणा सनबाण १४॥

दो० परशुराम दुर्द्धर शरण अमरस के अंभोधि।
चहैं दहैं संसारको एक निमिष महं क्रोधि १५॥

चौपाई।

तौन समय शशिबंशीभूपा। अर्जुनअरिहि कृतान्तस्वरूप॥ दत्ताचेय बिष्णु अवतार। तिनकर सेवन कीन अपार १६॥ दत्त दत्तवर सो नर पाल। भयो अजेय समर बिकराल॥ सहस बाहु रिपु शशिपैं राजू। समर चाहु नितहै हय नाजू १७॥ सो रावणसों रणकरि छणमैं। लीनो बांधिखेल गुणि मनमैं॥ करतेंशरि रोकै पुनि रेलै। मन्दरादि गिरि-कन्दुक खेलै १८॥ सोइ प्रचण्ड छत्री इकबार। गो सुनि आश्रमकरत शिकार। यामदग्नि बिनहेयमदग्नि। धूमबिहीन पीन तप अग्नि १९॥ भूप जानि सुनि नीति निकेत। कीन्ह निमंचनसैन समेत॥ काम धेनु सुनिके आगार। तिन सब कियो राज संभार २०॥

दो० गज हय मनुजन हेत तहं भोजन किये तयार।
घृत दधिपय सरिता बही मोदकमिष्ट पहार २१॥

चौपाई॥

असन बसन भूषण धन धामा। यथा योग कीनी सब सामा॥ बार बधू नाचहिं बिधि नाना। गान तान सामान बंधाना २२॥ सब प्रकार सब बस्तु न दीनी। मुनिबर नृप की जाफत कीनी॥ प्रात समय हैहय अभिमानी। करामातसुरभीकी जानी २३॥ सुनिते कहेदेउ मोहिं गाइ।

तब तिन नृपहि कहा समुझाइ ॥ तुम कहं वैभव सकल अपार। हम तपसी कहं इहै अधार २४ ॥ कहा करहुगे लैके सुरभी। होइहि तुम्हैं अधर्म अचुरभी ॥ सुनि सो सहस बाहुबलवाना। अति मदमत्त नेक नहिंमाना २५ ॥

दो० छोरि लई सुरभी तबै चलेउ चंड नर राउ।
सुनि कछुनहिं भाषत भये संतत शीलसुभाउ २६ ॥

सो० आये तब भृगुराम सुन्यो हवाल नृपाल को।
कश्यपजनक अभिराम जाफतकी आफत सकल २७ ॥

दो० चले कोप विस्तारि कै शर कुठार धनुधारि।
देख्यो मग अर्जुन कटक गर्जत भये प्रचारि २८ ॥

चौपाई ॥

फिरो नृपति सुनि सदल रिसाइ। गर्जत घन समान अधिकाइ। सजह अक्षोहिणीसजाइ ॥ चलेउभेरि सहनाइ बजाइ २९ ॥ हय गजरथ मनुजन के ठट्ट। चले चलांक धरे धनु पट्ट ॥ मारुमारु धरुधरु ध्वनिभरी। फिरत सैन धरणी थरथरी ३० ॥ घने शूल असि चर्म चमक्कहिं। घने बीर रण धीर तमक्कहिं ॥ घनेठने रण प्रबल गरज्जहिं। जे। सुनिकै रिपु हृदय खरज्जहिं ३१ ॥

दो० चहुंदिशा तें घेरिकै परशुराम कहं बीर।
लगे बारि धर सेत जन तीक्षण कोटिन तीर ३२ ॥

हरिगीतो छन्द ॥

तीक्षण सुकोटिन तीरलागे धीर तजन प्रचारिकै। चहुं ओर जिमि घनघोर घेरे राम रवि ललकारिकै ॥ आयुध अनेक अनेक बरसहिं बीर भरसहिं रिसछये। अब मारि लेहु न जाइ जीवत बात इमि बरणतभये ३३ ॥ तब राम छवि अभिराम तमतहं बरकामकहं करतेभये। रिसिपूरि एक सटेक बीर अनेक सों लरते भये ॥ शिर चरण करगर धरणतें सब धरणि कहं भरते भये। घन द्वन्द मैं रवि से निकरि अरि प्राणकहं हरतेभये ३५। आकरबि धनुअति हरषि मनु शर बरषि रिपु गण बधतभे। हय हय हयन

कहं काटि काटि महान संगर नथतभे। मथिमथि सुरथ पथ किये चूरण धरणि पूरण सब करी। पद चारि सुरमद चारि कीन्हे मारि बज्र विधिताघरी ३६॥ कर काल दण्ड प्रचण्ड सेा कोदण्ड सेाह्यौ राम को। बलधाम पूरण काम तेज ललाम रण अभिराम को॥ जेजे गये हरि साम्हने ते ते गये हरि लोकमें। जिमि जलत ज्वलन महान मैं तृण तिमि पराक्रम ओक मैं ३६॥

दो० क्षण मैं ओणित की सरित प्रगट करी बिकराल।
भरी मेदिनी रुतक सों परशुराम रिपु काल ३७॥

भुजंग प्रयात।

बड़ो बीर बीरानमैं सेा निहंता। महाधीर धीरान को धीर हंता। लस्यो लै कुठारै महा शत्रु अर्हीं। लसै ज्यौं प्रलैकाल केरो कपर्हीं ३८॥ तहां सुण्डवीतुण्ड के काटि काटी। महा रुण्ड मुण्डान सों भूमि पाटी। ध्वजा छत्र टटे लसैं युद्ध भारे। मनेा व्योमतें टूटि तारे कतारे ३९॥ बड़े वीर जेते महीपाल केरे। सबै भेजि दीने तबै काल डेरे। महा कच्छ मैं ज्यौं लगै दीह दावा। तथा वीर सेाहो महा रोस छावा ४०॥ घने गीध स्वा स्यार को मोद दीनो। रणै जीति मानो महा भोज कीनो॥ यमा गार मैं कै लमा भट्ट ठट्टै। नरेशे कियो वाहिनी बिन्नु भट्टै ४१॥ लस्यो कोप धारी महा सेा कुठारी। तहां घोर संग्राम मैं शत्रु हारी॥ प्रलै काल केा सेा कस्यो कालभारी। लस्यो लैपिनाकै मनो अंधकारी ४२॥

दो० इमि निज दलको नाश लखि महा कोप कहं ठानि।
चलतभयो अर्जुन नृपति अर्ह सहस धनु तानि ४३॥

चौपाई॥

बरसतभेा बाणनको धारैं। महा मेघ समकरि ललकारैं॥ ताके सरबर सरप सरीस। दौरि रहे सजोर सब दीस ४४॥ तब बलधाम रामरण धीर। चले प्रचारत डारत तीर॥ एकधनुष अति लाघव टाढत। सिगरे शर रिपु

बरके काटत ४६ ॥ पुनिसो गरजि महारणकर्कस। खाली किये करोरन तर्कस ॥ बाण पंचशत एकहि बार। त्यागत बज्रहि न लागतिवार ४७ ॥ महामेघसों अंगप्रचण्ड। तड़ित समूह सरिस कोदण्ड ॥ वेगवायु बलबह्यौअपार। बरष्यौ विविध बाणकी धार ४८ ॥ सहसबाहु को लखिबल भारी। कोपित भये परशुधनु धारी ॥ अरिके काटिकाटि शरभारे। मेघसरिस गरजे हरिप्यारे ४९ ॥ लैकुठार भुजकाटनलागे। रण बसुधा कहं पाटन लागे ॥ जिमि महान पादप की डारहिं। काटै नरकर धारि कुठारहिं ५० ॥

दो० सहस परशुधर काटि इमिमनुजनाथ के हाथ।
मुदाजुदाकरतेभये धरतें गरसहमाथ ५१ ॥

सो० देखिपिताको नाश अयुत सुवननरपालके।
भागि गये भरिचास गांसभरे अपनेसदन ॥

चौ० मारि महारिपु गायलिवाइ। जनक पास आये मुनिराइ ॥ वंदि चरण जोरे दोउ हाथ। बोले वचन वीर बर नाथ ५२ ॥ हे प्रभु अभिमानी सदछायो। सहसबाहु यम सदन सिधायो ॥ तब प्रतापतेहिबधि सहजैन। लायोगज छोरि निज ऐन ५४ ॥ सुनिकै परशुराम की बानी। मुनि जमदग्नि ज्ञानकी खानी ॥ बोलेविप्र विप्रके नायक। विप्र धर्म संयुत सबलायक ५५ ॥ तात अधर्म कियो यहभारी। बालक बुद्धि दया बिसारी ॥ क्षमा धर्म है ब्राह्मण केरो। नहि चाहिय असकोप बहेरो ५६ ॥ युद्ध धर्म क्षत्रीकाअहै। द्विजजौं करै शर्म नहिं लहै ॥ क्षम भिक्षुक कहं चाहिय काहि। सब परलोकदया निरवाहि ५७ ॥ जौं नृपगयोरह्यौ लैगाइ। तौका हरिनहिं सकें जिवाय ॥ इतनी करीदया कलकानि। साहसकरे विप्रपनहानि ५८ ॥ तुममास्यौ नर चातहि ताता। तातेंभयो पाप दुखदाता ॥ नरपतिबरकहं मारै जोय। अधिक ब्रह्म हत्यातें होय ५९ ॥

दो० तातें तीरथकरउ तुम जातें यह अघजाइ।
अब असकोपन कीजियो जासों धर्म नसाइ ६० ॥

तोटक ॥

सुनिकै पितु बात कुठारधरे। अभिराम प्रणामहिंराम करे ॥ करिबे महितीरबे चारुचले। संगमोहहिं बिप्रअनंद रले ६१ ॥ जित जाहिं नहांहिं तहां पहले। वर बिप्रन देहिं सुदान भले ॥ तहंकी विधितें उपवास करैं। निज तीरथकोअघनास करैं ६२ ॥ इमितीरथ संचित एक कस्यौ। सब पाप कुतापहिं आपदस्यौ ॥ पुनिआइ पिता ढिगमोदमए। पदपैं परते भरिप्रेमभए ६३ ॥ लखिकै सुतकोयमदग्निसुनी। हतपाप अनंत प्रताप गुनी ॥ अति छावतमोदभये मनमैं। बड़आशिष दीन्हि सोई छणमैं ६४ ॥

दो० इमिनिवसें निज पितु सदन पितु सेवी श्रीराम।
तेजपुंज प्रभुता भरे परम पराक्रम धाम ६५ ॥

चौ० इकदिन च्यवन सुवनकी नारि। गई कलश लै भरिबे वारि ॥ नदीतीर आई छबिछाई। तितदेखीशोभा अधिकाई ६६ ॥ वर गन्धर्व चित्र रथनाम। जलक्रीड़त लै बालललाम ॥ कंठमाहिं अर्पित भुजदंड। सरिस बितुण्ड सुंड छविमंड ६७ ॥ मद विह्वललोचन रतनारे। बसन सिहीन पीन तन धारे ॥ भरि भरि अंजुलि मेलत पानी। हास बिलास कलासर सानी ६८ ॥ कबरीखुली खसत परसून। मुखप्रकाश चंदछते दून। सटि सटि वसन रहे तिय अंग। पिय जिय करतअनंग उमंग ६९ ॥

दो० करन कमल पुनिकर कमल अमल कमल से नैन।
चरण कमलसे चारु अतिकमल बरण छबिऐन ७० ॥
कमल बदन सुखमा सदन कमल माल उरमाहिं।
कमलभरो सरिमैं खरी वनिता वृन्द नहाहिं ७१ ॥
जलभीने दरशाहिं अति उन्नत उभय उरोज।
जनु सरोजकी कलिन पैं ओसपरी भरि ओज ७२ ॥

चौ० छबि निरखत रेणुका लुभानी। घरी एक तित खरी बितानी ॥ पुनि पतिको भय भरि भरि वारी। गई आसु जित मुनि व्रत धारी ७३ ॥ हेतु विलंब जानि धरिध्यान।

बोले कोप्रगटे मुनिज्ञान ॥ तबमन लख्यो और नर पाहिं।
है अब मम लायकतू नाहिं ७४ ॥ इमि कहि कही सुतन
सों बानी। मातु शीशकहं काटहु आनी ॥ सुनितिन सुतन
बात नहिं मानी। तब मुनि रामहिं देखि बखानी ७५ ॥
तात भ्रात सह मातहि मारहु। घर तें भिन्न शीश करि
डारहु ॥ सुनि सुनि जनक बचन मुनि ईश। काटि लिये
सबहिनके शीश ७६ ॥ ह्वैप्रसन्न तब जनकबखानो। मांगहु
वर जोई मनमानो ॥ राम कहा जोवहिं सुतमाता। तहिं
जानहिं मोहिं राम निपाता ७७ ॥

दो० ह्वै प्रसन्न मुनिवर कह्यौ एवमस्तु हेराम।
सुतन सहित जीवत भई तब रेणुका ललाम ७८ ॥

चौ० एककाल अर्जुन सुतमारे। रामरहित मुनि धाम
पधारे ॥ तहां सकोप देखि मुनि दृहहि। बढ्यो तेज तप
ज्ञान समूहहि ७९ ॥ तबरेणुका रुदन किय भारी। हाहा
राम शत्रु बध कारी ॥ सुनिकै मातु रुदन तित आई।
देख्यो शीश बिनामुनिराई ८० ॥ लागेकरन महान विलाप।
पूस्यौ हृदय भूरि संताप ॥ हाहा तात गये कित आपु।
कहत न कछु लखि मम संतापु ८१ ॥ अहो कस्यो दुष्टन
अघ काजु। नहिं चीन्ह्यौ कछु धर्महिं आजु ॥ क्षत्री भये
महा मद मानी। अविचारी शठ अघी कुचाली ८२ ॥

दो० तातैं सबको मारि महि करौं अक्षत्री नाम
तब कहवावौं जगत मैं भृगु कुलमण्डन राम ८३ ॥

बसुकला ॥

इमिकहि सुकोपि। मुनि चलेचोपि ॥ करगहिकुठार।
अति निशित धार ८४ ॥ रिपुपुरी जाई। बलको बढ़ाई ॥
सुत दशहजार। जे बलअपार ॥ तिनको निपाति। डार्यो
सुभांति ॥ शिरको प्रहार। कीनो अपार ८५ ॥ पुनि घूमि
घूमि। नृप रहित भूमि ॥ कीन्ही प्रचण्ड। क्षत्रिय
अखण्ड ८६ ॥ एकईस बार। भार्गव कुमार ॥ कीन्ही
निक्षत्र। बसुधा सबत्र ८८ ॥

सो० दुखतें इकइस बार उर कहं ताड्यौ रेणुका।
तातेराम उदार तितनिहिं बारनिछत्र किय ८९॥

चौपाई॥

तबहिंसमन्तक पंचकआइ। शोणितके नवकुंड बनाइ॥ कीन्हों यज्ञ सकल अघ मोचन। श्री भृगुनाथ पितर मन रोचन ९० होता कहं दीनी दिशिप्राची। ब्रह्माको दक्षिण रंग राची॥ पश्चिम अध्वर्जहि मुनिज्ञाता। उत्तरदिशा दई उदगाता ९१॥ सकलभूमि कश्यपकहं दीनी। भई काश्यपी तबहिं नवीनी॥ इमि करि यज्ञ सज्ञमुनि राइ। मुनिन सहित बर नदी नहाइ ९२॥ पाप ताप दहि लसे सुजान। भानु यथा अंबर अस्नान॥ तब यमदग्नि दिव्य तन पाइ। भेदृषि सप्त मनभ मैं जाइ ९३॥ प्रमुदित होय पितर तब आए। बर मांगउ बोले हरषाए॥ राम कहा ये रुधिर तलाई। तीरथ होंहिं देउ सुखदाई ९४॥ एवमस्तु कहि पितर सिधाए। राम हृदय आरामहिं पाए। विगत राग द्वैकै गुणधाम। कीन्ह महेंद्राचल विश्राम॥ ९५॥

दो० इमि श्री भृगुपति रामको जन्म परम अभिराम।
जे सुनिहैं पढ़िहैं मनुज ते लहिहैं मन काम॥ ९६॥
जब जब होतअधर्म है धरणीमध्य अपार।
तबतब राखनधर्म को विष्णु लेत अवतार ९७॥
कोदयाल असदूसरो प्रणत दुःखहंतार।
जापैं जादव शरण कों तजिकै नन्दकुमार ९८॥

सो० श्रीवल्लभके लाल दीनदयाल कृपालमति।
तिन्हकीकृपा विशाल भेपूरण यहचरितअति ९९॥

दो० रसनव वसु अरु चन्द्रमा संवत अगहनकृष्ण।
प्रतिपद गुरुदिन यहकियेपूरण गुणनिधि कृष्ण १००॥
गिरिधर गिरिधरलालके पदपरागकी बास।
चाहतनिशिदिनदीनअति लघुमतिगिरिधरदास १०१॥

इतिश्री गिरिधरदास विरचितं परशुराम कथामृतं समाप्तं शुभमस्तु॥

अथ रामकथाऽहत लिख्यते ॥

दोहा ॥

अतवल्लभवल्लभ सदाआचारज अतंवस ।
बल्लभ मेरेमन बसो करनबिघ्न बिध्वंस १ ॥
जगुदाजगुदायक सदा करन नन्दआनन्द ।
राधाआराधित चरण जयजयश्रीनन्दनन्द २ ॥
दशरथसुत दशमुख दमन दशदिशि सुयशप्रकाश ।
करऊ राम अभिराम मम उर आरामनिवाश ३ ॥

चौपाई ॥

हिरणकशिपु हिण्याक्षगरारे । हरि बराहनरहरि ह्वै मारे ॥ तबतेभये विश्वाघरमें । प्रभयश्री कै कसी उदर में ४ ॥ रावण प्रथम महाबल राशी । समरदक्ष प्रपक्ष बिनाशी ॥ सुखदैपंच पंचमुख भगत । वरप्रताप सब जीत्यो जगत ५ ॥ दूजोकुंभकरण परदरन । कज्जलगिरिसो जाको वरन ॥ कन्दरसरिस नासिका करन । सिर बड़पनो शिखर मदहरन ६ ॥ सो असुरेशअनुज जबचलतो । तबसमरोमहि मण्डलहलतो ॥ ताकेखात मनुज मृग कैसे । बदन समाहिं सक्तुकन जैसे ७ ॥

दो० तासुअनुज हरिभक्त मणिभयो विभीषण नाम ।
जासुबड़ाई मुनिन जगसाई अतिअभिराम ८ ॥

चौपाई ॥

तीनऊं बंधु बिपिन चलिगये । बरहित घोर करत तपभये ॥ बज्रत कालतित बीत्यो जबहीं । आये तहां पितामह तबहीं ॥ उठऊ पुत्र मांगऊ बरदान । तुमकोनो तप दुसह महान ॥ सुनि बिधि बचन निशाचर नायक । उठ्यौ सप्रेम निरखि बर दायक १० ॥

बिशेषिका छन्द ॥

सोहहिं बीस भुजा खलकी अति कांति मढीं। मानहुं कज्जल के गिरिसेां अहि नारि कढीं ॥ मस्तुकहैं दशसुन्दर शोभित रूपभरे। मानहुं मर्कत मन्दिर ऊपर कुंभधरे ११॥ कन्ध लसे उपवीत बनी छबि तासु भली। मानहुं पावस बादर मैं बककी अवली ॥ सोहत लाल सुअंबरता कढ़ि बीच घनेा। रौद्र भयानक मैं लपटयौ परतच्छ मनेा १२ ॥ रावण के शिर चन्दन लालचि मुण्ड लसै। सूर मरीचिमनेा तम ऊपर तीन बसै ॥ शीश शिखामहं सोहहिं बेलके पत्र हरे। मानहुं नागिनिने शुकको गहि बांधि धरे १३ ॥

दो० करि प्रणाम बोलेा बचन अमर करहु अमरेश।
हमहिं अहैं नहिं अमर सुत तू किमि रहै हमेश १४॥

सो० तब बोलेा दश शीश तजि नर बानर अपरसेां।
मैं न मरौं सुर ईश एवमस्तु सुनि बिधिकहेा १५ ॥

चरणा दोहा ॥

कुंभकरण की बुद्धि फेरि कै नींद दई मति ओक। भगबत भगति बिभीषण कों दै जातभये निज लोक १६ ॥

चौपाई ॥

बर लहिकै पुलस्त सुत जाये। तीनहुं ते निज मंदिरन आये ॥ तब मातामहं मिल्योसुमाली। संग लिये कोटिन बल शाली १७ ॥ निशिचर दलले रावण बंका। जीति धनेशहि लीनीलंका ॥ लाग्यो राज करन दशशीश। जीति जगत सुर बर अवनीश १८ ॥

दो० मेघनाद जन्मयो सुवन मन्दोदरि तें ताहि।
जीति शक्र जानेलियेा बर बिधितें हितचाहि १९ ॥

छप्पै ॥

महा पार्श्व अति काय निकाय अकंपन कंपन। योनि ताल पूपाक्ष अक्षसुर अरि अरि कंपन ॥ धूम्राक्ष मकराक्ष बज्र रदचण्ड महोदर। चिक्षिरा कुंभ निकुंभ बिघ्र सुप्तघ्न अपरदर ॥ इन सबको ईश प्रहस्त रणमस्त सैन

पति संग लै। दशकन्ध लंकराजत भयो हिरण कशिपु सम ढंग लै २० ॥ कवित्त ॥

मद अजमुख बुद्धि हद गजमुख सम बलधर परकों समर सनमुख यम। तीन मुख बासुकी सेा रोसवन्त अज्ञा बिमुख अघीकों दुखदाता सूबीसुखतम ॥ राज्यो दशमुख दश शतमुख समधीर एक बीर शरण हरण अभिमुख भम। चैन चारमुख जग जैन पांचमुख संगसैन षटमुख रंगनैन सात मुख सम २१ ॥

दो० शूर्पनखा निज बहिनको पतिहति रण बलवान।
तेहि खरदूषण सौंपिदिय जन स्थान अस्थान २२ ॥

चौपाई ॥

एक समय आयो कैलाश। चढ़ि पुष्पक उर पूरि हुलास ॥ करतें लीनो शैल उठाई। जिमि पंकज लघुरा गज कुलराई ३ ॥ इक करतेंदूजे करलेत। कंदुक खेलतबुद्धि निकेत। देखितासु बल सुर सिरमौर ॥ वरणहिं या सम बली न और २४ ॥

दो० राजत राजत शैल सेा लीने निशिचर नाथ।
तौलत है अघपुंज मनुपुण्य पुंज लैहाथ २५ ॥

चौपाई ॥

तब सकोप हरचरण दबायो। दबि निशिचर पतिशोर मचायो ॥ रोवतजानि दयाल उदार। रावण नाम कियो हरि भार २६ ॥ पंच वदन पदपैं दश वदन। लोटयो तबहिं महामद सदन ॥ सेारावण सब जगत सतावन ॥ हुमिलहि नाम लखेाभय छावन २७ ॥

उपेंद्रवज्रा छंद ॥

निहारिकै रावण के प्रतापैं। डरेसबै देवकरें विलापैं ॥ विरंचि तें जाइ कथा बखानी। हस्यो सुराजै दश शीस मानी २८ ॥ तबै सबै संगलिवाय ज्ञाता। तुरंत वैकुण्ठगए विधाता ॥ प्रणाम कै नाम समेतरूरे। करत्त मे अस्तुति प्रेमपूरे २९ ॥

नराच छंद ॥

जगन्निवास यौ निवास तीन लोकके पती। मुकुंद इंद नासकारि कंसहा महापती ॥ कृपाल पाहिपाहि चाहि कै कृपाहि कीजियै। सदाहि दाहिनै सबै अबै निबाहि लीजियै ३० ॥ अनंतरूप आयवुद्धिवंत विश्वकन्तहै। महाद्र संतईश लोकआदि मध्यअंत है ॥ प्रवीणतीन नयन पूज्य दीनदुःखनाशियै। दयाल देवपालदेवमैं दयाप्रकाशियै३१ ॥ खगेश केतुपुण्य सेतुखेत रूप सोहने। सुजान भक्त हेतु रूप लेतु आपहैाघने ॥ सरोज शंखचक्रपाणि मोददानि सांवरे। विशेष शेषसैन मो हरो कलेशरावरे ३२ ॥ स्वयंभु संभुशक्र से सदाहिं पैर पूजहीं। जसै पुराण गावते सुपार पावते नहीं ॥ अनेक कोटिब्रह्म अंडरोम रामराजते। निहारते पदै झटै कुताप पाप भाजते ३३ ॥ विराट है समस्तलोक रूप देव थीपते। हिरण्य नैन आदि दुष्ट आपुने सबैहते ॥ अबै दसास्य दुष्टकों मनुष्यहोय मारियै। मुरारि धारिकै कृपा सुरानकों उबारियै ३४ ॥

दो० दीनवचन सुनि सुरनके दीनबंधु सुरकान्त।
बिधिहरतें बरण्यो सबै रावण बधबिरतान्त ३५ ॥

चौपाई ॥

तब बिधि शंभु परशि प्रभुपावन। लगे सुरन कों कथा सुनावन ॥ रविकुल अजसुत दशरथभूप। अहैं अवधपुरपुण्य स्वरूप ३६ ॥ परम प्रवीण विदित पुरतीन। धीरधुरीन धर्म आसीन ॥ एकचक्र महिवरतत राजा। शक्रसखा नरवरसिर ताज ३७ ॥ दशरथ नगर अयोध्या जौन। कौनसुकवि छबि बरणै तौन ॥ गोपुर बाहर गोपुर चार। जहं मो देखिय रुचिर बजार ३८ ॥ तिनमें नवरत्नके काम। बने विश्वमन हरअभिराम॥ परम तुङ्गलागे आकाश। करिपरकाश करते तमनाश ३९ ॥ तेमनु रत्न सानु के सानु। राखेलाइ भानु कुल भानु ॥ किधौं सुर यम मोचन काम। बिरचे नृपति चारि विश्राम ४० ॥

दो० भीति छीरकी सोहती पत्तन की बर जोति।
दिननिशिरविशशि तेजसों जगमगनगरीहोति ४१॥

कवित्त॥

धरम धरन चार बरण बसत बढ़ो धरन धरन सोभा मनुज समाजकी। बरण बरण आभरण दरशत सरसत पट चारु छाई छबि पुर साजकी॥ गिरिधर दास हय गय कुल संकुल बिपुलमति मोहै सुर राजहू के राजकी। देखि धन राजी राज राज पुरी लाजी ऐसी राजी राजधानी राजी नरराज राजकी ४२॥

दो० तेहि पालत अज आतमज अज सम बिज्ञ बिनीत।
सत्य संध बल सिंधु बर धरे धरम नृप नीत ४३॥

कवित्त॥

एक रदसम एक मंगल स्वरूप दोय रदसम दोय लोक रूप नैन श्री अनूप। चिपुरारिसे चिलोक मान्य चारि भुज सम चारि बेद ख्यात पंच सधि पंच सुख रूप॥ षट सुख सम खट ऋतु जय शील सप्त ऋषि सम सप्त द्वीप पूजे पाटि पाप कूप। अष्ट सिद्धि सम अष्ट याम से हैं नौनिधिसे पूरे नौ लसत दशदिशि दशरथ भूप ४४॥

दो० कौन कहै अवधेशको गुण प्रताप यश भाग।
आपु बिष्णु जनमेजहां करिवपु चारि विभाग ४५॥

कवित्त॥

परम प्रताप भूमि भारती में थाप आप भारती लजै कहत गुण समरथको। तेज देखि लाजकों लहत ग्रहराज रूप देखि कै अनूप मोहै मन मन मथ को॥ गिरिधरदास नीत विद्या बीच प्रीत नित सरस सिंगार है पुनीत पुण्य मथको। शचु मनोरथ होत बिरथ फिरत जहां जै स्वरथ दिशि दशरथ दशरथ को ४६॥

दो० सो नृप सुतहित बोलिकै ऋषि शृंगिहि निजधाम।
यज्ञ करत सरवज्ञ तित बिष्णु होहिंगे राम ४७॥
कौशल्या अरु केकई सहित सुमित्रा स्वच्छ।

पटरानी हरि चारि बपु तिन ह्वै हतिहैं रच्छ ४८ ॥

चौपाई ॥

तुम सब प्रभु सहाय के काज। होऊ धरा कपि रिच्छ समाज ॥ रिच्छ रजासुत शक्र कुमार। बालि होय बानर भरतार ४९ ॥ सूरज पुत्र महाबलसींव। बाली बन्धु होय सुग्रीव ॥ बालि सुवन अंगद बलवान। पवनपूत होवै हनुमान ५० ॥ अग्नि कुमार नील बलधाम। विश्व करमा नन्दन नल नाम ॥ है अश्वनी कुमार कुमार। मैंद द्विविधि बानरभरतार ५१ ॥ विधिको अंश होइ मतिमान। जामवंत सब रिच्छ प्रधान ॥ इहि बिधि होऊ धरणि सबदेव। तब हरिनर ह्वैहैं बरभेव ५२ ॥ इमि सब सुरमुनि सहित अनन्द। भेगोपुच्छ रिच्छ कपि हृन्द ॥ महा बेग बल बीर्य शरीर। गिरि रण करण धीर धरबीर ५३ ॥

दो० कोटिन कोटि असंख्य भट सातद्वीप बिश्राम।
तिन सबकों पालत भयो बालि महा बलधाम ५४ ॥

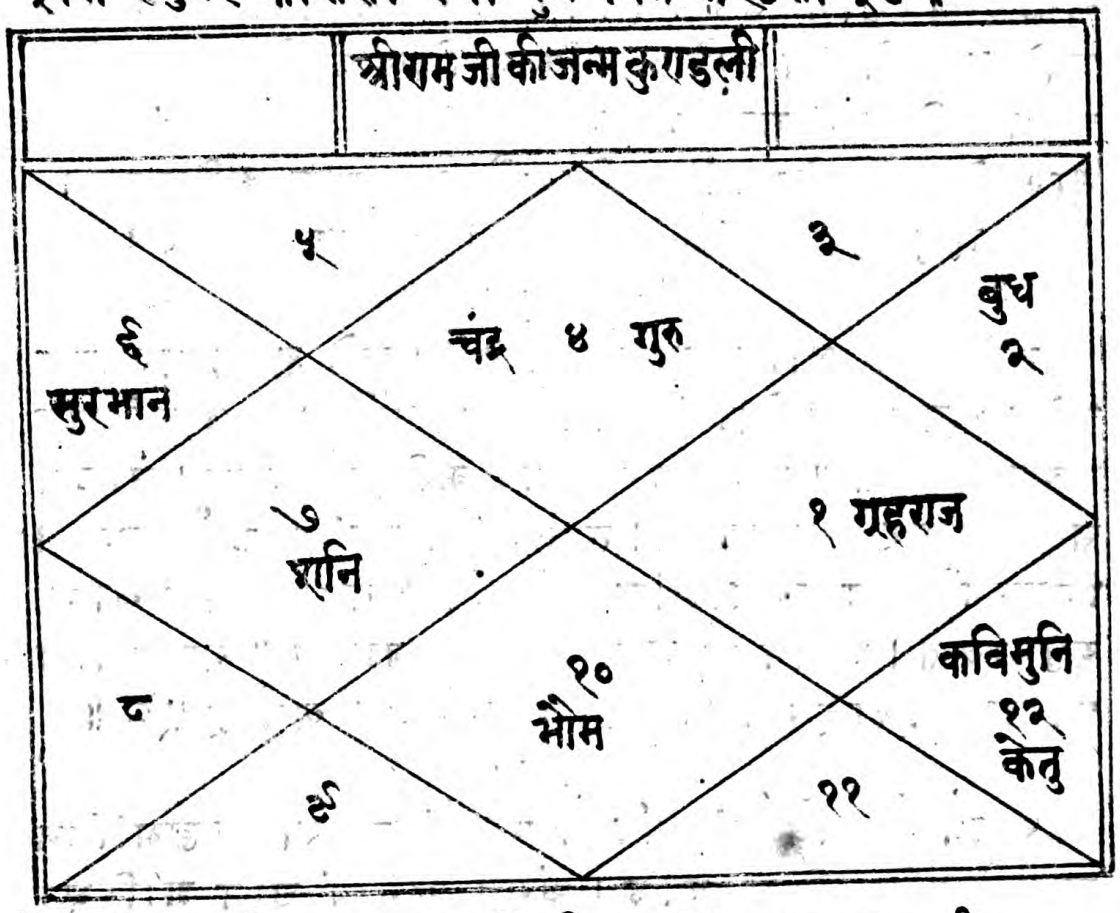
छप्पय ॥

नृपहि यज्ञतें निकरि पुरुष चरुदीन नवीनो। करि प्रणाम अभिराम ताहिकर नरबर लीनो ॥ कौशल्या कैकइहि भाग ह्वैकरि सो दीनो। दुऊन सुमित्रहि दियो गरभई धारत तीनो ॥ सहआहुति पावक सरिस दुतिवतीलसीं तिय रूपधर। जिमि शुद्ध फटिक संपुट धरे चंद्रकांत मणि होत वर ५५ ॥ चैत मास बरपक्ष रुच्छ नवमी सुखकारी। जब आई गुण भरी पुनरवसु युत दुख हारी ॥ बाजेव्योम निशान पुहुप पुहमीपर बरषे। रावणको ध्वजगिरयो अमर नर बर मुनि हरषे ॥ अरि हृदय करक कारक करकलगन मध्य आनन्द मये। जन प्रेम सुर समेगरका कुल अरक अरक परगट भये ५६ ॥

कुण्डलिया ॥

मण्डलीक शिरताज गृह जनमे केशवसांच। शोधिप्रथम गृहतें लिखीचार चन्द गुरु पांच ॥ चारचन्द गुरु पांच षष्ट

सुर, भानु सात शनि। आठ नव दश भौम इगारह बारह कवि मनि ॥ केतु एक ग्रहराज दोय बुध तीन कुण्डली। इमि रघुवर कीलसी रची बुध विप्र मण्डली ५७ ॥



दो० मुदितहोय दशरथ कियो सुतको जातक कर्म।
दान विधिधि विप्रन दियो मूर्त्तिमन्त शिमि धर्म५८॥

चरणा दोहा ॥

दशमीके दिनभये कौकहि भरतपुष्यमधि चारु।
लच्छिमणअरु अरिदमन सुमचहिश्लेषा लियेअवतार५९ ॥

सो० राम जनम आनन्द बरणिसकै कवि धरणिको।
ऋंगीऋषि विधिनन्द पुनि पुनि पूजत पुरुमिपति ६० ॥

चौपाई ॥

नगर अगर धूपित करवायो। बगर बगर गुलाब छिरकायो ॥ द्वारद्वार तोरण छवि भारी। केदलि खंभ लसैं रुचि कारी ६१ तने बितान घने दरशाते। घरघर केतु अमित फहराते ॥ बाजे बजहिं रुचिर सब द्वारी। मङ्गल गीतन

गावहिं नारी ६२ भरीभीर पुरमें सबओर। होतबधाई ठौरहि ठौर॥ बारबधूनाचहिं विधि नाना। नभ अप्सरा करहिं कलगाना ६३॥ देवन दृष्टि सुमनकी करी। जयजय ध्वनि दशहूं दिशि भरी॥ मणि माणिक रूपये अरु सुहरैं। अवध गलिन में सबथल बुहरैं ६४॥

दो० कोकबि जो छवि कहिसकै राम जन्म अभिराम।
शंभु स्वयंभु सुरेश रबि नाचहिं पूरण काम ६५॥

चौपाई॥

इमि सुत चारि चारु नृप केरे। लसे सुखद पुरजनन घनेरे॥ प्रमुदित होहिं सुतन लखिरानी। बाल चरित्तर भवन भुलानी॥ जब दशरथ निज मन्दिर आवत। सहित सनेह कुंअर उरलावत॥ तबहि अवध पति हर्षत कैसे। निरधन लहि चन्तामणि जैसे ६७॥ करत बाल लीला रघुनायक। जननि जनक सुददायक लायक॥ राघवबाल चरित सुखदाई। कहत महत मति शेष लजाई ५८॥

कवित्त॥

खेलन खेलावैं घने कीरन पढ़ावैं दुलरावैं बहुभांतिन लुटावैं मणि चित्त चहि। अंगन लगावैं उठि शारिका बुलावैं फिर फिरकी फिरावैं औबजावै तारी सुख गहि॥ गिरिधरदास महारानी दशरथ जूकी भागनसों पूरी रूरी जिनसों न और महि। अंगना समाहिं फूली अंगनालै सुत तिन अंगना के भागकों भुअंगना सकत कहि ६८॥

दो० नाम करण विधि सुतकियो बड़े राम अभिराम।
भरत लक्ष्मण शत्रुहन क्रमसों बल बुधिधाम ७०॥
करन वेध चूड़ा करन समय समय नृपकीन।
प्रीत सहित उपबीत कहं गुरु वशिष्ठ वरदीन ७१॥

चौपाई॥

बड़े भये नरराजाकुमार। विद्यावन्त सुशील उदार॥ सबमें राम अधिक गुणवन्त। सेवैं पितहि हरिहिं जिमि सन्त ७२ चढ़ि चढ़ि बाजि चपल सबभाई। जाहिंसिकार

विपिन सुखदाई ॥ गज आसीन फिरहिं पुरमाहीं। रथ चढ़ि चारु तमासे जाहीं७३॥ देखि देखि पुरवासीलोगा। प्रमुदित होहिं दूरिकरि सोगा ॥ निरखहिं सब रघुवर सुख ओरा। शरद शशिहि जिमि चहे चकोरा ७४ ॥ व्याह योग सब निरखि कुमारा। दशरथ मनमैं करत विचारा। इतनेहीं मैं नृप के द्वारा। आये विश्वामित्र उदारा ७५ ॥

दो० खबरकराई भूप ढिग सुनि गुरु सहित महीप।
आइ चरण बंदत भये मिले बिप्रकुल दीप ७६ ॥

चौपाई ॥

गृहले जाय पूजि बैठाये। मूछत कुशल प्रश्नमन भाये॥ आवन हेतु कहिय मुनि भारी। शिर धरि आयसु करूं तुम्हारी ७७ ॥ बोले मुनि मारीच सुबाहू। देय दुखद हैं निशिचर नाहू ॥ करहिं यज्ञ विध्वंस हमारो। तातें हम बल चहत तुम्हारो ७८ ॥ रामहिं हमै देहु लैजाहिं। तिन्हैं मारि ऐहैं तुमपाहिं ॥ सुनिनृप महाखेद बसभये। सोलखि सुमुनि रोष सोंछये ७९ ॥ तब वशिष्ठ भूपहि समुझायो। विश्वामित्र प्रताप बतायो ॥ सुनिनृप हृदयअतिहि आनंदे। राम लषण दै मुनि पद बंदे ॥ नृप कुमार कटि कसिधनुधारे। कौशिक मुनिके संगसिधारे ॥ परम प्रताप न जाइ बखानो। रूप निरखि रति रवन लजानो ॥ ८१ ॥

दो० आगे मुनि पुनि रामजू पाछे लषण उदार।
मनहुं शांत अरु वीर के कध्य जात सिंगार ॥ ८२ ॥

तोमर छंद ॥

पहुंचे तपो बन जाइ। निवसे तहां रघुराइ ॥ पुनि ताड़िका कहं प्रात। निरखी भयंकर गात ८३ ॥ मुनिराज आयसु पाइ। धनुतानिकै रघुराइ ॥ हरतेभए तियप्रान। रघुनाथ धर्म निधान ८४ ॥ तब तुष्टविप्र प्रवीन। सब अस्त्र रामहिं दीन ॥ तेहिलै लसे रघुनन्द। जिमिशार दीनिशि चंद ८५ ॥ पुनिराम लैसंगबिप्र। निजधाम मैं गए क्षिप्र ॥ तहंयज्ञ को सजिसाज। करिबे लगे मुनि राज ८६ ॥

दो० यज्ञ धूम नभ लौं गयो लखि निशिचर गण आइ।
मास रुधिर वर्षण लगे जहं रक्षत मुनिराइ ८७॥
सो० तब रघुवर धनु तानि वधि सुबाहु सह अपर खल।
मारीचहि पहिचानि सिंधुपार पास्यौ प्रबल८८॥

चौपाई॥

इमि मुनि मखकी रक्षा कीनी। कौशिक प्रमुदित आशिष दीनी॥ तहं मैथिल के आए दूत। बोलन हेत विप्र मति पूत ८९॥ तबनृप सुतन संग निज लीने। मुनि मिथिलाहि चले रंग भीने॥ मगमैं रामलखी सुरसरी। भूमि मालसी सित दुति भरी ९०॥ करि प्रणाम पूछ्यौ इतिहास। विप्र करो सब कथा प्रकास॥ गंगा पार होइ छवि छाए। मुनि वर गौतम आश्रम आए ९१॥ तहां शाप सों गौतम नारी॥ शिलारूप रघुनाथ निहारी॥ मुनि सब कथा सुनाई तासु। प्रभुपद परशि नारि भइ आसु ९२॥ रामचंद्र की पूजा कीनी। आशिष विविधि भांति सों दीनी॥ तबह्वै बिदातहां सोमुनिवर। मिथिला पुर पहुंचे आनन्द घर ९३॥ जनक सुन्यो मुनि कौशिक आए। चले मिलन हित आनन्द छाए॥ सतानन्द सानन्द सुहाए। जाइ मिले सब अति मन भाये ९४॥ कुशल प्रश्न करि पूछेउ भूप। किनके सुत यह रुचिर स्वरूप॥ मुनि बोले ए अवध निवासी। दशरथ सुवनचहैं गुण रासी ९५॥
दो० तबहिं प्रसन्न विदेह जू सहितनेह गुण गेह।
राम कुशल पूछत भए वरसि नयन घन मेह ९६॥
विश्वामित्र प्रताप कों राम चंद्र सों तब।
सतानन्द वरणतभए सो जाहिर सरवत्र ९७॥

चौपाई॥

तब नृप सुनि नृप सुतन्ह लिवाइ। गए यज्ञ मन्दिर हरषाइ॥ तहं मुनि लख्यो सभा को साज। कहत भारती पावत लाज॥ ९८॥ तोटक॥

सब देशन के नृप सोहत हैं। धनु शंकर को गुरु जोह-

त हैं ॥ भरि जोरन ताहि उठावतहैं। न उठै तबहीं फि-
रि आवत हैं ९९ ॥ सबके बलकों हरिचाप लसै। अंगुरी
भरिछू नहिं नेकुटसै ॥ जितने महिपाल गनेमहिमैं। समुझे
सब चित्त बली नहिं मैं १०० तहं बाण दशानन आवतभे।
लखि चापहि चाहि उठावतभे ॥ बिशिखासन नाहिं चलो
बलमें। जिमि शैल समीर महा बलमें १०१ ॥

दो० बाणगयो घरकोपितब रत्न गह्यौ कोदण्ड।
महा जोरकों करत श्रमभस्यौगिस्यो महिचण्ड १०२॥
पुनि संभ्रम ह्वै लाजगहि चल्यो लंककी ओर।
निरखि सबै कहिबे लगे है तारीकरि शोर १०३ ॥

कवित्त ॥

तृणसम समुझि सकल दिगपाल यमकालहूकों तुच्छ कै
करत निज मनकी। शंभुके पहारकों उठाय गरबायो अति
आयो धनु तोरिबे कों किये मतिपन को ॥ गिरिधरदास
भनै भागो जैसे चोरदेखो दबि बनकीओर अहै चेतहु नतन
को ॥ नाक सैन सागर मथन महा नाक आन काटी है
पिनाक दशो नाक दशानन को १०४ ॥

दो० इमि भूपन के कहत तितकौशिक आज्ञापाय।
उठिकटिकसि रघुरायजू तोस्यौ धनुषउठाय १०५॥

छप्पय ॥

मण्डल करत अखण्ड तेजमहि मण्डल पूरो। मनु रबि
आतुर फिस्यौ चक्रसम भ्रम भरिरूरो ॥ ब्याल बाल मिर-
नाल माल जिमि तोरिपवारै। तिमितोस्यौ हर चाप आप
रघुवर तेहि बारै ॥ परचण्ड शब्दमहिमण्डलखि रूप उदण्ड
आचरज महं। कोदण्डहोत दोउ खण्ड ब्रह्मण्ड हलो नव
खण्ड तहं १०६ ॥

सो० अतिहि मुदित मिथिलेश मुनि बर पद वन्दनकस्यौ।
लहि निजजनक निदेशसिय पियहियमाला दई १०७॥

दो० सुरन बजाई दुंदुभी झालर पटह निसान।
नाचन लागीं अप्सरा चढ़ि चढ़ि व्योमबिमान १०८ ॥

चौपाई॥

मंगलमहा जनकपुर छायो। नृप दशरथ ढिगदूत पठायों॥ सुनि सो समाचार कोशलपति। सभा समेतभये प्रमुदित अति १०९॥ गुरुपद बन्दि बूझि कुलबात। आसुहि चले सानि बरियात॥ संग बशिष्ट शिष्ट नृप इष्ट। भरत शत्रुहन गुणनि वरिष्ट ११०॥ गज रथ तुरंग विविधि छबिधारी। बाजन सकल बजैं रुचिकारी॥ नहिं बरियाति कांति कहि जाई। लखत नैन सुख कहत ठगाई १११॥

कवित्त॥

औधतें बरात आई जनक नगर नृप बगर लगाई खान पानन की सट्टियां। गिरधरदास अस ऐसी बाटहि सजाई जाके ठाट देखि लागैं देवपुर बाट घट्टियां॥ केवरा गुलाब चारि ओर छिरकाये चारु होत वार नारिन को नाच दोऊ पट्टियां। सोसनीही रोसनी कराई नैनतोसनी सुको सनलौं रोसन कै सोसन की टट्टियां १२॥

दो० जनकराय दशरथ मिले भयो परम आनन्द।
रामलषण पितु पदगह्यो धरणप्रतापअमन्द ११३॥
गौतम गाधि बिरंचि के सुतन कियो परणाम।
राम चरण बंदे भरत शत्रु दमन अभिराम ११४॥
सो० चारुज बन्धु उदार मिले परस्पर मोदि जिय।
उतरे भूप अगार सह बरात हरषात हिय ११५॥

चौपाई॥

प्रेम परस्पर कह्यौ न जाई। इतहि जनक उत दशरथ राई॥ चारुज बन्धु व्याहको साज। साजज कहत भये द्विजराज ११६॥ शोधि लगन मन मगन महो सुर। पाणि ग्रहणकी खबर करीतुर॥ सुतनसिंगारिमौर शिरराखि। चलेआसु आनन्द अभिलाखि ११७॥ तेहिक्षण तहां ब्याह के हेतु। जनक अनुज आये कुशकेतु॥ ताइ सबै राजे अभिराम। शोभित भयो जनक को धाम ११८॥

हरिगीतो छन्द ॥

मयोधाम शोभित जनक को मणि कनक को वरबनक जो। गत कांति होवै छणक में सुर पुर लखै तेहि तनक जो ॥ तोरण कलशधुजमाल भूषित अतिअदूषित राजतो। गावहिंसुहागिनि गीतमंगल विपुलबाजन बाजतो ११८॥ मंडप मनोहर महत जहंबेदी दुरित भेदीबनी। मनिचौक पूरो रुचिर पूरो परम भांति सुहावनी ॥ द्विज पढ़हिं वैदिक मंच आशीर्वाद बिबिधि प्रकार सों । सरदार भू भरतार मोहहिं समाचार कतारसों १२० ॥ सीता सनेह विदेह तवविदेहनै रघुबीरकों। यहमम सुता तुमलेउ कहि करसों दयो करनीर कों ॥ तेहि काल तहं अति मुदित चित सुमनस सुमन बरषतभये। नरनाग किन्नर विप्र मुनि हरि भक्त हिय हरषत भये १२१ ॥

दो० दई भूपसी भूरि भूप भूमि द्विरद मणि दाम।
याचक किये अयाच सबलखि मांवरि मैं राम १२२ ॥
भरत लषण रिपु दवन हूं होत भये सहदार।
सुत पौरन सह दशरथहि दई जनक जेवनार १२३ ॥

चौपाई ॥

बिबिध प्रकार किये पकवान। षट रस व्यंजन स्वाद महान ॥ तहं जेंवत कोशलपुर भूप। हरषत परसत जनक अनूप १२४ ॥ तेहि छण मिलि सब मैथिल नारी। रामचन्द्रकहं गावहिं गारी ॥ बाजत ढोल मृदंग मंजीरा। बनी बाम पुलकित दृग नीरा १२५ ॥

अडिल्ल ॥

राम चन्द्र पर ब्रह्म तुम्हैं गारी कहा। सुनियत बेदन बीच चरित तुमरे महा ॥ माया कों जनमाइ रमण तासों कियो। अब ताही के उदर जनम गुण मैं लियो १२६ ॥

दो० तुम अज दशरथ के भये कै अजके दशरथ।
मेटहु यह संदेह मम रामचन्द्र समरथ १२७ ॥

चरणा दोहा ॥

विश्वामित्र वशिष्ट वैरतें द्विज तपकरि भये क्षिप्र ।
तुम्हरे कुलगुरु बीरजदहो क्योंन कहावत विप्र १२८ ॥

दो० एककहै तुमने कियेा भलोकाम नरनाह ।
जोयह जनककुमारिसों अपनेा कियेाविवाह १२९ ॥

सो० हंसिबोली इकबामपरमइट्ठ दशरथ भये ।
या पन आये राम करामात जामातकी १३० ॥

छप्पय ॥

तुमरे पुरुषाभये भूप इक्ष्वाकुमहाबल । तिन शुभसाइत शोधि अवध बिरची नगरी भल ॥ ताको करिकै भोगआपु पुनि सुतकों दीनी । इमि क्रमसों दशरत्थ सोई नगरी कहं लीनी ॥ इक अचरज जाके पतिइते इहहोय तजिगे बननि । वहनई अजहूं तेहिकौनकी कहियनारि काकीजननि १३१ ॥

दो० एककहै मिथिलेश को भूलि न आयेउ राम ।
नातोराखेउ जनकको सुखहिं कह्यौ सतधाम १३२ ॥
कौशल्या के परमप्रिय जनक तुम्हारे राम ।
इनबिनु तलफतहोहिंगी क्योंतजि आयेधाम १३३ ॥
राम तुम्हारे जनक जग दशरथ गजहयवंत ।
सबदिगपालन के सरिस सब वसुधा के कन्त १३४ ॥

अडिल्ल ॥

पुरुषादक को बंशकहै अजको कोऊ । आरण्यक कोबंश सांच सुनियत सोऊ ॥ शंखनके कुलप्रकट आपु गुरुनेकही । असमंजस को बंश राम तुमरो सही १३५ ॥

दो० एककहै रघुरायजू जनकयोग दोउ बंधु ।
जाहि चहै जियसों सोऊ तासों होयसबंधु १३६ ॥
जाके पति तुमरेपिता सो तुवलागी कौन ।
ताकी तनया तुमवरी राम धर्मके भौन १३७ ॥
एककहै बैठे दोऊ कौशलेश मिथिलेश ।
कोइनमें सांचो जनक मेटऊ राम अंदेश १३८ ॥
राम अवधबासी सबै दशरथ सहित सनेह ।

जनकजनक जबकहत तबसकुचत समुझिबिदेह १३९॥
इककहइ कैकइको अहै सबसों सुहृत अपार।
भरतै जोजन्माइकै मानत अपुन कुमार १४० ॥

चरणा दोहा ॥

एककहै संदेह हरजुइक रघुकुलके अवतंस।
केवल खीरहिसों जनमेकैकछु राजकुको अंस १४१ ॥

चौपैया छन्द ॥

मख बाहर कढ़िकरि करसित चरुधरि देव नृपैदइ्यारी।
सुनियत तेहिलैकै भोजनकैकै गर्भवती भईंनारी ॥ कारेअरु गोरे जन्मे छोरे किमि यहभेव न जानौ। लागी परछाहीं कै यह नाहीं मेा निरधारि बखानौ १४२ ॥

दो० तुव नानीके पति भरत कैकयहै जगमाहिं।
तबहिंकैकई सरिसतिय अपरन्हपहि प्रियनाहिं १४३॥

च०दो० भरत मातकैकईकिये पतिदशरथ अग्रमहीप।
गीतिगई गनिकैसु चालिसों नारिइन्द कुलदीप १४४॥

दो० एककहै लच्छिमा जननि सुनी सुमित्राकान।
तिनको कौन सुमित्र है जासु गौर सन्तान १४५ ॥

चौपाई ॥

इमि गारी गावहिं पुर नारी। जेंवतनृपहि बढ़ो रस भारी ॥ उठिआचवन कियोनरनायक। बीरादियो जनक सबलायक १४६ ॥ दशरथ मैथिल मिले सुहाए। लखिसब जनकेनयन सिराए। मनहुं प्रेम अनुराग सिखत हैं। लखि लखि अचु भए दुतिहत हैं १४७ ॥ रामहिं बोलि सासु पग लागी। बड़भागीअतिही अनुरागी॥ राम तुमहिं दीन्हीयह दासी ॥ नित रहिहै अनुगत छायासी १४८ ॥ ऐसे कहत उमंगि दृगआए। गद गद कंठ बचनरस छाए ॥ सोहत सुन्दर दुलहा दुलही। बढ़ी दरश कीचाह अतुलही १४९॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

ही अतुल बाढ़ी चाह दंपति निरखि चारु भ्रातकों।
त्यागी न लह जामातु जेहि तेहिदै दई जामातुकों ॥ करि

बज्र निछावरि आरती आशिष अनेकन बिधि दई ॥ लै दाइजो मणि कनक गज हमि सो बरात बिदा भई १५० ॥ अवधेश पूजि विशेष जनक नरेश निज मन्दिर गये। लहि कै निदेश द्विजेश को निज देश नृप चलते भये॥ तेहिकाल कौशिक जात लखि महिपाल सिर पदपैं धरो। प्रभु तब कृपा यह दिवन मोहिं विरधापमैं आयों खरो १५१ ॥

दो० दै आशिष कौशिक गये अवध चले नर नाह।
अतिआंधी विपरीतितहं उठी व्योमतें राह १५२ ॥

सो० खग मृग भगहिं अमन्द व्याकुल वरियाती भये।
इतनेहिं मैं भृगुनन्द आइगये अति रिसिमये १५३ ॥

छप्पय ॥

धीरवन्त बरवीर हगन अति रौद्र बनाये। अदभुत द्विज जग ख्यात शंभु धनु करणा छाये ॥ करन समर वीभत्स परन कहं परम भयानक। सकल सूर सिंगार वचन बोलत जिमि आनक ॥ जिन हत्यो हैहयहि हास्यही दरशे दुति सरोस यम। लखि शान्त करन मुनिवर चले नौरस तन धर शान्त सम १५४ ॥

दो० दशरथ चारु सुत सहित जाय कियो परनाम।
सबैसभै देखहिं खरे कहा करैंगे राम १५५ ॥
सानुज रामहिं दशरथहिं दै अशीस भृगुनन्द।
करि परणाम वशिष्ठकों बोले वचनअमन्द १५६ ॥

कवित्त ॥

कौन नृप नीचने जनक पुर बीच कियो कुतसित कर्म ऐसो धारिकै निडरता। तोर्‌यो सो पिनाक जाहि पूजैं नाकपाल आदि राख्यों बज्रकाल सों विदेह भूमि भरता गिरधरदास भये सज्ञ हू सभाके अज्ञ काहू नाहिं वार्‌यो वेग धारिकै सुघरता। जानै गरधर को परशुमै भिजाये आज ताके गरधरको परशु भिन्न करता १५७ ॥

दो० सुनि हंसि बोले रामजू नहिंमैं तोर्‌यो नाथ।
परम पुरानो आपुही टूट्यो छुवतहि हाथ १५८ ॥

चौपाई ॥

तब अति कोपि कहत भृगुनायक। कैसेा कहत वचन चलिलायक ॥ करि अपराध बनत है साधु। परन चहति तेा शीस उपाधु १५८ ॥ सेा सुनि भरत कहत मुसुकाई। बिप्रहि सुनिये क्षमा बड़ाई ॥ टूट्यौ धनुष सहाय दृथा-सुनि। जाऊ भवन भवितव्य प्रबल गुनि १६० ॥ सेा सुनि महा रोसमै भरे। बेाले रामलाल दृगकरे ॥ यहअति ढीठ निदरिमेाहि बेाले। नहिं निजमहं अपनेकहं तेाले १६१ ॥ आजु काटिशिर भूमिगिरावेां। बालक बूझि न चित्त बलावेां ॥ तू हठिकर सनसुख अपराधी। तेहिवाधिजाउं काज निजसाधी १६२ ॥

दे० सुनिबहेारि बेाले भरत अपराधी हम सर्ब।
बूझिपरै जेा तुमहिं तेहि बधऊ बिप्रगहि गर्ब १६३ ॥

चौपाई ॥

लषण कहत सुनि सांच सिपाही। देखियतधनुष बाणकर नाही। तातें कहहिं बीरसी बानी। उचित बेषसेां चहिय यक हानी १६४ ॥ तब शचुघ्न कहत मे कैसे। जेां मुनिसूर जटा शिर कैसे ॥ सब सिंगार तापस केा अहै। रण हित धनुष बाणकर रहै १६५ ॥ कैसउ भेष करे द्विज रहैं। सब बधि पूजनीय मम अहैं ॥ तब रघुनाथ कह्यौ शिरनाई। जानत हम सगरी प्रभुताई १६६ ॥ बालक हेाय बिगारै काज। ता पर चहिय दयाद्विज राज ॥ सेा तुम अपनी ओर निहारि। जैये निज गृह ओर सिधारि १६७ ॥

दे० तब सकोप भृगुपति कह्यौ तुमसब एक समान।
कहत बचन जनुतुच्छ सेां है निपटहि अज्ञान १६८ ॥
इकइस बार निछत्र करि दई बिप्रकहं भूमि।
सेाइ ममप्रण तुमरे करत आवनचाहत घूमि १६९ ॥

सेा० इमिकहि परशु उठाय चलतभये भार्गव कुंअर।
लखि दशरथ शिरनाइ करीबिनयबद्धजेारिकर १७० ॥

चौपाई ॥

बोले राम भूपलखि तोहि। कछुक दया उर आवति मोहि ॥ सुनिपुचन के वचनकठोर। मारन चहत परशुनि-अघोर १७१ ॥ तब लछमण बोले यहबात। का गुनि सुनि मारत रहि जात ॥ जौं ऐसिहि ते जीरण रही। इकइस बार जीति किमि लही १७२ ॥ कितो बनाउ करौ मम पाहीं। बिन चची छबीछन नाहीं ॥ हेरि फेरि आवति दुजताई। वचन वज्र करनी रिजुताई १७३ ॥ तातें क्यौं कहि कोप बढ़ावो। मरत पाय हम भाम सिधावो॥ तुम-छंइ तोकहि परशु उठाय। गुरुसोंउरण भयेहिजराय १७४ ॥

दो० सो सुनितहं अति कोप बसबज्रहि सुधारि कुठार।
बोले प्रज्वलितअग्निसे बरयमदग्निकुमार १७५ ॥

सवैया ॥

आजुहि औधि उलट्टि सबै दशरत्थ के राजु बसाइ कै भूतन। रामहिं नाशिकै बन्धुन के सह सौंपि अबै जनकै जमदूतन ॥ बाइसईं बिरियां बसुधाकहं बिप्रनदेहौं निछ-अकैदूतन। मेटिकला मजबूतन की छणमें मिलवौं रज में रजपूतन १७६ ॥

दो० सुनि बशिष्ठ बोलत भये बरजि बालकन बैन।
छमा करहु नृप शिशुन पर बिप्र छमाके ऐन १७७॥

सो० कह भृगु सुत तुम नाथ पूजनीय सब विधि अहो।
सो करिहौं धरिमाथ जो मोकहं आयसुकहो १७८॥

चौपाई ॥

हैं यह कुटिल भूप के छोरे। करि अघ बचन कहहिं बिष बोरे ॥ तातें लखि कुठार की ओरै। अस मन होत सबन शिर तोरै १७९ ॥ शत्रु दमन बोले अति कोही। जौं रिसि होति कुठारहिं जोही ॥ तौन दोष कछु अहै तुम्हारो। परशुदोषते कटुकउचारो १८० ॥ तौ अस कुटिल कुठारहि बिप्र। दूरि करहु कलंक धरत्रिप्र ॥ सुनि सुनि कहा परशु यह सोई। सहस बाहु भुज छेदक जोई १८१॥

यातें अखिल भूमिपति मारे। सेा आयो शठ पासतिहारे। करि अब रुधिर पान तवगरको॥ देाइहि लप्त वैर लै हर को १८२॥ तब हंसि राम राम दिशि हेरे। कहत विप्र मोहि जानउ चेरे॥ लखी सम अब वचन बखानत। तब कछु कोप भूप सुत आनत १८३॥

दो० लघु धनु तोरन देाषतें उचित न ऐसेा रोस।
नहीं कलकारी चोरको प्राणलेहिं बुधिकोस१८४॥
परशुराम कह हर धनुहिं लघु धनुकहत कुमार।
तौ यह हरि धनु लेउ तेा जानउं सूर अपार१८५॥

सेा० सुनि प्रभु लीनो चाप डोरी ऐंची शरधरे।
सुनिलखि अतुलप्रताप विष्णु जानि चरणनपरे१८६॥

वसुकला॥

पुनि परशुराम। वर बुद्धिधाम॥ कर जोरि बैन। बोले सचैन १८७॥

भुजंगप्रयात॥

रमा वल्लभं राघवं जानकीशं। कृपालुं दयासागरं भूपतीशं॥ प्रभुं पंकजाक्षं परेशं गुणज्ञं। भजेवेदवेद्यं शुभंदिव्यसज्ञं १८८॥ मुकुंदं मनोज्ञं महांतं सुरेशं। अयोध्येशकाकुत्स्थमीशं परेशं॥ सदाभक्तभावैक गम्यं नरेन्द्रं। गुणागाररूपं भजे कौशलेन्द्रं॥ १८९॥ प्रभुं सच्चिदानंदरूपं खरारिं। शुभंमंगलंशेाभनं राव णारिं॥ सुमित्रात्म जानंददातार मीशं। भजे मैथिलेशा- र्चितं मैथिलीशं १९०॥ चिनेचार्चितं लोक पूज्यंमहांतं। चिलोकेश्वरंचारुवैकुंठकांतं॥ सदा चाप हस्तं मनोज्ञाभि- रामं। नमामीश पूज्यंपरंलोकरामं १९१॥ वरेक्ष्वाकु वंशेा- द्भवंकीशमिचं। भजे भार्गवंघ्रिंशं पवित्रं॥ शुभं सूर्यवंशीय मानंद रूपं। भजे बाण पाणिं प्रभुं लोक भूपं १९२॥ अहल्या चितांघ्रिं सुरेशं रमेशं। सदा नंदरूपं गुरुंरा घ- वेशं॥ मुनींद्रा र्चितंगोपतिं युद्धधीरं। भजे भाग्यवंतं विभुं रामवीरं १९३॥ कविं कुंभकर्णांतकं कौशिकेशं। हरिंदूष- णारिं मुरारिं धरेशं॥ कवंधांतकं केशवं कंजनाभं। भवं

योगिबंधुं भजे भास्कराभं १९३ ॥ सरोजे चणं माधवं विश्व-केतुं। अयोध्या धिपं प्रज्ञपन्नींद्रकेतुं ॥ महानन्द मूर्त्तिं विभुं वीत तंद्रं। भजे जानकी जीवनं रामचंद्रं ॥ १९५ ॥
दो० इमि अस्तुति करि राम पद बंदिगए भृगुराम।
मुदित उदित रविसेन्हपति आएसुतसह धाम१९६ ॥

चौपाई ॥

बाजतमंगल बाजननाना। घरघर सुन्दरतने बिनाना। गावहिं गीत सकल पुर नारी। आए ब्याहि राम ब्रत-धारी १९७ ॥ कौशिल्यादि मुदित न्हपरानी। करहिं आरती अति हरषानी ॥ कीनी बहु रमासी चारू। नेवछावरि करि मणि धनहारू १९८ ॥ दिये याचकन नरपति दान। रथहय तुरग भूमिमनमान ॥ अति आनन्द भयो पुरमांह। सुतन ब्याहि आए नर नांह १९९ ॥
दो० भरत शत्रुहन संग लै गए युधाजित धाम।
रहेभूप दशरथ सदन प्रमुदित लछिमनराम २०० ॥
भीता सीता रमण दोउ रमण करैं रस पूरि।
शोक शमन न्हप भमन मैं भरे भाग सों भूरि २०१ ॥

बरवै ॥

एक समय न्हप दशरथ कीन बिचार। देउ राज रघु-नाथहिं सुखद अपार २०२ ॥ गुरुतें अरु पुरजनतें पूछेउ भूप। सबन कह्यो यह कारज जग सुख रूप २०३ ॥ तबनर राज सुमंतहि दिएउ निदेश। रामराज के काजहिं साज-उदेश २०४ ॥ सुनत सूत अति आतुर चतुरसुजान। साजे नगर सबहि दिशि कलश बितान २०५ ॥ सुनत खबर कौशल्या हरषित चित्त। दीनो बहुत द्विजन कहं उत्तम बित्त २०६ ॥ राम बोलाए दशरथ आए आपु। निरखि पत यज्ञ पूतहि प्रमुदित बापु २०७ ॥ करि प्रणाम कहं बैठे आज्ञ पाइ। राज छोड़ कल तुम कहं कछ नराइ २०८ ॥ कुश आसन फल भोजन सुनि ब्रत इष्ट। इक दिन पछिले ऋषिसों कही बशिष्ट २०९ ॥ सुनि रघुबर सुनि न्हप सों गत

सुख दुख । चलतभए चढ़ि स्यन्दन फल भोजन सुख २१० ॥
जोबिधि बिधि सुत बरणो ताबिधि राम । सैनकरी निज
मंदिर आनन्द धाम ॥ २११ ॥
दो० भरत मात की इक जनी रही मंथरा नाम ।
अवण सुनो यह कालही राजपाय हैं राम २१२ ॥
चौपाई ॥
भरतमातके ढिग चलिगई । रोय उच्चबोलति योंभई ॥
नृप छल तुम न सुना यहरानी । रामहिं सब सौंपत रज-
धानी २१३ ॥ जो ह्वैहैं नृप यह धनुधारी । तौ तुमरो सुत
सहहै खारी ॥ सुनि कैकईप्रथम रिसिआनी । बिधिप्रेरित
पुनि तामति मानी २१४ ॥ पूरबके बर दैसो लैनो । प्रथम
तच रामहिं बन दैनो ॥ दूजे बरमैं सह सब साज । तबलौं
होइ भरत कहं राज २१५ ॥
दो० यह निश्चै करि कैकेई जल युत करि निज नैन ।
सजिकुचैल तजिआभरण कियोकोप गृहशैन २१६ ॥
चौपाई ॥
मन्दिर मधिआयेनर राई । सूनेसदन ताहि सुनिपाई ॥
कछुकविचारिगये चलितहां पुछमीपरीकैकईजहां २१७॥
पूछेउ कारणहोइ मलीन । बचनबांधिभूपहि कहिदीन ॥
बज्र सरिस सो बर तेहि बार । नृप गिरि उरहि भेदिगो
पार २१८ ॥ ब्याकुलभूमिगिरेउ नृपकैसे । परकेकटे पुछमि
धरजैसे ॥ समुझाई तिय भांतिअनेक । मोनिज हटतें हटी
न नेक २१९ ॥ नृपके बिलपत अति दुख दाई । काल राति
सो राति सिराई ॥ भोर द्वार बन्दीजन आये । गुरु वशिष्ट
नृप सचिव बुलाये २२० ॥
चरण दोहा ॥
राम राज को साज सजो सब राजा उठ्यौ न आज ।
जाइ जगावहु भाषि सुमंतहि पठयोदुज शिरताज २२१ ॥
मध्या छन्द ॥
देख्योनृप आई । सोयोधरणि जाई ॥ सांसैअति भारी । सो

सोइ नारी २२२ ॥ पूछ्यो दुखकैसे। सोयो नृप ऐसे ॥ भाष्यो सब रानी। हैते छलसानी २२३ ॥ जाओ तुमसाथै। लाओ रघुनाथै॥ ऐसे सुनिधायो। रामै तहँ लायो २२४ ॥ देख्यो पितु जाई। सोयेरघुराई ॥ माता सुखबानी। सीता बरमानी २२५ ॥

दो० पितु पद बंदि आनन्द सों गये कौशला धाम।
मोहिबिपिनदीनोनृपति तुमझंकहौकहंराम २२६ ॥

रामा छन्द ॥

तब रानी। सुनिबानी ॥ दुखसानी। बिल खानी २२७ ॥

कामा छन्द ॥

सोई। जोई ॥ कौले। बोले २२८ ॥

ताली छन्द ॥

क्यों ऐसी। तू वैसी ॥ भैनाहीं। यामाहीं २२९ ॥

तिन्ना छन्द ॥

भाषीतातें। जोईबातें ॥ सोईनीकी। ह्वैहैजीकी २३० ॥

सम्योक्ता छन्द ॥

राजा जो भाख्यो। सोईही राख्यो ॥ यों पुत्र जानी। सोई सो रानी २३१ ॥

शेप्रा छन्द ॥

बन्है जाओ नाहीं। राजो धामैं माहीं ॥ जैसे राजा ज्ञाता। तैसोहोंहूं माता २३२ ॥

शिप्य छन्द ॥

माता तेरी बानी सों। नाआऊं सोचो जीसों ॥ पै या मैं ह्वैहै पापै। तातें हौं मानो बापै ॥ २३३ ॥

विद्युन्माला छन्द ॥

सीता स्वामी भावी जोई। कौशल्या ने मानी सोई ॥ बोली यों आरण्यै जैयै। राजा की बानीही लैयै २३४ ॥

रूप माली छन्द ॥

सीता बोली प्यारे सों बानी। जैहौं हौं हूं साथै हे ज्ञानी ॥ स्वामी मैं नौं गुननैना कोऊ। ऊनारी कों पूजा जोगै तोऊ २३५ ॥

दो० सासुआई बड़ भांति प्रभु सीता तज्यो न साथ।
तैसेइ संग लागे लषण बरज्यो बड़ रघुनाथ २३६॥
सो० दैद्विज गणको दान राम अनुज सीता सहित।
आये नृप अस्थान बिदाहोन बन जानकीं २३७॥

चौपाई॥

रघुबर विपिन जात लखिरानी। बिनकैकई सकल बिलखानी॥ पुरजन भरेभूरिदुख मनमें॥ हाहाकार करहिंतेहि छणमें २३८॥ कुशकेचीर कैकईदीने। तेरघुनाथ लषणकर लीने॥ करि बन साजसबै रघुराई। जननि जनक पदशीश नवाई २३९॥ मांगिबिदाहि चलेवनराहू। भयोशोर धिक धिक नरनाहू॥ धिक तोहि पुरजन सुख मूल बधिक। रे कैकई कुचालिनि अधिक २४०॥ इमि सब कहत महत दुखपूरे। चले राम संग पुरजन कूरे॥ गुरु के काहे सचिव रथल्याई। सियसह बैठारे दोउभाई २४१॥

दो० सबन सहित रघुबर रथीउतरे तमसा तीर।
तहंनिशि बसिबनदिशिगयेत्यागि जननकीभीर २४२॥

सो० उठेनगर जन प्रातनहिंनिरखे दोउ भ्रातनहं।
नर नारी बिलखात फिरिआयेसो अवधमहं २४३॥

चौपाई॥

श्रृङ्गिबेरपुर पहुंचे राम। निरखीगंग सहा अभिराम॥ लषण सहित कीनेा परणाम। आइ मिल्यो निषाद गुण धाम २४४॥ जातिबंधु सहभेंटहि दीन। मिले आपु रघुनाथ प्रवीन॥ तहां कुशासनपै गुणऐन। सियसमेत निशि कीनी शैन २४५॥ सूतहिफेर्‍यौ बड़ ससुआइ। गंगापार गये चढ़िनाइ॥ तहं सिय लषण निषाद समेतु। रहेरात इक रघुकुलकेतु २४६॥ भाइबहोरि प्रयाग निहारेा। सब भुवतीरथ पालमहारेा॥ दरशत दशशत आनंददेनी। पाप हरणि सुख करनि त्रिवेनी २४७॥

दो० गंगा यमुना मिलि महाशेाभा देहिंअमन्द।
नाशहेाहिं अघटन्दजहं परम प्रकाश अनन्द २४८॥

कवित्त ॥

भागीरथी भारती विराजैं भानु सुता संग लखत तरङ्ग लेखनारहै कलेशको । सुरभूमि सुरतीन पुरके तहांहिं जन जाके रहिबेसों भूमिभार घट्योशेषको ॥ गिरिधरदासनाम जपत अनन्दहोत दुरत अमन्ददोष जंबूद्वीपदेशको । पुण्यको शरीर नीरपरखो समीर पापधीरहगभीरतीर तीरतीरथेशको २४९ ॥ सवैया॥

किधों जुरेसावन कातिक मेघ किहीरक नीलमणी की कतारु । कि सान्निगराम हैं सुक्लनमाहिं कि हंसन द्वन्द्व यूर विचारु ॥ कसै सुरपादप संगत माल यही गिरधारन ध्यान सचारु । रमापति शंभुमिले दोउ कैधौं मिली यमुना अरु गंगकीधारु २५० ॥

दो० करिप्रणाम मज्जनकियो बरणत तासु प्रभाव ।
मुनिवरके आश्रमगये चितपद्द चितवन चाव २५१ ॥

सो० भरद्वाज पदबंदि राम लषण सीतासहित ।
अज्ञापाद्द अनन्दि चित्रकूटकी दिशिगये २५२॥

दो० जाइलखी यमकन्यका यमुना श्यामस्वरूप ।
मनुहरिहित शृंगार रस जलद्वै बह्योअनूप २५३ ॥

चौपाई ॥

चारुदारु बेरोरचिराम । उतरिगये यमुना अभिराम ॥ चित्रकूट गिरिपञ्चे जाइ । भेटेबालमीकि मुनिराइ २५४ ॥ लक्ष्मनरुचिर बनाईकुटी । जामैंपंक्ति परनकीजुटी ॥ मंदाकिनी निकट छविछाए । बसेराम सियसहित सुहाए२५५ ॥

कवित्त ॥

मंदाकिनि लसी अतिउज्जलता वसीजामैं मनौमघवान मोतीमाल गिरीटूटके । विटप सकल फलफूलनसों भरेहरे सतयुग के गृहस्थबसैं किधौं जूटके ॥ गिरि धरदास मेरे जानया महीधर नें राखो विधि शोभा लोक तीनिहूं की लूटके । मिचसे चरिचमिच सुखद पविचकरैं विहंग विचिच चिचचिच कूटकूटके २५६ ॥

दो० मुनिगणमें मुनिवेषवर मुनिसे निबसहिंराम ।
तहंके पशुपक्षी सबैप्रभुहि लखैं सबयाम २५७ ॥

कुण्डलिया ॥

पतिनिषाद को जबफिर्यो रामहिं तहंपहुंचाइ । लख्यो सुमंतहि गंगतट पुरपठयो समुझाइ ॥ पुरपठयो समुझाइ जाइ सो नृपहि कहीसब । सुनिरघुबर बनगवन गवनन्हप कियेसुर पुरतब ॥ माच्यो हाहाकारन दुखकहि जाततौन अति । नृपतनरखि मधितेल बुलायो भरतविप्रपति २५७ ॥

दो० तहं कुसप्रन देख्यो भरत दूतगये तेहिकाल ।
मातामहसों ह्वै विदा आएनगर विशाल २५८ ॥
देख्योपुर आरण्य सममंगल साजविहीन ।
खगम्हगसब नरनारिसहदिखियत छीनमलीन२६०॥

चौपाई ॥

करत विचार सोचतें छाए । तुरतकैकई मंदिर आए ॥ दशरथ मरन राम बनवास । सुनत भरत भये अतिहि उदास १६१ ॥ बहुविधि दूषिदई धिक्कारी । गेचलि जहां राम महतारी ॥ परेचरण जननी उरलाए । अंक उभैबा-लक बैठाए २६२ ॥ मानहुं फिरि बनतें हरिआए । हमि गुनिहग जलसों नहवाए ॥ सहगलानि गुनिनिज अपराध । बोले भरत जोरि करसाधु २६३ ॥

छप्पय ॥

हेमहरण दुज वधनगनक जननी सिरछेदन । गोवध गुरु तियगवन विप्रसुर मंदिर भेदन ॥ अग्निदान गरदान घात विश्वास पिसुन पन । छतघ्न साक्षी कूट सुरापी बन पल भोजन ॥ इन आदिपाप उपपापजेते सब मोकहंहोहिं सति । परलोक कदापिन पुण्यजौं रामगए बन मोरिमति २६४ ॥

चौपाई ॥

सुनि निरछल गुनि बोली रानी । तुम सुत जनि जिय गहहु गलानी ॥ भावी प्रबल हमारो पाप । करहु जनक करनी तजिताप २६५ ॥ तबहिं भरत गुरुआयसु लीन्हो ।

विधिवत क्रिया भूपकी कीन्ही। जनकहि जोइ मृतकअति रोए॥ हमहिं पठाय आय इतसोए २६६॥ इमि बहुविलपत भूप कुमारू। करि सबकृत्य सुद्ध भये चारू॥ सानुज बैठेकरत विचारू। आवत लखी कूबरीद्वारू २६७॥

दो० करि सिंगार नख सिखनि सब कूबरपीठ अछोट।
मनहुंधरी विधि बांधिकै खोटपने की मोट २६८॥

सवैया॥

लखिकै रिपु दौन अमौन तहां गहिके सहि हाथ झटै झटको। पदमारि सजोर अघोर बलीपटकी महिरक्त कढ़ो टटको॥ गिरधारन देखिदशा अपनी फलसम्मति कोहियरे खटको। सटको मदकूबर टूटि गयो मनुफूटि गयो अघको मटको २६९॥

दो० करि विचार सानुज भरत संगपुरजन गुरुमातु॥
चले मनावन रामको त्यागिराज अवदात २७०॥

रोलाछन्द॥

सदल आये गंगतट गुहमिल्यो भेटलिवाइ। जहां सोये रामसेा थल लखि रहे सुर आइ॥ उतरि सुरसरि तीर्थपति गये जहां भारद्वाज। शुद्धमन मुनिभरत गुणि जेवनार दीन समाज २७१॥ रहे जेते भरत संग नरनारि खगमृग जाति। सबन कहुं संतुष्ट कीनेा असनदै बहुभांति॥ रच्यो राज समाज सह नृप सुवन को गृहचारू। रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि ठाढ़ीं जोरि कर मुनिद्वारू २७२॥

इन्द्रबज्रा छन्द॥

लैके विदा बंधु समेत आये। सैनासजे चित्र पहार आये॥ सेा दूरसें लक्ष्मण सैन देखी। बोले भरे कोपन शत्रु लेखी २३॥

सवैया॥

आवत संग लिये चतुरङ्ग उमंगतें सानुजबैठिकै रथहिं चाहतेहो अनरत्थमहा अपने बसजानि पिता दशरथहिं॥ हैं लखलक्षनि कहैं सुनियो सब उद्यम दुष्टको हैत विर-

त्यहिं। राम सपत्य करौंधनुहत्यलै भेजत प्रेतके पत्य भरत्यहिं २७४॥
दो० भरत पियादे आइतब परे रामके पाय।
प्रेम सहित रघुवंशमणि अनुजलियेा छरलाय २७५॥
चौपाई॥
कहि न जाति भाइन की प्रीति। धन्य कहहिं सुनि गण लखि रीति॥ गुरुपदबंदि मातुपद बंदे। पुरजन राम देखि आनंदे २७६॥ जनक मरण सुनि अति पछिताने। नदी न्हाइ जल दीन सयाने॥ बैठे बशुरि आइ रघुराई। गुरु समेत सन्मुख सब भाई २७७॥ तेहि छण भरत कह्यौ करजोरि। चलिये राम विनय सुनिमोरि॥ छमिय कैकई केा अपराधु। दुष्ट दोष देखहिं नहिं साधु २७८॥ सुनि रघुनाथ कहत गत रोष। तात जननि कहं देउ न दोष॥ विधिनै लिखी करम मैं जोइ। कोटि यतन कीजै सेाइ होइ २७९॥ तातें पिता वचन परिमान। हम आये बन सुनहु सुजान॥ राज करहु तुम चौदह वर्ष। यामें कछुक नहीं दुख हर्ष २८०॥ सुनि परिपांइ भरत कह ऐसे। गिरि शिर धरै बालखग कैसे॥ नाय जनक तिय बस परि कहेा। करियै प्रथम विचार जु रहेा २८१॥ इहि विधि भरतअनुज सहबरनी। समुझायो पुनि दशरथ घरनी॥ गुरु बशुनीति रीति परकाशी। चलियै पुरहिं कह्यौ पुरबासी २८२॥
दो० दृढ़व्रत राम नहीं सुनी समुझायो परवीन।
देखि अनुजगति पादुकहि राजकाजहितदीन२८३॥
से० लैतेहि सिरपधराइ सुनिकेामेष बनाइकै।
नंदिग्राममहं आइरहे राजरखि पादुकहि २८४॥
मौक्तिकदाम छन्द॥
उहां रघुनाथ महा अभिराम। गयेसुनि अचिबसैं जेहि ठाम॥ प्रणामकियो ऋषि दीन्हिअशीष। जियोसुत भूतल कोटिबरीश २८५॥ सिया सुनि नारिहि बंदिसबैन। लही

बर आशिष आनन्द ऐन ॥ रमेशहि पूजतभे मुनिराइ। चले तहंसों पुनि आयसुपाइ २८६ ॥ मिल्यो मग मैं इक दुष्ट विराधु। हत्यो तेहि राघव जानि असाधु ॥ मिले सरभंग महा अनुरागी। हृदय धरिध्यान दह्यौतन आगी २८७ ॥ महामुनि की गति यों लखि राम। चले मन मोदि महा बलधाम ॥ मरेमुनि अस्थिन देखि प्रवीन। हतों सबरचण यों प्रणकीन २८८ ॥ गये पुनि आपु सुतीक्षण धाम। कियो मुनिने उठि दण्डप्रणाम ॥ मिले मुनिमें बरबुद्धि निवास। गये तिनकेसंग कुम्भजपास २८९ ॥ अगस्त सुन्यो इत आवत राम। उठेमंग विप्रनलै अभिराम ॥ गयेजहं राम रहेछबि छाय। द्विजैलखि रामपरेबढ़िपाय २९० ॥ लियो उरलाइ मुनीशप्रवीन। घनेबनके फलभोजनदीन ॥ दयो पुनिरामहिं केशव चाप। कथाकहिकै धनुकी सब आप २९१ निशाचर मारणकों धनुएज्ञ। सिया बरजू अपने करलेज्ञ ॥ प्ररे मुनि पायधरे धनु हाथ। गये पुनि पंचवटी रघुनाथ २९२ ॥

दो० तहंजटायु दशरथ सखा तिनसों भयो मिलाप।
परनकुटी रचिकैरहे लषण सियासह आप २९३ ॥
तहंभगिनी दशशीश की सूपनखा विकराल।
आइकह्यौ रघुनाथसों व्याहकरौ ममहाल २९४ ॥

चौपाई ॥

मोहि तिय अहै कह्यौ नरनाह। कहज्ञ लषण सों करें विवाह ॥ सुनि सो गई तहां भरि चाह। लक्ष्मण कहत नीतिगहि राह २९५ ॥ दासीहोइ दास संगब्याहि। तातें भजु रामहिं दुखदाहि ॥ सुनिसो सिय भक्षण जियआनी। गई रामदिशि क्रमरच सानी २९६ ॥

सो० सैनकह्यौ भगवान लषण बोलाई पासतब।
काटेउकाढ़िकृपाण कानननाकगिरिशिखरसम २९७ ॥

मल्लिकछन्द ॥

भैरछ भई कराल ॥ राचसी महा विशाल ॥ सो खरै समस्तगात। रोषकै कही उदात २९८ ॥ कोप पूरिनैरितेश।

सैनको दियोनिदेश। आजुही मनायसाज। भोचलत युद्ध काज२९९॥ रामबंधुकों बुझाइ।कंदरा दियोपठाइ। जानकी समेतजाइ। सोतहां रहेसचाइ ३००॥ लंकबांधिकै प्रवीन। राम चाप सज्ज कीन॥ राक्षसोंश सैनझट्ट। आवती भई प्रगट्ट ३०१॥

दो० खर दूषन चिशिरा जिये सहस चतुरदश वीर।
तामें चौदह प्रथमहीं हने मारिकै तीर ३०२॥

मारदूलविक्रीड़ित छन्द॥

मार्यौ दूषनकौं प्रचण्ड हरसों सोआसुही भूपरो। त्यों मार्यौ चिशिराहि तीनशरलै सोऊ तुरतैमरो॥ ऐसेमारि समस्तशत्रुपलमें लैवज्रऐसेसरै। कीनेप्राणविना महानरिसि लैनैरित्यखामोखरै ३०३॥ बाजीव्योमहिं दुंदुभीनिरखिसो भाईनिलेआइकै। दौरीसूपनखाकही दशमुखैबातैं सबै जाइकै॥ सीतालोखित चेतकाल बसहै मारीचपैं सो गयो। रामै तू छलु मैं हरौं जनकजा सांचे विचारै ठयो ३०४॥

दो० समुझायो मारीच तेहि नहिं मान्यो बसकाल।
तबकञ्चन मृगहोय सोगयो जहां नरपाल ३०५॥

वसन्ततिलका॥

सीता निहारि मृगकों मनमें लुभानी। लागीहमें बनचरै अबदेहु आनी॥ सोजानि आपु तितबंधुहि सौंपिजानी। धाये कुरङ्गसंगहै शरचापपानी३०६॥ मारीच दूरलखि आरतयों पुकार्यौ। हेबंधु हेलषणमैं अबजात मार्यौ॥ यौंटेरि राम शरसोंभिदि प्राणत्यागो। धार्यौ शरीर अपनो जब बाण लागो ३०७॥ सीतासुनी अतिहि संशय चित्त छायो। नारी सुभाव झट देवर कों पठायो॥ केती कही लषण पैं नहिं चित्त आई। श्रीराम पैं चलत भे तब राम भाई ३०८॥

दो० इत रावण द्विजरूप धरि सियपैं आतुरआइ।
कहोदेहु मोहिं भीखतुमतियलंपट छलछाइ ३०९॥

चौपाई॥

बातबात निजनाम बताइ। चलोतुरत खलरथचढ़ाइ॥

रेवतिसीय कछूनबसाई। सुनिमहाय आय खगराई ३१०॥
निजबल खरि रथतोरि महाबल। काटे भुज शिर सहित
तिहीथल॥ काढ़ि खड्ग रावण बलछायो। पक्षतुण्डहरि
भूमिगिरायो ३११॥ ताहिजीति सीतहिलै धायो। ऋष्य-
मूकगिरि ऊपर आयो॥ तहं कपिदेखि बसन सिय डारे।
केह्यौरोय हानाथ हमारे ३१२॥
दो० लंकाबिपिन अशोकमैं राखी सीताजाई।
धर्मनत्यागेउ जानकी दुष्टयह्यौ समुझाई ३१३॥

चौपाई॥

मिले राम लक्ष्मणसों जबहीं। सियत्यागी किमि पूछेउ
तबहीं॥ लक्ष्मण कही कथा गुणऐन। कहे सिया जो अनु-
चितबैन ३१४॥ तबरघुबर निजकुटी निहारी। सियारहित
अतिही दुखकारी॥ परम विलाप कियो रघुराई। खोजत
बन कित मैथिलजाई ३१५॥ नरलीला अतिही दर्साई। बहु
प्रकार समुझायो भाई॥ आगेजाइ जटायु निहारो। परो
अल्पअसुनिशचिर मारो ३१६॥ तिन सबकथाकही मति-
मान। तजि तनगयो विष्णु अस्थान॥ तासुक्रिया करि सहित
विधान। चलेसियहि खोजत भगवान ३१७॥ मगनिशिचरी
दरी महं जोही। काटीनाक शक्रजित द्रोही॥ पुनिकबन्ध
देखेउ अति भारी। काटेउ ताभुज खड्ग निकारी ३१८॥
पूरबरह्यौतौन गन्धर्व। आपुनि कथा कही तिनसर्ब॥ निज
स्वरूपधरिकरिपरणाम। कपिपतिकहं बताइ गो धाम ३१९॥
बहुरि चले रघुबर छबिछाये। शबरीके आश्रमप्रभु आये॥
ताके फल भोजन करि राम। दीनीगति सुनि सम अभि
राम ३२०॥ सो मतंग को शिष्य अनूप। राम परसि भइ
ब्रह्मस्वरूप॥ तहं सोंहरि पंपासरआये। लखि तेहि शोक
मये सुरझाये ३२१॥
दो० अतिबिलाप करते भये सीताहित रघुनाथ।
हा मृगलोचनि सुन्दरी कितहिंगई तजिसाथ ३२२॥

उपेंद्रबज्रा छन्द ॥

निहारि सुग्रीव पहाड़पैतें। हनूमतै दीन्ह पठाइ भैतें ॥ बनाइकै विप्रस्वरूप रूरो। गयो नपै पूछन बुद्धिपूरो ३२३॥ नरेशहोकै अमरेश कोऊ। फिरैबनै क्यों मुनिरूप दोऊ ॥ कह्यौ तबै राम कथा अपानी। पस्यो पढ़ै कोश रमेश जानी ३२४॥ बहोरि सुग्रीव कथा सुनाई। गयेतहां राम समेत भाई ॥ सुरेशको पुत्र निहारि रामैं। उठ्योधरे प्रेम कह्यौ प्रणामैं ३२५ ॥

इन्द्रबज्रा छन्द ॥

भेंटे दोऊ जोरि सुमित्रताई। साखीकरी पावक मध्य नाई ॥ सीताकथा राम तिन्हैसुनाई। बाली कथा बानर राजगाई ३२६ ॥ डारे सिया भूषण चीरजोई। रामैं दियो लाइ सुकंठ सोई ॥ भाष्यो कथा या बिधि ताहि पायो। सोचाहिकै राम गरे लगायो ३२७ ॥ बाली बधैं यों प्रण राम कीनो। चाल्यो लरै मित्र निदेश दीनो ॥ सन्देश पूर कपिराज भाई। भारीकथा दुंदुभि की सुनाई ३२८ ॥

दो० अतिबल बालिहितौ बधऊ जौंबेधऊ यहसाल।
सुनि प्रभु भेदे सातऊ इकशरसों तेहिकाल ३२९ ॥

चौपाई ॥

तब प्रतीत कपिपति कहं आई। किसकिंधा गयो संग रघुराई ॥ राम रहेठाढ़े तरुओट। टेस्यौ बंधुहि कपिपति छोट ३३० ॥ सुनि गर्जना चल्यो बलवाना। तारा बरजत कहानहिंमाना ॥ आइ युद्धकरि कछुक अचूको। अनुजहि हनो बज्र सममूको ३३१ ॥ सो सहिप्राण राखिबे हेत। मूक भगो ऋषिमूक निकेत ॥ मित्रहि लखि भागत भ्रम छाये। रामऊं पुनि सोईथल आये ३३२ ॥

भुजंगछन्द ॥

कह्यौ रामसों मैं कह्यौ सोनमानी बधै बालि कों वीर ऐसोन कोऊ। इहां विप्रके शाप सों सोन आवै बचै प्राण मेरो गुनौ भागसोऊ ॥ कह्यौ रामहौ एकसे देायभाई न

चीन्हौं अबै मारिहौं मेरो कराला । दईभाषिबो चल्लिबेहेत भूमीश सुग्रीव के ग्रीवमैं फूलमाला ३३३ ॥ गयो बंधु हारै तबै कीश स्वामी महाताल दीनो महावीर्यशाली । सुन्यो तौन बाली यह्यौ कोपि हाली बलीधीर धारी महा हेम माली ॥ भिरे वीरदोऊ कहैकौन शोभा मनो दोय मेरू खरैं कोप पूरे। धरती सबै कांपती पैरमारै करैं दावघातैं बनी भांति रूरे ३३४ ॥

दो० आगत सुनि सुग्रीव कहं बालिहि एकैबान ।
महिपतिमारो महिगिरो पविहतशैलसमान ३३५ ॥

चौपाई ॥

सनमुख तबहिं गये दोउभाई । बोलो निरखि कीश को राई ॥ तुम छलकरि बलमारेउ मोहीं । धर्मनिधान सांचि मतिसोहीं ३३६ ॥ जोसन्मुख मोहिमारत आई । तौ रण रसमिल तो रघुराई ॥ हमजाना रावण वधकाज । भे सुग्रीव सखा नरराज ३३७ ॥

दो० जौंहमसों कहते प्रथम तौहम तुमरेहेत ।
रावणकहंलै साम्हने राखत लङ्कसमेत ३३८॥
मुक्तहेत तुमज्ञान बधिसेयो चैगुणकर्म ।
तिनिजबहित बधिबालिकहं रख्योसुकंठअभर्म३३९॥

चौपाई ॥

रामकृपापायी संगकीने । हेत अघी सहायहू लीने ॥ तूसठहरीअनुजकीनारि। हमस्पदीनोदण्ड विचारि३४०॥ इतनेमहं आईतहं तारा । लागी करण विलाप अपारा ॥ अंगदादि बानर सब आये। लखिकै दशा अतिहि बिलखाये ३४१ ॥ अंगद कहं सौंप्यो रघुराइहि । बज्रत नीति समुझाई भाइहि ॥ तारासोंकहि भजहु रमेश । बालिगयो सुरनायक देश ३४२ ॥ मरे कपीश तहां तेहिबार । भयो भयंकर हाहाकार ॥ रोवतअतिहि विकल सुग्रीव । हामम बंधु महा बल सींव ३४३ ॥ तब रघुपति तारा समुझाई । बज्रत नीति श्रुति रीति बताई ॥ अंगद सुग्रीवादिप्रबोधि

क्रियाकरङ्ग भाष्यो स्मृतिशोधि ३४४ ॥ तब सुग्रीव सुआयसु लीन्ही। विधिवत क्रिया बन्धु की कीन्ही ॥ जल अंजुलि दै सबन समेत। राम सखा गृह गये सचेत ३३५ ॥ क्रिया बिताइ राम पै गये। अनुजहि प्रभु पठवावत भये॥ सब समाज मह तब सुग्रीवहि। दियो राज अंगदित बलसीवहि ॥ बानर तीरथ जल लै आये। पढ़हिं संच द्विज परम सुहाये ॥ करि अंगदहि लक्षण यु राज। आप गये जहं रघुकुल राज ३४७ ॥

दो० तात सीय सुधि राखेङ्ग करङ्ग राज रस भोग।
इमि कहि ऋष्यमूक पररास रहे गहि सोग ३४८ ॥

सो० तारा उमा समेत कपि पति विहरत राजनिज।
गिरिपर रघुकुल केतु देखत बर बरसा समय ३४९ ॥

दो० इक पर बरसन शैल पुनि बरसन काल सुधन्य।
मनङ्कदान दीवे भयो चिन्तामणि चैतन्य ३५० ॥

कवित्त ॥

बोलत पपीहा घने खोलत हिये को मोद राजहिंबला सतोगुण की मनोकतारु। बार बार करत विलासच्छण छवि छवि भरी परैं शिखर समूहनपैं जलधारु॥ गिरिधर दास देखो पावस सरस ऋतु बोली अति अच्छी कहैं पक्षी बैठि डारुडारु। पौन सुरवाई तापतेजी उरवाई छाये नभ धुरवाई नाचै बन सुरवाई चारु ३५१ ॥

सवैया ॥

घन औलि बिराजति है न सुनो यमदूतकी सैनहै रोस पगी। जल बूंदगिरै नहिं देवबधू दृग आंसुकी धार महा उमगी ॥ नहिं जीगर के गनये बनके तन तापितसों निकरै चिनगी। बिजुरी घनबीच जुरीनहिंहै यह प्यारी वियोग की आगिनगी ३५२ ॥

दो० इमि विलपति रघुनाथके बरषा गई बिहाय।
आई सुन्दर सरदऋतु निरमल नभ दरशाय ३५३ ॥

कवित्त ॥

शीतल सुगन्ध मन्द पवन आनन्द कन्द निरमल भये शृंग सुन्दर अचलके। बोलत मधुर खग कुसुमित नग बैठि अति सुखदैया जेबोलैया बोल कलके॥ गिरधरदास नदी भईहैं प्रमाण बारिबीती तरुणाई मनोइन्द्री जोर ढलके। सूखिकै थलहि भये पंकजात थलके विभूषिकै जलहि भये पंकजात जलके ३५४॥

चरणा दोहा॥

आई सुरद सुकण्ठन आये को पे लक्ष्मण बन्धु।
चले लषण धनु धारि निरखि बोले करुणासिन्धु ४५॥

चिमङ्गी छन्द॥

लावज्ञ कपि कातै विक्रम बातै जाज्ञ तुरंतै रोसतजौ। जाघरसों हालो मास्यौबालो सोइ बलशालो हाथअजौ॥ इमि तेहि समुझाई लावज्ञ भाई सुनि फणिराई आसु चले। सीखवहि सुनिकै आवत गुणिकै कपि शिर धुनिकै रोयभले ३५६॥

दो० अंगद राजासों कह्यौ जा बलपायो राज।
सो अब आवत कोपकरि भूलिगये हितकाज ३५७॥
तब डरसह सुग्रीव तिय पठई लक्ष्मण पास।
कीश बुलाये पुज्ञमिके उरगलानि भ्रमचास ३५८॥

मत्तमातंग लीलाकर दंडक॥

जाइ तारापरी पांयपैं ताक्षणै कोप त्यागो तियाजानिकै वीर सुग्रीवपैं जाय देख्यो तिया द्वन्द मैं। पूजिकै पाछं कीजै क्षमा नाथ भूल्यो नहींबात जोधा बुलाये गये रोज एते प्रभूदत्त आनंदमैं॥ लैहनूमन्त औ जामवंतादिको संग सौमित्रचक्र मिल श्री रामको रामपैं आइकैदंडसो भूपरो। सांतकै क्रोध लायो हिये कीश कों पास बैठे सबै खोज के हेत बातैं करै सीय आवै अबै सोकरो ३५९॥

दो० इतनेइ मैं आये तहां यूथप कोटिन कोटि।
को कविता वर्णन करै होतशेष मति छोटि ३६०॥

छप्पय ॥

सर भरभस ध्रुवतार पनस केसरी दरीमुख । सतबलि रंभ सुखेन सुमुख दधि मुख समरोन्मुख ॥ मैंद दुविद गजगवय गंध मादन गवाक्ष नल । जामवंत धूम्राक्ष वेग दरथी समेत दल ॥ अति उत कटकटक लै नीलकटक पति बिकट भट । तहं आय पाय परि रामके खरो भयो कर जोरि झट ॥ ३६१ ॥

दो० सीय खोजि इक मास में फिरि आवहु बन चारि ।
नहिंआवैतेहिमारिहौं कहिपठएदिशि चारि ३६२॥

चौपाई ॥

हनुमत अंगद आदि बली गन । दिशि दक्षिण पठए सबगुणि मन ॥ दई मुद्रिका हरि हनुमानहिं । देखेउ तातसियामम प्राणहिं ३६३ ॥ सुनि सुकंठआयसु बलछाए । कोटिन कपि सब दिशन सिधाए ॥ उत्तर पूरब पश्चिम केरे । लही नाहिं सुधिफिरे बड़ेरे ३६४ ॥

दो० हनुमदादि दिशि दक्षिण खोजत विंध्य नगेश ।
मिल्योनिशाचर एकमग तासुहत्योतेहिदेश ३६५॥

मोटक छन्द ॥

खोजैं बन कंदर बंदरसो । सीता दरशै यह नेहबसो ॥ देखी नहिं भूमि कुमारी जबै । बैठे कपि साजि बिचार तबै ३६६ ॥ कैसे मिलि हैं प्रभु नारि दई । बीती सब औधि अबेर भई ॥ यों शोचत खोज करैंसगरे । देखा बिल एक तहां अगरे ३६७ ॥

सो० जामैं बिटप अनेक कंचन के फल फूल युत ।
लखी नारि तहंएक करति घोरतप तेजमय ३६८॥

बसुकला छन्द ॥

ता पास जाइ । कह कीशराइ ॥ तुम अहहु कौन । मोहिं कहहु तौन ३६९ ॥ सो कहति बैन । मय रचित ऐन ॥ यहअहै कीश । मोहि दियोईश ३७० ॥ मनुकी कुमारि । निवसौं बिचारि ॥ तुमफलहि खाहु । सुन्दरसचाहु ३७१ ॥

रघुनाथ काज। सत होत आज॥ इमि कहि प्रवीन। पङ्ख-नई कीन॥ ३७२॥
दो० तबै नैन मूंद्यो सवन आए बाहर कीश।
स्वयं प्रभा ह्वै कै विदा गई जहां जगदीश ३७३॥
हरनी छंद॥
कढ़े बिलतें उर शोचमए। कपीश नदी पति तीरगए। निहारि अगाध अपार सबै। विचार लगे करि बेसु तबै ३७४॥ मरे हम सज्जन काम भयो। वृथा इकमास बिहाय गयो॥ कपीश हनैअति रोस भए। गएदिनयोंहि नयास गए ३७५॥ रह्यो गिरि कंदर बीच परो। तहांहिं जटायु को बंधुवरो॥ सुन्यो रव सो तहं सो निकरो। निहारत बानर वृन्दहरो ३७६॥
दो० आसुसवन कहंखाय हौं बिधि मोहिं दियोअहार।
कहि अपच्छ पक्षी चल्यो यथा अपच्छ प्रहार ३७७॥
चौपाई॥
लखि कपि सभै डरे अति भारे। कहहिं कि यह नभ आपु पधारे॥ कह युव राज जटायु समान। भाग्यवंत को और जहान ३७८॥ दस शिर के सिर भूमि गिराई। मरो सुगति रघुवर करपाई॥ बंधु नाम सुनिकै संपाती। बोलो सुनऊ सबै अरिघाती ३७९॥ मैं न तुमहिं मारऊंगो तात। कहऊ बंधु मेरेकी बात॥ सुनि सब कथा रिच्छ पतिबरणी। तब खगकहत चरणधरिधरणी ३८०॥ अब न सुवन हम देऊ भाई। रविके तेजदशा यह पाई॥ सुनि चंद्रमाकह्योहमिमोही। कपिनदेखि जैहैपरतोही ३८१॥ मैं देखतसीता कहंतात। मिलिहै सुधि जेहिहित पछितात॥ ऐसे कहत कटे दोउ पच्छ। बोलो खग तब सुभट सपच्छ ३८२॥
दो० दृढ़ अहौं कत जोर मैं नत दससुख सुख तोरि।
आजुहि देतोमानकिहि रामहिंअसमतिमोर ३८३॥
गाहा:॥
अनुज शत्रु जो मारै मेरो हित सोइ स्वच्छ।

इमि कहिकै संपाती अंबर उड्यौ प्रतच्छ ३८४ ॥

चौपाई ॥

कपिन लख्यो सागर अति घोर । परसत अंबर जासु हलोर ॥ बैठे हमि सब करत विचार। कैसे जैहैं याके पार ३८५ ॥ संशय सब विधि जानि अचैन । कहत भये अंगद यह बैन ॥ को सागरके जैहै पार।सोबरणाऊ सबबीर उदार ३८६ ॥ सुनि निज निज गतिबरणहिं कीस । कोऊ दस योजन कोऊ बीस ॥ कह युवराज सुभट सरदार। मोहिं न बार जात या पार ३८७ ॥ पै किमि फिरिहौं यह संदेह । सुनिकह रिच्छराज बुधिगेह ॥ तुमहिं उचित नहिं तहं को जान । हौ हम सबके ईश प्रधान ३८८ ॥ औं हम होत तरुण बल धाम । गहि चिकूट लावत जहं राम ॥ अब इन सबको प्राण अधार । हनूमान हैं पवन कुमार ३८९ ॥

दो० किमि बिसरे बल आपनो बैठिरहे चुप मारि।
उठऊ पुच कारज करऊ रामध्यान उरधारि ३९० ॥

सो० रीछ राजको बात सुनत बढ़े परमामये ।
जिमि परबहिं नदतात तिमि ऊंचे नभलौंगये ३९१॥

बरवै ॥

करि उर रघुबर ध्यानहिं पवनकुमार। गरजि बचन बर बोले सुखद अपार ३९२ ॥

कवित्त ॥

कूटिकै चिकूटकों बहावों रतनाकर मैं सागर उलीचों क्षणहीं मैं प्रणकरके। मेरुकों उखारों फारों पुऊमिपताल जाइ बांधौं यमराज मलौं कालकों पकरके ॥ गिरिधरदास कहैं रामकी शपथकरि होय जौ सहाय शेषफन फारौं धरके। तोरिकै पवारौं जैसे कंजन मतंग मत्त दश शिर रावणके पंच शिर हरके ३९३ ॥

दो० इमिकहि उर रघुबीर धरि कूदिगयो आकाश।
लखि स्वरूप सुरचकित चितकीशभये गतचास३९४ ॥

छप्पय ॥

उद्यौ सपक्ष सुमेरु किधौं मनतें सतगुण निरखि सुर भये मुदितमिव। कहिसकतिन सोभा छवि भारती जो कपि के कूदतभई ॥ सुर सिद्ध यक्ष गन्धर्वसुनि जै जै करि दुंदुभि दई १९५ ॥ सिंधुकहे मैनाकनिकरि भेंट्यौ कपिराजहि। ताहि बंदिकै चल्यो करन रघुवर के काजहि ॥ मधि मैं सुरसा आइ असनहित बदनबढ़ायो। बढ़िक्रममें लघु होय होय मुख बाहर आयो ॥ पुनि चलत सिंहिका निशिचरी छायागहि ऐंच्यो भटहि। तेहि मारि मूकमें सरितपति पारगयो मरकट भटहि १९६ ॥

सो० तहं ह्वै सिखर सवार लखि सागर सोचनलगे।
आइ सकैं वा पार अंगद नील दिनेश सुत १९७ ॥

चौपाई ॥

कपि पुनि पलटि निहारी लंका। जहं निवसत दशमुख गत शंका ॥ कहि न जाइ शोभा नगरी की। नीकी कनक मई सगरीकी १९८ ॥ करिविचार धरिकै लघुरूप। निशि मुख पुर प्रविश्यो कपि भूप ॥ तहं लंका उठि बोली ऐसे। तू शठ निदरि जात मोहि कैसे ॥ तब कपि मुष्टिहनी गत शंका। परि पुनि उठी लंकधरि लंका ॥ बोली बचनसुनऊ हनुमान। सीता कहं खोजऊ बुधिवान ४०० ॥ राम विजय होइहि हम जान। अवशि जाहिंगे रावण प्राण ॥ इमिकहि लंकानारिसिधाई। लंकापुरप्रविशे कपिराई ४०१

दो० अवलोकत नगरी रुचिर सगरी सुन्दर रूप।
बने धाम अभिराम बऊ रतनन जडित अनूप ४०२ ॥

चामर छन्द ॥

धाम धाम मैं ललानबीर इन्द्रराजते। मल्ल तुल्ल बाजते किते प्रचण्ड गाजते ॥ नारि बैठि कै अटा अनेक भांतिसोहहीं। कन्त कण्ठ बाऊहै बिनोद चित्त मोहहीं ४०३ ॥ गावती कहूं सुरंग बाजनै बजावतीं। राक्षसी अनूप रूप देवता लजावतीं ॥ देव यक्ष नाग की कुमारि कालसैं

घनी । पानवारुणी किये प्रमत्त सोवनी बनी ४०४ ॥ राज पथमैं सुरत्थ बाजि वीर घूमते । मत्तव्याल शैलसे खरेअनेक झूमते ॥ नाचतीं अनेक बारनारि चारुता धरे । सारियां सुरङ्ग हारहीरके गरेपरे ४०५ ॥ देखतो अशंकलंक नैरितेश की भली । केशरी कुमार कीश केशरी महावली ॥ और धामदेखिकै तुरन्तही गयेतहां । लंकनाथ सोवतो रह्यौ तियानलै जहां ४०६ ॥ नारिसुन्दरी अनेक बीचसेज पैबनी । चञ्चला समूहमैं महान मेघहैमनो ॥ देखि रावणै विचार कीश चित्तमैंकरो । हैप्रतापवंतधीर शचुमोखरो ४०७ ॥ यौं विचारिकै बहोरिसीय खोजमैं चलो । देखतोभयो अशोक बाग जायकै भलो ॥ सिंसुपा निहारि तातरे लखी विदेह जा । राक्षसी घनेश नारिवृन्द मैं यथा अजा ४०८ ॥

दो० कृशतनमन रघुनाथमैं चपचरणनि कीओर ।
लखि प्रणामकरि लुकिरहोपातनपवनकिशोर४०९॥

सो० ताही क्षण मतिमंद आयो नैऋत नाहतित ।
संगलिए तियवृन्द सीताके पर बोधहित ४१० ॥

तोमर छन्द ॥

भजुमोहि राज कुमारि । गजको सिंगार विचारि ॥ तजुतुच्छ रामहिं नारि । सुखदानि संपति धारि ४११ ॥ जगमैं जितेरस भोग । सुरनाथ शंकर योग ॥ तोहिदेऊंगो सब तौन। हठत्यागिदै गुणभौन ४१२ ॥ टण ओटकै सुकुमारि । भइबोलती निरधारि ॥ तजि राम तोसन प्रीति । असको करै अनरीति ४१३ ॥

दो० सिंहनारि बनसिंह तजि ग्रामसिंह ढिगजाय ।
तऊ न सीतारमन तजितोहि लखै सतभाय ४१४ ॥

चौपाई ॥

मारण चलो सुनत रिसिछायो । मंदोदरी बहुत समुझायो ॥ तब इकमास प्रमाणहिं कियो । कुकुम राक्षसिन कों इमिदियो ४१५ ॥ तुम सब इहिशिक्षक निरशंक । इमि कहिरावण प्रविशेउ लंक । ते तब सब आयसु अनुसार ॥

तरजहिं सीताहिं विविधि प्रकार ४१६ ॥ तहंचिजटाइक निशिचरि रही। ताने सपन देखि इमि कही ॥ हमसपना देख्यो असआजी। आए रामसेन सजिहाजी ४१७ ॥
दो० जीतिलंक सीता लईदिय विभीषणहिं राज।
सो सब ह्वै है सांचही हेनिशिचरी समाज ४१८ ॥
सो० इमिसुनिकै ते सर्वउठि उठिकै निजगृहगईं।
सियाविकल तेहिपर्व अतिविलाप करतीभईं ॥

चौपाई ॥

हारघुनाथ दीन दुखहारी। हालक्ष्मण प्रभु मन सुख कारी ॥ लघुअपराध इतो दुखदीनो। ऐसो नाथ निठुरपन कीनो ४२० ॥ हे अशोक वनिका हरुशोकहिं। सफलनाम निजकरु यालोकहिं ॥ इहिविधि कहत दुखी अतिजानी। राम राम बोलो कपि ज्ञानी ४२१ ॥ डारिदई मुद्रिका मनोहर। उठि सियलई ताहि ताहीथर ॥ लखि मुद्रिका शोच उरछायो। इहिको कौन भांतिले आयो ४२२ ॥ इमि शोचत देख्यो तरु ओट। बैठो कपिर एक कपिछोट ॥ कहइ सीय जोंइहिलैआयो। इतआवइ जिननाम सुनायो ४२३ ॥ तब हनुमान जाइ सिय पासे। कियो प्रणामहिं सहित हुलास ॥ सीता कहै कौन तुम भाई। तबबोलो कपिशीस नवाई ४२४ ॥ मैं रघुवीर दास हनुमान। आयो खोजन तुमहिं सुजान ॥ दीन बीनहित इहिमहि बात। पूछीराम कुशल तुवमात ४२५ ॥ सीताकहै न निहचै होई। तुमकहं राममिलैं कहं सोई ॥ नरवानर मिलाप किमिभयो ॥ केसो वपु तिनको छबिमयो ४२६ ॥ तब हनुमान सुनाई कथा। भये मित्र वानरपति यथा। जननि राम घनश्याम शरीर। कंज विलोचन मोचन पीर ४२७ ॥
दो० जेगुणहैं रघुनाथ मैं तेनतिहूं पुरमाहिं।
हासीताहामैथिली इमिप्रतिज्ञण बिलखाहिं॥४२८॥

रोलाछन्द ॥

सुनत कपिके बचन सीता जल भरे दोउनैन। तातंकिम

इत आयहैं सिय कहे ऐसेबैन ॥ कहत पवन कुमार सोहैं सकल लायक मात। सुरसरिस बलवंत संग बनचरन सह कपिनाथ ४२९ ॥ कहइ जनक कुमारि सब कपि अहैं तुम समरूप। सुनत निज तन प्रगट कीन्हो शैलसम कपि भूप ॥ अतिहि तेज निधान कंपितभूमि धारतपाय। पस्यो सीता चरण लखि अति रही आनंद छाय ४३० ॥ दै अनेकअसीस सीता कहति सुनु हनुमान। मास मधिजौं आय हैं तौ पाइहैं मम प्रान ॥ कहेउ बायस एक मारी चोंच मेरे पाय। हस्योता अघ नैन ताको तीन लोक घुमाय ४३१ ॥ कौनहित प्रभुमोहि बिसारी हनत नहिं दसशीश। इतनहूं अपराध बांचत मोर पाय कपीश ॥ कहत सुनि हनुमान जननी धरहु धीरज चित्त। आइ प्रभुनाशत खलहि सहधाम सुत दलबित्त ४३२ ॥ खबरि नहिंपाई अबैमोहिं देहु आयसु जाउं। भूख लागी कहहु तौ फल बाटिकाके खाउं ॥ सुनत सीता कही सुतफल खाहु सोच बिहाइ। चलो मारुत पूत तब सिय चरण पर सिर नाइ ॥ ४३३ ॥

दो० बिटप अनेक उखारिकै खाए फल कपि ईश ॥
बन रक्षण रक्षणहने खबर सुनी दशशीश ॥ ४३४ ॥

चौपाई ॥

असी सहस बर बीर पठाये। ते सब कोपि कीश ढिग आये ॥ तिनहिं छणकमहं मार्योकैसे। बज्रअज सुतन एक हरि जैसे ४३५ ॥ पुनि प्रहस्त सुत पठयो राजा। मंची पांच बली सह साजा ॥ तिन कहं कीश निपात्यो कैसे। एक सत्य बज्र पापहि जैसे ४३६ ॥ सोसुनि कोपि रक्षभर तार। पठयो रण हित अक्ष कुमार ॥ करि प्रणाम सो लीने सैन। चल्यो समर हित बिक्रम ऐन ४३७ ॥ देखो कपिहि जाइसो कैसो। अति उतंग फाटक चढ़ि वैसो ॥ करमैं परिघ लिये अति भारी। मारे जाते अमित सुरारी ४३८ ॥ कोपवंत मानहुं जमआप। तेजवंत जनुजम

को बाप ॥ बुद्धिवंत मनु जमको दादा। लखि डर भई कुमारहि जादा ॥ ४४९ ॥

दो० बरष्यो आयुधविविधि बिधि तेहिसहिकीशसमच्छ।
पटकि भूमिमहंबसनसमनमपुरपठयोअच्छ॥ ४४० ॥

सो० सुनिनिशिचर शिरमौर परम कोपि दृगअरुणकरि।
निरखिइंद्र जितओरकहततातअब जाउतुम ४४१ ॥

चौपाई ॥

अति उपाधि कीन्ही बनचारी। तातें लावउ ताहि मुरारी ॥ देखुंतौ वह बानर कैसो। जाने दुसहकर्म किये ऐसो ४४२ ॥ सोसुनि गरजि सहित अहलाद। सभावीस बोलो घननाद ॥ शंभुशप्रयकर कहैं पुकारी। आजु गहैं नरसह बनचारी ४४३ ॥

कवित्त ॥

भागै जौं पताल औरसातल तलातल मैं अंबर लुकाय चलौ जाय नदी ईशकों। संगमें सहाय हेतलावै देव दल सब कपिन समेत कपिईश नराधीश कों ॥ गिरिधर दास आवैं पच्छपैं सपच्छ होय विंध्याचल मेरु महा वेग धरेरी सकों। शतआवैं सूरल सहस आवैं शक्रलच्छ आवैं लच्छीश तऊ बांधिलाऊं कीशकों ४४४ ॥

सो० इमिकहि पितुपद बंदिसंगलिये कोटिन सुभट।
निशिचर चल्योअनंदि टंकारत धनुवज्रसम ४४५ ॥

छप्पय ॥

चलत शक्रजित हलत परनि दलमलत धरणिधर। जल निधिजलउच्छलत छलत सुरहृदय सहित डर ॥ दुरतेनूरतें दूर मगरूर दूरकरि। हलचल सुरपुरहोत शिखर विखरत गिरिकेपरि ॥ सहचासन आसन त्यागितिय भवन पाक शानलुक्यो। किहिओर जोरसों आजु यहलरनहेत रणभट भुक्यो ४४६ ॥

दो० आइलख्यो हनुमान कों बैठोकाल समान।
करत भयो घननाद तब घनसम नादमहान ४४७ ॥

धरीइकलरि इंद्रजित ब्रह्मफांस कइंडारि ।
बांधिलियाहनुमानकहंकपि बंधिगयोविचारि४४८ ॥

गाहाछन्द ॥

तब अतिकरत कोलाहल भटनसहितघननाद ।
रावण सन्मुख लाएउ कीशहिसह अहलाद ४४९ ॥

कवित्त ॥

वरे बरे वीरवने घने करजोरे गिरिधर दास जोहैं मुख मुखकी प्रभा जके । शारद बजावैं बीनगावैं गीत नारदादि बेद पढ़ैं गुरु शुक्र सोंह भोंह कांतके ॥ दूरपैं दिनेश आगि लागिकै कपाट खरे बंदगी करत चन्द दृग द्युतितें ढके । काल सबकाल घड़ियाल द्वारधरे खरे दशदिशि पाल दश दिशि दशशीश के ४५० ॥

दो० इमि प्रताप बलशचुको अभय लख्यो हनुमान ।
कपिहिदेखि अतिगाजिकैबोलो निशिचरचान ४५१ ॥

चौपाई ॥

केतूकौन कहांतेंआयो । केहिहित वीरबधेफलखायो ॥ तब हनुमान कहा सुनु रावन। मोहि पठयो खर बालि नसावन ४५२ ॥ जिनतुव ईश ईश धनुखंड्यौ । जेहि अशक्त तूतज्जित छंड्यौ ॥ जाकीनारि चोरि तू लायो । सेा सिय सहितचोरहमपायो ४५३ ॥ अबतैं नियन चहत मतिमंदू । सियदै प्रभुहि जाय पदबंदू ॥ नातरु दिनदश मैं दशशीस । तेासिरकंदुक खेलिहैंकीश४५४ ॥ सुनिसकोपकह निशिचर नाऊ । आसुहि सुभट याहि धरि खाऊ ॥ सुनिकै उठे वीरभरि रीसन । तबबोले करजोरि बिभीषन ४५५ ॥

दो० नृपहिदूतवध उचित नहिं दण्डकरऊ सुनितुच्छ ।
सुनि रावण अज्ञादई जारऊ याकी पुच्छ ४५६ ॥
तब निशिचर सब लंकतें बसनतैलघृत लाय ।
कपिकी पूंछिलपेटिकै दीनीआगि लगाय ४५७ ॥

मध्याछन्द ॥

लागी जबआगी । भारी अतिजागी ॥ त्यागी तबफांसी ।

सोई बलरासी ४५८ ॥ धारे उरक्रोधा । कूदोकपि बोधा ॥
धारो बलभारो । सारोपुर जारो ४५९ ॥

मायाछन्द ॥

हाथी औ घोड़े सबजारे क्षणमाहीं । दावाड़ी लूझै पुर औरे कछुनाहीं ॥ रोवैंहैं नारीनर हाहा यहबोलैं । भागे भैपागे घरलागे समडोलैं ४६० ॥

वासंती छन्द ॥

सीताखामी दास सकललङ्कायों जारी। कूद्योजाके सिंधु यमहिं नास्योमोभारी ॥ सीता सोहैं जाय चरणपैं राख्यो माथा । मांगी अङ्गाकोश शिरहिं सोफेस्यो हाथा ४६१ ॥

विष्णुपद छन्द ॥

तियचूड़ामणि दिय चूड़ामणिलै तेहिकीश भले । जय रघुवरसिय लषणकीशपति इमिकहि आसुचले ॥ चढ़ि चिकूटपैं कूदि महाबल सागरपारगयो । गरजिजोर अंगद आदिक के उर अतिमोददयो ४६२ ॥ तबते उठिउठि हनूमान सों मिलते भये भले । प्राण मिले तिमि सबहि राम ढिग पूछत सुनत चले ॥ मगमधुबन बन बर षति उपबन तहं सबकीश भये । खाये फलहि रक्षकन मारे उर अति हर्षभये ४६३ ॥

चरणा दोहा ॥

तेकपिपति सों आयपुकारे कपिन कियो जेहाल ॥
सुनिसुग्रीव सध्योकारज गुणिमुदितभये तेहिकाल ॥
इतनेई महं अंगदादि सब आयेकीश सुजान ।
बंदिराम राजाके चरणनवरण्योसब आख्यान४६४ ॥
उठि रघुवर हनुमंत उर लायोचूड़ामणिकरलीन ।
पुनिपुनिभेटतप्रियासरिसगुनिदग भरिकहतप्रवीन ॥
कहऊतातकिमि जनकसुतासों सुनि बोले हनुमान ।
क्षणतनअसनरहितइकबेनीजपतिआपुकेध्यान ४६५ ॥

दो० जननि दशा कहिजातिनहिं अवधिरही इकमास ।
समुझिजयंत कथाहि प्रभुवलियबेग तिनपास ४६६ ॥

लंकदही छणमैं सकल बधे अमित बलवान।
सदलख्यामैं रावणहिं मरि है प्रभुके बान ४६७॥

चरण दोहा॥

सुनि कपिपतिसों सम्मतकरिकै कपिदल साजि महान।
करिवे बिजय बिजय दशमी दिन रघुबरकियो पयान४६८॥

हरिगीतीछन्द॥

रघुबीर करतपयानदिगाजचार अति चिक्करतभे। सुर सिद्ध अरु गन्धर्ब गण मन मुदित जय जय करतभे। लखि सकलशोभा बिहंसि इमिसुग्रीव प्रभुदिशि हेरिकै॥ कहते भये करि बचन रचनहि मुदित चित दुख गेरिकै ४६९॥

बरवै॥

अतिहि अजीत करत प्रभु प्रगटप्रताप। तेहि मैं कहत छमेऊ यह मम अघ आप ४७०॥

कवित्त॥

रजभरि पुरुषाप्रथम अजलोक माहिंसूरकों छपाय छच छाजन सों धीरधाम। सागरके हिये हौल डारि गिरि-धरदास भागीरथी धारकों उलटि पुनि याही जाम॥ जनककी भूमि करी कंपित भयदशब्द सुर पुर भरो जानि बर बिसरामठाम। इति अजितीति करिचले लंकजीतिबे को धरम निधानहौ परम सुनियत राम ४७१॥

दो० इमि पहुंचे सागरनिकट उतरे प्रभु सहसैन।
लखिसमुद्रकिमिउतरिहैं गुणिकपिभयेअचैन ४७२॥

चौपाई॥

रावण सुन्यो रामको आवन। बोल्यो सभा बीच मन भावन॥ का करतव्य प्रबल अरि आयो। सुनि निशिचारिन बचन सुनायो ४७३॥ नरवानर अहार मम अहैं। इनके हेतमंच का कहैं॥ यहतौ बिधिजाफत मनुकीनी। बिबिध बस्तु भोजन हित दीनी ४७४॥

दो० कहै बिभीषण अज्ञ से कहत अहित चित आनि।
जाफत ना आफतअहै कहहु हिये अनुमानि ४७५॥

कन्द छन्द ॥

सिया देउरामैं चहौक्षेम जौतात । महाबीर सोबिष्णु मानौ नहीं ख्यात ॥ खरै दूषनै बालि को मारिकै लीन । महादेव चापै भटै खण्ड ह्वै कीन ४७६ ॥ कह्यौ कोप कै बंधुसों तब्बलंकेश । अरे दुष्ट तू छोड़िदै रच्छको देश ॥ कहै चातलैकै डरै बीरता छण्डि । बधौ राम को हौं क्षणै कोप कों मण्डि ४७७ ॥ कह्यौ भ्रातनै हनुमानै बध्यौ कौन ॥ अकेलो गयो जारि लङ्का सबै जौन । तबै बंधुनै बीस आखैं करीं लाल । कह्यौ तू चलै मूढ़ बा भचुकी चाल ४७८ ॥

तोटक ॥

सुनिबैन बिभीषण बंदिपगै । प्रभु पासचलो चढ़ि ब्योम मगै ॥ हित संग सुमंचिन चारि लिये । प्रभु की दिशि मैं निज रुक्ख दिये ४७९ ॥ तहं जाइ पुकारि सुबैन कहौ । हम राम भरन्न कृपाहि गहे ॥ सुनि व्योम गिरा लखि ताहि सही । हरिसों खबरै बनरान कही ४८० ॥

दो० राज अनुज आयो मिलन का करतबहै अब ।
कहउ रुबै सुनिकै कहत कीश सुकुटमणितब ४८१ ॥
जौ वह शुद्ध शुभावहू अहै सुनउ गुण सिन्धु ।
बिश्वासन के योगनहिं तौहूं अरिको बन्धु ४८२ ॥
यदपि कही इमि कीश परि औरनहूं तेहिकाल ।
तदपि ताहि रखिबे चहे शरणागत प्रतिपाल ४८३ ॥

भारंग छन्द ॥

मेरो करैगो कहा जौं बुरेभाय । आपै नशैगो सुनो कीश के राय ॥ ताकों बुलावौं इहीहै मेरे चित्त । आयो तुरन्ते सुनत्तै सोई तित्त ४८४ ॥ पावैंपरो औ कहो आपनो हाल । लायो गरे रामनैं ताहि ताकाल ॥ पूछी सबै भचुकी बात ता पासु । भाखी तबै रामजू सों कथा तासु ४८५ ॥ बाच्यौ तबैहेरिबै चित्तमैं प्रेम । जान्यो बिभीषण मेरो भयो क्षेम ॥ स्वामी बिना आपके कांशसे पाय । दीजै बरै बुद्धिमो ना कहूं जाय ४८६ ॥

दो० दियो तिलक शिर आसुही दीनबंधु अवधेश।
पूजित मुनि बनचरणसों कहत सुनहु लंकेश ४८७॥

चौपाई॥

किमि जैये सागर के पार। सो सम्मति करियै निरधार॥ तब करिकै बिचार मति ऐन। मांगहु मग इमि बोले बैन ४८८॥ तब रघुबर सागर पै जाय। बैठे करि प्रणाम सतिभाय॥ मगहि देहुजावैं जिमि पार। तुममम पुरुषा अहहु उदार ४८९॥ तब रावण को आयो चार। शारदूल नामकहु सियार॥ नभ देखतलाये गहि कीश। मारत भये लख्यो नर ईश ४९०॥

दो० दीनो दूत छोड़ायकै गयो लंकपति पास।
कही कथासब आपुनी कपिदलको इतिहास ४९१॥

चौपाई॥

तीन दिवस इहि भांति बितानो। सागर नहिं आवत प्रभु जानो॥ कर शर जोरि चाप संधानो। जलचर सह जलनिधि अकुलानो ४९२॥ सभय प्रणामकियो तहं आई। निरखि हंसे दयाल रघुराई॥ शर सागर उत्तर दिशि मारो। तब करजोरि समुद्र उचारो॥ क्षमाकरहु जड़जाति बिचारी। बिरचै सेतु नील बनचारी॥ तापर हेाइ जाहु गुण आगर। इमिकहि गयो बंदिपद सागर ४९३॥ नील सैनपति लहि बोलाई। बरण्यो सेतु बनावहुभाई॥ सब कपि गिरि पादपलै आवत। बिश्वकरमा सुत सेतु बनावत ४९५॥

दो० बंध्यो सेतु दिन पांचमें निरखि मुदित चितराम।
चले सदल लंकालरन बंधुसहित अभिराम ४९६॥

चौपाई॥

हनूमान चढ़ि राम बिराजे। उदय शिखर जिमि दिनपति छाजे॥ अंगद पैं लक्ष्मण आसीन। जिमि बिधुमेरु शिखर छबि पीन४९७॥ पहुंचे पारजाइ रघुनाथ। गिरि सुबेल उतरेदल साथ॥ तहं कपि सब अवलोकहिं लंका।

सुबरण दुर्ग बनी अति बंका ४९८ ॥ राम आगमन रावण जाना। चढ़ो भवन पर अमरष साना ॥ सुकसारनहिं बोलि दल साज। पूछेउ ता छण निशिचर राज ४९९ ॥ ते तबदेउ रावणके धावन। लगे सकल हरिसैन बतावन ॥ सबकेईश अहैं सुग्रीव। अंगदबालि सुवनबल सींव ॥ ५०० ॥ केशरि कुमुद पनस नल धीर। संत बलि संभतार भ्रुव बीर ॥ रभस सुखेनधूम्र धूम्रच्छन। जामवान हनुमान प्रबल रन ५०१ ॥ गज गवाक्ष दधि बदन दरी मुख। गवय गंध मादन समरी न्मुख ॥ कोटिन कोटि अरबऊ खरब। आए अगणितबानर सरब ५०२ ॥ द्विविद मयंदभट सरभ प्रचंड। पावत सबन नील बरिबंड ॥ वह सोहत रघुबर के पास। राज अनुज कपि नायक खास ॥ ५०३ ॥

दो० श्याम तामरस नयन घन श्याम बरन श्रीराम।
पासअनुजबरगौरतन लछिमनविक्रमधाम ॥ ५०४ ॥
देऊ राम कहं जानकी करऊ अकंटक राज।
सुनि अतिकीन्हींकोप्रभुनिरावणभटसिरताज ॥ ५०५ ॥

कुसुमस्तवकदंडक ॥

लखिकै दशशीशहि कोश प्रधान महा रिसिकै उछस्यो गिरि ऊपरसो। तहं जाइ सभा मधि कूदिपरो मनु बज्र सुराधिपको छुटिकै करसों ॥ शठ तू हरि नारि हरीछल कै फलता करलै कहि क्रीट हरी सिरसों। चढि रावण कोपि भिरो भट संग लरे दोउ बारन बारन से चिरसों ५०६ ॥ करसों तलसों पुनि जंघन सों अरु मूकनसों रण घोरकरैं बलसों। उड़ि अंबर जाहिं धराहिं थिराहिं गहे निजदांवनरैं छलसों कलसों ॥ लरिकै इमि सत्रुमदैहरिकै हरिनाथ गए हरिपैं उड़िकै तबहीं। लखि रामलियोउर-लाइ कह्योकिमि साहस कीनमखा इतनी अबहीं ५०७ ॥

दो० तब प्रभु आज्ञा पाइकै महा बुद्धि बलवंत।
गयोनिशाचर कंत पैं अंगद कूदि तुरंत ॥ ५०८ ॥

कंद छंद ॥

महावीर बैठो सभामैं प्रभावान। निरखे डरैं रक्षयोधा तजे मान ॥ तबै देखिकै अंगदै बुद्धिको ऐन। भयो बोलतो लंक स्वामी तहां बैन ॥ ५०९ ॥

चरण दोहा ॥

कोतू अहै कहै सुनि अंगद मैं रघुवर को दास। कोरघुबर जिन हर धनु तोस्यो क्षण मैं बिना प्रयास ॥ को हर धनु जिन दुष्टपन सुख थिरह्वै कारिख दीन। केहि हित जनकसुताके कारण जिनहिं जगत पतिलीन ५१० ॥ कातुव नाम नाम मम अंगद कौन पिता तव बालि। कौन बालि जिन बांधि धस्यौ तेाहि तज्यो बचन निज पालि ॥ जाति कौन बानर हांहां प्रभु जिन जारी सबलंक। जाहि बांधि लायो ममसुत जिन हत्यो अक्ष निरशंक ५११ ॥ केहिहित आयो जामैं कछु दिन रहे वियवाबंस। कैसे रहै सौंपिसिय रामहिपाय परसु गतशंक ॥ बानर भलउपदेशकरैंजौंविधि बस आवैचित्त। कोविधि जाके बर प्रभावसों करत अनीतिहि नित्त ५१२ ॥ कौन अनीति करी तियचोरी भयसों भूप कहाय। काकी भयसेा देउ बीरनकी कोदेउ कोशलराय ॥ नामकहा श्री राम लक्षमण हरिअहि महिजा श्रीश। सोईराम तबईश अरेतव सकलईशतवकीश ॥ हांहां हमज ने देाउबालक दिये बनहिं पितुभेजि। सत्य सन्धि पितु वचणकरनको आयि दुख अंगेजि ५१४ । कौन पिता दशरथ हम जानत तिय बस धरम न अन्य। कैसे कहत अधम जिन सत हित तजे तनय चैतन्य ॥ कौनजाति क्षची हांहां हम जानत नरमें होय। जामें अर्जुन एक जहां तू बंध्यो रह्यौ बजरोय ५१५ ॥ सेाइ अरजुन रिसि सुवन बीरनै जाको काटो शीश। रावण सेाइ भृगु सुतहि क्षणक मैं जीत्यो रघुकुल ईश। अब भृगु सुत भये इह सत्य हरधनु तेा रह्यो नइह ॥ महा इह हम गुरु धनु गुणि नहिं तोस्यो ज्ञान सइह ५१६ ॥ झूठो सत्य मानि पूछजं गुरु

धनुगुणि छियो न चाहि। जनक कोखलै उड़ै जबहि तब लस्यो न तू का चाहि॥ बालि सखा मम कहां कीश जहं सियपिय द्रोही जाहिं। कैसे मास्यो राम शरयाते भजुहित गुनि मनि माहिं ५१७॥ अंगद बूड़ि मरत नहिं जलतू वही रामको दास। आपुहि कहत रामयश मैंकिय पितु आयसु बनवास॥ उचित जनक वधवैर लेनतोहि शीश रामको तोरि। जोंबल होय तोहितौ लै नत करि सुचाकरीमोरि ५१८॥ रेशठ बोलु संभारि जीह निज नतरु होत बिन प्राण। जाघर सहो खात कपि कीतेहि जिन जिन मास्यो इक बाण॥ तासु प्रताप देखि नहिं देखत निहचै आयो काल। अबहुं चेत नत ह्वैहै तेरो रणसन्मुख रवहाल ५१९॥ बानर वचन सहत मैं तेरे नृपकी नीति विचारि। वरणत निशिचर असन बड़ाई परम पुष्ट निरधारि॥ खरसे चाकर कोटिन मेरे मास्यो प्रमादी सोय। बालिहि छिपिकै शायक मास्यो जामैं सकै नजोय ५२०॥ दशरथसुतको कहा सराहत हथा कीशकहुअन्य। लातमार हमहने क्षणहिं जिनके पुरुषा अनरन्य॥ रहे जेहि माया करहमतिनकोलिय मारि। कहाबड़ाईकरतगयो मान्धाता सो रणहारि ५२१॥ तौन वंश कोनिंदत निरलज लाजन आवति क्रूर। जाकी उपमा देहिं जगत सो जाहिर जग शिवसूर॥ ५२२ जामैं भूपककुत्स्थ भये जो बैठि शक्रकेकन्ध। निशिचर अधम बधे बरदानव कोटिन किये कबन्ध॥ जौन बंसमैं सगर भूप यह सागर जासु अगाध। जाके बल तुम रहे अभय जेहि तरत भयो सुख आध ५२३॥ जिन दशरथ को अतिहि बिनय करि जांची शक्र सहाय। बधे अनेकन दनुज मनुज पतिकर कोदण्ड उठाय॥ अम्बरीष जाके कुल प्रगटे विष्णु चक्र जिन काज। ईश अंश दुरबासहि दीनो त्रास प्रथम पुनि लाज ५२४॥ जौनवंश मैं भये त्रिशंकू गुरुसों कछुक विगारु। हठकरि गये नाक अजहूं सो प्रगट नये यल चारु॥ जहां भगीरथ भये न

जिन सम पुरुषारथी सुऔरु। निज पुरुषा सहकोटिन के जिन तारे जग सब ठौरु ५२५॥ कोसमर्थ कलमास पाद सम गुरु हित श्रापित वारि। लै पुनि धरम चेति अपने पदलीनो तुरतहि धारि॥ तौनबंशको तूलघुबरूथै रामहिं बालक अंध। जिनरण हते बालि खरदूषण त्रिशिर सुवाहु कबंध ५२६॥ हंसा दशानन दशन काढ़िकै बड़ी बड़ाई कीन। रण दुरबलन राम जिन मारे बहुविधि सेा कहि दीन॥ मान्धातहि हम मारि चुकेहे त्यागेा सुनिके बैन। रविदिन उगेहमारो अन्धाखंकाहा जिररैन ५२७॥ कौनबली सुर राज कल्पपै चढ़िक कृतघ्न भये शूर। अलप अलप दश बीसक दानव मारेबढ़्यौ गरूर॥ सागरखोदे कहा वीरता खोदहिं सदा मजूर। प्रजा बस्तु नृपकी गुणि हम तेहि राखी कीस हजूर ५२८॥ दशरथ सुनियत समर गिरे जब कोउ एक दानव बान। तब कैकई भरत की जननी रक्षा करी सुजान॥ अम्बरीष को कहा पराक्रम राजहु सके न राखि। तब पठयो हरि चक्र भ्रमे द्विज निज अघ सोंसुख नाखि ५२९॥ प्रभुता कहा त्रिशंकू की जेा जीवत भयो चण्डाल। परो अधोमुख सरग जात मग अजहुं अहै सेाइ हाल॥ बड़ीबड़ाई करी भगीरथ राज त्यागि मुनि होय। लाये गंग उधारे पुरुषा शूर कहां के सेाय ५३०॥ कहा कियो कल मास पाद जिन कारो कीनोपांव। गुरुके शाप निशाचर ह्वैकै बेास्यौ कुलको नांव॥ जानी है सब बंश बड़ाई रामहुं की पुरुषार्थ। महाबीर सुग्रीव विभीषण भये सहाय यथार्थ ५३१॥ एक काज करु अंगद-तौ मैं देहुं रामतेाहि आज। रामहिंबांधि बेारु कपिपति सह तेाहि सदा सुख साज॥ अरे नीचतू बेालु सम्हरिकै नातरुतेाशिर तेारि। जात आजुलै जनक सुताको लंकासिन्धु महं चेारि॥ ५३२॥ बेालत बचन बज्रसे बानर जानन मार प्रताप। जाडर अजहुं डरत यम सुरपति तिहुं पुर जाहिर दाप॥ मेरे भुज मदगड सरिस लखुये प्रचण्ड तर बीस। जातेंमरे

महादेव कोटिन गये प्रेत पुरकीस ५३३ ॥ यदपिमरे सुरलोक रमतते पूछैं गोजबजाय। अजहं न तिनके साल हृदै की गई रहीअतिछाय॥ भुजप्रताप जानत सबदिगपति भले गिरिस गिरि जान। जो मम कर गज पुष्कर पुर बिलस्यो पुष्कर अनुमान ५३४ ॥ हरी अमरनर किन्नर कन्या भुज प्रताप सबलोक। अजहुंअहै पद पठक समयको शेष कमठ हिय साक ॥ जानत सूरपनोमम गिरधरगर अरप्यो बज्रजाहि। कोटिकोटि मनमुदित अगिनिमैंहोमकिये चितचाहि५३५ जानत जग प्रताप सब जाको ताहि निदरि शठ कीस। पुनिपुनि करतबड़ाई नरकी नितभोजन दशबीस ॥ समुझि बोलुतें बालबालमति जान न मोर प्रभाव। जौं रघुनाथ सूर तौ केहि हित पठयो दूतसचाव ५३६ ॥ कैसे कहत रामकों पापी निजसुखनिज बड़पन्न। कौन कामतव धुकपि सम हुकिये कहतजु आयहिधन्न ॥ शिवको शैल उखास्यौ यातें भयो महाबलवंत। कोटिनकपिशिशु शैल उखारहिं सेतु देखु खलकंत ५३७ ॥ काटो गरो सूरपन बरणतहंसी होति चितमोहि। ए कटकापर मूड़ चिरोशिर चीरैं सूर कि सोहि ॥ बड़ो प्रताप कियो जग जाहिर लांघी जैसी लीक। महस बाज्रबलि बाखो बामन इनहिं जिते जिमि ठीक ५३८ ॥ एक बात हम सुनी कहत तेहि यदपिहेा तिहै लाज। तदपिकहत तुवढीठपनेा लखि तोसेां रावण आज ॥ गयो कोऊ पुर तू नृपजीतन तहंकी इकतियबूढ़। पटक्यौ सिंधु सुमन सम जहंसेां लाजनि आयोमूढ़ ५३९ ॥ नहिं जानत रघुबीर प्रभावहि निरलज बकत वृथाहि। जानैं बधे बालि आदिक भट हर धनुभंज्यो चाहि ॥ बांध्यो सेतु सिंधुको क्षणमैं बेधे सातज्रसाल ॥ जाको दूत एकपुर जास्यो भयो अच्छको काल ५४० ॥ हनूमान मुंह भंजि तिहारेा गयो हते भटमारि। तदपि कहत तू टेक अपनी आपुहि बड़ो बिचारि ॥ निरलज महा और तोसेा जग रावण अहै नकोय। आएहम तुवभलेा करनसेा रह्यो मरन

बस होय ५४१ ॥ रे कपि कष्ट सूरपन कीनो कहत इती जो बात। बेखे सालकरी सो चेटक बालि बधन विख्यात ॥ हनूमान नै लंका जारीजरी पाइ रुखमोर। बालक अक्ष वध्यो इतउत सो कूदि चपल ज्यों चोर ५४२ कौन करी सूरता समरमें बांध्यो वासव जीत। लातन हते निशाचर लरिकन मैं देखो अति भीत ॥ दूत जानि उर आनि दया अति दीनो ताहि छोड़ाय। नातर जातोयम केमंदिर बाल प्रहार न पाय ५४३ ॥ सांचि कही दसभाल कियो नहिं हनुमान कछु हाल। दोयगाल के बज्र लवार जग तोहि तौ इह दस गाल ॥ देखु राम किंकर कीमहिमा लांघ्यो सिंधु अगाधु ॥ अजहु साल इनके जिय में जे बैठे इहां असाधु ५४४ ॥ कहै दशानन सिंधु पार बज्र जाहिं गीध सुक काक ॥ तासों बली कहावत राउरि भाग्यो जौनवराक ॥ एक चपलता करी सही छपि निकरि गयो सो पोच ॥ दूत जानि हम खोजहु नाकिय सो कछु अहै न सोच ५४५ ॥ बार बार रघुवर बल बरणत जाके कीश सहाय ॥ मोहि नहिं लखत जगत जाको डर कंपत सांच सुभाय ॥ कृष्ण करण मम बंधु महाबल जगत जीतिबे जोग ॥ सुत घन नाद इंद्र जिन बांध्यो देखत सब सुर लोग ॥ ५४६ ॥ मंची प्रगट प्रहस्त महा बल सुर जीते रण खज्ज। देवांतक अति काय नरांतक इक इक बली प्रतज्ज ॥ सो रावण कहं तुच्छ करत नर भिषुकी करत बड़ाय। काढ़्यो जनक जाहि बनमें पुनि बैठो नारि गंवाय ॥ ५४७ रे शठ जब दशशिर प्रभु शरसों रण में गिरि है आइ ॥ तब तू उचित सिखावन मनि है सिखास्यारखैजाइ ॥ एई सिर हर चरण परे अब एई ह्वैहैं हार। किये अहार अमित पशु पशुवत् पशुको होइ अहार ५४८ ॥ जिमि तू हरी दार सुरगणकी तिमि शठ तेरी दार। पकरि पकरिकै बानर करिहैं याही लंक बिहार ॥ तेरे पाप लंक तौ जाती आजुहि सागर माहिं। भयोभूप सतवंत विभीषण यासों यह गति नाहिं ५४९ ॥ जो तू

करी शिवा वर पूजा निज करि शिरन उतारि। तेा शिर सांच सिवार खींचिहैं रण महिं परे निहारि॥ रे रावण तप करि बर लहिकै करिकै हतेा प्रताप। क्यों सह पुत्र मरण चाहत अब धारि भयंकर पाप ५५० इन्द्रजित अरु कुम्भकरण ए अहैं मरण सुख सर्व। जिनकेा पति तू अंध भयो असकरत विष्णु सों गर्व॥ जाकेा बल शिव शूरकाल मैं तेामैं मेामैं जानु। सेाइ रघुनाथ लंक आये शठ अबहूं चरण परमानु ५५१॥ इतेा बढ़ाइ नाम सब पुरमैं तरि सुर सैन समुद्र। बूड़न चहत बांधि गर पाथर पाप कूप मैं क्षुद्र॥ ये शिर तेरे कंदुक ऐसे जबहिं चलै हैं कीश। राम बैरफल तेाहिसांचतब सूझिपरिहि दशशीश ५५२॥ केाऊहेाय सपूत वंशमैं निज घरराखै सेाइ। भई आजुसो सांचसुनी जेाअनुज बदन कहं जेाइ॥ एक बिभीषण जन्यो बिभवा तासौं बांची लंका। ना तरु तेरे संग सिधारति रहत न नामहूं अंक ५५३॥ मेाहि यहिहेत कृपा निधि पठयो शेाचि समुझ दशशीश। सब प्रकार तेासों रण अनुचित कहं मृग कहं मृग ईश॥ चेार लबार कुमारग गामी मद्यप मांस अहार। विप्र बन्धु पुनि भ्रष्ट धृष्ट शठ निरलज कुमति गंवार ५५४॥ जेाकछु कहे सुनेमाने भलतौ कत कीजिय रेास। हेायकाम अपनो अरु छूटे तेा मारण केा देास॥ जौं कदाचि नहिं कालनिकट तौ आवै यह मतितेाहि। छेाड़ि बैर या राघव जी सों मेामानो मति मेाहि ५५५॥ तातें पठयो राम महाबल समुझायो सुग्रीव। नहिं मानत तौ आजहाल तुव हेाइ सेाइ दश ग्रीव॥ जौंकरि जनक सुताकेां आगे करते आयुध नाखि। चल प्रभुपैसेा अबहूं छांड़ि हैं मैं वरणत करि साखि ५५६॥ सुनिकपि वचन महा रिसि भरिकै उठो कहत यह बैन। पकरि अबहिं बांधहु इहि कीशहिजाननपावै ऐन॥ अंगद अंगद सेां दिशि सेां मिलि काटि खाहु फल तुल्ल। बकत वायु बस हुवा विपिन चर बुद्धि विगत शठ क्षुल्ल ५५७॥

सुनि सेा वचन कीश पति नंद कट कटाइ अति क्रोधि।
मारित माचन मुकुट गिराये हने अपर भटसेाधि॥ रेशठ
जेां अस बुद्धि तिहारी क्षणहीं मैं यहिठाम। खार गीध
गहि गहितन खैहैं रणऐहैं जब राम५५८॥ जय रघुबीर लषण
अरि मरदन सब समर्थ बलसींव। बालि अनुज बन दनुज
दहन शिखि जय कपि पति सुग्रीव॥ इमि कहि मुकुट
रामके दिशि के मरदि सभामद सर्व। चल्यो गगन जिमि
तरुण केशरी बालि सुवन तेहि पर्व ५५९॥

दो० कहे रामपद बंदिकै दशमुखके दृष्टान्त।
दशशिरकेशिरकेमुकुट निरखिमुदितजगकान्त ५६०॥

चरण दोहा॥

अंगद तुम कहं धन्य धन्य जग तुमसेां बली न अन्य।
क्षणमैं मुकुट लिये रावण के जेा भटमहं वर गन्य ५६१॥

दो० जामवन्त सेां पूछिकै आज्ञादई उदार।
घेरहु मरकट बिकट सब लंकाचारहु द्वार ५६२॥

सेा० उतरि सुवेल रमेश साजि कटक लक्ष्मण सहित।
कीनो नगर प्रवेश करिय न रावण बधनको ५६३॥

कवित्त॥

साजिदल लंकामैं प्रवेशे देत डंकाराम अरिन अशंका
कपिमारैं धौल धप्प धप्प। तासमें प्रचण्ड पैान छपे मार-
तण्ड दश शीश को घमण्ड गयो छाती करै लप्प लप्प॥
गिरिधरदास चारि दिग्गज विकारि रहे रहेगिरशिखर
बिखरि गिरि झप्प झप्प। क्षितिधर क्षितिभार फणक्षिति
राय रह्यो कच्छप छपाय चारेां पायकरैं छप्प छप्प ५६४॥

दो० घेर्यो पुर चारहु दिशा मरकट विकट स्वरूप।
जिमि स्वगवन घेरेमहानिश दलले स्वगभूप॥ ५६५॥

चौपाई॥

फाटक डारे तेारि लंगूरन। कीश विकट चढ़ि गए
कंगूरन॥ चटक्क टन्द गिरि पादप गहिगहि॥ धाए दिशन
मारु धरु कहि कहि ५६६॥ रावण सुनी खबर निरशंक।

घेरि लई कपि चहुंदिस लंका ॥ आयसु दई सजावहु सैन। मारहु जाय कपिन बल ऐन ५९७ ॥ सुनि सब बीर शस्त्र कर धरि धरि। चले मारु धरु ध्वनि दिशि भरि भरि ॥ जय रघुनाथ कहहिं सब कीश। निशिचर बोलहिं जय दशशीश ५९८ ॥ चारहु द्वार विकटभट जूटे। लरहिं घोर संगर रसलूटे ॥ कोटिन कटे चरणकर मुण्ड। डोलहिं बहु कबंधके झुण्ड ५९९ ॥ घूमन लगे ग्रामहरि कंक। रपटनलगे बीरपलपंक ॥ तेहि क्षणदुसह कपिनकी मारि। सहिनहिं सकत भए निशिचारि ६०० ॥ तबहिं कोप करि रावणपूत। गरजेउ मेघसरिस मजबूत ॥ लागेउ बाण बज्र से लागन। भिदिभिदिकीश लगेमहि लागन ६०१ ॥ महावली निशिचर सिर ताज। बेधै अमित बीर जयकाज ॥ तब रघुनाथ बाण संधाने। मारेते अरि हृदय समाने ॥ ६०२ ॥

दो० तिनते अरदित होय कै जात भयो अकाश।
कह्योगरजि तहंतेंप्रबल मैंतुव करत बिनाश ६०३ ॥

चौपाई ॥

इमिकहि विशिख बज्रसे चुनिचुनि। बरषन लग्यो चाप निज धुनि धुनि ॥ मेघ सरिस गरजत परचण्ड। जल सम बर्षत बाण अखण्ड ६०४ ॥ बिज्जु सरिस चमकावत चाप। सावन सरिस लख्यो गहि दाप ॥ तब अहि कांस फेंकि बिकराल। बांधे बेगि दोऊ क्षितिपाल ६०५ ॥

दो० दोउन भूमि गिराइ इमि गरजि बज्र समबान।
बरषि बरषि बेधे सकल बानर यूथ प्रधान ६०६ ॥
इमि परदल अति विपति दै प्रविश्यो लंका देश।
इत दुखलखि बंधनहस्यौ आतुर आइखगेश ६०७ ॥

चौपाई ॥

सुनि रावण सो अतिहि रिसायो। धूम्र नयन कहं लरन पठायो ॥ ताकहं हनुमान रण मारो। मानहुं रौद्र भयानक पारो ६०८ ॥ बज्रदन्त पुनिपठयो योधा। चल्यौ संग दल लै भरिक्रोधा ॥ ताकों अंगद हत्यो समर किमि।

तेज पुंज तम पुंजहि रण जिमि पू७९ ॥ बज्रि अकंपन आयो धूत। तासों भिरो पवनको पूत ॥ तेदोउ लरन लगे रण कैसे। गैरिकगिरि कज्जल गिरिजैसे पू८० ॥ सोऊ मस्यौ सुन्यो दश शीश। पठयो रण प्रहस्त दल ईश ॥ महा सैन ले आयो तौन। भिरो नील बढ़ि अति बल भौन पू८१ ॥ तिनके लरत बढ़ी छबि कैसे। भिरेउभय मरकत गिरि जैसे ॥ कछुक काल लरि शूर प्रहस्त। संध्या नील पाइ भो अस्त पू८२ ॥ मरेनाथ सबसैन परानी। रावण सुन्यौ मस्यौ सैनानी ॥ परम कोप भरि लई उसास। चलेउ आप रण हित गत त्रास पू८३ ॥

दो० महा सैन लंकेश की लखि पूछेउ गुण सिंधु।
नामसहित सबको कह्यौ तबहिं दशानन बंधु पू८४ ॥

नराच छन्द ॥

तुरत बाण एक कीश ईश के हिये हयो। सुमेरु शृंग तुल्य सोगिराय भूमि मैंदयो ॥ गजादि बानरानको अनेक बाणमारिकै। बिटप्पछिन्नमूलसेदियेधराहिंडारिकै ९८५ ॥ बहोरि मूक मारिकै हनूमतै बली भलो। गिराइ भूमि नील कोस वेग राम पैं चलो ॥ प्रचारि मध्य शेषनै अशेष तीरमारिकै। अचेतकैदशाननैदियो धराहिंडारिकै पू८६ ॥

दो० चेति शक्ति कहं कर लई दई जाहि विधि आप।
हनी ताहि लागेफनी गिरे धरणि सहताप पू८७ ॥

चरणा दोहा ॥

लग्यो उठावन उठै न महि धर लखि आये हनुमान।
धरणिधारि निशिचरहिलषण लैगये जहांनरचान पू८८ ॥

तोटक ॥

रघुनायक शायकमारिबरे। दशकन्धरशीश किरीटहरे ॥ तब देखि महातप त्रास मयो। घरकों दशकन्धर भागि गयो पू८९ ॥ इत राघव बंधु असल्य करो। कपि के दल में अति मोद भरो ॥ सुनि सो धुनिकै दश शीश गिरै। इमि बात कही मन सोचि चिरै पू९० ॥

दो० बिधि बिपरीत भयो अब हेान चहत सिय बैन ।
तातें जाइ जगावहु कुम्भकरण बल ऐन ५९० ॥

चौपाई ॥

बहुतयतन सों जागतभयो । कुम्भकरण रावण पैंगयो ॥
कोटिनमहिष बरेमदभरे ॥ लाइअसन हितआगेधरे ५९२ ॥
भोजन करि मद व्याकुल नैन । कुम्भकरण इमि बोलो बैन ॥
तात कहहु केहि हेत जगायो । रावण सब वृत्तान्त सुनायो ५९३ बोलोकुंभकरणके बैन । अरुणभये सबननके नैन ॥
जौं समरथ तौ नाहु बर ढंग । जाइ सुतन मिलु लरु अरि संग ॥ ५९५ ॥ मैं मारि हौं राम बल सानो । रावण रुसितअनुज जियजानो ॥ कहतबचन मैं तुमहित लागि । उमि हौं राम हतहि रण आगि ५९६ ॥ इमि कहि चलो बंदि पद दोय । रावण कंठ लगायो सोय ॥ शूल धरे कर कछु दल संग । कुम्भकरण मोह्यो बर ढंग ५९७ ॥ देखेउ कपिन ताहि जबआवत । सडर भये दशदिशा सिधावत ॥
कोऊ कहै रावण हित आज । आवत लखहु आप यमराज ॥ ५९८ कोऊ कहै उठ्यो पुनि बिन्धु । रावण के हित बिक्रम सिन्धु ॥ कोऊ कहै धारि तन काल । आवत लीने शूल बिशाल ५९९ कोऊ कहै हतासुर जियो । सो वनचर मारण पन कियो ॥ इमि कहि कहि कपि भागन लागे । अंगद तबहिं भिरे बढ़ि आगे ६०० ॥

दो० तमकि एक मुक्का हनो परो सैन सम घूमि ।
तातेदबिदोउ दिशि सुभटगये घनेपिसि भूमि ६०१ ॥
उठि युबराजादिक कपिन आतुर अवनि गिराइ ।
मरदिकरोरन कांखमहं दाबिचलो कपिराइ ६०२ ॥

सो० मग महं चेति सुजान निकरि शत्रु को कांख सों ।
काटिनाक अरुकान गरजिगयो रघुनाथढिग ६०३ ॥

हरिगीतो छन्द ॥

रघुनाथ ढिगलखि जातकीभहि फिरेउ निशिचर जोर सों । गहि बिकट कोटिन सुभट रवत नात घन सम शोर

मों ॥ जहं जहं पसारत हाथ तहंतहं कालको कर फिरत है। गिरि गुहा सलभ समाहिं जिमि इमि तहां उपमा थिरत है ६०४ ॥ बज्रु भटन मलि निज अंग बज्रुतन खाय बज्रुतन पटकिकै। निज शूल मार्‌यो हनुमतै तिन तोर डार्‌यो झटकिकै ॥ हनुमान मुक प्रहार सों कछु बिकल ह्वै रणमें बली। करिकर प्रहार हनुमतै गति सुधि कियों संगर थली ६०५ ॥ लखि तासु रूर अचर्ज जुत रघुनाथ कहत बिभीषणै। यह कौन जो बज्रु कीश खाये मरदि अंगन सो हनै ॥ यह बंधु मम दश शीश छोटो कुंभकरण प्रसिद्ध है। जिमि अगिनि सूखे बनहिं बनचर रणहि इमि बलसों दहै ६०६ ॥ पुनि निरखि आगत सैन लक्ष्मण अमित शायक मारही। ते सरप से पर दरप धरतन श्याम नगहि सिधारहीं ॥ चढ़ि जाहिं कोटिन कीश तन परशैल पै मृग बालसें। मलि मलि तहांहीं हनत तिनको सहत शर चर ब्यालसे ६०७ ॥ बज्रु कीश बदन समाहिंते दरशाहिं तम महं द्रव्यसे। मुख कारणतें बज्रुकटहिं मसि गिरिगुहा धातुन से लसे ॥ सरचन रण कपि दिशनि बढ़ि भुज गहि धरत मुख लसतयों। जल मधै सावन मांझ जोपत दौरि घन गन बेगिज्यों ६०८ ॥ तेहि सकल कपिदल दलत लखि रघुनाथ धनु संधानिकै। बधि अमित निशिचर सात शर तेहि हने श्रुति लौं तानिकै ॥ गिरि सहित हाथन काटि पुनि सिरतासु धरि परि हरत भे। लखि भगे डरि निशिचर सकल सुरकीश जय जय करत भे ६०९ ॥

दो० कुम्भकरण को मरण सुनि मुरछि परो दशशीश।
अतिबिलापकरबे लग्यो तापभर्‌यो खग ईश ६१० ॥

चरण दोहा ॥

देवान्तक अति काय नरांतकबीर। बाजि चढ़ो रण घूमत शूर सरिस द्युति धीर ६१३ ॥

दो० महा पार्श्व मार्‌यो रिसभ मनुजांतक युवराज।
महा उदर देवांतकहि नीलसु कपिशिरताज ६१४ ॥

चिक्षिरा के शिर तीनहूं काटे पवनकुमार।
लषणहतेउ अतिकायकों कायबरषि शरधार ई१५॥
सो० तिनको मरण सुनत्त भयो कोपबस रक्षपति।
तब घननाद तुरत्त मनकरिचलो सुधारिधनु ई१६॥
दो० प्रफुलित लये रसाल रण पचधन्तसमुदाय।
चलो चैत निशिचर कुंवर के सुभरे छबिछाय ई१७॥
करत शरण सह अरिनकों छीन तापकर रूप।
पीना राति महीनकर भट बैशाख अनूप ई१८॥
अपने करसों करसजै जीवन ले तेा सूर।
सम दुसमन कोकिल सुखर जेठ असुर सगरूर ई१९॥
संग जलद सैनाये अंबर शोभा गाढ़।
शिखिआनन्दित चितचलो इन्द्रजीत आषाढ़ ई२०॥
आप निरन्तर बरसतेा सर सिलिसी सुख दन्द।
तम छावन सावन चल्यो असुर नन्दमानन्द ई२१॥
शूर सिंह शोभन करन निशिदिन ज्ञान अनन्त।
पूरब पर भंजन प्रबल चलेा भादू पद रक्ष ई२२॥
जबर घटा बनकी सबै भांति घटी जहं चारु।
परशातारिहप्रफुल्ल लखिकुनप कुमारकुआरु ई२३॥
अति उज्जल तरवारि कर उज्जल अंबर बंत।
पदुमहिप्रमुदित भरतवर कातिककौनपकंत ई२४॥
सरी सरनिसारंग समन कुंदन लसत न फीस।
तीक्षणकरकरमन्दकर निशिचरमारगशीस ई२५॥
मीता कर सक देन तन सुख जग रंग रसवंत।
निज बलमहि कंपन चलेा पूस प्रलादक कन्त ई२६॥
सरमें खेत रंगत्त बर राग बहार धरत्त।
चलेा माघ रावनि समर कर करण पितुसत्त ई३७॥
तेजकाल हिमकाल सम विविध मारि प्रियरूप।
जग उनमत्त करन चलेा फागुन बर भट भूप ई२८॥

चौपाई॥

ब्रह्म अस्त्रतें सबहिन मारा। परी भूमि कपि भालु

कतारा ॥ गिरे राम लक्ष्मण दोउ भाई। चेत रहित जय आस भुलाई ६२९ ॥ मेघनाद पर सैन निहारी। मनुवज्र-खता तुहिन की मारी ॥ गयो बिजय लहि घर घननाद। इत विभीषणहिं भयो बिषाद ६३० ॥ हनूमान औषधि गिरिलाये। हरि गण सहहरि उठे सुहाये ॥ पुनि कपि मिलि सिगरे निरशंक। दूजी बार दही सब लंक ६३१ ॥

छप्पय ॥

पठये कुम्भनि कुम्भ चले ले असुर संघको। शोणिताक्ष यूपाक्ष लिए कंपन प्रजंघ को ॥ तिन कहं आवत देखि कंप नहिं अंगद अरह्यो। शोणिताक्ष कहं दुविद मैंद यूपाक्षहि मरह्यो ॥ तब जंघ प्रहारि प्रजंघ को कियो प्राण बिन कीश पति। पुनि कुम्भ सरिस सिर कुंभ को फोरयो मारि पहार अति ६४२ ॥

रोला छन्द ॥

कुंभकरण कुमार बीर निकुंभ को हनुमान। पक्वफल सम तोरि सिर यमलोक पठयेप्राण। षरसुवन मकराक्ष पठयो तब निशाचर नाथ। ताहि पठयो राम लखि षर प्रास निशर साथ ६३३ ॥

दो० इमि बीरनको नाशसुनि पितहि दुखितलखि अक्ष।
बज्रत बुझाइ सुरेश जितगयो करनको यक्ष ६३४ ॥
बैठोजाइ निकुंभिला साज्यो यज्ञ निहाल।
खबरिपाइ रघुनाथसों कह्यौ बिभीषणहाल ६३५ ॥

चौपाई ॥

नाथ यज्ञ जौं पूरो होई। तौन मरै काहू सों सोई ॥ तासों बेगि पठाइय भाई। मारैं तेहिकरि दुसह लराई ॥ ६३६ ॥ बच्यो एक यह रघुकुल ईश। याके मरे मर्यो दश शीश ॥ इही एक तिहुं पुर भय मण्डन। सुरपति आदि बीर बल खण्डन ६३७ ॥ तब रघुनाथ अनुज समुझायो। बिजय करहु यह भाषि पठायो ॥ प्रभु पद बंदि कटकलै संग। लक्ष्मण चले करन बरजंग ६३८ ॥ संग बिभीषण

कीश प्रधान। जामवान अंगद हनुमान ॥ जाइ लख्यो द्वारे दल भारी। बध्यो ताहि शर अमित प्रहारी ६३९ ॥
दो० कीश यज्ञ नाशन लगे चढ़ि चढ़ि मन्दिर जोर।
लखिनिजदलकीदुरदशा उठेउइन्द्र जितघोर ३४० ॥
बैठि सुरथ टंकारि धनु संग सुभट समुदाय।
गयो लक्ष्मण सामुहें बंदि उमापति पाय ६४१ ॥
चौपाई ॥
लाग्यो तजनबाण विधि नाना। गरजत घनसम असुर प्रधाना ॥ जे कपि जाहिं शक्रजित आगे। ते महि परहिं प्राण परि त्यागे ६४२ ॥ तिमि लक्ष्मण सन्मुख जे जाहीं। तेनिशिचर यम बदन समाहीं ॥ चहुंदिशि शरही शरहि दिखाहीं। शरसों रहित दिशा कोउ नाहीं ५४३ ॥ तेहि क्षण देखि बिभीषण आगे। इन्द्रजीत कह अधम अभागे ॥ पितु प्रताप करि ऐश अनेकन। डरि शठ मिल्यौ अरिहि हरि टेकन ६४४ ॥ ताको फल तोहि मिलि है अबहीं। जैहै प्रेत लोक तू तबही ॥ कहै बिभीषण जनक समेत। आसु जातरवि सुवननिकेत ६४५ ॥ भयो काल बस जनक तिहारो। मानत नीति धरम नहिं भारो ॥ एक पिताके या पातिहारे। गये घने अरु जैहैं मारे ६४६ ॥ इमि सुनि बाण तजे बज्रतेरे। सहि तेहि कपि पहुंचे यमनेरे ॥ बज्र समान चाप टंकारी। मारे बिशिख सर्प से भारी ६४७ ॥ तब लक्ष्मण आगे तहंबढ़िकै। बरषे शायकदृतलखु पढ़िकै ॥ इन्द्रजीत लक्ष्मण रण भारी। देखहिं सिद्ध अमर मुनि झारी ६४८ ॥
दो० तेहि क्षण लक्ष्मण रामको उर धरि ध्यान तुरंत।
काटि तासु शिर बाणतें फेंकिदियो दिगअन्त६४९ ॥
देव कुसुम बरसन लगे दुंदभि बजी अकाश।
पूजित सुर बनचरन सों लषण गये प्रभुपास ६५० ॥
रामलियो उर लायकै मुदित कहत बहुधन्य।
कियो काजयहि करिसकै तुम बिनकोभट अन्य ६५१ ॥

चौपाई ॥

सुत बध सुनि रावण बिलखानेा। गिरेा धरणि अस्ता-चल मानेा ॥ हा सुत सकल भुवन मद हरण। अद्भुत करम समर महं करण ६५२ ॥ जेा मेाहि कह्यौ बिभीषण आगे। मैं नहिं सुन्यो नीति गुण त्यागे ॥ कुंभकरण बहु बिधि समुझायो। सेा फल अब मम सनमुख आयो ६५३॥ तातें जियन उचित मेाहि नाहिं। बंधु सबन बिन बसुधा माहिं ॥ इमि बहु बिलपि पठाई सैन। पठई राम ताहि यमऐन ६५४ ॥ इहां भयंकर दुखतें मारी। कहत कन्ततें मन्दोदरी ॥ नाहकहेा बहुसेा नहिं मानेा। राम बैर कुल कुलिश मानेा ६५५ ॥ अबहुं देहु सीता परिचरण। भेागहु राज्य सहित निशिचरण ॥ देखहुजहं तहं रेावहिं नारी। दै दै तुमहिं अनेकनि गारी ६५६ ॥ यापापी सब लंकाबेारी। सबनि मारि मरिहै तिय चेारी ॥ तातें अबहुं गहेा मति क्रूरी। कछु दिन कन्त रहै करचूरी ६५७ ॥ जीति जगत अतिहीयश लयो। इक तिय हेत मूल सह गयो ॥ नहिं लाये यह नारि जानकी। प्रखानी सब जान जानकी ६५८ ॥ सुनितिय बचन बिहंसि कह ऐसे। रिपु संग हेाय मिचता कैसे। तैंतिय करति शेाचबिनकामहिं ॥ आजुबधत मैंलक्ष्मण रामहिं ६५९ ॥ रेाइ चरण परि बचन बखाना। मति भ्रम कन्तभई मैं जाना ॥ तब रावण बहुबिधि समुझाई। चलेउ राम सेां करन लराई ६६० ॥

दे० चलत अमित असगुन भये ताहि निदरि सहचैन।
चल्यो दशानन सैन लै महा गर्बको अैन ६६१ ॥

गंगोदकी छन्द ॥

आवनेा तासु जान्यो जबै कोपिकै चेापिकै कीशके इन्द धाये सबै। मारिकै हुंच अेा सेल चारों दिशा पूरि दीनी धरा युद्धकेरी सबै ॥ देखि सो बीसहू नैनकेां लालकै चाप टंकारि देवारि बर्ष्यो शरै। काटिकै माथ अेा हाथ केा टान्हिके भूमिमैं पाठि मारेा धरेा यों करै ६६२ ॥

मालिनी छन्द ॥

दश धनुकर धारे। बिज्जुलौं तेजवारे॥ दश दिशि शर भारे। पूरि दीनेगरारे॥ कपिगण मतवारे। जातहीं जाहिं मारे॥ अति डरसहसारे। होय भागैं बिचारे ६६३॥ इमि दलहि भगायो। कललौं तेजछायो॥ विधिसुत सुतजायो। जीव आनन्द पायो॥ अब सबन डरायो। चित्त रामौ डरायो॥ सुभट दल परायो। सिंधु पारै सिधायो ६६४॥

दो० इमि विचारि बरष्यो बज्रकरि बज्रसरि सरच्छ।
तबसमच्छ आए लरनरणहिं लछ मनदच्छ ६६५॥

शिखरनी॥

भिस्यौ भारी योधा जबरगरजो धारि गुरता। तजेभारे कारे सरप शरलीने चतुरता॥ धरा चाता भाता धनुष धरिसोहै समरमैं। लरैंदंती मानोंसित असित ताहीठहरमैं ६६६॥ तहां देख्योभाई अतिकिरिसि आई असुरकों। चलाई सेा शक्ती विधि दयेउ जोताकि उरकों॥ तबैआड़ो कीनो अरि अनुज सर्पैं शरनमैं। लई आगे ह्वै कैतेहि समुझिकै ताहि क्षण मैं ६६७॥

दो० परेधरणि गतचेत ह्वै लखिप्रभुभए उदास।
हनुमत लाए द्रोणगिरि गई हृदयकी चास ६६८॥

चौपाई॥

रामभिरे रावण सेां तबहीं। सबन कहेा इहि मारत अबहीं॥ तेहिक्षण विरथ देखि रण पथही। शक्र पठायो अपने रथही ६६९॥ तापर बैठि सूर कुलसूर। भिरे भिरैं जिमि तमसेां सूर॥ जिमि बरषत दशकन्धर बाण। तिमि तिमि काटत रघुकुल चाण ६७०॥ रावण के दशधनु अति चमकहिं। जिमिघन करदस दामिनि दमकहिं॥ तबरघुबर दशबाण प्रहारे। काटि शीस सब भूमधि डारे ६७१॥ तेपुनिकटे कंधतें कैसे। छाया शिरकाटतहीं जैसे। पुनिशर सेां भुज काटि पबारे। तेऊ कढ़े प्रथम से भारे ६७२॥ इमि कर शिरकाटत प्रगटाहीं। लखि लखि वानर शेाच

समाहीं ॥ तब रावण माया विस्तारी। व्याकुल भए सबै बनचारी ६७३ ॥ धर परि हरि हरि हरी नवीनी। तब रावण क्षपाण करलीनी ॥ तातें मातलिको उरभेदो। सो गत चेत परो रणखेदो ६७४ ॥ समर लखहिं सुर किन्नर सबहीं। सहमहिं कढ़त शीस भुज जबहीं ॥ कोकवि जो सब रण सछाई। वरणै रावण राम लराई ६७५ ॥

दो० धरकर लीनो बधनहित हरषिशूल समघोर।
जिहिलखितिज्ञपुरथरथरैअशुभभयेचक्र ओर ६७६ ॥

कवित्त ॥

शोककपि हियसों विचार विधि जियसों सुहाग भाग शुद्ध मंदोदरी के बदनसों। भार भूमि मंडल खभार सुनि मंडलसों मेरो भक्तपापी शोच शैलजार मनुसों ॥ गिरिधर दास भयो साथही विलगवाण रघुवर धनुप्राण रावण के तनुसों। ताप सुर गणसों प्रताप दैत जनसों विलाप सिय मनसों सोपुरवाप पनसों ६७७ ॥ धरापैं अप्राण पराजीती सब धराजानै काटि दशगरा प्राए वरवर ईश के। छोयकै निशंक कंक घींचैं आंत अंबरलों जाकी शंक उरसुर ईश धनाधीश के ॥ गिरिधर दास भनै कालको प्रताप आजु देखो अनहोनी रक्त मारे कर कीशके। काटे नर ईशके सहित भुज बीसके सुदीसै दस दीस दस दीस दस सीसके ६७८ ॥

दो० देव कुसुम बरषण लगे भयो अतिहि आनन्द।
मिले मुदित सुग्रीव सों प्रेम भरे रघुनन्द ६७९ ॥
अंक बिभीषण लाइ कै भेटे पवन कुमार।
मिलि अंगद सौमित्र सों राजे मुदित उदार ६८० ॥

चौपाई ॥

रावण मरण सुनत सब रानी। आईं रोवत अति दुख सानी ॥ हामम कन्त कही नहिं मानी। सोइ फल प्रगट भयो जिय हानी ६८१ ॥ नाथ अनुज करकहा न माना। मैं ध्रुव सुना काल नियराना ॥ हरीसिया तुम मृत्यु अपानी।

कपि प्रभु तानि रखीनहिं मानो ६८२ ॥ जीति सकल जग भुजपरताप। परे अनाथ सरिस अब आप॥ जासु वंश पूरेउ जग सारो। रह्यौ न कोउ कुल रोवन हारो ६८३ ॥ इमि लखि तिन को रुदन विभीषन। रोये गहि अग्रज के भीसन॥ तब रघुनाथ ज्ञान दैसही। क्रिया करहु विधिवत यह कही ६८४ ॥ सुनि लंकेश राज विधि साथ। दाह कियो रजनीचर नाथ॥ चिते चिते दुख चिते भयो अति। तिते विलाप कियो निरमल मति ६८५ ॥

दो० गये राम पैं निपटिकै निरखि तवे सह नेह।
आज्ञा दीनी लषण कों राज विभीषण देह ६८६ ॥
विधिवतकपि निशिचरण सह दियो राजतबजाइ।
बहुरिराम ढिगभेटले आयो निशिचर राइ ६८७ ॥

छप्पय ॥

कहेउ राम अबतात बेगि लावहु वैदेही। सुचि असनान कराइ चहत मैं देखन तेही॥ सुनि हनुमत सहजाइ चरण धरि आयसु बरनी। पति आज्ञा सिर धारि चली भूषित प्रभु घरनी॥ शिविका सबारसंग सुभट बहु लखि कपिगण देखन चले। जबबेत पानिन आड़त भए फिरेमरे मन तें भले ६८८ ॥

सो० सो सुनि कै रघुनाथ कही उतारहु यानसों।
लखैंसकल कपिसाथ सुनितिमि आईजानकी ६८९॥

चौपाई ॥

लखि कटु बचन कहे रघुराई। सीता बेलि सरिस सुरझाई॥ तब रुचि चिंता राम मत पाई। लक्ष्मण कहा प्रवेशहु माई ६९० ॥

दो० जो मम मन क्रम वचन सों दृढ़ राघव विश्वास।
तौयहपावक सीतमोहिलखहिं जगतजन पास ६९१
इमि कहि प्रविशी जानकी लखत देव मुनि कीश॥
आप अनलकहि शिखि दई लेहु मनुज कुलईश ६९२ ॥

चौपाई ॥

सिय प्रविशत भयो हाहा कार। कहा करत रघुवंश कुमार ॥ तेहिक्षण कढ़ी सियहि दुतिबढ़ी। कनक अगिनि सों तिमि छविबढ़ी ९८३ ॥ तब रघुबर सिय पास बिराजे। निरखि शोक भगतनके भाजे ॥ विधिहर सुरन सहित तेहि काल। लागे अस्तुति करन रसाल ९८४ ॥

मालिनी छन्द ॥

दशमुख मदहारी। भूमि कन्या विहारी ॥ निशित विशिख धारी। निर्जरा नन्दकारी ॥ अमल कमल हारी। दण्डकारण्य चारी ॥ जयति कलुष हारी। शत्रु सन्ताप कारी ९८५ ॥ निखिल भुवन भर्त्ता। विश्व कल्याणकर्त्ता ॥ खल कुलमद हर्त्ता। चण्ड कोदण्ड धर्त्ता ॥ बनगत बन माली। कुण्डली वीर्य्य शाली ॥ जयति विजय शाली। लोक रूपाब्ज पाली ९८६ ॥ मनुज पति कुमारः। काव्य-प्रीजाङ्ग हारः ॥ कुश पवन कुठारः। पन्नगा राति चारः ॥ द्विरद वर विहारः। केशवो निर्विकारः ॥ सजयति जन तारः। शार्ङ्गधन्वा वतारः ९८७ ॥ विशद गुण विधाता। धैर्य्य शैवीर धाता ॥ सकल भुवन पाता। सज्जना नन्द धाता ॥ सुजन घन मयूरः। पार्थिवो प्रेमपूरः ॥ सजयति रण शूरः। पातक ध्वान्त सूरः ९८८ ॥ अघरत प्रस्तापी। पुण्यरूप प्रतापी ॥ शर धर बरचापी। सुन्दरा लापलापी ॥ अभयद वरदानी। पुष्पकी देवयानी ॥ जयति जय हमानी। सूरशौर्य्याभिमानी ९८९ ॥ अखिल त्रिदुध शिष्टः। वाग्भवानी भदिष्टः ॥ सकल गुण विशिष्टः। शुद्ध सत्कार्यनिष्टः ॥ सुखद विमल कर्मा। शोभ नच्छत्र धर्मा ॥ जयति कनक वर्मा। चारु खड्गीसुचर्मा ९९० ॥ भट रस शिखिवेदी। श्री पतिःशाल भेदी ॥ दनुज तिलक खेदी। संगरी चाप वेदी ॥ अजमनुज विचित्रः। पुण्यपूरः पवित्रः ॥ सजयति सुचरित्रः। केशवः कीशमित्रः ९९१ ॥ अभिनग दभिरामः। दण्डका रामरामः ॥ समर दनुजवामः। शौर्य संग्रामकामः ॥

तनरुचि जितकामः । शुद्ध सौंदर्य धामः ॥ सजयति हरि रामः । सिंधुजा पूर्ण कामः १०२ ॥

अनुष्टुप् ॥

रामाष्टकमिदंपुण्यं यःपठेत्भुविमानवः ।
कदापिनस्पृशे ज्ञीस्तंत देवं भवदानव १०३ ॥

दो० इमि देवन अस्तुति करी मुदित भये रघुनाथ ।
तहंदशरथ आवतभये रामनवायोमाथ १०४ ॥

चौपाई ॥

मुदित अशीस दियो नरनायक । कहत पुत्र उपजे सुख दायक ॥ बहु अशीस लक्ष्मण कहं दीनी । परम प्रीति सीता पर कीनी १०५ ॥ चिरजीवहु मम वंश उजागर । अति सुख सुरन दियो सुख सागर । जाहु अवध सुत राजहि करहू । अति अन्द जननी उर भरहू १०६ ॥ राम कह्यौ पितु सतचित साधु । क्षमहु समात भरत अपराधु ॥ एवमस्तु तब दशरथ कह्यौ । सुत मुख लखि नृप अति सुख लह्यौ १०७ ॥

दो० सबकपि बनि निशिचरण सों राम लषणसों ताहि ।
बंदित पद दशरथ गये ब्रह्म लोक के माहि १०८ ॥
तब प्रभु आज्ञा पाइकै बरष्यौ सुधासुरेश ।
तातें जीये भालु कपि जौन मरे रण देश १०९ ॥

चौपाई ॥

पुष्पक यान बिभीषण लाये । प्रभु प्रेरित मणि धन बरषाये ॥ तेहि धरि धरि तन सोइ कीश । जय रघुबीर कोशला धीश ११० ॥ तब प्रभु सबन सहित तेहि बार । पुष्पक ऊपर भये सवार । चले अवध मग सियहि दिखावत । किषकिंधा पहुंचे मनभावत १११ ॥ तहंकपि तियन चढ़ाइ बिमान । पहुंचे अवध निकट भगवान ॥ कियो प्रणाम पुरहिनरईश । उठि उठि लगे विलोकन कीश ११२ ॥

दो० भरद्वाज पैं जाइकै बैठे शीस नवाइ ।
कथाकही रघुराइसों आपहि सब मुनिराइ ११३ ॥

तब पठयेा हनुमान कहं भरतपास समुझाइ।
मिलिनिषादसोंखबरिकहिपङ्कंचेतिनपहंजाइ११४॥

चौपाई॥

सुनिसेा बचन भरत उठि आतुर। अंकलाइ लीनेा कपि चातुर॥ बढ़ेउ प्रेमसेा वरणि न जाई। आये अवधरामरघुराई ११५॥ सुनिशत्रुघ्न बहुत हरषाई। खबरिजाइ रनिवास जनाई॥ पुरजन गुरु समेत तेहि काल। चले भरत उर हरष बिशाल ११६॥ उतते आवत लख्यो बिमान। मरेबंधु देाउ दण्ड समान॥ तबहिं उतारि जान रघुराई। प्रमुदित भरत लिये उरलाई ११७॥

हरिगीती॥

उरलाइ प्रमुदित भरत लिय तहं कहत सेा छवि नहिं बनै। लखि एक सम युग बंधुको रघुनाथ यह संशय जनै॥ गुरु चरण पर शिर नाइ अंक लगाइ पुनि रिपुदौनकों। पुनि बंदि मातन मिलि नगर जन चले रघुवर मौनकों॥ ११८॥ सियरूप लखिलखि कौशला देाउभरे लेाचन बारि सों। पहिले दुःखी सुनि मिले प्रभु तित भरत की महतारि सों॥ पूछत कहत सगरी कथा पुर राम पहुंचे आइकै। सब नारि नर दुःख हरे क्षण महं दृग सुधा बरषाइकै ११९॥ सुग्रीव आदि कपीनकी निजमुख बड़ाई बहु करी। उठि भरत लाये अंक लंक प्रधान के सहताघरी॥ गुरुदेव आयसु पाइ भरत समेत प्रभु तहं न्हाइकै। बैठे सिंहासन जाइ सुन्दर बसन अंग धराइकै १२०॥ रघुबीर सिंहासन लसे सिय सहित लखि जग दुखगयो। घनविज्जु सम आसीन लखि सिर तिलक विधि सुतनै दयो॥ कर छत्र लीने भरत लक्ष्मण बिजन अनुज सुचामरै। सुग्रीव सुरछत्र रक्षपति सूरज सुखी शेाभित करै १२१॥ तेहि काल नभ महि एक लागति जान औरे मकान सेां। बहुरंग सुमन बरषानसेां दुंदुभिन सों कल गान सों॥ तिहुंलोक जय जय कारराजे आज रघुपति राजपैं। सुर-

यज्ञ किन्नर करहिं अस्तुति मुदित प्रभुहत काजहीं ७२२ ॥
यह रामराज चरित्र परम पवित्र जे जनगावहीं ॥ रघुवर प्रभाउ सुभाउ तें हरि भक्ति अविचल पावहीं। दश कंध विक्रम अंध बधरण घोरमां रघुवर विजै ॥ सुमिरत विजय जग करत हरि दुखतें छुड़ावत जननिजै ७२३ ॥

दो० कुंभजादि मुनि वृन्द सब आये रघुवर पास।
बैठारे प्रभु वंदिपद पूजे सहित हुलास ७२४ ॥

चरण दोहा ॥

ते तबकरि घननाद प्रशंसा कहीकथासबतासु ॥ रावण जनम विजय सबताको पुनिकपि कुल इतिहासु ॥ ७२५ ॥

सो० धन्य धन्य रघुनन्द मेट्यो संकट विश्वको।
इमिकहि सहित अनंदगये विदा ह्वै धामसब ७२६ ॥
लषणहिं दिय युवराज रामचन्द्र रघुवंशमणि।
लगेकरन सोकाज भरत सदा सेवत चरण ७२७ ॥

चौपाई ॥

बहुदिन कपिन राखि रघुराई। पूजि सबन की करी बिदाई ॥ यदपि प्रेमवश जानन चहे। तदपिगये ते रघुवर कहे ७२८ ॥ कंठलाइ सुग्रीव विभीषण। कहेउ मोहि सुमिरेहु सबहीक्षण ॥ तेपदवंदि हृदय धरिध्यान। चलेतजत दृग आंसु महान ७२९ ॥ अंगद कहं बहुविधि समुझायो। पुनि सबनिज सिंगार पहिरायो ॥ बिदाकियो करि बहु सनमानहिं। इहि विधि कंठलाइ हनुमानहिं ७३० ॥ तिनहिं विदाकरि आनंदछाए। राजेराज राममन भाए। चले झकुमग्रहं तीनहुं भाई। बढ़ी प्रीति दिन दिन अधिकाई ७३१ ॥ कियो विहार बिबिध रघुराई। सब ऋतुउर आनंद बढ़ाई ॥ सीतापति रस सरस विनीता। सेवति सासुन परमपुनीता ७३२ ॥ बर अशोक वनिका सुखपूरी। सकल कालफल फूलन रूरी ॥ को कहिसकै चरित रघुवर के। नरवपु विष्णु नलज अरि धरके ७३३ ॥ धस्यो मनुज वपु भगतन काजा। लीलाकरत सुखद सहसाज ॥ गाइगाइ

हरि चरित उदार। नरकनि सहज होत भवपार १३४ ॥

दो० एक समय रघुवर सुनी कही सभा महं चार।
कहहिं मनुज पर घर रही रामलई मुनिदार १३५ ॥

गाहा ॥

जदपि आप परिपूरन सदा सबहि निरदोष। तदपि सीयत्यागनचहे लोकवाद जनिरोष १३६ ॥

चौपाई ॥

अनुजन बोलिकहे उत्तान्त। तेवरजेवज्रसुमति महान्त ॥ पै नरनाह करन हित नाऊ। लषणहिं कह्यो संग तुम जाऊ १३७ ॥ रह्यो जानिकिहि गरभा धान। का चाहऊ पूछेउभगवान। सीत। कह्यो। सुनिन्हहमकह्यो। तिनहिंवसन धन दीबे चह्यो १३८ ॥ एवमस्तु कहिरथ बैठाई। बिदा कियो संगदै निजभाई। लक्ष्मण गंगपार जब आए। सिय सुखदेखि अवनि मुरछाए १३९ ॥

दो० लखिसीता पूछै कहा कहा सबै उत्तान्त।
छिन्नलता सीमहिमिरी हायतजो मोहिंकान्त १४० ॥
इत सीता उत लषण देाउ रहेयतिहि बिलखाइ।
प्रियआयसुसियसिरधरी लषणफिरेपछिंचाइ १४१ ॥

सो० बालमीक अस्थान रही सिया सुनि के कहे।
उर रघुवरकोध्यान उदासीन मुनि बेषधरि १४२ ॥

रोला छन्द ॥

इहां रघुवरसभामैं फिरियाद आयेाखान। कह्यो तेहि द्विज हनेा मोहिं अपराध बिन भगवान ॥ ता द्विजहि कुल पति कियेा ताके कहे रघुनाथ। गयेा सेा गज बैठि तिलक कढ़ाइ अपने माथ १४३ एक गीध उलूक इक आये बहुरि फिरियाद। कियेा तिनको न्याव पुनि सब हरण बिषु विषाद ॥ धाम दीन उलूक को अरु गीध कों गति दीन। करत इमि प्रभु राजनित प्रति धीर धरम धुरीन १४४ ॥

दो० एक समय रघुबर सभा च्यवन आदि मुनि नाह।
आये तिनहिं निहारिहरि बैठारे सहचाह १४५ ॥

चौपाई ॥

तिन सब कथा लवणकी कही। नाथ चहिय तेहि मारण सही ॥ एवमस्तु कहि तिनसों राम। पठयो शत्रु दमन जयकाम १४६ ॥ मथुरापुरकों दैकैराज। दीनो सैन मनुज सिरताज ॥ चरण बन्दिकै चले सुहाये। बाल्मीकके आश्रम आये १४७ ॥

दो० करि प्रणाम बरणी कुशल रहे राति मुनि धाम।
तादिनसीतहिसुतभये मुनिकुशलवकियनाम १४८ ॥

चौपाई ॥

मधुपुर पहुंचे मधु सुत मारण। गये लवण पैं करि धनु धारण ॥ हरको दियो शूल घर ताके। रह्यौ बधे बहु सुर बल जाके १४९ ॥ गयो रहो सो करन सिकार। ठाढ़े रहे आपु ता द्वार ॥ आवत देखि भयंकर रूप। भरतज प्राण हस्यौ नरभूप १५० ॥ जयजयकार करहिं सुर वृन्द। मुनि आशीष देहिं सानन्द ॥ तब अरि दवन बसाई पुरी। नानां बरण गृहावलि जुरी १५१ ॥ चार बरण निवसहिं छबि छाये। इमि पुरथापि राम ढिग आये ॥ बरणीकथा भूप पद बंदि। पुनि पठयो पुर राम आनन्दि १५२ ॥

दो० एक समय इक बिप्र सुत मस्यौ धस्यौ नृप द्वारि।
रामनिवायो ताहितब तपतशूद्र तेहिमारि १५३ ॥

चरणा दोहा ॥

भरतमारि गन्धर्वकरोरन लियो तहांको राज। लषण मल्ल बधि जीत्यो सो थल पुर बिरच्यो सहसाज १५४ ॥

चौपाई ॥

दै दै सुत निज राजबसाई। रहे राम पहं तीनहुंभाई ॥ अश्वमेध की करी तयारी। बिरच्यो थान परम रुचि कारी १५५ ॥ कनक मई जानकी बनाई। बैठे यज्ञ करन रघुराई ॥ गुरु वशिष्ठ आचारज भाये। गौतम कुंभजादि मुनि आये १५६ ॥ सहसुग्रीव सकल कपि वृन्द। आये यज्ञ लखन सानन्द ॥ सदल अवध आयेलंकेश। सब देशनके मुख्य

नरेश १५१ ॥ बढ़ीयज्ञ छबि बरणि न जाई। अश्वहि त्याग कियेा रघुराई ॥ श्याम करणनामक हयसेाई। तहां जाइ जहं इच्छा हेाई १५८ ॥

दे० जेा चमी पन चहै सेा गहै तुरंगहि साथ।
रामचन्द्र हय मखकरत पत्र लिख्यौहय माथ १५९ ॥
संग दियेा शत्रुघ्न केा लिये अमित चतुरंग।
बाल्मीक आश्रमगयेा इमिमहि फिरतुरंग १६० ॥
बालक मैं खेलत रहे लव सुनि बेषहि साजि।
देखि पत्र सेा बांचिकै बांध्यो पितुकेा बाजि १६१ ॥

चौपाई ॥

बाजि बंध्यौ लखि धाई सैन। त्यागु त्यागु यह बेालति बैन ॥ लखि टंकारि धनुष रण नव मैं। करी बिमुख इक लव इक लव मैं १६२ ॥

भुजंग छन्द ॥

कटे कोटि हाथी गिरे एक साथी घने बीर बाजी परे भूमि माहीं। घने छत्र टूटे लसैं केतु भारे कटे यान नाना बिराजैं तहांहीं ॥ गये बाल के सौंह जे बीर्य शाली गये कालके सौंह ते तत्र हाली। भगे जेाहि येाधा लखै बुझिकै चित्र है भेष धारे महा भुण्ड माली १६२ ॥

दे० तब सकेाप शत्रुघ्न भट फेरि सैन शिशु हेरि।
कहतमहतरिसि गहिगुणी बैनहिंनैनतरेरि १६४ ॥

मनहंस छन्द ॥

शठतू अबै यमलेाक चाहतजानहै। सुनिपुत्र ह्वै किहि सेां लह्यौ धनुबाणहै ॥ परसन्न मैं लखिढाठ तापुर खारयै। तजु अश्वकेा अबहूं सुजा घरकीपयै १६५ ॥ लवनै कहेा सत बात बेालतसूरसी। रिपु दौनजूरिपु दौनताकितहै बसी ॥ भय त्यागि साजहु युद्धसचिय ख्यातहौ। बधि सौन दानव भूलि अंगन मातहौ १६६ ॥

दे० इमि कहि धनु टंकारिकै तजे बज्र से बान।
तेकाटे निज शरणसों लक्ष्मण अनुज सुजान १६७ ॥

चौपाई ॥

लरे लरांक बलांक चतुर भट। दुहुंदिशि दुसह करैं शरके ठट ॥ तहं अरि दमन दुरद सम बोधा। करि कर लाघव धरि उर क्रोधा ॥१६८॥ लवपैं छांयदिये बहुबाण। बिष धरसे बिष धरें महान ॥ तेहि लव निज शरसों द्रुतकाटि। दिये विशिख परदर पर पाटि ॥१६९॥ तब अरिघ्न लोचन करि लाल। मार्यो भल्लदण्ड मनुजाल ॥ तेहि लव काटेउ बीचहि जोर। सो लखि चकित नरेश किशोर ॥१७०॥

दो० तब निज शरसों हयन सह सूतहि करि गतप्राण।
भेदेउ तन अरिदनवको शरजि महाबलबाण ॥१७१॥

सो० व्याकुल ह्वै अरि दौन लौन बधनको शर लियों।
लवउर प्रविश्योतौन गिर्यो मौनह्वै भूमिभट ॥१७२॥

चौपाई ॥

हयहिछोरि छोरहि छुटवाई। चले शचुहन शंखबजाई ॥ लव लैजात और शिशुभागे। जाइकहेउ सीताके आगे ॥१७३॥ कोउ नृपको बांध्योलववाजी। सो बधिताहि जातलै राजी ॥ सुनि सियमहा शोच में भरी। कहति कौन यह साहस करी ॥१७४॥ रामचन्द्र सुतकौं बधिडारेउ। रे बालक सब कुशहि पुचारेउ ॥ तेहिक्षण कुशकानन में रहे। आयेसुनत चाप करगहे ॥१७५॥ जननि कहेउ तब लवको मरण। हय मोचन नृप साहस करण ॥ सुनतहि कोपि चले कुश कैसे। बारन देखि केशरी जैसे ॥१७६॥

दो० फिरीजाति देखी नयन फेरी द्रुत झलकारि।
भिरेजाइ अरिदौनसों सन्मुख बिबिधप्रचारि ॥१७७॥

भुजंगप्रयात ॥

लगो होन भारी महा युद्ध तबै। दुहूं ने भर्यो व्योम लों दीहमबै ॥ कटे शीश केते पटे भूमि माहीं। परे बाजि हाथी तनै प्राण नाहीं ॥१७८॥ मुये देखि भागैं भले वीर कैसे। लखे विष्णु भक्तै महा पाप जैसे ॥ कटे कोटि मारे परे योधनासी। लयो खेत जैसे खसै भू निलासी ॥१७९॥

प्रलै कालके रुद्रसो रामजायो। लख्यो तायसै चाप सौं कोप छायो॥ सुमित्रा सुतै यानसोंहीन कीनो। चहूं ओर मैं शायकै छाय दीनो १८०॥

दो० धीर धारि अरि दौन तब पैदर धनु टंकारि।
कुंभ गजकी अंकुश सरिस मारे शायकचारि १८१॥
तातें बेधित होयकै करि निज नैनन लाल।
मरजिवचमबोलतभयो कुंशरण बिकट बिशाल १८२॥

चरण दोहा॥

शत्रुदमन तू शत्रुदमनकिय झूठानामउदोत। तोसो शत्रु दमनकरि अबहौं शत्रुदमन सतहोत १८३॥

चौपाई॥

मार्योबाण बज्रसमआसु। गिरेधरणि अरिदमनगतासु॥ भागि गई सैना सो देखि। तब कुंश तहं निज अनुज परेखि १८४॥ कार्यो शर उरतें बलसिंधु। उठिकै मिलो कुंशहि लवबंधु॥ बांधि बाजि कहं सियपैं जाई। कही कथा सब शीशनवाई १८५॥

बरवै॥

खबर सुनी रघुनायक मख आसीन। अतिहिशोच करि बोले परम प्रवीन १८६॥

सवैया॥

सुलक्षण लक्षण बीर बधे रण लक्षण रक्षण कैशर लक्ष विचक्षण भूमिन ऐसो कोऊजो हतै मम बंधुहि युद्ध समक्ष॥ बध्योअरि दौनहिं ह्वै सुनि पुत्र अहै वहकौन महाबलदक्ष। अलक्षकिधौं युगयक्षप्रतक्ष किरक्षहैरक्षण रावणपक्ष १८७॥

दो० जाऊं लखण बांधऊं तिन्हैं जियत लाइयो पासु।
देखऊं तो कैसे अहैं मुनि सुतगतरण आसु १८८॥

नरेश छन्द॥

सुनि बीर चले पदबन्दिकै। कर लै शर चाप अनन्दिकै॥ संग सोहति सैनसोहावनी। परबीरन धीर बढ़ावनी १८९॥ तहं जाइ लख्योअरि दौन कौं। महि सोहत लै व्रत मौन

कों ॥ कुशलौ तहं चाप टंकारिकै। भये सोहत जै मति धारिकै १९० ॥सुनिके सम बेषअनूप हैं। जनुरामहिंके युग रूपहैं ॥ तबराघवनै हंसि योंकही। द्विज छत्रिन मूलित है सही१९१ ॥ सुनि बालचमा हमनेकरी। हय छोरि फिरौ घर या घरी ॥ तब बोलेउ राम कुमार यों। तुम त्यागत आपुन धर्म क्यों १९२ ॥ हय जोति पुरावहु यज्ञकों। सुख देहु मही प्रतज्ञकों ॥ सुनि सो फनि संगर धूत सों। भए भाषत राघव पूतसों १९३ ॥

चौपाई ॥

क्यों सुनि नन्दन टेक निबाहत। मो भुज सागर बूड़न चाहत। क्यों जननी जनकै दुख दायक। होत हथाउर लै मम शायक १९४ ॥ ना हम रावणके सुतलक्षण। जोगुणि चित्त चहै बलभक्षण ॥ जा-थल बंधुगयो लरिकै तुव। जात घरी इक मैं तुम ताभुव १९५ ॥ जौं कछु साहस तौ थिर त्यागहु। ना तरु त्यागि अबै हय भागहु ॥ बोलत सोचि भये अहिके पिय। बाल कथा सुनि रोशन मोनिय १९६ ॥ पूछि पितामन आवहुलै धनु। मो संग आजु करो तबहीं रनु ॥ मो कहं कोउ अधीन कहै जिमि। भूपति ह्वै सुनि बाल बधे किमि १९७ ॥

सारंग छन्द ॥

बोले तबै राम छोरे यही बैन। छुचीपनो भूलि आये कहा ऐन ॥ लै चापकों शत्रु हेरो खरो युद्ध। तासों लरो ना कहो चित्तकों शुद्ध १९८ ॥ ना त्यागिहौं बाजिकोंचिन्तु संग्राम। कैसे करैंगे कहो यज्ञकों राम ॥ भ्राता निहारे तिहारे नहींदुःख। नाहींलरो जोहिजो बीरसन्मुख १९९ ॥ यों बोलिकै कान लौं चाप। त्यागे घनेबाण लागैं लखेसांप ॥ तासों कई बीर भूमैं गिरेआइ। केते कटे हाथ माथे घने पाइ ८०० ॥ सो देखिकै राम भ्राता महा कोपि। कोदण्ड कों सज्ज कीनो छिये चोपि ॥ तातें तजे दीह नाराच कों डांटि। दीने सबै शत्रु के पत्रकों काटि ८०१ ॥

सारंगी छन्द ॥

हाथी घोंराबैठे योधा नाना बाणै त्यागेहैं। तेजौ औलौके भाई के देहैं जाके लागेहैं ॥ राजाकी सेा सैना भारीचारेां आसा सेां धाई। राकाराजैं लोपैकेां ज्यों मेघौंकी औली आई ८०२ ॥ सूलै हूलैं भल्लै मारैं नाराचै डारैं कोपे। मारो मारो बोलैं बाणीते योधा युद्धै चोपे ॥ सेा औलोकी सैना ते दोऊ भाई कोपे डांटी। त्यागे पचीलेा ने लोमें शस्त्रोंकी औली काटी ८०३ ॥

दो० काटि परन के शरणकेां राम सुवन रणचंड।
खंडकियो पुनिलषण को सुरथ सहितकोदंड ८०४ ॥

चौपाई ॥

पुनि शरपांच तजे रिसिछाई। तैपविसे प्रविशे तनजाई ॥ तिनतें बेधित ह्वै क्षणएक। रहिअचेत पुनिउठे सटेक८०५ ॥ जोरि जोरि शरअनुहिं ततक्षण। मारण लगे कुमारन लक्षण ॥ तिनहिं मगहि काटत ते कैसे। श्रुतिके बचन नासतिक जैसे ८०६ ॥ जेजे शर मारत पनधरिधरि। ताहि मगहि डारत ह्वै करिकरि ॥ विरथ हौंहिं लक्ष्मण के बान। काल निकट जिमि औषधि दान ८०७ ॥ जेशर शक्र जितहि रणमारे। ते सब दोउबंधुन पैंडारे ॥ निष्फल भए रामसुत प्रास। जिमिमन शुद्धविना उपवास ८०८ ॥ तबलव कुशके शरकीमारी। फिरी सैन रघुवर की भारी ॥ ताहि फेरि लक्ष्मण रणधीर। बरषेबिज्जु सरिस सबतीर ८०९ ॥ तेशर भेदि भेदि शिशुगात। रुधिरमढ़े अधकढ़े लखात ॥ मनु सिंगार रसके तनकढ़े। रौद्र अंकुरे अगणित बढ़े ८१० ॥ इमि बाना कुश करि दोउ बन्धु। गरजे राम अनुज बल सिंधु ॥ तब सरोस कुश चाप टंकारि। विशिख बीस मारे ललकारि ८११ ॥

वीरछन्द ॥

सहितारि। रणमारिं ॥ लछिमन्न। परसन्न ८१२ ॥
मतिऐन। हंसिवैन ॥ वरणक्त। रणरक्त ८१३ ॥

पांचालछन्द॥

हेवीर। हैाधीर॥ संग्राम। के काम ८१४॥

उमाछन्द॥

तुमपर हमराजी। अबहं तजहं बाजी॥ सुखाकुल चित्त ह्वैकै। निवसहं भयग्वैकै ८१५॥ मखहिं चलहं देऊ। अरचहिं हमसेाऊ॥ सुनिसुत अतिनीके। अहहं सुभटनीके ८१६॥

कुमारललित छन्द॥

कुमार यह बेाले। भलेा कहत हेाले॥ नहीं बलनहिंसे। बली कहहिं जैसे ८१७॥ बड़ी प्रबल ताई। अबै नृपति भाई॥ करैा समर माहीं। मिले तुरग नाहीं॥ सुनेा लषण भावेा। नृपै अबहिं लावेा॥ करैं समर आगै। करैं तबहिं भागै ८१८॥

कमलछन्द॥

सरन बलनारहेा। तुरग मख क्यों पारहेा॥ प्रथम यह सेाचते। तबहिं कछु रेाचते ८२०॥ मारन मखकेा॥ चहेा। हमहिं जय कै लहेा॥ नतरु फिर भैानहीं। हरहु तुम भैानहीं ८२१॥ लषण सुनि बात कें। सरिस करि गात कें॥ धनुष धरि जेारसें। तजत भए तेार सें ८२२॥ पिनु धनुज बाणहीं। कुध लव नसानहीं॥ मारहि मह काटते। मरहि पुनि डांटते ८२३॥ इमिमारहिं वेगसें। भए अवनि तेगसें॥ केाउ भटन हारते। बिजय बिधि धारते ८२४॥ अपर बर बाणसें। कुलिशगत मानसें॥ तबहिं पकटेा घनेा। लषण दल भै सनेा ८२५॥

दे० सुनि लक्ष्मण फेस्यो दलहि सेा लखि रामकुमार।
बधे तुरग गज भटन तहं लक्षण कैकहनार ८२६॥

चौपाई॥

सूखे विपिन अगिनि जिमि बसैं। तिमि हरि दल महं हरि सुतलसैं॥ काटिकाटि सुभटन के कुण्ड। भरी धरणि सब रुधिर प्रचण्ड ८२७॥ लसत भए मुण्ड धनुष टेाप केरे। सडर जात केाउ बीरन नेरे॥ इमि करि समरभूमि तेहि

काल। महिंदिशि भरि सुरदनभी माल ८२८ ॥ कुलिशअस्त्र जेहिं धनु मध्य। हन्यो लषण सरजानि अबध्य। तातें गिरे धरणि भर धरणी। बिरथ बिधनु बेध्यो तन शरणी ८२९ ॥ लषण निधन जब रघुवर सुनेा। ब्याकुलह्वै पुनि पुनि शिर धुनेा ॥ कारण मनुज दनुज बनदहन। निरखि भरत दिशि लागे कहन ८३० ॥ तातजाउ तुम संगर काज। जहां मरे बड़ सुभटसमाज ॥ लावउ बांधि छुभय मुनिमारे। सानुज लषण निपातन हारे ८३१ ॥

दो०। अहो काल विपरीतता मोसें कहीन जाय।
इन्द्रजीतशिरहरण तेहि लघु शिशु दिये गिराय ८३२॥

हंसछन्द॥

हैं यह कोऊ। दानव देाऊ ॥ ह्वै सुनिमारे। सेाइहिं कारे ८३३ ॥ ब्राह्मणमाहीं। ऐगुण नाहीं ॥ विप्रसदाहीं। मेाहिंतजाहीं ८३४ ॥ रावणकेरे। हैंबहचेरे ॥ कैकेा हूजे। दैतन पूजे ८३५ ॥ तात सिधारेा। शचु निहारेा ॥ कैभट बांधेा। कैबध साधेा ८३६ ॥ केा बिनदानेा। हैबलसानेा ॥ जेा मम भ्राते। युद्धनिपाते ८३७ ॥

दो०। सुनत भरत प्रदक्षिंदि देाउ निरख शत्रुधरि लीन।
सुरथ बैठिकर धनुशधरि गवन तवनथल लीन ८३८॥

शत्रुघ्नलाछन्द ॥

संगदिये राम। भटबीर्य धाम ॥ तेचले साथ। धरिशस्त्र हाथ ८३९॥ लंकेशबोर। सुग्रीवधीर ॥ अंगदउदार। केशरि कुमार ८४० ॥ एभरत संग। सेाहे सुढंग ॥ जयरामचन्द्र बेालहिं अमन्द ८४१ ॥

॥ घरवै ॥

कनकर निशिचर नर को भारी भीर। लए भरत छत प्रलंचे संभरतीर ८४२ ॥

लीलाछन्द ॥

सेादल आवेाजबै। शिखकंपायेातबै ॥ लेाकडराये भवै। लाघरि ह्वैहै अबै ८४३ ॥ लौ कुश आये तहां। सैन पिता

की जहां ॥ है धनु हाथैधरो। शब्दित विश्वैकरो ८४४ ॥ ते दोउ योधा लसे। वीरनकेही बसे ॥ मानऊ शोभा मवे। है धनु रामै भये ८४५ ॥ सुन्दर देखि जवै। आचरजे ते सबै ॥ को यह शोभा सने। राघव से हैं बने ८४६ ॥ बाण करै लै लसे। कन्धरे भाथा कसे ॥ चाप सुहावो अहै। धीरज देखे वहै ॥ ८४७ ॥

हंसमाला छन्द ॥

तन है श्याम रूरे। रण आनन्द पूरे ॥ सुनि सिंगार सोहै। लखिकै काम मोहै ८४८ ॥ कुशलौ एक हीसे। सब कों तब दीसे ॥ लखिते सोचि जीमैं। कहते आनु हीमैं ॥ ८४९ ॥ यहतौ राम आपै। प्रगटावैं प्रतापै ॥ सबको गर्व पीसैं। लरिका होय दीसैं ८५० ॥

दो० इमिते वरणहिं परस्पर तब निज रथहि बढ़ाइ।
भरत भतीजन सों भये कहत मरत मतिजाइ ८५१

चौपाई ॥

सुनि सुत प्रथम प्रणामहिं लीजै। दैअशीष नृपवाजिहि दीजै ॥ बहुरि निमंचन मख को चारु। करिय धरम मुनि अंगी कारु ८५२ ॥ द्विज लखिनमें पूज्य सदाई। हमसों तुम सों कहा लराई ॥ सुनि बोले सीता सुत बैन। परदल जैन बुद्धि के ऐन ८५३ ॥ कहा भरत तुम ऐसे कहत। लघीहोय गाजनहिं गहत ॥ नहिं बाजी इमि मिलिहै तोही। मानऊ हारि कि जीतऊ मोही ८५४ ॥ सानुज रामचली जोऐसे। अश्वमेध आरंभ्यो कैसे ॥ येतुव बन्धु धरणि युग लोटे। सुने नाम बड़ दरशन छोटे ८५५ ॥

कवित्त ॥

आयो एक प्रथम सुनत मधु सूदन सों मधुही सो सूंघो पस्यो मध्य सुरदन है। फूल्यो अति मन अरिदमन विचार सोई भये सौंह अरिदमनहीं रह्यो तन है ॥ गिरधरदास इन मास्यौ सुन्यो लवणहिं लखिहिं लागो प्राण भागो लव रण है। लोग कहैं लौन दरहोंहू लौन दरपरि युद्ध

पानीमें बिलोया ताहि घृत है ८५६॥ लक्षण के लक्षण सुनाऊं जाहि कोऊ कहै अहैं ये अनन्त जाको अन्तकअहैं नहीं। कोऊकहै लक्खनपै मेरेजान आधहूंन कोऊ शेषसो अशेष प्राण लोग देखहीं॥ गिरिधर दासकोऊ कहैचित धरचिति धरपरो नासुकृत धरसतिहीं यहो। सुनोकरि स्वच्छमन लोग कहैं लक्षमण पै यह हमारि जान एकहू रतीनहीं ८५७॥

दो० भरत तुम्हारो नामसो कहाभरत रहिधाम।
रणपर तनधर भरततौ भरत सांच बलधाम८५८॥

चौपाई॥

इमिकहि विशिष वज्र अनुहारि। बरसे युगलबन्धु धनुधारि॥ तब सब जुटि मनुज कपिरच्छू। चलेशोरकरि तरण प्रतच्छू ८५९॥ गजासीन बहुसुभट प्रचण्ड। रथआसीन अमितबरिबंड॥ कितेतुरग चढ़िचले चलाक। धरुधरु मारु मारु कहि वाक ८६०॥ तेहिक्षण महासैन के तोरहिं। रोक्यो देखुर्वधुन घर जोरहिं॥ सबके आयुध काटि गिरावत। भरत बाणकहं महिमधि नावत८६१॥ काटत सुरथ तुरग गज पातिन। प्रगटकरी शोणित सरिता तिन। गिरहिं निशाचर वानर मरिमरि॥ शैल सरिस रणगैल पसरिकरि ८६२॥ मनुजन के सिरकाटि गिरावत। करपद भिन्न भिन्न भुवनावत॥ गजके शीस गिरहिं महि आई। रुधिर कछु बरणि न जाई ८६३॥ मनु कज्जल गिरि ईंगुर धार। निसरति अमित सरित अनुहार॥ विशिख भिन्न सिर मुकता दरसैं। शशि तम पटल फारि मनु सरसैं ८६४॥

दो० मनुज सिरनशरलै चढ़हिं दशदिशि इमिदरशाहिं।
मनु बहुराजन सूरकर इतउत नभसे जाहिं ८६५॥

बसंत तिलका॥

डोलैं पिशाच रणमें मुदपूरिकारि। नाचैं अनेक विधिसों कर मुण्डधारे॥ पीवैं लहू भटन के बहु अंगलावैं। काली

लियेमहाचरी बहुसिंहधावैं ८६१ ॥ संग्राम भूमिमज्ज कंका
ङ्गनाडोलैं। आंतैं गहैं परस्परैं मुद मूरि बोलैं ॥ चारौ
दिशा रुधिर मांसहि दीठि आवै। जोकादरै परमभै डर
डमजावै ८६२ ॥
दो० इमिदोउ अट भरवेगसों भगीचैन तेहिकाल।
सोतखि धनुधरि भरतने त्यागी शायकमाल ८६८ ॥
चौपाई ॥
तषलग्र भरत लरत अनुमानि। मारेपांच दिशिख अनु
मानि ॥ तेशिर भसे लसे रणकेरे। रविकर कुनगय प्रवि-
शत जैसे ८६९ ॥ इमिभरतहि वेधित लखिनीला। गरजि
चलो अतिविक्रम शीला ॥ कपिसैनेश शिखर गहिभारे।
सबकै मस्तक ऊपर मारे ॥ ८७० ॥ ताहि भरतमें करिभग
चूरन। लीनेा भल्लहेाइ दुटुकि पूरन ॥ तासेां भेदेाकपि बल-
वंतहि। तरु अगुन समगिरेा तुरंतहि ८७१ ॥ लखिगजगवय
तार नलआदि। चले समरमहं धन समनादि ॥ तषकुंज
विकसि गर्जहि भट मारेा। परेा मनहुं मत्तसिंह विहारे ८७२ ॥ तिसिकुंज शरपैं शेणित भरेा। चेत गंवाय
गवय महिपरो ॥ तार समरलव केा शरमारा। मस्तेाछतक
कतार मझंझार ८७३ ॥ तब नलसेांहंसि कुंज इमि बेाले।
शिल्प कारन पंडित तुमभले ॥ बांध्यो सेतुसिंधुको सादर।
ममबल सामरबांधहु बंदर ८७४ ॥ इमिकहि हृदय ताकि
शर मारेा। उडि नभतौं गिरि परो विचारो ॥ इमि सब
कपिन देखि शरचूरन। चल्योगवाक्ष लिए लंगूरन ८७५ ॥
श्यामवरण अतिदीरघदुच्छ। सेादल लवनिरख्यो मुनितुच्छ।
महा शिला लव ऊपर डारी। लव तेहि चूरि शरन भुव-
पारी ८७६ ॥ फैलो क्रोध पुच्छ रण सेाहै। महाकाल केा
आंत मनोहै ॥ तब शरसेां गवाक्षके तनमें। किये गवाक्ष
अनेक नरन मैं ८७७ ॥ बहुरि एक शरबिनु फर मारेा। सेा
उठाइ शतधीरजन पारेा ॥ रण अंगन क्रीडत दोउ बालक।
इमिलखि चल्याकीश कुलमालक ८७८ ॥

दो० अहेभ्रात सुतजात तू छिद्र अवै यमधाम।
हिंहनूमिकहि महापहार लेडाख्यो मारणकाम ८७९॥

॥ चौपाई ॥

तेहि छन जब कण सम करि डारो। बज्रहरि विहसि हनि वचन उचारेउ॥ आवहु बनचर बांकीबंधु। सहज्यमूक आश्रित बलसिंधु ८८०॥ अवतारउ प्रसन्न तुवनारी। छमाप्रसन्न बालि रुचिकारी॥ दूतनीसुनत महाभट छिछारू। चल्यो विटप धरिहरि कुलराउ ८८१॥ तबलव विन फरवाण निकाम्यो। कीश ईश उर अंतर मारो॥ तालेभिदेा परोसेा कैसे। बज्रहतो सुमेरु गिरि जैसे ८८२॥ लखिसुग्रीव पतन तेहिकाल। दौरयो हनुमच्छ कुलपाल॥ हाथ गदाघुमाइ कहबात। मुनिमिथ्यु अवनहिं जीवतजात ८८३॥ लव कुशकहि गहा करहीमैं। बालेबचन दयाधरि हीमैं॥ आवहु जामवंत बलवंत। करहु पराक्रम समर तुरंत ८८४

दो० अंतरहत्त तुवप्राणकों हों न पठावतछच्छ।
मरमछेद मनमैं समुझि ताते फिरुजिव इच्छ ८८५॥

॥ चौपाई ॥

कह जामवंत रिसाइ॥ दूतप्रत लोकहि जाहु। हनि भाषिहत्त अनेक। लवपैं तजे गहि टेक ८८६॥ तब पाछे काढ़िहुरंत। मए बांधते कपि कंत॥ इमि जामवन्तहि देखि। प्रतिलंक गो अतितेखि ८८७॥ धनुतानि कै लंकापरि। चलतोभयो रिसिधारि॥ अबलौकि सो अलबेन। कहतेभए अहबैन ८८८॥

दो० आवहु लंकापति प्रबल जननी बंशसपूत।
निज्झिर कुलकी चीह्न तुमपुण्यरूपमतिपूत ८८९॥

॥ चौपाई ॥

। एकहुऊ कुशल मन्दोदरि बीसक। राउभई किं सुहागिनिकै अब॥ तुम जो नहिं रहते भटसिंधुरा। तौनहिं रहतो ता सिर सिंदुर ८९०॥ ब्याह समय मयने कर काको। गहवायो सत कहऊ सुता को॥ तुम दाग सुखहि रहे पितु

जानत। निजसुख सार दशार बखानत ५९१॥ अबतें डरि परशरणहिं गए। बंधु वधाइ भूमि प्रतिभए॥ तबसों रावण तियकों धरी। जो तुव जननि रहीसब घरी ८९२॥

कुण्डलिया॥

जिहतम सबुधो औनृप आसन बैठे सोय। ताहमकी सब वस्तु को स्वामी सुन्दर होय॥ स्वामी सुन्दर होय यथा अभिमानीको तैसे। तिय को हरपति होय करै रस भोग हिं तैसे॥ पितु आसन तप खाहिं जननिसों रमहिं न पापिछ। सो मठ कियो कुकर्म मद्य सबुभत सुधर्म लिख ८९३॥

दो० इमि कहि चापटंकारि कै हन्यो एक इरबान।
तासोंनैहत प्रतिभटो महिलहि विरो अप्रान ८९४॥

चौपाई॥

सो लखि भरत तुरत गहिभल्ल। मास्यो लव हरमाहिं प्रबल्ल॥ ताकेलागे मद्य दुखलह्यौ। इकलव लवभट मुर्च्छित रह्यौ ८९५॥ सोलखि कुश दुशमन दिशिहेरि। मारे शायक नैन तरेरि॥ तेशर काटि भरत भुवडारे। ताकि तीनपुनि शिरमधि मारे ८९६॥ तकि लव चारि बाण निज मारि। रथकेहय वधिदीनेडारि॥ तबकुश द्वैशरतें हनिसूत। काट्यौ केतु महा मजबूत ८९७॥ चढ़ि रथ सुरथ दशरथ सुवना। भरे शरनसों चौदहभुवना॥ बालमीकि आयस चहुंओर। सुनियत संगर सारहि सोर ८९८॥ तब कुश तीन बाण हनिचण्ड। काट्यौ तुरत भरत कोदण्ड॥ तबहिं भरतदूजो धनुधारि। मारे छब्बिस बाण प्रचारि ८९९॥ तिनहिं काटि लव पुनि धनुकाट्यौ॥ केतुकाटि शर रथपर पाट्यौ। बहुरि भरत धनु बान चढ़ायो। ताहि तुरत कुश काटि गिरायो ९००॥

दो० नौनौन धनु भरत लिय तेहि तेहि काट्यौ आसु।
बहुरि केतुकहं काटिकै कियो सुरथ हयनासु ९०१॥

चौपाई॥

भरत धनुष कुश काटत कैसे। रावण शिरहि रमापति

जैसे ॥ बज्रि बज्र सम मारेउ बाण। सेा उर भेदि गयो गति मान ९०३ ॥ सुरक्षित धरणिगिरे रघुबीर। गरजेउ कुश प्रचण्ड रण धीर ॥ सेा लखि अंगद बिटप उखारि। चलेा चलाक कुशहि ललकारि ९०४ ॥ बरष्यो बिटप वृन्द कपि कैसे। समर राम शर बरषत जैसे ॥ तेहि सब काटि काटि तिलतूल। कियो कोप कुशलव गतशूल९०५॥ अंगद तब उठाइ गिरि भारी। मार्यो रण सुनि सुतन प्रचारी ॥ सेा गिरि काटि गिरायो भूमि। लखि कपिपति अति बल रण झूमि ९०६ ॥ गरज्यो महा मेघ सम समर। सुनि भय सहित असुर नर अमर ॥ तेहि क्षण भरतपतन सुनि कान। बिकल यत्नतें उठि भगवान ९०७ ॥ चढ़ि रथ आये आसुहि तच। बालमीक को आश्रम यच ॥ देखि शत्रु दमन महि परे। चेतबिहीन रुधिर सों भरे ९०८ ॥ आगे जाइ लषण कहं जोये। सब समरथ खेाये महि सेाये ॥ बहुरि भरत देखे रण माहीं। महि सेावत सुधि नेकहु नाहीं९०९। नलनीलादिगने कपिजौन। मरि मरिपरेपहुमि तल तौन ॥ निशिचरपति अरु बनचरपति दोउ। परे मेरु नीलाचल से सेाउ ९१० ॥

दो० जामवन्त बांधे लखे तरु मैं तुच्छ समान।
लरत लखे दोउ बंधुसंग अंगद अरु हनुमान ९११॥
कपि नर नैरित द्विरदहय मरे परे चहुं ओर।
महाप्रलय की तौरसेा देखी संगर ठौर ९१२ ॥
सेा० इमि तिन सबन निहारि धारि परम दुख दीनहै।
माया मनुज खरारि लागेकरन बिलाप रण ९१३ ॥

बरवै ॥

हा हा भरत तुम कहेहु न मोहि। अबका करिहौं राजहिं तोहि इमि जोहि ९१४ ॥ परम सूर रण मारे बहु गन्धर्व। सेा बल सुनि सुत सनसुख खोयो सर्व ९१५ ॥ तुम मम नितपद सेवी सनचित सेाउ। मोहि तजि अपर अराधन करेहु न कोउ ९१६ ॥ जनक बचन कहं त्यागेहु

सेवक धर्म। त्यागी जननिधरणि सह जो हितपर्म ९१७॥
अति प्रताप जग जाहिर बुद्धि निकेत। आजु उठत किन
मोहि लखि अवनिअचेत ९१८॥ हा लछमण मोहि तजि
किमि जूझेजंग। सहे अधिक दुखचलिकै वनमो संग९१९॥
वनऊं जात तुम त्यागेउ नहिं मो साथ। अब कितगये
त्यागि मोहि कियो अनाथ ९२०॥ जब तुम रणमहि सोये
शक्ति प्रहार। तब तित तुम्हैं जिवायो पवनकुमार९२१॥
अब सो रण महि संगहि कछु नबसाय। हाय करमगति
ऐसीकैसी भई अन्याय९२२॥ जिनजीत्यो सुरनाथहि मार्यो
ताहि। लघु मुनि सुतन निपात्यो तेहि रण चाहि ९२३॥
रावण दल रतनाकर ह्वै पार। मुनि सुत गोपद बूड़त
लगीनबार ९२४॥ हा रिपु दवन मवन ह्वै रहे सुखोहि।
परत धरण नहिं आतुर मोकहं जोहि ९२५॥ मारो
लवण महाबल एकहि बाण। लहि द्विज सुचन भूतलपरे
अप्राण ९२६॥ लछमण अनुज भरत प्रिय मेरो प्राण।
परो सुमित्रा नन्दन हरन थान ९२७॥ मेरे बन्धु परम
बल सकल सुजान। नीति धरमधर सुन्दर बुद्धि निधान
९२८॥ दशरथ सम मोहि जानत रहे सदाहि। अबतिन
बिन मैं करिहौं काह गृह चाहि ९२९॥ धिकधिक जीवन
मेरो बंधु बिहीन। बिछुरे प्राणनअजहुं अति अघलीन९३०॥
मो सम और कौन जग जीवत ढीठ। मरत नहीं उर
बिहरत यह लखि डीठ ९३१॥ अब नहिं मो कों जग में
है कछु काम। जहां अनुजतहं जैहैं तन तजि राम९३२॥
कहा राज परभोजन मखसों काह। जौं मम बन्धुपरे रण
विगत उछाह ९३३॥ जौं भये प्राण भरतके तनसोंभिन्न।
दशरथ वंशभयो तौ आजु उछिन्न ९३४॥ काह करोंगो
मखकरि बाजी पाइ। मरे परे धरणीमहं तीनऊं भाइ ९३५॥
धिकमोहि जानेउ कौशिल कुल जंजाल। लघुबंधुन को
देखत रण असहाल ९३६॥ मोसम अरु को पापी वा
जग और। जनमत मार्यो जनकहि चलि बनठौर ९३७॥

मेरेहित बहु लक्ष्मण सहे कलेश। रांड भई सब माता कृतसित भेश ९३८॥ भरत घरहिं वनचारी अधिकमलीन। सहे दुःख मेरे हित बहुदिन दीन ९३९॥ सीता अतिदुख पायेा मेरे हेत। तजतजो छलकरिकै पाप निकेत ९४०॥ मेरे हितए कपिसब तजिगृहद्वार। मरेसमर महं ब्याकुल करि परिवार ९४१॥ मेरेहित कपिनायक त्यागेउ प्रान। तारा उमा बिलपि हैं दुखित महान ९४२॥ लखहु बिभीषण की गतिसोये युद्ध। मेरे पाप प्रकट सब या थल शुद्ध ९४३॥ जबलौं रबिशशि तबलौं दीनेाराज। कहांवचन सांगवन्यो मेरेा आज ९४४॥ जेते मरे परे महिमेरे पाप। केामम समहै दूजेा दायक ताप ९४५॥ आजनिरखि गति ऐसीया रणबीच। कढ़त न अजहुं करैगेा का असुनीच ९४६॥ केाउ जग भयेा न ऐसेा बिक्रम भान। मम एकहु अनुजहि रण जीतैजौन ९४७॥ सेायह है सुनिवारे मारेसर्व॥ यह हरिहस्यौ हमारे बिक्रमगर्व ९४८॥ द्विजसंग बैरकिये केा फल परतच्छ। आजमेाहि है दरशत नाशन पच्छ ९४९॥ यह सीताकाढ़न केा फलहै मेाहि। होत नहियो बिसेारण बंधुन जेाहि ९५०॥ बिन अपराध सतीतिय काढ़इ जेाइ। ताकी गति जगतीमहं ममसम हेाइ ९५१॥ अश्वमेध केा करिबेा कहं चितआउ। जामें भई दशा यह कर्म प्रभाउ ९५२॥ जहां भरत अरु लक्ष्मण तहंई राम। बंधु बिना मम भूतलहै कहकाम ९५३॥ कहा कैकई कहि हैं मेा सुखजेाहि। उठहुतात उरलावहुंयों सुनिमेाहि९५४॥ द्वैसुतवती सुमित्रा कहिहैं काह। कुलहर जननि कौशला मरिहै दाह ९५५॥

दो० राम आगवन जानिकै चरणगहे कपिदेाय।
समुझायो बहुभांति तिनकहा करहुगे रेाय ९५६॥

चौपाई॥

रामचन्द्र की आज्ञा पाई। देाउ कपि भिरे हेरि देाउ भाई॥ तब लव हनुमान कहं बांध्यो। मरकट सम भट

कारज साध्यौ ९५७ अंगददेखि कहैकुश ऐसे। तू शठ अबहूं लरत अभैसे॥ प्रथम पिता मास्यौ रघुराइ। दूजो अबजूझो दूत आइ ९५८॥ दोय पितामहं बचो न कोय। अजहुं न लजत दशा निजजोइ॥ तातैंलै मम शर चढ़ि तापैं। बेगि जाहु यम बिनहिं पितापैं ९५९॥ इमि कहि हन्यो बिशिष उरभारी। गत असु अवनि परो बलचारी॥ सोगुणि राम आप रण आये। लखि सुनिपुच आचरज पाये ९६०॥ निज समरूप अनूपमनोहर। बोलेवचन वीर समसुन्दर॥ तुम काके कुमार सुनि अहहू। सोनिज नाम पिता सह कहहू ९६१॥

दो० कह कुश हम सीता सुवन जानत नहिं पितुनाम।
बालमीक आश्रमरहैं सुनिआचरण ललाम ९६२॥
निज सुत गुनिकै रामजू ह्वै प्रसन्नतेहि काल।
कहतभये यह वचनकों नीरजनैन बिशाल ९६३॥
हमनहिं मारहिं शायक तुमहों मारहु विप्र।
सुनिरघुनन्दन नन्दन चाप चढ़ायो क्षिप्र ९६४॥

चौपाई॥

मोहनास्त्र मास्यो शरसाध। मोहि गिरेरघपैं रघुनाथ॥ मायानर सम क्रीड़त जगमैं। मनुज रूप सोहे रण मगमैं॥ ९६५॥ तब लवकुश रघुबर आभरन। मुकुट सहित लीने निज करन॥ तीनहु बन्धु मुकुट करिलियो। जाइ जनक नंदिनि कहं दियो ९६६॥ लव लवाइ हनुमत रिच्छे-सहिं। संगलै हयगे आश्रम देशहिं॥ जनक सुता पति भूषण जोही। लखि हनुमतहि बध्यो अति मोही ९६७॥ हासुत रांड करी मोहि आज। मास्यो जनक जगत सिर ताज॥ कहा करोगे अब बलवान। बापमारि यश कियो जहान ९६८॥ हनूमान कहंबांध्यो जोहि। बूड़िमरौ आवत जिय मोहि॥ याने किये अमित उपकार। उरिन कियो सो बांधि कुमार ९६९॥

दो० सुनि जननी के वचन कुश अति व्याकुल भय चित्त।
हमनहिंजानतजनककों तुमहुंकही नहिंहित्त ९७०

मौक्तिकदाम छन्द ॥

कह्यौ तुम मारहु भूपहि जाय। बध्यौ हमनै तब चाप चढ़ाय ॥ सिया बिलपै इमि पुत्रन साथ। तेहिछण आइ गये मुनि नाथ ९७१ ॥ लख्यौ सबसो रणको तहं तैार। परे रघुनन्दन भूपति मैार ॥ सिया संग आइ गये तेहि ठाम। जहां सह बन्धु रहे प्रभु राम ९७२ ॥

दो० कहत राम इच्छा भयो यह सब सियरण घोर।
कोजानै प्रभुकाकरत कहा समुझिकेहि ठौर ९७३॥
हनूमान रिच्छेसको बन्धनदियो छोड़ाय।
सुनिआयसुलहि जानकी बोली बांहउठाय ९७४ ॥
मन क्रम वचन सुरामपद जौं मम प्रीति रसाल।
तौसब जीवहिं जैपरें समर मरे इहि काल ९७५ ॥

चौपाई ॥

उठि रघुवर मुनिवर पद बंदे। सुत सह सियहि देखि आनंदे ॥ भरत आदि जागे सबभाई। लंकापति सुत सह कपिराई ९७६ ॥ जेजे रहे परे धरणीमैं। ते सब उठे मोद भरि जीमैं ॥ मिले परस्परआनंद छाये। देखिरामपद शीस नवाये ९७७ ॥ तब मुनि कह्यौ सियहि प्रभुलेहु। बिनुअघ याहि गुमहु बुधि गेहु ॥ यह तुमरे सुत कुश लवदोऊ। परम बली गुण गायक सोऊ ९७८ ॥ बिनु जाने कीनो अपराधु। तेहि प्रभु छमहु छमा धरसाधु ॥ इमि कहि चरण बीच लैडारे। लाए राम कंठदो उवारे ९७९ ॥ बढ़ी प्रीति कछु बरणि न जाई। यवइमि कहहिं देखि दोउ भाई ॥ राम सुबन अस होंहिं न काहे। पुनि मुनि बल सागर अवगाहे ९८० ॥

दो० तब लवकुश सीता सहित बालमीकि लै साथ।
सदल अवध आवत भए मोद मये रघुनाथ ९८१ ॥

चौपाई ॥

अश्वमेध मख पूरण कीनो। बिविधि दान महि देवन दीनो ॥ सकल भूमि संकल्पी राम। बिप्रन बहुरि दई लै

दाम ९८२ ॥ कीनो सरजू महं असनानहिं । पायो सुख यशगुनी बखानहिं ॥ लखि सुतसुतने कोशल रानी । अति प्रमुदित भई गद गद बानी ९८३ ॥

दो० रामजे राजहिं सुत सहित प्रमुदित चित श्रीराम ।
रही जानकी धाम निज सुन्दर पूरण काम ९८४ ॥

से० घर घर भयेा अनन्द अवध पुरी पूरी सुखनि ।
जय जय रघुकुल चंद बरणहिं सगरे नगरजन ९८५

दो० कछुक काल में राम की जननि गई हरि धाम ।
तिन सब की कीनी क्रिया कृपा सिंधु अभिराम ९८६ ॥

तोटक ॥

कुशलव कहं राज समाज दियो । निज धामहिं जान बिचार कियो ॥ विधि नै तब काल तहां पठयो । सुनि होय परमापति पास गयो ९८७ ॥ तब राम कह्यो बचनै फनिसों । जबलौं हम बातकरें मुनिसों ॥ तबलौं इत आवइ नाहिं कोई । इत आवइ है मम बध्य सोई ९८८ ॥ प्रभु बंधु तबै मुनि द्वार रहे । बिधिवा कहि काल बुझाइ कहे ॥ रघुनन्दन जू इमि बैन कहो । हम हूं पुर आवन आसु चहेा ९८९ ॥

दो० इतनेइ आये द्वार पैं दुरबासा मुनि राइ ।
कोही मुनि लक्षमण करी खबर रामसों जाइ ९९० ॥

चौपाई ॥

राम मुनिहिं पूज्यो गृहलाई । सत्य निंधु त्यागेउ पुनि भाई ॥ गए अनन्त तबै भगवन्त । चलन चहे बैकुण्ठ तुरन्त ९९१ ॥ सुग्रीवादि कीश लै संग । सीय भरत अरिदमन सुढंग ॥ रघुबर चले तीर्थ गुपतार । संग अवध पुर मनुज कितार ९९२ ॥

दो० जामवन्त हनुमन्त अरु राखे लंका कन्त ।
निज पुर पशु पक्षी सबै पठए राम तुरंत ९९३ ॥

हरिगीती छन्द ॥

पठये तुरन्त निज पुरहि प्रभु अपवर्ग भगतन कोदियो ।

कमला सहित कमलेश जाइ निवासनिज मंदिर कियो॥
जबजबदनुज दुखदेहिं अधरम सोंभगत दुख लहतहैं। तबतब
तिन्हनके नाश हित तन श्यामसुन्दर गहतहैं ९९४॥ नहिं
और कोउ जगबीच हरि बिन जो हरै भय घोरकों। तातें
उचित चित हित समुझि भजुनवल जुगल किशोरकों॥
इमि राम गुण अभिराम जेमति धाम मानव गावहीं।
रघुवरकृपा हरिभक्तिते इच्छितफलहि जगपावहीं ९९५॥

दो० यह रामायण सागरहि बरण्यो बुन्दसमान।
रामकृपा पूरणभयो राचन्द गुणगान ९९६॥
फलके नाते भिल्लिनिहिं निजपद दियो निवास।
कोरघुबरसो और जगजनहित गिरिधरदास९९७॥
रावण खल पावन कियो दियो अभय पद दान।
कोऊभांति सन्मुखभयो यहमन आनिसयान ९९८॥
गुन आरा मैं दुख कटे मन आरा मैं लेत।
हरि पुर आरामैं लहत रामैं कहत निकेत ९९९॥
रघुवंशी सिर मौर तजि भजहिं जानि हित और।
तेनरखर कूकर सरिस निंद्य कुठौर कुतौर १०००॥

सो० कियो दशानन नाश जिन क्षणमें निजभक्तहित।
पूजत गिरिधरदास तिनकेचरण सरोजनित१००१॥

इतिश्रीगिरिधरदासविरचितंरामकथामृतंसमाप्तं शुभमस्तु॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
रामायण तुलसी कृत प०	भगवद्गीता सटीक नागरी	विक्रम विलास
रामायण तुलसी कृत स०	रामायण राम विलास	द्वन्द्र जाल नागरी
सत सई रामायण	यमुना लहरी	कायस्थ कुल भास्कर
कविता वली रामायण	षट् पंचाशिका	क़िस्सह गोपीचन्द्र भरतरी
गीता वली रामायण	कल्प सूत्र भाषा नागरी	बहार बिन्द्रावन
रामायण दोहा वली	विनय पत्रिका सटीक	पद्मावती खंड ज्ञाल खंड
सुन्दरी चरित्र	किताब पटवारी ४ भाग	लावनी व शेर बनारसी
रामायण नानार्थ नौ-	रस राज	युगल विलास
सद्दू दोहा वली	कृष्ण प्रिया	भाषा महाभारत विजय
दूसरी पुस्तक रमायण	भगवद्गीता विष्णु सहस्र	मुक्तावली
माला	नाम सहित	जनक पच्चीसी
तीसरी रामायण गीता-	कल्प सूत्र	शृंगार प्रकाश
वृक	ज्ञान स्वरोदय	दोहा वली रत्नावली
चौथी ज्ञान दोहा वली	भरतरी गीत	स्त्री दर्पण
पांचवीं रस सारिणी	देवी भागवत नागरी	समर बिहार विंद्रावन
छठीं तिथि बोध	बिहारी सत सई सटीक	रमल सार
सातवीं पुस्तक मात्तदत्त	विश्राम सागर	कथा चित्रगुप्त
कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्यनारायण की कथा	मनुस्मृति उर्दू टीका स०	कृष्ण बाल लीला
सटीक	वैशाखी संध्या	गीत गोविंद सटीक
शनिश्चर की कथा	याज्ञ वल्क्य भाषाटीका स०	रामाभिषेक नाटक
राम कलेवा	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	द्वन्द्र सभा नागरी
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	आनन्दा मृतवर्षिणी	सिंहासन बत्तीसी
कविकुल कल्पतरु भाषा	विर्णय सिंधु	शुक बहत्तरी
प्रेम रत्न	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अर्थात्-
बनयात्रा	दीक्षा भरण	गुल बकावली
भजनावली	ज्ञान चालाशी	गुल सनोवर नागरी
बारहमासा फ़क़ीर अल्ला	शङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चंद्रिका
बख़्श	योग वशिष्ठ देव नागरी में	छन्दोर्णव पिंगल
बारहमा० बलदेव प्रसाद	मार्कण्डेय पुराण	हिदायत नामा माल गुज़ारी
कृत	बैताल पच्चीसी	हिदायत नामा बंदोबस्त
कृष्ण सागर	दान लीला नाग लीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
हारीत स्मृति नागरी	सभा विलास	बाला बोध

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
क़ानून	अक्षरावली	लंका काण्ड
	अक्षर दीपिका	उत्तर काण्ड
ताजीरात हिन्द अर्थात्	विद्याकुर	अक्षारम्भ
ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०	बाल बोध	भाषा तत्व दीपिका
ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई०	भाषा चन्द्रोदय	बाला भूषण
ज़ाबिता फ़ाजदारी	इंग्लिस्तान का इतिहास	हिदायत नामा सुदर्शि-
मअ मूल ऐक्ट लगान	गणित लता १ भाग	सान् हुल्क़ह बंदी
अवध जिसके साथ नीचे	तथा २	शिक्षावली
लिखे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं	तथा ३	भोज प्रबन्ध सार
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई० जदीद	गणित प्रकाश १ भाग	राज नीति
ऐक्ट १९ सन् १८६३ ई०	तथा २	स्त्रियों की हितोपदेशिका
ऐक्ट २४ सन् १८६५ ई०	तथा ३	अवध भूगोल
ऐक्ट १६ सन् १८६५ ई०	तथा ४	कविन्न रत्नाकर
ऐक्ट नं० २६ सन् १८६६ ई०	क्षेत्र चंद्रिका १ भाग	भूगोल दर्पण
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा २	बीजगणित १ भाग
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	रेखागणित १ भा	तथा २
ऐक्ट १० सन् १८५८ ई०	तथा २	कैथी वर्ण माला
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	सूरज पुर की कहानी	शिशु बोध
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	विद्याचक्र	पशु चिकित्सा
ऐक्ट १८ सन् १८६८ ई०	भूगोल तत्व	महा भारत भाषा छन्द
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	पदार्थ विद्यासार	प्रबंध में जो श्री मन्महा-
ऐक्ट नं० १८ सन् १८६० ई०	वर्ण प्रकाशिका	राजाधिराज उदित नारा-
क़वायद रेलवे और उसके	मंगल कोष	यण सिंहजी काशी नरेश
साथ क़ानून भी हैं॥	पत्र दीपिका	ने गोकुलनाथादि कवी-
ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०	भारत खण्डका	श्वरों से रचना कराय कल
अर्थात् क़ानून लगान	क्षेत्र प्रकाश	कत्ते में छपवाया था वही
मुमालिक मग़रबी व शिमाली	पत्र हितैषिणी	श्री युत माधव सिंह गद्दी
ऐक्ट ११ सन् १८७४ ई०	रामायण सातों काण्ड	अमेठी नरेश की सहायता
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	बाल काण्ड	और अनुराग से इस यंत्रा-
सरिश्तह हताल्लीम की	अयोध्या काण्ड	लय में अच्युत्तम टेप के
पुस्तकें	अरण्य काण्ड	पुरुअक्षरों में २८ पर्व बड़ी
भाषा लघु व्याकरण	किष्किन्धा काण्ड	शुद्धता से छपा है॥
धात्वर्णव	सुन्दर काण्ड	